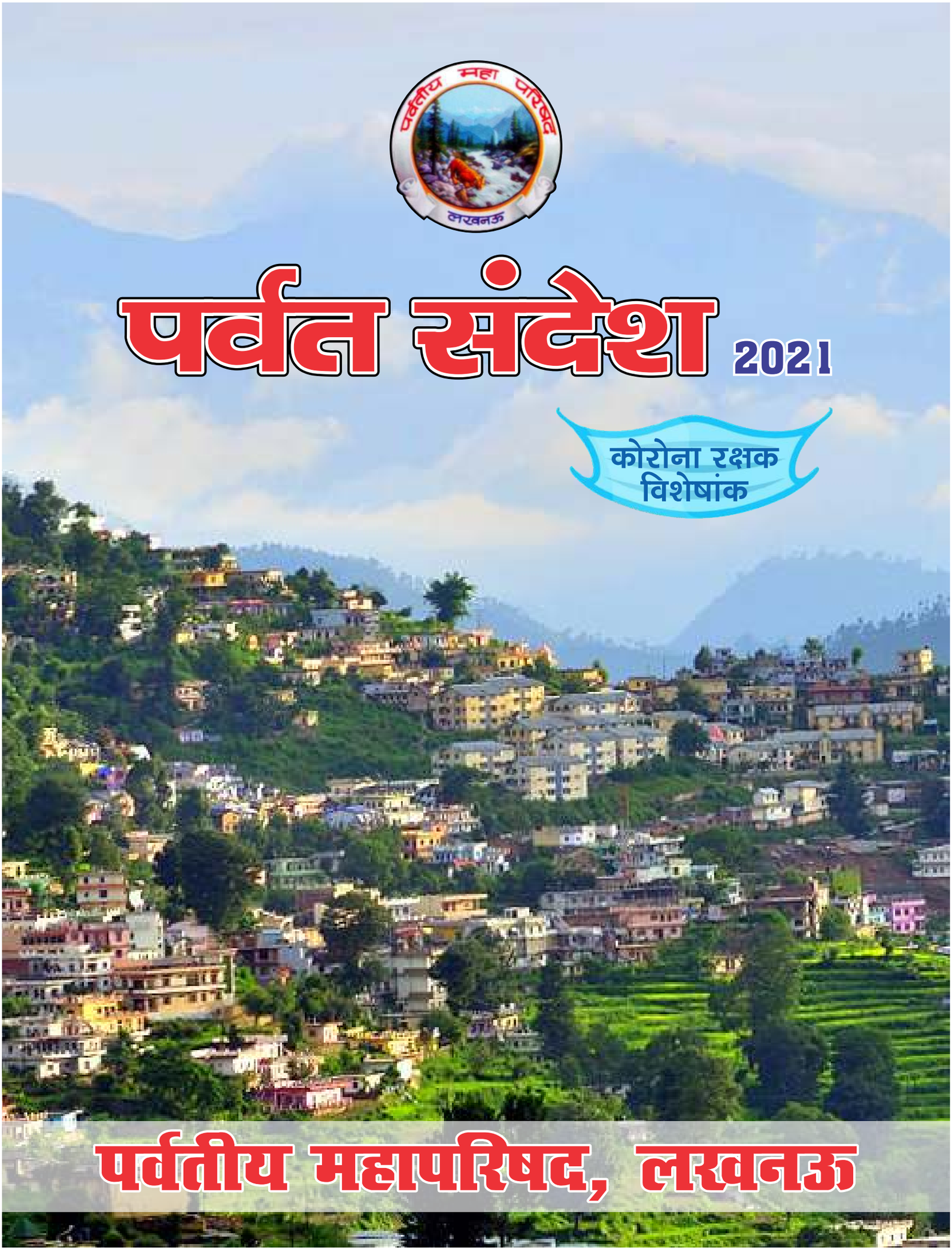



# पर्वत संदेश 2021

कोरोना रक्षक विशेषांक

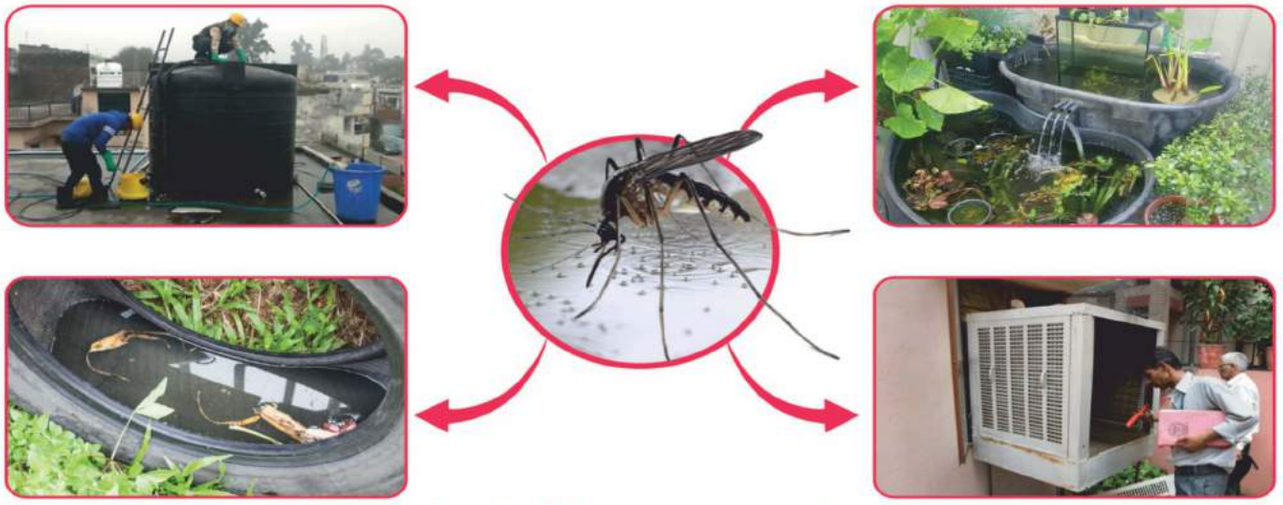
पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ

# कोरोना और डेंगू से बचाव जरूरी तभी मिलेंगी पर्वों की खुशियां पूरी



## मच्छर कहाँ पनपते हैं?

डेंगू एवं चिकुनगुनिया फैलाने वाले मच्छर रुके हुए पानी में पनपते हैं और दिन के समय काटते हैं।



## डेंगू से बचने के लिए अपनाएं सरल उपाय जिससे मच्छरों का पनपना पूरी तरह नष्ट हो जाए।

## डेंगू से बचाव के उपाय

- सप्ताह में एक बार कूलर, फूलदान, पशु व पक्षियों के पानी के बर्तन इत्यादि को खाली करें, रगड़कर साफ करें एवं सुखा कर ही पुन : पानी भरें।
- पुराने टायर, डिस्पोजेबल कप, नारियल के खोल इत्यादि में पानी जमा न होने दें।
- पानी के सभी बर्तन, टंकी इत्यादि को पूरी तरह ढककर रखें।
- मच्छर द्वारा काटे जाने से बचने के लिए ऐसे कपड़े पहनें जो शरीर को पूरी तरह ढकें।
- यदि तेज बुखार के साथ सिर दर्द/आँखों के पीछे दर्द, जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द, त्वचा पर लाल चकत्ते और थकान हो तो तुरंत अपने नजदीकी अस्पताल/ स्वास्थ्य केन्द्र पर जाएं।

अधिक जानकारी के लिए अपने नज़दीकी स्वास्थ्यकर्मी/स्वास्थ्य केन्द्र से आज ही सम्पर्क करें।

**हमने ठाना है, डेंगू मिटाना है।**

**दो गज़ की दूरी, मास्क है जरूरी**

राष्ट्रीय वैक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, उत्तर प्रदेश




# पर्वत संदेश 2021




## पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ

# पर्वत संदेश

**वर्ष : 2021, सोलहवाँ अंक**

**प्रबंधन**
टी.एस. मनराल
के.एन. चन्दोला
गणेश चन्द्र जोशी
महेन्द्र सिंह रावत

**सम्पादक**
ज्ञान पंत

**सहयोग**
धन सिंह मेहता 'अनजान'
ललित सिंह पोखरिया
घनानन्द पाण्डेय 'मेघ'
पं. नारायण दत्त पाठक

**विज्ञापन व्यवस्था**
रमेश चन्द्र पाण्डेय
मोहन सिंह बिष्ट 'मोना'
कैलाश उपाध्याय
भाष्कर काण्डपाल
गणेश जोशी, एडवोकेट
पूरन जोशी
पुष्कर नयाल

**सदस्यता प्रभारी**
गोविन्द पाठक

**प्रकाशक**
पर्वतीय महापरिषद
गायत्री शक्तिपीठपुरम्
गोमती नगर, लखनऊ

**मुद्रक**
**गिरीश प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स**
रहीमनगर, महानगर, लखनऊ
दूरभाष : 9415158511


## इस अंक में


| क्रम | लेख | लेखक / लेखिका | पृष्ठ स. |
|---|---|---|---|
| 1 | सम्पादकीय | | 1–2 |
| 2 | मुख्य संयोजक की ओर से | | 3–4 |
| 3 | संयोजक की कलम से | | 5–6 |
| 4 | अध्यक्ष की कलम से | | 7–8 |
| 5 | महासचिव की कलम से | | 9–10 |
| 6 | करोना से सबक लें, ताकि ..... | नवीन जोशी | 11–13 |
| 7 | कुली बेगार आंदोलन | काफल ट्री (साभार) | 14–17 |
| 8 | काले कौव्वा–घुघूतिया त्योहार.... | जगमोहन रौतेला | 18–20 |
| 9 | मिसरी | सुरेश पंत (फेसबुक में) | 20 |
| 10 | पहाड़ पर लालटेन (श्रद्धांजलि) | मंगलेश डबराल | 21 |
| 11 | मातृमुख (कविता) | लीलाधर जगूड़ी | 22 |
| 12 | उत्तराखण्ड का लोक साहित्य | गोविन्द पंत 'राजू' | 23–29 |
| 13 | हम जीतेंगे (कविता) | धन सिंह मेहता 'अनजान' | 30–31 |
| 14 | खिखताट (कविता) | हरीश बडोला | 32 |
| 15 | गीत (कविता) | घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' | 33 |
| 16 | समाज के करोना योद्धा | कौस्तुभ आनन्द चन्दोला | 34–38 |
| 17 | ओड़े की पीड़ा | डॉ. दिवा भट्ट | 39–41 |
| 18 | गढ़वाली लोक साहित्य में ..... | डॉ. प्रेम लाल भट्ट | 42–43 |
| 19 | करछी, डाढू में अंगार | संकलन | 44–45 |
| 20 | भाव अभिव्यक्ति की गजब क्षमता..... | संकलन | 46 |
| 21 | 6 सितम्बर, 1932 पौड़ी क्रान्ति..... | डॉ. अरुण कुकसाल | 47–48 |
| 22 | करोना, समाज शास्त्रीय दृष्टि से..... | डॉ. अर्चना पाण्डेय | 49 |
| 23 | कोरोना तुमूकैं नी पछयाणुन (कविता) | नीलम पाण्डेय 'नील' | 50 |
| 24 | प्रेम दूत (कविता) | पं. नारायण पाठक | 51 |
| 25 | भूली–बिसरी | भगवत प्रसाद पाण्डेय | 52–53 |
| 26 | ओ रे गिर्दा! ओ हो रे..... (कविता) | ललित सिंह पोखरिया | 54 |
| 27 | म्यर हिरदी का हिरदा (कविता) | शम्भू दत्त सती | 55–56 |
| 28 | वीर माता जियारानी..... | महेन्द्र सिंह मनराल | 57–58 |
| 29. | गंगा नदी हमारी जीवन दायिनी..... | राहुल चंदोला | 59–60 |

# पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ

लखनऊ में पर्वतीय लोगों द्वारा अपने अपने क्षेत्रों में अपनी अपनी आवश्यकता व सोच के अनुसार सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन बनाए गए हैं जिनके माध्यम से वह समाज की सेवा में किसी न किसी रूप में लगे हैं वे सभी लोग/कार्यकर्ता जो इस तरह के सामाजिक व सांस्कृतिक कार्य से समाज की सेवा कर रहे हैं बधाई के पात्र हैं। इन सब सामाजिक व सांस्कृतिक संगठनों के पदाधिकारियों के सामूहिक प्रयास से पूरे लखनऊ महानगर क्षेत्र में रहने वाले पर्वतीयों के सुख/दुख व सांस्कृतिक एवं सामाजिक एकता के लिए एक साथ मिल कर कार्य करने की सोच से पर्वतीय महापरिषद का प्रारूप तैयार हुआ और सभी क्षेत्रीय संस्थाओं के विश्वास व आस्था पर कि हम एक साथ एक बड़े मंच पर काम करेंगे, की सोच के कारण महापरिषद की बुनियाद रखी गई महापरिषद सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था है जो समाज के विभिन्न पहलुओं पर कार्य कर रही है ताकि पर्वतीय सामाजिक व सांस्कृतिक विधाओं का सम्वर्द्धन, विकास व प्रचार प्रसार हो सके तथा किसी भी आपदा के समय पर्वतीय महापरिषद समाज की विशिष्ट कुशल क्षमता से सेवा करने में अपनी भूमिका निभा सके।

इन्हीं सब उद्दश्यों के लिए दिनांक–21.01.2001 को विभिन्न क्षेत्रीय संस्थाओं के पदाधिकारियों की बैठक हुई जिसमें आम सहमति से पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ का गठन पर्वतीय समाज की "शीर्ष संस्था" के रूप में किये जाने का प्रस्ताव पारित हुआ।

इसी क्रम में दिनांक–28.01.2001 को पुनः निम्न सभी लखनऊ स्थित पर्वतीय संस्थाओं के पदाधिकारियों की बैठक 7, त्रिलोकीनाथ मार्ग, बहुगुणा भवन हजरत गंज में हुई :–

1. पर्वतीय समाजोत्थान परिषद, इन्दिरानगर, लखनऊ।
2. कुमाऊँ परिषद लक्ष्मण भवन, हुसैनगंज, लखनऊ।
3. गढ़वाल सभा अमीनाबाद, लखनऊ।
4. उत्तराखण्ड विकास मंच।
5. गढ़वाल जनकल्याण महासभा, बद्री केदार मन्दिर भवन अमीनाबाद।
6. पर्वतीय महासभा इन्दिरानगर।
7. उत्तराखण्ड जन संयुक्त संघर्ष समिति, इन्दिरानगर, लखनऊ।
8. शिखर स्वर, कटरा मकबूज गंज, लखनऊ।
9. मुनाल, मेडिकल कालेज, लखनऊ।
10. कुमाऊँ जनजागरण मंच नजरबाग, लखनऊ।
11. उत्तराखण्ड जनकल्याण मंच, अलीगंज, लखनऊ।
12. जोहार सांस्कृतिक संगठन, विकास नगर, लखनऊ।
13. तुलसी विहार जनकल्याण समिति, इन्दिरानगर, लखनऊ।
14. रंग क्लब अलीगंज, लखनऊ।
15. उत्तराखण्ड जनकल्याण परिषद, अलीगंज, लखनऊ।
16. पन्तनगर सांस्कृतिक समिति पन्तनगर, लखनऊ।
17. उत्तराखण्ड शोध संस्थान, महानगर, लखनऊ।
18. उत्तरांचल संस्कृति युवामंच, पन्तनगर, लखनऊ।
19. उत्तरांचल स्वर संगम, कल्याणपुर, लखनऊ।
20. उत्तरांचल समिति, तेलीबाग, लखनऊ।
21. गढ़वाल जन कल्याण समिति, तेलीबाग, लखनऊ।
22. पर्वतीय होली मेला एवं सांस्कृतिक समिति पन्तनगर, लखनऊ।
23. कुमाऊँ सांस्कृतिक मण्डल, तेलीबाग, लखनऊ।
24. पर्वतीय उत्थान एवं जनकल्याण शिक्षण संस्थान, कानपुर रोड, लखनऊ।
25. ईड़ा जनकल्याण समिति कुर्मांचल नगर, लखनऊ।
26. कुमाऊँ शिल्पकार महासभा, महानगर, लखनऊ।
27. पर्वतीय सांस्कृतिक एवं कल्याण समिति सरोजनी नगर, लखनऊ।
28. गढ़वाल विकास मण्डल, इन्दिरानगर, लखनऊ।
29. उत्तरांचल कल्याण समिति, कानपुर रोड, लखनऊ।
30. कुमाऊँनी कला केन्द्र, महानगर, लखनऊ।
31. उत्तराखण्ड छात्र परिषद, लखनऊ विश्वविद्यालय।
32. पर्वतीय छात्र परिषद वीरबल साहनी छात्रावास लखनऊ

उपरोक्त संस्थाओं एवं समाज के वरिष्ठ जनों की इस बैठक में पर्वतीय समाज को एक शीर्ष मंच देने तथा समाज को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए निम्न प्रकार निर्णय लिया गया:–

## पर्वतीय समाज के विभिन्न संगठनों/क्षेत्रों के प्रतिनिधियों की बैठक दिनांक 28.01.2001 का कार्यवृत्त

लखनऊ के पर्वतीय समाज के विभिन्न संगठनों/क्षेत्रों के प्रतिनिधियों की एक बैठक आज दिनांक 28.01.2001 को 7 त्रिलोकी नाथ रोड, "बहुगुणा भवन" हजरतगंज लखनऊ में श्री बी0एस0 नेगी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में लखनऊ के पर्वतीय समाज की एक **शीर्षस्थ संस्था** जिसमें विभिन्न पर्वतीय संगठनों/संस्थाओं तथा विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधि सम्मिलित रहें, का गठन किया गया, संस्था का नाम "पर्वतीय महापरिषद" दिया गया।

पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ में पर्वतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों के सहयोग से लखनऊ में रह रहे पर्वतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक एवं राजनैतिक उत्थान के लिए प्रयत्नशील है।

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA



## संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था **पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ (उ.प्र.)** द्वारा विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी उत्तरायणी के अवसर पर दिनांक 14 जनवरी से 23 जनवरी 2021 तक **"उत्तरायणी कौथिग–2021"** का आयोजन लखनऊ में किया जा रहा है तथा इस अवसर पर **पर्वत संदेश पत्रिका–2021** भी प्रकाशित की जा रही है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी बंधुओं को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा कार्यक्रम के सफल आयोजन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

01.02.21

**(राजनाथ सिंह)**

Office : Room No. 104, Ministry of Defence, South Block, New Delhi-110011
Tel. : +91 11 23012286, +91 11 23019030, Fax : +91 11 23015403
E-mail : rmo@mod.nic.in

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

रमेश पोखरियाल 'निशंक'
Ramesh Pokhriyal 'Nishank'

सत्यमेव जयते

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA



# संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि उत्तराखण्ड के पर्वतीय समाज की प्रतिष्ठित सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ उत्तराखण्डी भाषा, साहित्य, लोक-कला एवं लोक-संस्कृति के संरक्षण तथा विकास हेतु 'उत्तरायणी कौथिग-2021' का आयोजन एवं इस सुअवसर पर 'पर्वत संदेश' पत्रिका का प्रकाशन करने जा रही है।

देवभूमि उत्तराखण्ड की संस्कृति अपने भीतर पर्वतराज हिमालय और मोक्षदायिनी गंगा नदी के अद्भुत सौंदर्य को समेटे हुए है। देवभूमि की संस्कृति के निर्माण एवं विकास में हमारी सनातन धार्मिक परम्पराओं एवं अनुष्ठानों का महत्वपूर्ण योगदान है। मकर संक्रांति को उत्तराखण्ड के महापर्व की संज्ञा दी जाती है। इस महापर्व को यहाँ उत्तरायणी, खिचड़ी संक्रांति अथवा घुघुतिया त्यौहार के नाम से भी जाना जाता है। एक जगह से दूसरी जगह जाने अथवा एक-दूसरे का मिलना ही संक्रांति है। सूर्यनारायण जब धनु राशि (दक्षिणायन) से मकर (उत्तरायण) पर पहुंचते हैं तो मकर संक्रांति मनाई जाती है। उत्तरायण को देवताओं के काल के रूप में भी पूजा जाता है इसलिए सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस दिन से आरम्भ किये जाते हैं। तीर्थराज बागेश्वर के संगम पर इस दिन पवित्र तवाणी तथा दूसरे दिन शिवाणी स्नान किया जाता है। उत्तराखण्ड के लिए यह दिन धार्मिक महात्म्य के साथ राजनैतिक एवं ऐतिहासिक महत्व का भी है। सन् 1929 ई. में 'कुमाऊँ-केसरी' श्री बद्रीदत्त पांडे के नेतृत्व में अत्याचारी अंग्रेज़ सरकार द्वारा थोपी गई कुली उतार और कुली बेगार जैसी अमानवीय प्रथाओं के रजिस्टर को सरयू बगड़ में डूबो दिया गया था। इसलिए यह दिन अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध एवं जनशक्ति का भी प्रतीक है। औपनिवेशिक अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध 'स्वराज हुनैर छु' की भावना यहीं से गाँव-गाँव पहुँची। यह बड़े हर्ष का विषय है कि आज उत्तराखण्ड के पारम्परिक खान-पान, जैविक खेती तथा लोक-संगीत में लोग अधिक रुचि ले रहे हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ ने इस पुण्य दिवस को अपनी पत्रिका 'पर्वत संदेश' के विमोचन के लिए चुना है। मैं महापरिषद को इस स्तुत्य कार्य हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(रमेश पोखरियाल 'निशंक')



Room No. 3, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 115
Phone : 91-11-23782387, 23782698, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.hrd@gov.in

**आनंदीबेन पटेल**
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश



सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

24 दिसम्बर, 2020

# सन्देश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ द्वारा 14 जनवरी 2021 से उत्तरायणी कौथिग–2021 का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर 'पर्वत संदेश पत्रिका–2021' का प्रकाशन भी किया जायेगा।

मेले के आयोजन से पर्वतीय अंचल की कला संस्कृति को जीवित रखने का प्रयास सराहनीय है। इस प्रकार के प्रयासों से भावी पीढ़ी को अपने संस्कारों से जुड़े रहने में मदद मिलती है। मैं आशा करती हूँ कि इस पर्व से देश की एकता और अखण्डता मजबूत होगी तथा लोगों के बीच आपसी प्यार, भाईचारा, शांति और समृद्धि भी बढ़ेगी।

पत्रिका 'पर्वत संदेश पत्रिका–2021' के सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

**( आनंदीबेन पटेल )**

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@nic.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

भगत सिंह कोश्यारी
राज्यपाल, महाराष्ट्र राज्य



राज भवन
मलबार हील
मुंबई ४०० ०३५
दूरध्वनी : ०२२-२३६३ २६६०
फॅक्स : ०२२-२३६८ ०५०५

# शुभकामना

पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ द्वारा वार्षिक पत्रिका 'पर्वत संदेश' के 'कोरोना रक्षक' विशेषांक का प्रकाशन किया जा राहा है, यह जानकर प्रसन्नता हुई।

कोरोना महामारी के विपरीत काल में देश के डाक्टर्स, नर्सेस, पुलिसकर्मी, स्वच्छताकर्मी तथा जनसामान्य लोगों ने मनोयोग से एक दुसरे की सहायता की। कोरोना योद्धाओं के समर्पण, सेवाभाव तथा त्याग से देश ने कोरोना महामारी का मुकाबला दुनिया की अपेक्षा में अच्छी तरह से किया। 'कोरोना रक्षक' विशेषांक के माध्यम से कोरोना योद्धाओं का कार्य पाठकों के सक्षम आयेगा और उससे अनेक लोग प्रेरीत होंगे ऐसा मुझे विश्वास है। मै पर्वतीय महापरिषद का अभिनंदन करता हूं तथा 'पर्वत संदेश' विशेषांक के सफलता की कामना करता हूं।

**(भगतसिंह कोश्यारी)**
राज्यपाल, महाराष्ट्र

संख्या- G-1139/c·m·2/2020

योगी आदित्यनाथ



मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

लोक भवन,
लखनऊ - 226001

दिनांक : 30 DEC 2020

## संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ द्वारा दिनांक 14 जनवरी, 2021 से 'उत्तरायणी कौथिग–2021' का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर 'पर्वत संदेश पत्रिका–2021' भी प्रकाशित की जाएगी।

भारतीय संस्कृति में मेले–महोत्सव का विशेष महत्व है। संस्कृति, कला और साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन में महोत्सवों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ऐसे आयोजनों से सामाजिक समरसता एवं सौहार्द की भावना भी सुदृढ़ होती है। इसके दृष्टिगत 'उत्तरायणी कौथिग–2021' का आयोजन एक सराहनीय प्रयास है। मुझे आशा है कि आयोजन में कोविड–19 के प्रोटोकॉल तथा सोशल डिस्टेंसिंग का पूर्ण पालन किया जाएगा।

आयोजन की सफलता एवं पत्रिका के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

( योगी आदित्यनाथ )

दूरभाष : 0522-2236181 / 2239296 फैक्स - 0522-2239234 ईमेल - cmup@nic.in

**त्रिवेन्द्र सिंह रावत**

मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय,
देहरादून-248001
फोन : 0135-2755177 (का.)
0135-2650433
फैक्स : 0135-2712827



# शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि पर्वतीय महापरिषद लखनऊ द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी उत्तरायणी के अवसर पर "उत्तरायणी कौथिग-2021" का आयोजन करते हुए "पर्वत संदेश पत्रिका-2021" का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि लखनऊ में "उत्तरायणी कौथिग मेले" का आयोजन उत्तराखण्ड की संस्कृति को विरासत के रूप में संजोकर रखने तथा भविष्य की पीढ़ी एवं समाज के सभी वर्गों को अपनी संस्कृति से अवगत कराने में सहायक सिद्ध होगा।

मेरी ओर से पर्वतीय महापरिषद्, लखनऊ को "उत्तरायणी कौथिग-2021" के आयोजन एवं "पर्वत संदेश पत्रिका-2021 के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(त्रिवेन्द्र सिंह रावत)

**श्री गणेश चन्द्र जोशी,**
**अध्यक्ष,**
**पर्वतीय महापरिषद भवन, गायत्री शक्तिपीठपुरम्,**
**निकट जनेश्वर मिश्र पार्क,**
**सेक्टर-1, गोमतीनगर विस्तार, लखनऊ।**

डॉ0 दिनेश शर्मा

उप मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश

99-100, विधान भवन,
लखनऊ

दिनांक: 02/01/2021



# सन्देश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि पर्वतीय महापरिषद द्वारा उत्तरायणी कौथिग–2021 एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा है। इस अवसर पर पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी **"पर्वत सन्देश पत्रिका–2021"** का प्रकाशन एवं विमोचन किया जाना सुनिश्चत हुआ है।

पर्वतीय महापरिषद द्वारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त पर्वतीय समाज के विशिष्ट नागरिकों को सम्मानित भी किया जाता रहा है। उत्तरायणी मेले में पर्वतीय लोक कला, लोक संगीत, लोक नृत्य के साथ–2 अन्य प्रदेशों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं पर्वतीय क्षेत्रों के लघु उद्योग एवं कुटीर उद्योगों का व्यापक प्रदर्शन किया जाता रहा है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में समाज के सर्वांगीण विकास हेतु महत्वपूर्ण लेख एवं साहित्य प्रकाशित किये जाएगें।

**उत्तरायणी कौथिग–2021** की सफलता एवं स्मारिका **"पर्वत सन्देश पत्रिका–2021"** के सफल प्रकाशन हेतु कृपया मेरी शुभ कामनाएं स्वीकार करें।

(डॉ0 दिनेश शर्मा)

**श्री गणेश चन्द्र जोशी**
**अध्यक्ष,**
**पर्वतीय महापरिषद**
**लखनऊ।**

**अजय भट्ट**
संसद सदस्य (लोक सभा)
नैनीताल–ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)
सदस्य– रक्षा समिति, अधीनस्थ विधान संबंधी समिति,
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, परामर्शदात्री समिति

**Ajay Bhatt**
Member of Parliament
Nainital- Udhamsingh Nagar (Uttarakhand)
Member-Defence, Subordinate Legislation Committee,
Health and Family Welfare, Advisory Committee

सत्यमेव जयते

दिल्ली निवासः 301, कावेरी अपार्टमेन्ट
डॉ. बिशम्बर दास मार्ग, नई दिल्ली–110001
टैलीफैक्स: 011-23311488, 23311487
मोबा.: 9456590891, 9412092296
ईमेल: ajbhat3@gmail.com

हल्द्वानी निवासः मुखानी रोड, खाटू श्याम मन्दिर,
तल्ली बमोरी, निकट भा.ज.पा. कार्यालय,
हल्द्वानी, जिला नैनीताल (उत्तराखण्ड)



आदरणीय गणेश जोशी जी,

दिनांक–10–01–2021

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही हैं कि उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में पर्वतीय समाज की सबसे पुरानी एवं शीर्ष संस्था ''पर्वतीय महापरिषद'' लखनऊ दिनांक 14 जनवरी, 2021 से 22 जनवरी, 2021 तक उत्तरायणी कौथिग–2021 का आयोजन भारत रत्न पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त पर्वतीय सांस्कृतिक उपवन, निकट खाटू श्याम मंदिर, गोमती तट लखनऊ में कर रही है। इस शुभ अवसर पर महापरिषद लखनऊ पर्वत संदेश नामक एक पत्रिका–2021 का प्रकाशन एवं विमोचन भी करने जा रही हैं।

हमारी संस्कृति और विरासत को और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए महापरिषद जिस ईमानदारी एवं कुशलता से कार्य कर रही है, मैं उसकी हृदय से प्रशंसा करता हूं। मुझे पूर्ण आशा है कि महापरिषद द्वारा प्रकाशित पर्व संदेश–2021 नामक पत्रिका से आम जनमानस अवश्य ही लाभान्वित होगा।

मैं इस शुभ अवसर पर संस्था के समस्त सदस्यों एवं पदाधिकारियों द्वारा किये जा रहे इस भगीरथ प्रयास को हृदय से नमन करते हुए ''उत्तरायणी कौथिग–2021'' के सफलता एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

पुनः शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

AJAY BHATT
MEMBER OF PARLIAMENT
NAINITAL-UDHAMSINGH NAGAR

(अजय भट्ट)

प्रतिष्ठा में,

श्री गणेश जोशी जी,
अध्यक्ष, पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ
पर्वतीय महापरिषद भवन, शक्तिपुरम,
निकट जनेश्वर मिश्र पॉर्क,
गोमती नगर, विस्तार, सेक्टर–1,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

**अजय टम्टा**
(पूर्व राज्य मंत्री भारत सरकार)
संसद सदस्य (लोक सभा)
03 अल्मोड़ा ( उत्तराखण्ड )

सत्यमेव जयते

1, जन्तर मन्तर रोड
नई दिल्ली-110 001
दूरभाष: 011-23721566
ई.मेल: ajaytamtamp03@gmail.com



## संदेश

बहुत हर्ष का विषय है कि पर्वतीय महापरिषद लखनऊ द्वारा प्रत्येक वर्ष की तरह उत्तराखण्ड में प्रसिद्ध उत्तरायणी पर्व के अवसर पर 'उत्तरायणी कौथिग 2021 का आयोजन कर रहा है। पर्वतीय महापरिषद लखनऊ द्वारा किये जाने वाले सामाजिक उत्थान के क्रियाकलापों पर आधारित 'पर्वत संदेश पत्रिका 2021' का प्रकाशन भी किया जा रहा है। उत्तरायणी कौथिग 2021 के सफल आयोजन और 'पर्वत संदेश पत्रिका' के प्रकाशन से जुड़े सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(अजय टम्टा)

**KAUSHAL KISHORE**
Member of Parliament
(Lok Sabha)
**Mohanlal Ganj, Lucknow (U.P.)**
**Member:**
• Standing Committee on Water Resources

202, Narmada Bhawan
Dr. Bishambar Das Marg
New Delhi-110 001
Phone : 011-23312123
Mobile : 9013869437

***State President:-*** **Anusuchit Jaati Morcha, U.P.**

Ref. No. 571/2021



Dated 12/01/2021

## संदेश

उत्तराखण्ड की पारस्परिक एवं पौराणिक लोक सांस्कृतिक विरासत देश में ही नहीं अपितु समस्त विश्व में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। धर्म–दर्शन के साथ प्रदेश की लोक कला एवं संस्कृति से जुड़े सभी पहलुओं ने सहस्त्रों वर्षों से भारतीय संस्कृति को परिष्कृत किया है।

मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ द्वारा उत्तराखण्ड की लोक परम्पराओं को संजोये रखने के उद्देश्य से दिनांक 14से 23 जनवरी, 2021 तक दस दिवसीय उत्तरायणी कौथिग(मेला)–2021 का आयोजन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पर्वतीय महापरिषद अपने इस आयोजन में सफल होगी।

उत्तरायणी कौथिग–2021 के आयोजन मण्डल के सभी सदस्यों को मेरी ओर से हार्दिक शुभाकामनाऐं।

(कौशल किशोर)
सांसद

**Residence**: Village-Begaria, Post-Baravankala, Kakori, District-Lucknow, Uttar Pradesh-226 101
Telephone: 0522-2050025, Mobile: 09415005536



मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

18.01.2021

# शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि, **पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ** द्वारा **लखनऊ** में **"उत्तरायणी कौथिग-२०२१"** का आयोजन किया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर एक **"पर्वत संदेश पत्रिका-२०२१"** का भी प्रकाशन भी किया जा रहा है। जिसमें महापरिषद की वर्षभर की कार्यवृतियों के अतिरिक्त उत्तराखण्ड की संस्कृति, तीज-त्यौहारों के साथ-२ सामाजिक विषयों पर विशेष उल्लेख किया जायेगा। मुझे विश्वास है कि, पत्रिका समस्त समाज, नवजवानों व विशेषतः युवा पीड़ी के लिए प्रेरणादायक और लाभप्रद सिद्ध होगी।

मैं **"पत्रिका"** के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ। साथ ही महापरिषद के समस्त पदाधिकारियों व मा० सदस्यगणों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

**शुभकामनाओं सहित!**

(हरीश रावत)

**ब्रजेश पाठक**
मंत्री
विधायी एवं न्याय,
ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग

कार्यालय : कक्ष सं0–91–91 ए, मुख्य भवन
उ0प्र0 सचिवालय

दूरभाष : 0522–2238074/2213292 (का0)

लखनऊ : दिनांक.....



## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ द्वारा प्रतिवर्ष की भांति उत्तरायणी के अवसर पर उत्तरायणी कौथिग–2021 का आयोजन एवं पर्वत संदेश पत्रिका–2021 का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से पर्वतीय समाज की सांस्कृतिक एवं सामाजिक उन्नति, पारस्परिक प्रेम, एकता एवं विकास के साथ–साथ पर्वतीय संस्कृति के सम्वर्द्धन, संरक्षण, लोक संस्कृति, लोक कला एवं लोक परम्पराओं को जीवन्तता प्रदान की जाती है।

मैं उपरोक्त उत्तरायणी कौथिग–2021 के सफल आयोजन एवं पर्वत संदेश पत्रिका–2021 के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(ब्रजेश पाठक)
02.01.2021

आशुतोष टण्डन "गोपाल जी"
मन्त्री
नगर विकास, शहरी समग्र विकास,
नगरीय रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन विभाग



कार्यालय : 2238896
सी.एच. : 2213251
कक्ष संख्या 59–59ए, मुख्य भवन
विधान भवन, लखनऊ

दिनांक : 22/12/2020

# संदेश

मुझे जानकर प्रसन्नता हो रही है कि पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ द्वारा 14 जनवरी, 2021 को "उत्तरायणी कौथिग–2021" मेले का आयोजन भारत रत्न पंडित गोविन्द बल्लभ पंत पर्वतीय सांस्कृतिक उपवन, गोमती तट, लखनऊ में किया जा रहा है। इस अवसर पर महापरिषद द्वारा 'पर्वत संदेश पत्रिका–2021' को कोरोना रक्षक विशेषांक के रूप मे प्रकाशित भी किया जायेगा।

भारत वर्ष में सांस्कृतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों व मूल्यों को भावी पीढ़ी के लिए सहेजने और उनके बारे में जानकारी देने हेतु मेले व उत्सवों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

मुझे आशा है कि पर्वत संदेश पत्रिका–2021 मे पर्वतीय सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक परिवेश तथा कोविड–19 बीमारी से बचाव सम्बन्धित सामग्री का समावेश किया जायेगा, जो जन सामान्य के लिए उपयोगी व लाभप्रद होगी।

'उत्तरायणी कौथिग–2021' के सफल आयोजन व पत्रिका के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

आशुतोष टंडन

(आशुतोष टंडन)

डा0 महेन्द्र सिंह
मंत्री
जल शक्ति विभाग
उत्तर प्रदेश।



दूरभाष : 0522–2238070
सी.एच.: 0522–2213290
कक्ष संख्या : 93–94
मुख्य भवन

दिनांक : 07-01-2021

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि पर्वतीय महापरिषद् लखनऊ जो कि पर्वतीय समाज की शीर्षस्थ सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था है, के द्वारा उत्तरायणी के अवसर पर **उत्तरायणी कौथिग–2021** का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर पर्वतीय महापरिषद द्वारा "पर्वत संदेश" पत्रिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें समाज के महापुरूषों के विचारों के साथ–साथ समाज के अग्रणीय व्यक्तियों के विचारों का समावेश किया जायेगा, जिससे समाज में चेतना जागृत होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित लेखों से पर्वतीय समाज व सस्कृति को निकट से जानने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

कार्यक्रम के सफल आयोजन एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

(डा0 महेन्द्र सिंह)

**स्वाती सिंह**
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
महिला कल्याण, बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार
उत्तर प्रदेश शासन



कार्यालय दूरभाष–0522–2235778
आवास दूरभाष–0522–2237954
सी.एच.–2214065
कार्यालय कक्ष सं0–52
नवीन भवन

दिनांक–

# ''शुभकामना संदेश''

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि पर्वतीय महापरिषद गतवर्षो की भॉति इस वर्ष भी पर्वतीय विशिष्टताओं को राष्ट्रस्तर के उद्देश्य के साथ समाविष्ट कर उत्तरायणी कौथिग–2021 का आयोजन करके पर्यटन को बढ़ावा देने और आम जन को लाभ पहुॅचाने का कार्य कर रहा है। पर्वतीय पर्यटन को बढ़ावा देने की दृष्टि से उत्तरायणी कौथिग का आयोजन और भी महत्वपूर्ण है। मेरी कामना है कि पर्वतीय समाज को समर्पित इस वर्ष का उत्तरायणी कौथिग–2021 का आयोजन अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हो।

इस अवसर पर प्रकाशित पर्वत संदेश पत्रिका–2021 के सफल प्रकाशन की कामना के साथ मैं इसके प्रकाशन और प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

Swati
(स्वाती सिंह)

**श्री गणेश चन्द्र जोशी,**
**महासचिव, पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ**
**पर्वतीय महापरिषद भवन शक्तिपुरम,**
**निकट जनेश्वर मिश्र पार्क, गोमती नगर विस्तार,**
**सेक्टर–1, लखनऊ।**

डॉ. नवनीत सहगल
आईएएस
अपर मुख्य सचिव



अर्द्ध0पत्र0सं0 803/अ0प्र0स0सू0वि0/2021
सूचना विभाग, उ0प्र0 शासन
कार्या. : जी-105, बी ब्लॉक
लोक भवन, लखनऊ
फोनः- 0522-2226020,2289930
Email : informationlko2018@gmail.com

दिनांक 08 जनवरी, 2021

# संदेश

हर्ष का विषय है कि पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ द्वारा उत्तरायणी के अवसर पर दिनांक 14 से 23 जनवरी, 2021 तक 'उत्तरायणी कौथिग–2021' आयोजित किया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में 'पर्वत संदेश पत्रिका–2021' का प्रकाशन भी किया जाएगा।

संस्कृति, कला और साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन में इस प्रकार के आयोजनों का विशेष योगदान होता है। ऐसे आयोजनों से सामाजिक समरसता एवं सौहार्द की भावना भी सुदृढ़ होती है। इसके दृष्टिगत 'उत्तरायणी कौथिग–2021' का आयोजन एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे आशा है कि इस अवसर पर प्रकाशित की जा रही पत्रिका में उत्तराखण्ड राज्य की लोक कला, संस्कृति एवं परम्पराओं के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारियों का समावेश किया जाएगा।

'उत्तरायणी कौथिग–2021' के सफल आयोजन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

( नवनीत सहगल )

स्थापना वर्ष – 2001 पंजीकरण संख्या – 2072

# पर्वतीय महापरिषद

गायत्री शक्तिपीठ पुरम, उजरियांवा, गोमती नगर, लखनऊ (उ0प्र0)

## पर्वतीय महापरिषद द्वारा प्रदत्त ''पर्वत गौरव सम्मान'' तालिका

| क्र0सं0 | नाम | क्षेत्र | वर्ष |
|---|---|---|---|
| 1 | पद्मश्री स्व0 गौरा पंत 'शिवानी' | साहित्य | 2001 |
| 2 | डॉ0 दीवान सिंह भाकुनी | औषधि विज्ञान | 2002 |
| 3 | पद्मश्री डॉ0 एम0सी0 पन्त | चिकित्सा विज्ञान | 2005 |
| 4 | पद्मश्री डॉ0 श्रीकृष्ण जोशी | भौतिक विज्ञान | 2006 |
| 5 | पद्मश्री डॉ0 आदित्य नारायण पुरोहित | वनस्पति विज्ञान | 2006 |
| 6 | श्री महेन्द्र सिंह धौनी | खेल (क्रिकेट) | 2006 |
| 7 | प्रो0 चन्द्र प्रकाश बड़थ्वाल | शिक्षा | 2007 |
| 8 | डॉ0 एच0एस0 कपर्वाण | पर्यावरण (जलवायु परिर्वन) | 2008 |
| 9 | श्री हीरा सिंह राणा | लोकगायक, संगीत | 2009 |
| 10 | श्री नवीन जोशी | पत्रकारिता | 2011 |
| 11 | डॉ0 चन्द्र शेखर नौटियाल | वैज्ञानिक | 2012 |
| 12 | पं0 नारायण दत्त तिवारी | राजनीति | 2013 |
| 13 | श्री नरेन्द्र सिंह नेगी | लोकगायक, संगीत | 2014 |
| 14 | ज्योतिषाचार्य पंडित भाष्करानन्द लोहानी | ज्योतिष | 2015 |
| 15 | श्री सुरेश चन्द्र पंत | समाजसेवी | 2016 |
| 16 | पद्मश्री यशोधर मठपाल | शैल चित्रकला | 2017 |
| 17 | पद्मश्री बसन्ती देवी बिष्ट | लोक गायन | 2018 |
| 18 | पद्मश्री डॉ0 जीवन सिंह तितियाल | चिकित्सा (नेत्र रोग विशेषज्ञ) | 2019 |
| 19 | डॉ0 रीता बहुगुणा जोशी | राजनीति | 2020 |
| 20 | डॉ0 डी.एस. नेगी, महानिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, उ.प्र. | चिकित्सा | 2021 |

## पर्वतीय महापरिषद द्वारा प्रदत्त 'वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली वीरता सम्मान' तालिका

| क्रम | नाम | क्षेत्र विशेष | वर्ष |
|---|---|---|---|
| 1. | अमर शहीद कैप्टन आदित्य मिश्रा | आपरेशन विजय में 25.6.1999 को वटालिक सेक्टर में शहीद | 2006 |
| 2. | अमर शहीद लैफ्टिनेन्ट हरि सिंह बिष्ट | कश्मीर–पुंछ जिले के मझियारी गांव में 21 जुलाई 2001 को आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद | 2006 |
| 3. | अमर शहीद मेजर भूपेन्द्र मेहरा | 23 नवम्बर, 2009 को मणिपुर में उग्रवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में वीरगति को प्राप्त हुए। | 2012 |
| 4. | अमर शहीद हरीश सिंह नगरकोटी | 4 अक्टूबर 2010 को 15 राष्ट्रीय रायफल जम्मू–कश्मीर में पेट्रोलिंग के दौरान 28 वर्ष की आयु में वीरगति को प्राप्त हुए। | 2017 |
| 5. | अमर शहीद केवलानन्द द्विवेदी | वर्ष 1999 के कारगिल युद्ध में शहीद | 2018 |
| 6. | अमर शहीद सुनील जंग | कारगिल युद्ध में शहीद | 2019 |
| 7. | अमर शहीद आनन्द सिंह बिष्ट | 1971 भारत–पाक युद्ध में शहीद | 2020 |
| 8. | अमर शहीद नायक गोपाल सिंह अन्ना | जम्मू–कश्मीर में आतंकवादियों से मोर्चा लेते हुए शहीद हुए। | 2021 |

## पर्वतीय महापरिषद - विशिष्ट सेवाओं के पर्वतीय महापरिषद सम्मान-2021

| | | |
|---|---|---|
| 1. | डॉ0 एम0 सी0 पन्त चिकित्सा सम्मान – 2021 | डॉ0 भीम सिंह नेगी, प्रभारी–चिकित्सा प्रकोष्ठ |
| 2. | गोविन्द सिंह नयाल समाज सेवा सम्मान–2021 | श्री पीताम्बर दत्त भट्ट |
| 3. | दीवान सिंह डोलिया लोक कला सम्मान–2021 | श्रीमती विमल पन्त |
| 4. | गोपाल उपाध्याय साहित्य सम्मान–2021 | श्री घनानन्द पाण्डेय 'मेघ' |
| 5. | गौरा देवी महिला सम्मान – 2021 | श्रीमती अंजनी बोनाल |
| 6. | युवा सम्मान–2021 | श्री पुष्कर सिंह नयाल |
| 7. | उत्तरायणी कौथिग विशेष सम्मान–2021 | श्री के0 एन0 पाठक |

# पर्वतीय महापरिषद

**गायत्री शक्तिपीठ पुरम, उजरियांवा, गोमती नगर, लखनऊ (उ0प्र0)**

## पर्वतीय महापरिषद - संरक्षक मण्डल

| क्र.सं. | नाम | पता | मोबाइल नं0 |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री पूरन चन्द्र पाण्डे | डी– 1/4, वाल्दारोड, निशातगंज, लखनऊ | 9335764144 |
| 2 | श्री पीताम्बर भटट् | बी– 12 ए, सेक्टर– एच, अलीगंज, लखनऊ | 9415797435 |
| 3 | श्री हरीश चन्द्र जोशी | ''हाईलैण्ड विला'' न0– 3, 4 मड़ियांव गांव रोड, लखनऊ | 9335905194 |
| 4 | श्री एस0 एस0 भण्डारी | 592/118, राजीव नगर, तेलीबाग, लखनऊ | 9935498764 |
| 5 | श्री डी0 डी0 नरियाल 'एडवोकेट' | ए/16, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ | 9415462228 |
| 6 | प्रो0 आर0 सी0 पन्त | 3/88, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ | 9415469332 |
| 7 | श्री नवीन जोशी | 3/48, पत्रकारपुरम्, गोमती नगर, लखनऊ | 9793702888 |
| 8 | डॉ0 सी0 एस0 भटट् | 2/90, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ | 9935349888 |
| 9 | श्री नारायण दत्त भरतोला | सुभानी खेड़ा, तेलीबाग, लखनऊ | 9450931149 |
| 10 | श्री दीवान सिंह अधिकारी | ए– 29, कुर्मांचल नगर, लखनऊ | 9621528184 |
| 11 | श्री बी. एस. नेगी | विशाल खण्ड–2, गोमतीनगर, लखनऊ | 9415028655 |
| 12 | डॉ0 दिलीप सिंह बाफिला | 88 सी/485, शक्तिनगर, लखनऊ। | 9415001662 |
| 13 | मेजर जनरल राजीव पंत | सेक्टर–6, सी, वृन्दावन योजना, लखनऊ | 7080500781 |
| 14 | श्री नन्द किशोर उपाध्याय | 100, कमला नेहरू नगर, लखनऊ | 7060043017 |
| 15 | श्री पान सिंह भण्डारी 'एडवोकेट' | 229/14, पन्त नगर, खुर्रम नगर, लखनऊ | 8005332193 |
| 16 | श्री भुवन चन्द्र जोशी | भगवती कुटीर, 529क/1265, पंतनगर कालोनी, लखनऊ | 8004777688 |
| 17 | कर्नल हुकुम सिंह बिष्ट | 364–संस्कृति इन्क्लेव, रायबरेली रोड, लखनऊ | 9648006677 |
| 18 | श्री बी.एस. गर्ब्याल | चिनहट, लखनऊ | 9935880054 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 19 | श्री नन्दन सिंह बोरा | एस–114, शक्ति नगर, लखनऊ | 9451323107 |
| 20 | श्री इन्द्रजीत सिंह रावत | ए–301, आरिफ अपार्टमेन्ट, राय बिहारी लाल मार्ग, लखनऊ | 7311122675 |
| 21 | श्री प्रेम सिंह रौतेला | पंतनगर कालोनी, लखनऊ | 9889986672 |
| 22 | श्री राजेन्द्र सिंह रावत | कुर्मांचल नगर, लखनऊ | |

## पर्वतीय महापरिषद - सलाहकार मण्डल

| क्र.सं. | नाम | पता | मोबाइल नं0 |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री भवान सिंह रावत | 109, डिगडिगा, विशाल खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ। | 8318964901 |
| 2. | श्री रमेश चन्द्र पाण्डेय | 529घ/34, आदर्श नगर, कल्याणपुर, लखनऊ। | 9450462572 |
| 3. | श्री जे0 पी0 डिमरी | 9/9, पटेल नगर, इन्दिरा नगर, लखनऊ। | 9454172380 |
| 4. | श्री ज्ञान पन्त | बी0 1392, इन्दिरा नगर, लखनऊ। | 9956137539 |
| 5. | श्री गोपाल दत्त गरवाल | 1/497, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ। | 9415545285 |
| 6. | श्री सुन्दर पाल सिंह बिष्ट | ए–6, से0–बी0 राजीव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ। | 9335530329 |
| 7. | श्री गोपाल दत्त जोशी | सी–6, नेहरू विहार, कल्याणपुर, लखनऊ। | 9450917090 |
| 8. | श्री महेश सिंह बोहरा | सरस्वती पुरम, निकट कौशल हार्डवेयर, खरगापुर, लखनऊ। | 7068744444 |
| 9. | श्री पूरन चन्द्र पन्त | 4/316, विराट खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ। | 9415522653 |
| 10. | श्रीमती निर्मला पन्त | 5–ए, मानस नगर, जियामऊ, लखनऊ। | 9415306155 |
| 11. | श्री हरीश काण्डपाल | 3/330, विराट खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ। | 9415018097 |
| 12. | श्री जी0 बी0 फुलारा | 9/255, इन्दिरा नगर, लखनऊ। | 8795810735 |
| 13. | श्री प्रेम सिंह फर्स्वाण | पी–42, नेहरू इनक्लेव, गोमती नगर, लखनऊ। | 9140294363 |
| 14. | श्री वी0 के0 जोशी | 532 के0/217 के0 पंचवटी, डन्डैया बाजार, लखनऊ। | 9454501045 |
| 15. | कै0 राम सिंह बिष्ट | मोहारी बाग, तेलीबाग, लखनऊ। | 8004774890 |
| 16. | कमाण्डेण्ट के.एस. पिलख्वाल | ए–1, फलैट न0 1101, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ। | 9026766449 |
| 17. | श्री ललित मोहन सिंह मनराल | 13/117, इन्दिरानगर, मुंशीपुलिया, लखनऊ। | 9335808894 |
| 18. | श्री के0 एस0 चुफाल | ए–72/2, कुर्मांचल नगर, लखनऊ। | 9450300267 |
| 19. | श्री सूरवीर सिंह पुण्डीर | एस.एस.–2, डी–1/575–574, एल.डी.ए. कालोनी, लखनऊ। | 8005377853 |
| 20. | श्री सुरेन्द्र मालाकोटी | एच0आई0जी0 2/669, रश्मि खण्ड, शारदा नगर, लखनऊ। | |
| 21. | कै0 चन्दन सिंह नेगी | से0 19, इन्दिरा नगर, लखनऊ। | 9415914361 |
| 22. | श्री ललित मोहन जोशी एडवोकेट | जानकी पुरम, लखनऊ। | 9415767892 |
| 23. | श्री योगेश तिवारी | ए–5, कुर्मांचल नगर, लखनऊ। | 9936825000 |
| 24. | श्री दीप चन्द्र लोहानी | 5/895, विकास नगर, लखनऊ। | 9415517112 |
| 25. | श्री वीरेन्द्र जोशी | से0–9/250, इन्दिरा नगर, लखनऊ। | 9452679267 |
| 26. | श्री कैलाश सिंह पांगती | अलीगंज, लखनऊ। | 8879667320 |

# पर्वतीय महापरिषद - कार्यकारिणी - वर्ष 2020 से

| क्र. सं. | पद | नाम | पता | मोबाइल नं0 |
|---|---|---|---|---|
| 1. | मुख्य संयोजक | श्री टी0 एस0 मनराल | 5/760, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ। | 9839017696 |
| 2. | संयोजक | श्री के0 एन0 चन्दोला | 529/229, पन्तनगर, खुर्रमनगर, लखनऊ | 9415542112 |
| 3. | अध्यक्ष | श्री गणेश चन्द्र जोशी | सी 8, सरोजनी नगर, कानपुर रोड, लखनऊ | 9415514814 |
| 4. | वरिष्ठ उपाध्यक्ष | श्री सुरेश चन्द्र चन्दोला | एस.एस.–2, 1599/डी1 एल.डी.ए. कालोनी, लखनऊ | 9453436559 |
| 5. | उपाध्यक्ष | श्री कैलाश चन्द्र उपाध्याय | उत्कर्ष, 529 ई –36, भवन, इन्द्रप्रस्थ नगर, लखनऊ | 8858864252 |
| 6. | उपाध्यक्ष | श्री मोहन सिंह बिष्ट 'मोना' | 529 के/1358, पन्त नगर खुर्रम नगर, लखनऊ | 9415005817 |
| 7. | उपाध्यक्ष | श्री जी0 डी0 भट्ट | अपो. महाकाली इं.का., से.–बी, विजयनगर, नीलमत्था | 7052684995 |
| 8. | उपाध्यक्ष | श्री नन्दन सिंह बिष्ट | 8/303, से0–08, इन्द्रानगर, लखनऊ | 9956999670 |
| 9. | उपाध्यक्ष | श्री के0 एन0 पाण्डेय | बी 13, प्रगति विहार, कल्याणपुर, लखनऊ | 9415470479 |
| 10. | उपाध्यक्ष | श्री युवराज सिंह परिहार | सेक्टर–ई–14, कुर्माचल नगर, लखनऊ | 9451249153 |
| 11. | उपाध्यक्ष | श्री महेन्द्र पन्त | सी– 1163, इन्दिरा नगर, लखनऊ | 9450645319 |
| 12. | उपाध्यक्ष | श्रीमती सुमन रावत | एन–2016, यमुना अपार्टमेण्ट, गोमती नगर विस्तार | 8009199900 |
| 13. | उपाध्यक्ष | श्री बिशन दत्त जोशी | 591/489, बल्देव विहार, तेलीबाग, तेलीबागं | 9454037823 |
| 14. | उपाध्यक्ष | श्री भाष्कर चन्द्र काण्डपाल | ई–42, शिवानी विहार, कल्याणपुर | 9454413532 |
| 15. | उपाध्यक्ष | श्री बिशन सिंह बिष्ट | 594/ख/94/5 इब्राहिम पुर, नीलमथा, लखनऊ | 8090022224 |
| 16. | महासचिव | श्री महेन्द्र सिंह रावत | 82/40 ए, पन्त नगर, खुर्रम नगर, लखनऊ | 9454411649 |
| 17. | कोषाध्यक्ष | श्री के0 एस0 रावत | एल–2/38, से.–ए, एल.डी.ए. कालोनी, कानपुर रोड | 9450458345 |
| 18. | सांस्कृतिक सचिव | श्री गोविन्द सिंह बोरा | एल 2/265, विनीत खंड, गोमतीनगर | 9839323049 |
| 19. | सचिव | श्री हेमन्त सिंह गड़िया | 4 ए/250, विशाल खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ | 9839126641 |
| 20. | सचिव | श्री गणेश चन्द्र जोशी, एड. | 85/1, शक्ति नगर, फैजाबाद रोड, लखनऊ | 9415157840 |
| 21. | सचिव | श्री रमेश चन्द्र उपाध्याय | 98, अवधपुरी कालोनी, द्वितीय खरगापुर, गोमती नगर | 9415560277 |
| 22. | सचिव | श्री गोविन्द पाठक | 8/128, वसुन्धरापुरम् कालोनी, कल्याणपुर पश्चिम, | 9454205165 |
| 23. | संयुक्त सचिव | श्री एच0 सी0 ओली | एम0एम0डी0, 1/582, एल0डी0ए0 कोलोनी | 9839507244 |
| 24. | संयुक्त सचिव | श्री कृष्ण चन्द्र पन्त | ए – 1198, इन्दिरा नगर, लखनऊ | 8450458039 |
| 25. | संयुक्त सचिव | श्री पी0 पी0 पन्त | 94, आदर्श नगर, नीलमत्था, लखनऊ | 9918585998 |
| 26. | संयुक्त सचिव | श्री देवेन्द्र मिश्रा | सी–1091/3, इन्दिरानगर, लखनऊ | 9415560130 |
| 27. | संगठन सचिव | श्री ख्याली सिंह कड़ाकोटी | 3/657, विनीत खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ | 9335091539 |
| 28. | संगठन सचिव | श्री के0 एन पाठक | ई–177, से0–आई, एल0डी0ए0, कानपुर रोड | 8765228577 |
| 29. | संगठन सचिव | श्री मोहन सिंह बिष्ट, प्रेस | ई 44, कुर्मांचल नगर, लखनऊ | 9919830880 |
| 30. | संगठन सचिव | श्री रवीन्द्र सिंह बिष्ट | 1/380, विशाल खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ | 9839270075 |
| 31. | संगठन सचिव | श्री राजेश भट्ट | बी– 30, राजीव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ | 9198944555 |
| 32. | संगठन सचिव | श्री शंकर पाण्डेय | सी–70, नेहरू विहार, कल्याणपुर | 9415793625 |
| 33. | संगठन सचिव | श्री आनन्द सिंह भण्डारी | ए– 39, केशव विहार, कल्याणपरु, लखनऊ | 9454105660 |
| 34. | संगठन सचिव | श्री कमल सिंह नेगी | 1/818, विशाल खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ | 9415159234 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 35. | संगठन सचिव | श्री चंचल सिंह बोरा | 3/336, विकास नगर, लखनऊ | 9415514109 |
| 36. | संगठन सचिव | डॉ0 भीम सिंह नेगी | 49, जोशीपुरम्, आजाद नगर, लखनऊ | 9161812799 |
| 37. | संगठन सचिव | श्री के0 डी0 पाण्डेय | 240 बी न्यू शान्तिपुरम कालोनी आर0डी0एस0ओ0 | 9456315308 |
| 38. | संगठन सचिव | श्री बसंत वल्लभ चन्दोला | ए–115, शिवपुरी, कल्याणपुर, लखनऊ | 9415008533 |
| 39. | प्रचार सचिव | श्री मोहन भट्ट | गोपाल नगर, तेलीबाग, लखनऊ | 9450001322 |
| 40. | प्रचार सचिव | श्री गोपाल सिंह गैलाकोटी | बी–146, शिवानी विहार, कल्याणपुर, लखनऊ | 8400940119 |
| 41. | प्रचार सचिव | श्री मोहन सिंह भण्डारी | 592ग/77, मोहरी बाग खरिका तेलीबाग, लखनऊ | 7376082645 |
| 42. | प्रचार सचिव | श्री पूरन जोशी | ए–42/125, से.–डी, राजीव नगर, कल्याणपुर | 7985222894 |
| 43. | सह सां. सचिव | श्री नरेन्द्र सिंह फरत्याल | 17, रामआसरे पुरवा, खरगापुर, गोमती नगर | 7844023558 |
| 44. | सह सां. सचिव | श्री आनन्द सिंह कपकोटी | 5/82, विराज खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ | 9839183310 |
| 45. | सह–कोषाध्यक्ष | श्री महेन्द्र सिंह मेहता | एल–1/29, से.–सी, एल.डी.ए. कालोनी, कानपुर रोड | 8756992885 |
| 46. | कार्यकारिणी सदस्य | श्री ललित सिंह पोखरिया | सी–136/14, शिवानी विहार, कल्याणपुर, लखनऊ | 9839020107 |
| 47. | कार्यकारिणी सदस्य | श्री धन सिंह मेहता | 177/60, मानस विहार, शक्ति नगर, लखनऊ | 9336488805 |
| 48. | कार्यकारिणी सदस्य | श्री लक्षमण सिंह धामी | म0न0–592/747/6, राजीव नगर, तेलीबाग | 8127156368 |
| 49. | कार्यकारिणी सदस्य | श्री के0 एन0 पाटनी | 1 प्रीति नगर फेज– 2, सीतापुर रोड, लखनऊ | 9453430847 |
| 50. | कार्यकारिणी सदस्य | श्री हरीश चन्द्र भट्ट | से0–5/719, गोमतीनगर विस्तार, विदर्व खण्ड | 9451404820 |
| 51. | कार्यकारिणी सदस्य | श्री बसन्त बल्लभ भट्ट | एस0एस0 2/465, से0–एफ, जानकी पुरम | 9415912522 |
| 52. | संम्प्रेक्षक | श्री गिरीश चन्द्र कोठारी | 3/487, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ | 9452738807 |

## पर्वतीय महापरिषद - धार्मिक प्रकोष्ठ

| क्र.सं. | नाम | पद | मोबाइल नं0 |
|---|---|---|---|
| | श्री विशन दत्त जोशी | (प्रभारी) | 9454037823 |
| 1. | पं0 वंशीधर उप्रेती | (संरक्षक) | 9450400599 |
| 2. | पं0 राजेन्द्र जोशी | (संयोजक) | 9415462900 |
| 3. | पं0 नारायण दत्त पाठक | (अध्यक्ष) | 9616986919 |
| 4. | पं0 दिनेश चन्द्र उप्रेती | (महासचिव) | 9450363761 |
| 5. | पं0 नवीन चन्द्र पाण्डेय | (सचिव) | 9956619262 |
| 6. | पं0 लक्ष्मी दत्त चौबे | (वरिष्ठ उपाध्यक्ष) | 9838276096 |
| 7. | पं0 गोपाल दत्त सती | (उपाध्यक्ष) | 9450654436 |
| 8. | पं0 भगवती प्रसाद पन्त | (उपाध्यक्ष) | 9452679628 |
| 9. | पं0 मुकेश चन्द्र पाण्डेय | (संगठन सचिव) | 9452738841 |
| 10. | पं0 घनश्याम जोशी | (उपाध्यक्ष) | 9410508613 |
| 11. | पं0 तारा दत्त जोशी | (उप सचिव) | 9956384576 |
| 12. | पं0 मनोज कुमार पाण्डेय | (प्रचार सचिव) | 9451307902 |
| 13. | पं0 आनन्द जोशी | (प्रचार सदस्य) | 9839612652 |
| 14. | पं0 वासुदेव पाण्डेय | (प्रचार सदस्य) | 9839612652 |
| 15. | पं0 गिरीश चन्द्र काण्डपाल | (सदस्य) | 9412908860 |
| 16. | पं0 देवी दत्त पन्त | (सदस्य) | 8417815782 |

## पर्वतीय महापरिषद - सैन्य प्रकोष्ठ

| क्र.सं. | नाम | पद | क्र.सं. | नाम | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | श्री जी0डी0 भट्ट | प्रभारी | 23. | श्री लक्ष्मण सिंह धामी | उपाध्यक्ष |
| 2. | कै0 राम सिह बिष्ट | संरक्षक | 24. | श्री गिरीश चन्द्र पाण्डेय | उपाध्यक्ष |
| 3. | श्री चामू सिंह ताकुली | संरक्षक | 25. | श्री भोर सिंह धामी | उपाध्यक्ष |
| 4. | श्री नन्दन सिंह बिष्ट | संरक्षक | 26. | श्री शिव चंद | उपाध्यक्ष |
| 5. | श्री करम सिंह कार्की | संरक्षक | 27. | श्री दिनेश चन्द्र पाण्डेय | उपाध्यक्ष |
| 6. | श्री लक्षमण सिंह बिष्ट | संरक्षक | 28. | श्री कुण्डल सिंह मेहता | उपाध्यक्ष |
| 7. | श्री एस0एस0 सेठी | संरक्षक | 29. | श्री खुशाल सिंह बिष्ट | उपाध्यक्ष |
| 8. | श्री गोपाल सिंह मेहता | संरक्षक | 30. | श्री प्रकाश सिंह बिष्ट | महासचिव |
| 9. | श्री बिशन सिंह बिष्ट | संरक्षक | 31. | श्री बसन्त बल्लभ उपाध्याय | सचिव |
| 10. | श्री जगत सिंह भर्तवाल | संरक्षक | 32. | श्री भगवान सिंह नगरकोटी | सचिव |
| 11. | श्री मोती सिंह | संरक्षक | 33. | श्री कुन्दन सिंह मेहता | सचिव |
| 12. | श्री नन्दन सिंह बिष्ट | संरक्षक | 34. | श्री अर्जुन सिंह नगरकोटी | संगठन सचिव |
| 13. | श्री खुशाल सिंह देउपा | सलाहकार | 35. | श्री कुन्दन सिंह नगरकोटी | संगठन सचिव |
| 14. | श्री राजेन्द्र सिंह धामी | सलाहकार | 36. | श्री जगत सिंह भण्डारी | संगठन सचिव |
| 15. | श्री बद्री सिंह | सलाहकार | 37. | श्री गोबिन्द सिंह नगरकोटी | संगठन सचिव |
| 16. | श्री जगत सिंह बोरा | सलाहकार | 38. | श्री नरेन्द्र सिंह कार्की | संगठन सचिव |
| 17. | श्री प्रेम गिरी | मुख्य संयोजक | 39. | श्री कुन्दन सिंह रावत | प्रचार सचिव |
| 18. | श्री चन्द्र शेखर पिलख्वाल | संयोजक | 40. | श्री जय भारत सिंह मेहरा | प्रचार सचिव |
| 19. | श्री कुन्दन सिंह अधिकारी | सह संयोजक | 41. | श्री पी0 सी0 पाण्डेय | प्रचार सचिव |
| 20. | श्री राजेन्द्र सिंह बिष्ट | अध्यक्ष | 42. | श्री महेश प्रसाद | प्रचार सचिव |
| 21. | श्री के0 डी0 पाण्डेय | व0 उपाध्यक्ष | 43. | श्री केदार सिंह | प्रचार सचिव |
| 22. | श्री मोहन सिंह भण्डारी | उपाध्यक्ष | | | |

## पर्वतीय महापरिषद - चिकित्सा प्रकोष्ठ

| क्र.सं. | नाम | पद | मोबाइल नं0 | क्षेत्र |
|---|---|---|---|---|
| 1. | डॉ0 बी0 एस0 नेगी | प्रभारी | 9450393596 | कानपुर रोड |
| 2. | श्रीमती निर्मला जोशी | संरक्षक | 9935866799 | इन्दिरा नगर |
| 3. | प्रो0 आर0 सी0 पन्त | सलाहकार | 9415469332 | गोमती नगर |
| 4. | डॉ0 सी0 एस0 नेगी | सलाहकार | 9415059353 | सीतापुर |
| 5. | डॉ0 रतीश जुयाल | सलाहकार | 9235655277 | साउथ सिटी |
| 6. | डॉ0 आर0 सी0 पाण्डेय | सलाहकार | 9335097717 | लखीमपुर |
| 7. | श्री सतीश जोशी | सलाहकार | 9415005326 | तेलीबाग |
| 8. | डॉ0 आर0 सी0 उप्रेती | अध्यक्ष | 9415519653 | विकास नगर |
| 9. | डॉ0 उषा भट्ट | उपाध्यक्ष | 9415424152 | जानकी पुरम |
| 10. | डॉ0 राजेन्द्र सिंह रावत | उपाध्यक्ष | 9415469332 | कानपुर रोड |
| 11. | डॉ0 राजेश भट्ट | महासचिव | 9415424152 | जानकी पुरम |
| 12. | डॉ0 प्रियंका | सचिव | 9044205147 | कल्याणपुर |
| 13. | डॉ0 रवि बिष्ट | संगठन सचिव | 9807411240 | सरोजनी नगर |

# पर्वतीय महापरिषद - महिला प्रकोष्ठ

| क्रम | नाम | पद | मोबाइल नं0 | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| 1. | श्रीमती सुमन रावत | प्रभारी | 9455555576 | गोमती नगर |
| 2. | श्रीमती अंजली बोनाल | मुख्य संयोजक | 9450173952 | कल्याणपुर |
| 3. | श्रीमती धना बाफिला | संयोजक | 8299669465 | भाक्ति नगर |
| 4. | श्रीमती शशि जोशी | संयोजक | 9532885939 | कल्याणपुर |
| 5. | श्रीमती राधा बिष्ट | संयोजक | 8687932774 | कल्याणपुर |
| 6. | श्रीमती गीता उपाध्याय | संयोजक | 7905504659 | कमला नेहरू नगर |
| 7. | श्रीमती मोहिनी धपोला | संयोजक | 8810250247 | इन्द्रा नगर |
| 8. | श्रीमती माया जोशी | संयोजक | 7619015082 | पन्त नगर |
| 9. | श्रीमती गंगा भट्ट | अध्यक्ष | 8887629766 | नीलमथा |
| 10. | श्रीमती जानकी अधिकारी | व0 उपाध्यक्ष | 945084776 | तेलीबाग |
| 11. | श्रीमती मन्जू शर्मा पडेलिया | व0 उपाध्यक्ष | 9415014580 | आई0टी0 चौराहा |
| 12. | श्रीमती माया भट्ट | व0 उपाध्यक्ष | 9415795952 | जानकी पुरम |
| 13. | श्रीमती चित्रा काण्डपाल | उपाध्यक्ष | 9415320877 | गोमती नगर |
| 14. | श्रीमती दीपा बिष्ट | उपाध्यक्ष | 9415896427 | कल्याणपुर |
| 15. | श्रीमती सुधा चंदोला | उपाध्यक्ष | 9129810355 | पन्त नगर |
| 16. | श्रीमती हेमा डोलिया | उपाध्यक्ष | 9415302780 | पन्त नगर |
| 17. | श्रीमती कुसुम बहुगुणा | उपाध्यक्ष | 9795985387 | पेपर मिल |
| 18. | श्रीमती नीलम जोशी | उपाध्यक्ष | 9452958770 | कुर्मांचल नगर |
| 19. | श्रीमती भारती काण्डपाल | उपाध्यक्ष | 9451388347 | गोमती नगर |
| 20. | श्रीमती दमयंती नेगी | उपाध्यक्ष | 9415159234 | गोमती नगर |
| 21. | श्रीमती सुमन मनराल | महासचिव | 9795161561 | इन्द्रा नगर |
| 22. | श्रीमती लता देवड़ी | सचिव | 9452239130 | पन्त नगर |
| 23. | श्रीमती दीपा ऐरी | सचिव | 8604958825 | तेली बाग |
| 24. | श्रीमती तृप्ति काण्डपाल | सचिव | 8840897242 | इन्द्रा नगर |
| 25. | श्रीमती बीना काण्डपाल | सचिव | 9793990525 | जानकी पुरम |
| 26. | श्रीमती नमिता पाण्डेय | सचिव | 9452677165 | इन्द्रा नगर |
| 27. | श्रीमती चित्रा जोशी | सचिव | 9554061757 | गोमती नगर |
| 28. | श्रीमती नीरू काण्डपाल | सचिव | 9410937374 | विकास नगर |
| 29. | श्रीमी दीपा जोशी | संयुक्त सचिव | 9418971753 | इन्द्र प्रस्थ नगर |
| 30. | श्रीमती चन्द्रा जोशी | संयुक्त सचिव | 9451404706 | इन्द्र प्रस्थ नगर |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 31. | श्रीमती मीरा बिष्ट | संयुक्त सचिव | 9532037528 | सरोजनी नगर |
| 32. | श्रीमती आनन्दी भण्डारी | संगठन सचिव | 9621537010 | कल्याणपुर |
| 33. | श्रीमती दीपा बनौला | संगठन सचिव | 9765828925 | कल्याणपुर |
| 34. | सुश्री जीवन कालाकोटी | संगठन सचिव | 8009443989 | सरोजनी नगर |
| 35. | श्रीमती निशा भट्ट | संगठन सचिव | 8563804004 | भेड़ापुर |
| 36. | श्रीमती संतोष फर्स्वाण | संगठन सचिव | 9415325478 | गोमती नगर |
| 37. | श्रीमती सरोज खुल्बे | सांस्कृतिक प्रभारी | 9956784969 | इन्द्रा नगर |
| 38. | श्रीमती नन्दा रावत | सांस्कृतिक सचिव | 9451176328 | विकास नगर |
| 39. | श्रीमती मन्जू पाण्डेय | सांस्कृतिक सचिव | 7703090575 | कल्याणपुर |
| 40. | श्रीमती पिंकी नौटियाल | सांस्कृतिक सचिव | 9670012658 | नीलमथा |
| 41. | श्रीमती माया नेगी | सांस्कृतिक सचिव | 7668097421 | पन्त नगर |
| 42. | श्रीमती आशा रावत | सांस्कृतिक सचिव | 9936322646 | गोमती नगर |
| 43. | श्रीमती नीता जोशी | सांस्कृतिक सचिव | 7905555415 | गोमती नगर |
| 44. | श्रीमती बीना नौटियाल | सांस्कृतिक सचिव | 9235757919 | विकास नगर |
| 45. | श्रीमती दीपा लोहनी | सांस्कृतिक सचिव | 9458617874 | पन्त नगर |
| 46. | श्रीमती जानकी बोरा | सांस्कृतिक सचिव | 8418097095 | विकास नगर |
| 47. | श्रीमती उषा रावत | सांस्कृतिक सचिव | 8808157158 | गोमती नगर |
| 48. | श्रीमती पुष्पा नेगी | सांस्कृतिक सचिव | 8953024968 | गोमती नगर |
| 49. | श्रीमती दीप्ति जोशी | सांस्कृतिक सचिव | 9451251321 | इन्दिरा नगर |
| 50. | श्रीमती राधा बोरा | सांस्कृतिक सचिव | 9369892394 | कल्याणपुर |
| 51. | श्रीमती मीना पाण्डेय | सांस्कृतिक सचिव | 7007246926 | कल्याणपुर |
| 52. | श्रीमती मंजू सनवाल | प्रचार सचिव | 9450649253 | कल्याणपुर |
| 53. | श्रीमती बसंती पुजारा | प्रचार सचिव | 8858588254 | तेलीबाग |
| 54. | श्रीमती बिमला रावत | प्रचार सचिव | 7985057621 | कल्याणपुर |
| 55. | श्रीमती ममता रावत | प्रचार सचिव | 7985761729 | विकास नगर |
| 56. | श्रीमती बीना रावत | प्रचार सचिव | 9450458345 | एल.डी.ए., कानपुर रोड |
| 57. | श्रीमती मोती चौहान | प्रचार सचिव | 9838431069 | भाक्ति नगर |
| 58. | श्रीमती रेनू काण्डपाल | प्रचार सचिव | 9838599513 | कुर्मांचल नगर |
| 59. | श्रीमती हेमा जोशी | प्रचार सचिव | 8052039741 | अलीगंज |
| 60. | श्रीमती नमिता लोहनी | सदस्य कार्यकारिणी | 9532284257 | शक्ति नगर |
| 61. | श्रीमती शिव माया थापा | सदस्य कार्यकारिणी | 9838575839 | तेली बाग |
| 62. | श्रीमती सावित्री खत्री | सदस्य कार्यकारिणी | 8756560552 | तेली बाग |
| 63. | श्रीमती राधा खत्री | सदस्य कार्यकारिणी | 8687238086 | तेली बाग |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 64. | श्रीमती अंजली तिवारी | सदस्य कार्यकारिणी | 9919850150 | जानकी पुरम |
| 65. | श्रीमती मीरा रावत | सदस्य कार्यकारिणी | 9450376011 | जानकी पुरम |
| 66. | श्रीमती मधु काण्डपाल | सदस्य कार्यकारिणी | 8318600812 | गोमती नगर |
| 67. | श्रीमती चम्पा मेहरा | सदस्य कार्यकारिणी | 6389393975 | नीलमथा |
| 68. | श्रीमती तारा आर्या | सदस्य कार्यकारिणी | 9455321035 | गोमती नगर |
| 69. | श्रीमती सोनी पांगती | सदस्य कार्यकारिणी | 9322243560 | गोमती नगर |
| 70. | श्रीमती हेमा वाँणगी | सदस्य कार्यकारिणी | 9454683365 | गोमती नगर |
| 71. | श्रीमती पुष्पा कैड़ा | सदस्य कार्यकारिणी | 9450905832 | गोमती नगर |
| 72. | श्रीमती कविता साही | सदस्य कार्यकारिणी | 9119907238 | गोमती नगर |
| 73. | श्रीमती प्रभा बिष्ट | सदस्य कार्यकारिणी | 8004210597 | इन्द्र प्रस्थ नगर |
| 74. | श्रीमती माधुरी भट्ट | सदस्य कार्यकारिणी | 9450389800 | इन्द्र प्रस्थ नगर |
| 75. | श्रीमती विमला पालनी | सदस्य कार्यकारिणी | 8808304400 | |
| 76. | श्रीमती राधा बुड़ाकोटी | सदस्य कार्यकारिणी | 9984127515 | गोमती नगर |
| 77. | श्रीमती सुशीला नेगी | सदस्य कार्यकारिणी | 9559882880 | कल्याणपुर |
| 78. | श्रीमती पूनम बोरा | सदस्य कार्यकारिणी | 8840767898 | गोमती नगर |

## पर्वतीय महापरिषद - युवा प्रकोष्ठ

| क्र0सं0 | नाम | पद | मोबाइल नं0 |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री मोहन सिंह बिष्ट 'मोना' | प्रभारी | 9415005817 |
| 2. | श्री सुदीप जोशी | मुख्य सलाहकार | 9415087153 |
| 3. | श्री जीवन ज्योति पाण्डेय | मुख्य संरक्षक | 9792299990 |
| 4. | श्री कैलाश पाण्डेय | संरक्षक | 6386117407 |
| 5. | श्री मुकेश जोशी | मुख्य संयोजक | 6394488369 |
| 6. | श्री सुनील किमोठी | संयोजक | 9415788091 |
| 7. | श्री पुष्कर सिंह नयाल | अध्यक्ष | 9415124181 |
| 8. | श्री जितेन्द्र कुमार उपाध्याय | वरिष्ठ उपाध्यक्ष | 7905234157 |
| 9. | श्री प्रशान्त सिंह भण्डारी | उपाध्यक्ष | 8115127333 |
| 10. | श्री मनीश सिंह रावत | उपाध्यक्ष | 9454152514 |
| 11. | श्री टी0 डी0 काण्डपाल | उपाध्यक्ष | 9415580074 |
| 12. | श्री पूरन सिंह नयाल | उपाध्यक्ष | 7617852089 |
| 13. | श्री गोविन्द सिंह चौहान | उपाध्यक्ष | 8299830525 |
| 14. | श्री भुवन चन्द्र पाण्डेय जहांवासी | महासचिव | 8188899987 |
| 15. | श्री दीप चन्द्र जोशी | सचिव | 9453337700 |
| 16. | श्री प्रकाश बिष्ट | सह सचिव | 8473849666 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 17. | श्री के0 डी0 जोशी | मीडिया प्रभारी | 9919562432 |
| 18. | श्री नवीन बिष्ट | संगठन सचिव | 8318877862 |
| 19. | श्री उमराव सिंह बिष्ट | संगठन सचिव | 7239023254 |
| 20. | श्री गोविन्द सिंह बाफिला | संगठन सचिव | 9415763615 |
| 21. | श्री किशोर पाण्डेय | संगठन सचिव | 9415516599 |
| 22. | श्री शेखर पाण्डेय | संगठन सचिव | 9616594039 |
| 23. | श्री सुमित बिष्ट | संगठन सचिव | 7571911941 |
| 24. | श्री भुवन नेगी | संगठन सचिव | 9335257600 |
| 25. | श्री प्रदीप सिंह बिष्ट | संगठन सचिव | 7309048512 |
| 26. | श्री सूरज सिंह | संगठन सचिव | 9919644714 |
| 27. | श्री महेन्द्र सिंह माही | संगठन सचिव | 9554000067 |
| 28. | श्री पुष्कर गड़ाकोटी | संगठन सचिव | 9451734797 |
| 29. | श्री महेश चन्द्र पाण्डेय | संगठन सचिव | 9140745575 |
| 30. | श्री नीलेश नेगी | संगठन सचिव | 8853888886 |
| 31. | श्री पंकज गयाल | सदस्य कार्यकारिणी | 8755936977 |
| 32. | श्री संजय पाण्डेय | संयुक्त सचिव | 9336502589 |
| 33. | श्री प्रदीप सिंह चंद | संयुक्त सचिव | 8299682306 |
| 34. | श्री कमल भाकुनी | संयुक्त सचिव | 7905971120 |
| 35. | श्री दयाल सिंह रावत | संयुक्त सचिव | 9415889624 |
| 36. | श्री मोहन भट्ट | संयुक्त सचिव | 9419592642 |
| 37. | श्री प्रकाश पाण्डेय | संयुक्त सचिव | 9450009917 |
| 38. | श्री देवेन्द्र सिंह नेगी | संयुक्त सचिव | 9919335888 |
| 39. | श्री संजय कपकोटी | प्रचार सचिव | 7905517958 |
| 40. | श्री दयाल चन्द्र जोशी | प्रचार सचिव | 9838558549 |
| 41. | श्री दीपक चिलकोटी | प्रचार सचिव | 9956846204 |
| 42. | श्री राजेन्द्र रावत | प्रचार सचिव | 9616370223 |
| 43. | श्री के0 एस0 खोलिया | प्रचार सचिव | 9411269433 |
| 44. | श्री रवि नेगी | प्रचार सचिव | 7052551988 |
| 45. | श्री जगत कार्की | प्रचार सचिव | 9335344881 |
| 46. | श्री अजय बोरा | कार्यकारिणी सदस्य | 9454905711 |
| 47. | श्री पंकज सिंह | कार्यकारिणी सदस्य | 8114223503 |
| 48. | श्री धीरज मेहता | कार्यकारिणी सदस्य | 8931066579 |
| 49. | श्री महेश जोशी | कार्यकारिणी सदस्य | 9450366103 |
| 50. | श्री कुन्दन सिंह अधिकारी | कार्यकारिणी सदस्य | 9307907821 |
| 51. | श्री मंगल सिंह मेहता | कार्यकारिणी सदस्य | 9794863122 |
| 52. | श्री योगेश जोशी | कार्यकारिणी सदस्य | 9598962742 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 53. | श्री गोवर्धन काण्डपाल | कार्यकारिणी सदस्य | 8840408954 |
| 54. | श्री राजेन्द्र सिंह बिष्ट | कार्यकारिणी सदस्य | 6656093059 |
| 55. | श्री चन्द्र कांत जोशी | कार्यकारिणी सदस्य | 8090780906 |
| 56. | श्रीमती कंचन पाठक | कार्यकारिणी सदस्य | 8318924207 |
| 57. | श्री रमेश चन्द्र शर्मा | कार्यकारिणी सदस्य | 9919549530 |
| 58. | श्री सूरज सिंह रावत | कार्यकारिणी सदस्य | 7271081652 |

## पर्वतीय महापरिषद - उद्यमी प्रकोष्ठ

| क्र0सं0 | नाम | पद | मोबाइल नं0 |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री रवीन्द्र सिंह बिष्ट | प्रभारी | 9839270075 |
| 2. | श्री गोपाल सिंह गैलाकोटी | सह–प्रभारी | 8400940119 |
| 3. | श्री चन्द्र शेखर तिवारी | अध्यक्ष | 9415082616 |
| 4. | श्री नन्दन सिंह रावत | वरिष्ठ उपाध्यक्ष | 9956078917 |
| 5. | श्री हरीश तिवारी | उपाध्यक्ष | 8400081111 |
| 6. | श्री दिलीप सिंह | महासचिव | 9415793680 |
| 7. | श्री महेश सिंह बिष्ट | सचिव | 7071002015 |
| 8. | श्री लाल सिंह बिष्ट | संगठन सचिव | 7703078477 |
| 9. | श्री योगेश शर्मा | संयुक्त सचिव | 9839928544 |
| 10. | श्री जगत सिंह मेहरा | प्रचार सचिव | 8303063106 |
| 11. | श्री अमित सिंह नेगी | कार्यकारिणी सदस्य | 8707625571 |
| 12. | श्री धीरेन्द्र सिंह बिष्ट | कार्यकारिणी सदस्य | 7905888897 |

## पर्वतीय महापरिषद - खेल प्रकोष्ठ

| क्रम | नाम | पद | क्रम | नाम | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | श्री हरीश चन्द्र भट्ट | प्रभारी | 9. | श्री हरीश काण्डपाल | |
| 2. | श्री ख्याली सिंह कड़ाकोटी | सह प्रभारी | 10. | श्री पुष्कर सिंह नयाल | |
| 3. | श्री गोविन्द सिंह बोरा | | 11. | श्री टी0 डी0 काण्डपाल | |
| 4. | श्री के0 एस0 पिलख्वाल | | 12. | श्री कमल सिंह नेगी | |
| 5. | श्री शंकर पाण्डेय | | 13. | श्री मोहन चन्द्र भट्ट | |
| 6. | श्री बसंत बल्लभ भट्ट | | 14. | श्री बिशन सिंह बिष्ट | |
| 7. | श्री रमेश चन्द्र उपाध्याय | | 15. | श्री देवेन्द्र मिश्रा | |
| 8. | श्री वीरेन्द्र जोशी | | 16. | श्री खजान सिंह नेगी | |

## पर्वतीय महापरिषद - सांस्कृतिक प्रकोष्ठ

| क्रम | नाम | पद | क्रम | नाम | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | श्री महेंद्र पंत | प्रभारी | 12. | श्री गिरीश चन्द्र कोठारी | |
| 2. | श्री गोपाल जोशी | | 13. | श्री मोहन भट्ट | |
| 3. | श्री गोविंद सिंह बोरा | | 14. | श्री नरेंद्र सिंह फरत्याल | |
| 4. | श्री रमेश उपाध्याय | | 15. | श्री ख्याली सिंह कड़ाकोटी | |
| 5. | श्री गणेश चंद्र जोशी (एडवोकेट) | | 16. | श्री पूरन नयाल | |
| 6. | श्री आनंद सिंह कपकोटी | | 17. | श्री राजेंद्र सिंह बिष्ट | |
| 7. | श्री भुवन जहाँवासी | | 18. | श्री शंकर पांडेय | |
| 8. | श्री बलवंत वाणगी | | 19. | श्रीमती गंगा भट्ट | |
| 9. | श्री बसंत बलभ भट्ट | | 20. | श्रीमती सुमन मनराल | |
| 10. | श्री भुवन पांडेय | | 21. | श्रीमती दीप्ति जोशी | |
| 11. | श्री चंचल सिंह बोरा | | 22. | श्रीमती आशा रावत | |

## पर्वतीय महापरिषद - विशेष आमंत्रित सदस्य

| क्र0सं0 | नाम | पता | मोबाइल नं0 |
|---|---|---|---|
| 1 | डॉ0 हेम चन्द्र पाण्डेय | वाइस चांसलर एच.एन.बी. उत्तराखण्ड मेडिकल, एजूकेशन यू0, देहरादून। | |
| 2 | डॉ0 ए0 के0 चन्दोला | पी0 जी0 आई0 लखनऊ। | 9415023834 |
| 3 | श्री गोविन्द पन्त राजू | गोमती नगर, लखनऊ। | 9415014980 |
| 4 | श्री नरेन्द्र सिंह देवड़ी | 229/18, पन्त नगर, लखनऊा। | 9839455969 |
| 5 | श्री त्रिलोक सिंह अधिकारी | 54, कुर्मांचल नगर, लखनऊ। | 9415024026 |
| 6 | श्री जगदीश जोशी | पन्त नगर कालोनी, लखनऊ। | |
| 7 | श्री अशोक पाण्डेय | लखनऊ। | |
| 8 | श्री प्रेम बल्लभ पन्त | कुर्मांचल नगर, लखनऊ। | |
| 9 | श्री दलवीर सिंह मनराल | ई– 43कुर्मांचल नगर, लखनऊ। | 9453415205 |
| 10 | श्री घनानन्द पाण्डेय मेघ | 82/52, 529 क/1385, खुर्रम नगर, लखनऊ। | 9415426034 |
| 11 | श्रीमती रश्मि बड़थ्वाल | इन्दिरा नगर, लखनऊ। | |
| 12 | कैप्टन भगवान सिंह कठायत | 592ए/378, सुभानी खेड़ा, तेलीबाग, लखनऊ। | 9453195303 |
| 13 | श्री राजेन्द्र सिंह बिष्ट | पिकनिक स्पॉट रोड, खुर्रम नगर, लखनऊ। | 9936952901 |
| 14 | श्री प्रेम सिंह फर्स्वाण | पी 42, नेहरू इन्क्लेव, गोमती नगर, लखनऊ | 9415026648 |
| 15 | श्री हरीश काण्डपाल | 3/320, विराट खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ | 9415018097 |
| 16 | श्री गोपाल सिंह मेहता | 592 घ/13, राजीव नगर, तेलीबाग, लखनऊ | 9335250942 |
| 17 | श्री गिरीश चन्द्र शर्मा | मकान नं. 11, इन्द्रप्रस्थ नगर, महानगर, लखनऊ | 9415158511 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 18 | श्री जे0 डी0 सती | ए/118, शिवपुरी, कल्याणपुर, लखनऊ | 9452266400 |
| 19 | श्री गोविन्द सिंह मेहरा | इ०एस02/192, जानकीपुरम, से0– एफ, लखनऊ | 7705817081 |
| 20 | श्री सुरेन्द्र सिंह पोखरिया | 363, राजीव नगर, घुसियाना, तेलीबाग, लखनऊ | 9005805509 |
| 21 | श्री कैलाश बिनवाल | 529क/1019, पंतनगर कालोनी, खुर्रमनगर, लखनऊ। | 9336181148 |
| 22 | श्री वी0 वी आर्या | ए–160, केशव बिहार कल्याणपुर | 9450300074 |
| 23 | डॉ दीप चन्द्र लोहुमी | महानगर, लखनऊ | |
| 24 | श्री सी0 एस0 नेगी | बी– 747, सेक्टर– सी, महानगर, लखनऊ | 9335920835 |
| 25 | श्री सी० डी० जोशी | 263, कौशलपुरी कालोनी, गोमती नगर, लखनऊ | 9452550528 |
| 26 | श्री विपिन सिंह | कुर्मांचल नगर, लखनऊ | 9415081577 |
| 27 | कैप्टन बसन्त बल्लभ भटट् | नीलमथा, लखनऊ | 9455933806 |
| 28 | श्री दीप चन्द्र जोशी | ए 60, कल्याणपुर, लखनऊ | 9918300480 |
| 29 | श्री नवीन चौधरी | डी 215 कुर्मांचल नगर, ए ब्लाक इन्दिरा नगर, लखनऊ | 9451507133 |
| 30 | श्री उमेश सनवाल | 529 क/1147, पन्तनगर खुर्रमनगर, लखनऊ | 9415922898 |
| 31 | श्री हरीश चन्द्र पन्त | 25, मुरली नगर, कैण्ट रोड, लखनऊ | 9335210283 |
| 32 | श्री पी0 सी0 पन्त | 4/316, विराट खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ | 9415526653 |
| 33 | श्री हरीश उपाध्याय | 529 ई/36, उत्कृर्ष भवन, इन्द्रप्रस्थ नगर, लखनऊ। | 7860901077 |
| 34 | श्री मुकेश जोशी | बी–77, शिवानी बिहार, कल्याणपुर | 9415561358 |
| 35 | श्री राजवीर सिंह पंवार | 645ए/1323ए, जानकीपुरम, लखनऊ। | 9919588846 |
| 36 | श्री राजेन्द्र सिंह | एम.एम.डी.–1/491, एल.डी.ए. कालोनी, कानपुर रोड | 9839011385 |
| 37 | डा0 सविता भट्ट तिवारी | 898, शेखूपुरा कालोनी, विकास नगर, लखनऊ। | 9415521221 |
| 38 | डा0 सुभाष चन्द्र सुन्दरियाल | संयुक्त निदेशक स्वास्थ्य निदेशालय, | 9415329431 |
| 39 | डॉ0 यतेन्द्र कुमार पाठक | संयुक्त निदेशक स्वास्थ्य निदेशालय, | 9454606278 |
| 40 | डॉ0 दरपन सिंह नबियाल | संयुक्त निदेशक स्वास्थ्य निदेशालय, | 9759278948 |
| 41 | डॉ0 सिद्धार्थ पन्त | रेडियेशन आंकोलाजिस्ट सीनियर रेजिडेन्ट | 8108436533 |
| 42 | डॉ0 रेहा रखोलिया पन्त | 5–ए, मानस नगर, जियामऊ, लखनऊ | |
| 43 | डॉ0 अर्चना घिल्डियाल | फिजिओलाजी विशेषज्ञ किंगजार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, | 9450300400 |
| 44 | डॉ0 ललित मोहन जोशी | हृदय रोग सर्जन डा0 राम मनोहर लोहियाआयुर्विज्ञान | 8176001019 |
| 45 | डॉ0 भुवन चन्द्र तिवारी | हृदयोग विशेषज्ञ डा0 राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान | 9721798930 |
| 46 | डॉ0 देवेन्द्र सिंह नेगी | 1/342, विराट खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ। | 9415003178 |
| 47 | डॉ0 पी0के0 जोशी | 7, देवनगर कालोनी, सेक्टर– 8, इन्द्रा नगर, लखनऊ। | 8754048880 |
| 48 | डॉ0 बी० बी० भट्ट | डी–1311, इन्द्रा नगर, लखनऊ। | 7376826255 |
| 49 | डॉ0 अनिता नेगी | 1/342, विराट खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ। | 9450904726 |
| 50 | डा0 सुराशि सिंह | 4/91, विश्वासखण्ड, गोमती नगर, बाल रोग विशेषज्ञ | 9956773482 |
| 51 | डॉ0 नरेन्द्र सिंह बाफिला | निश्चेतना विशेषज्ञ, शक्ति नगर, लखनऊ। | 9936120923 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 52 | डॉ0 अनन्या रावत | 886/485, शक्ति नगर, इन्दिरानगर, लखनऊ। | 9742710781 |
| 53 | डॉ0 हिम्मत सिंह दानू | 107, ट्रान्जिट हास्टल, यू.पी. मेडिकल एवं हेल्थ, निशातगंज | 9457315847 |
| 54 | डॉ0 सी० एस० नेगी | हड्डी रोग, विशेषज्ञ, सीतापुर रोड, लखनऊ। | 9415059353 |
| 55 | डॉ0 रेनू पन्त | स्त्री रोग, विशेषज्ञ, बलरामपुर हॉस्पिटल, लखनऊ। | 8004730509 |
| 56 | डॉ0 राजीव पन्त | कैंसर रोग विशेषज्ञ, लखनऊ कैसर इन्स्टिट्यूट | 7705909410 |
| 57 | डॉ0 आशा नेगी(रि0मेज0) | स्त्री रोग विशेषज्ञ, सी0डी0आर0आई0, लखनऊ | 9415913967 |
| 58 | डॉ0 आकांक्षा गोदियाल | त्वचा रोग विशेषज्ञ, ओ0पी0 चौधरी हॉस्पिटल, लखनऊ। | 9559935059 |
| 59 | डॉ0 आर0एल0 साह | त्वचा रोग विशेषज्ञ, बी0–92, इन्द्रा नगर, लखनऊ। | 9415029847 |
| 60 | डॉ0 जे0 पी0 घिल्डियाल | सर्जन, हिन्द इन्स्टिट्यूट ऑफ मेडिकल कालेज, लखनऊ। | 9415408037 |
| 61 | डॉ0 रितेश जुयाल | न्यूरोलाजिस्ट, जे–79, साउथ सिटी, लखनऊ। | 9235655277 |
| 62 | डॉ0 एस0 सी0 जोशी | जनरल फिजिशियन, केन्टोमेन्ट हॉस्पिटल, लखनऊ। | 9415005326 |
| 63 | डॉ0 अनूप कुमार जोशी | जनरल फिजिशियन, खुर्रमनगर | 9415023668 |
| 64 | डॉ0 बी0 एस0 भण्डारी | जनरल फिजिशियन, टेड़ी पुलिया, अलिगंज | 9415003979 |
| 65 | डॉ0 राजलक्ष्मी भण्डारी | निश्चेतना विशेषज्ञ, विवेकानन्द पॉलीक्लीनिक, लखनऊ। | 9453022979 |
| 66 | डॉ0 विनीत शाह | आई सर्जन, भााह आई केयर, लखनऊ। | 9839065008 |
| 67 | डॉ0 विवेक शाह | आई सर्जन, 146, लेखराज पन्ना, सेक्टर–2, विकास नगर, | 9415023639 |
| 68 | डॉ0 ज्योति भट्ट | आई सर्जन, सीतापुर आई हास्पिटल, लखनऊ। | 983946099 |
| 69 | डॉ0 निर्मला जोशी | बाल रोग विशेषज्ञ, चिरंजीव क्लीनिक, डी–1008, लखनऊ। | 9935866799 |
| 70 | डॉ0 प्रेम सिह नेगी (रि0मे0) | हेल्थ एक्सपर्ट, ए–965/5, इन्दिरा नगर, लखनऊ। | 9452057642 |
| 71 | डॉ0 प्रदीप जोशी | मेट्रो सिटी, पेपरमिल कालोनी, निशातगंज, लखनऊ। | 9453463778 |
| 72 | डॉ0 नेत्र बल्लभ पंत | 3/54, विकास नगर, लखनऊ। | 9335904645 |
| 73 | डॉ0 आर. सी. पाण्डेय | अनुपम नर्सिंग होम, काशीनगर, लखीमपुर खीरी | 9335097717 |
| 74 | डॉ0 रश्मि जोशी | 3/336, विकासनगर, लखनऊ। | 8174830210 |
| 75 | डॉ0 विवेक जोशी | 3/336, विकासनगर, लखनऊ। | +798593355501 |
| 76 | डॉ0 प्रवीन सिंह सामन्त | दन्त रोग विशेषज्ञ, विभागाध्यक्ष, सरस्वती डेण्टल कालेजं | 9413011592 |
| 77 | डॉ0 संजय सिंह | दन्त रोग विशेषज्ञ, स्माईल डेण्टल सेण्टर, लखनऊ। | 9838505157 |
| 78 | डॉ0 राजेन्द्र सिंह रावत | दन्त रोग विशेषज्ञ, हिमालयन पार्थ डेण्टल सेण्टर, | 8953603884 |
| 79 | डॉ0 आर0 सी0 पन्त | सर्जन एव फिजिशियन, 3/88, गोमती नगर, लखनऊ। | 9415469332 |
| 80 | डॉ0 राजेश भट्ट | सर्जन, एम0डी0एच0 1/14, सेक्टर एच, जानकीपुरम | 9415424152 |
| 81 | डॉ0 आर0 सी0 उप्रेती | जनरल फिजिशियन, शिवा हॉस्पिटल, विकास नगर, | 9415519653 |
| 82 | डॉ0 बी0 एस0 नेगी | जनरल फिजिशियन, जोशी पुरम, आजाद नगर, | 9450393596 |
| 83 | डॉ0 प्रियंका भट्ट | जनरल फिजिशियन, जवाहर लाल नेहरू होम्योपैथिक, | 9044205147 |
| 84 | डॉ0 उषा भट्ट, | जनरल फिजिशियन, जे0पी0 होमो कालेज ऑफफार्मेसी | 9415424152 |
| 85 | डॉ0 सन्तोष कुमार भट्ट | जनल फिजिशियन, एल्डिको उद्यान–1, लखनऊ। | 8808080088 |

## पर्वतीय महापरिषद - गोमती नगर शाखा

| क्रम | नाम | पद | क्रम | नाम | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | श्री एन.के. पाठक | संरक्षक | 19. | श्री रवीन्द्र सिंह बिष्ट | सचिव |
| 2. | श्री गोपाल दत्त गरवाल | संरक्षक | 20. | श्री आनन्द सिंह कपकोटी | सांस्कृतिक सचिव |
| 3. | श्री पी.सी. पन्त | संरक्षक | 21. | श्री नरेन्द्र सिंह फर्त्याल | सह सांस्कृतिक सचिव |
| 4. | श्री के.एस. पिलख्वाल | संरक्षक | 22 | श्री बलवन्त वाँणगी | संयुक्त सचिव |
| 5. | श्री हरीश काण्डपाल | संरक्षक | 23. | श्री पूरन सिंह बिष्ट | संयुक्त सचिव |
| 6. | श्री प्रेम सिंह फर्स्वाण | संरक्षक | 24. | श्री तारा दत्त काण्डपाल | संगठन सचिव |
| 7. | श्री टी.डी. पपने | संरक्षक | 25. | श्री हरेन्द्र सिंह नेगी | संगठन सचिव |
| 8. | श्री नवीन लाल वर्मा | संरक्षक | 26. | श्री हुकम सिंह रावत | संगठन सचिव |
| 9. | श्री गोविन्द सिंह बोरा | अध्यक्ष | 27. | श्री विद्या प्रसाद पाठक | संगठन सचिव |
| 10. | श्री ख्याली सिंह कड़ाकोटी | वरिष्ठ उपाध्यक्ष | 28. | श्री कार्तिक सिंह रौथाण | संगठन सचिव |
| 11. | श्री रमेश चन्द्र उपाध्याय | उपाध्यक्ष | 29. | श्रीमती विमला बोरा | संगठन सचिव महिला |
| 12. | श्री पुष्कर सिंह नयाल | उपाध्यक्ष | 30. | श्रीमती आशा धौनी | संगठन सचिव महिला |
| 13. | श्री त्रिभुवन सिंह बोरा | उपाध्यक्ष | 31. | श्री उमेश सिंह कैड़ा | प्रचार सचिव |
| 14. | श्रीमती चित्रा काण्डपाल | उपाध्यक्ष महिला | 32. | श्री के.एस. बोरा | प्रचार सचिव |
| 15. | श्रीमती दमयन्ती नेगी | उपाध्यक्ष महिला | 33. | श्री मनीष उपाध्याय | प्रचार सचिव |
| 16. | श्री कमल सिंह नेगी | महासचिव | 34. | श्री नवीन राणा | प्रचार सचिव |
| 17. | श्री गिरीश चन्द्र कोठारी | कोषाध्यक्ष | 35. | श्री खजान सिंह नेगी | वित्तीय सलाहकार |
| 18. | श्री नवीन सिंह बिष्ट | सचिव | 36. | श्री आशीष जोशी | सम्प्रेक्षक |
| | | | 37. | श्री दिनेश कपकोटी | सह सम्प्रेक्षक |

## पर्वतीय महापरिषद - इन्दिरा नगर/एच.ए.एल. शाखा

| क्रम | नाम | पद | मोबाइल नं. |
|---|---|---|---|
| 1. | श्रीमती मंजू शर्मा पडेलिया | मुख्य संरक्षक | 9415014580 |
| 2. | श्री वी0 पी0 पाण्डेय | संरक्षक | 9415764598 |
| 3. | श्रीमती कमला पाण्डेय | संरक्षक | 7607840228 |
| 4. | श्रीमती मोहिनी धपोला | संरक्षक | 9415601062 |
| 5. | श्री जे0 पी0 डिमरी | संरक्षक | 9454172380 |
| 6. | श्री वीरेन्द्र जोशी | संरक्षक | 9452679267 |
| 7. | श्री कुन्दन सिंह धपोला | संरक्षक | 9140086581 |
| 8. | श्री उमेश चन्द्र खुल्बे | अध्यक्ष | 9415081559 |
| 9. | श्री एन0 सी0 त्रिपाठी | वरिष्ठ उपाध्यक्ष | 9450453186 |
| 10. | श्री गोबिन्द सिंह पोखरिया | उपाध्यक्ष | 9450452953 |
| 11. | श्री देवराज चंद | उपाध्यक्ष | 9415798764 |
| 12. | श्री बृज मोहन जोशी | उपाध्यक्ष | 9045005987 |
| 13. | श्रीमती सरोज खुल्बे | महासचिव | 9956784969 |
| 14. | श्री नवीन जोशी | कोषाध्यक्ष | 8840110647 |
| 15. | श्रीमती दीप्ती जोशी | सांस्कृतिक सचिव | 9451251321 |
| 16. | श्री आनन्द बल्लभ जोशी | संयुक्त सचिव | 8795811037 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 17. | श्रीमती नमिता पाण्डेय | संयुक्त सचिव | 9452677165 |
| 18. | श्रीमती हेमा भट्ट | सह सांस्कृतिक सचिव | 9140957239 |
| 19. | श्रीमती रेनू पाण्डेय | संगठन सचिव | 7318549299 |
| 20. | श्रीमती सुनीता पोखरिया | संगठन सचिव | 8077958476 |
| 21. | श्रीमती कमला कठायत | संगठन सचिव | 8005220878 |
| 22. | श्रीमती तृप्ती काण्डपाल | प्रचार सचिव | 8840897242 |
| 23. | श्रीमती ममता जोशी | प्रचार सचिव | 8400014574 |
| 24. | श्रीमती जया पोखरिया | प्रचार सचिव | 6388116170 |
| 25. | श्रीमती दीपा सनवाल | सदस्य कार्यकारिणी | 8736811899 |
| 26. | श्रीमती मालती पुरोहित | सदस्य कार्यकारिणी | 7376502819 |
| 27. | श्रीमती दिव्या पाण्डेय | सदस्य कार्यकारिणी | 8228518300 |
| 28. | श्रीमती पुष्पा उपाध्याय | सदस्य कार्यकारिणी | 9450357080 |
| 29. | श्रीमती शीला पोखरिया | सदस्य कार्यकारिणी | 7318553451 |
| 30. | श्रीमती रजनी मल्ल | सदस्य कार्यकारिणी | 7991951127 |
| 31. | श्रीमती बीना पन्त | सदस्य कार्यकारिणी | 8787029645 |

## पर्वतीय महापरिषद - इन्दिरा नगर-2 शाखा

| क्रम | नाम | पद | मोबाइल नं. |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री प्रकाश चन्द्र पाण्डेय | अध्यक्ष | 9415028006 |
| 2. | श्री उत्तम सिंह बिष्ट | महासचिव | 7571998397 |
| 3. | श्री धर्मानन्द गजरौला | वरिष्ठ उपाध्यक्ष | 9450369406 |
| 4. | श्री जमन सिंह बिष्ट | उपाध्यक्ष | 8874558336 |
| 5. | श्री हरीश पाण्डेय | सांस्कृतिक सचिव | 9140784749 |
| 6. | श्री महेश जोशी | प्रचार सचिव | 9415467965 |
| 7. | श्री राजीव बिष्ट | सचिव | 8448095584 |
| 8. | श्री सज्जन सिंह रावत | सचिव | 9838550388 |

## पर्वतीय महापरिषद - कुर्मांचल नगर शाखा

| क्रम | नाम | पद | क्रम | नाम | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | श्री बी0 डी0 जोशी | संरक्षक | 7 | श्रीमती आशा भण्डारी | सदस्य कार्यकारिणी |
| 2 | श्री हीरा सिंह बिष्ट | अध्यक्ष | 8 | श्रीमती नमिता लोहानी | सदस्य कार्यकारिणी |
| 3 | श्रीमती धना बाफिला | उपाध्यक्ष | 9 | श्रीमती रेनू काण्डपाल | सदस्य कार्यकारिणी |
| 4 | श्री प्रभात जोशी | उपाध्यक्ष | 10 | श्रीमती मीना अधिकारी | सदस्य कार्यकारिणी |
| 5 | श्रीमती नीलम जोशी | उपाध्यक्ष | 11 | श्रीमती हेमा बिष्ट | सदस्य कार्यकारिणी |
| 6 | श्री देवेन्द्र सिंह खाती | महासचिव | | | |

## पर्वतीय महापरिषद - नीलमत्था शाखा

| क्रम | नाम | पद | मोबाइल नं. |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री बिशन सिंह बिष्ट | प्रभारी | 8090022224 |
| 2. | श्री कुण्डल सिंह मेहता | संरक्षक | 9794216227 |
| 3. | श्री मोती सिंह पोखरिया | संरक्षक | 9795987212 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 4. | श्री जगत सिंह भण्डारी | संयोजक | 9415513722 |
| 5. | श्री डी0 डी0 जोशी | अध्यक्ष | 9889742607 |
| 6. | श्री चन्द्र शेखर सिंह पिलख्वाल | वरिष्ठ उपाध्यक्ष | 7985527009 |
| 7. | श्री शिवा चन्द रजवार | उपाध्यक्ष | 9421939135 |
| 8. | श्री जगत सिंह बोहरा | उपाध्यक्ष | 9956903021 |
| 9. | श्री कुन्दन सिंह नगरकोटी | उपाध्यक्ष | 7007176385 |
| 10. | श्री खुशाल सिंह बिष्ट | महासचिव | 8416897878 |
| 11. | श्री दिनेश चन्द्र पाण्डेय | संगठन सचिव | 8794013210 |
| 12. | श्री तारा दत्त जोशी | कोषाध्यक्ष | 9956384576 |
| 13. | श्री अर्जुन सिंह नगरकोटी | प्रचार सचिव | 9917458635 |
| 14. | श्री दीवान चंद | प्रचार सचिव | 9005093684 |
| 15. | श्री कुन्दन सिंह रावत | प्रचार सचिव | 8787030241 |

## पर्वतीय महापरिषद - प्रीती नगर-भरत नगर-केशव नगर शाखा

| क्रम | नाम | पद | मोबाइल नं. |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री के0 एन0 पाटनी | संरक्षक | 9453430847 |
| 2. | श्री ललित मोहन उप्रेती | संरक्षक | 9415754263 |
| 3. | श्री महेश चन्द्र उपाध्याय | अध्यक्ष | 9628874311 |
| 4. | श्री बहादुर सिंह भण्डारी | वरिश्ठ उपाध्यक्ष | 9451242218 |
| 5. | श्री सुरेन्द्र सिंह बिष्ट | उपाध्यक्ष | 9369440599 |
| 6. | श्री पूरन सिंह बिष्ट | उपाध्यक्ष | 6386634387 |
| 7. | श्री सुरभि प्रसाद सिंह कालाकोटी | उपाध्यक्ष | 9415521244 |
| 8. | श्री हीरा सिंह नेगी | उपाध्यक्ष | 9451309546 |
| 9. | श्री डुंगर सिंह रावत | उपाध्यक्ष | 8382005497 |
| 10. | श्री नन्दन सिंह रावत | महासचिव | 9956078917 |
| 11. | श्री त्रिलोक मठपाल | सचिव | 8181953014 |
| 12. | श्री जगदीश चन्द्र भट्ट | संगठन सचिव | 9415758633 |
| 13. | श्री राजू पन्त | संगठन सचिव | 7985515989 |
| 14. | श्री राजेन्द्र सिंह जलाल | संगठन सचिव | 9453414931 |
| 15. | श्री गिरीश चन्द्र जोशी | कोषाध्यक्ष | 9451052339 |
| 16. | श्री कैलाश चन्द्र जोशी | सह–कोषाध्यक्ष | 9452681807 |
| 17. | श्री मोहन सिंह मेहरा | प्रचार सचिव | 6389540540 |
| 18. | श्री पूरन सिंह बिष्ट | सदस्य कार्यकारिणी | 8957749739 |
| 19. | श्री मोहन सिंह मैहर | सदस्य कार्यकारिणी | 7052001006 |
| 20. | श्री लक्ष्मी कान्त त्रिपाठी | सदस्य कार्यकारिणी | 9415395446 |
| 21. | श्री मंगल सिंह खाती | सदस्य कार्यकारिणी | 6005312351 |
| 22. | श्री प्रकाश सिंह | सदस्य कार्यकारिणी | 7007502400 |
| 23. | श्रीमती मोहिनी डौर्बी | सदस्य कार्यकारिणी | 8052039741 |
| 24. | श्री हितेश सिंह बिष्ट | सदस्य कार्यकारिणी | 6394594242 |

## पर्वतीय महापरिषद - आर.डी.एस.ओ.

| क्रम | नाम | पद | मोबाइल नं. | क्रम | नाम | पद | मोबाइल नं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | श्री के0 डी0 पाण्डेय | अध्यक्ष | 9456315308 | 8. | श्री त्रिलोक सिंह पंवार | संगठन सचिव | 7054126487 |
| 2. | श्री लक्षमण सिंह लटवाल | उपाध्यक्ष | 9453312166 | 9. | श्री गिरधर सिंह रावत | कोशाध्यक्ष | 9452064150 |
| 3. | श्री प्रका ा चन्द्र पाण्डेय | उपाध्यक्ष | 9068967933 | 10. | श्री राम सिंह | सचिव | 9450260534 |
| 4. | श्री केदार सिंह | उपाध्यक्ष | 9917015466 | 11. | श्री प्रेम सिंह पंवार | प्रचार सचिव | 8174838521 |
| 5. | श्रीमती सरस्वती रावत | महासचिव | 7054530118 | 12. | श्रीमती दीपा रावत | सांस्क तिक सचिव | 7860834803 |
| 6. | श्री जगत सिंह रावत | संगठन सचिव | 8960792556 | 13. | श्रीमती अंजली तिवारी | प्रचार सचिव | 9919936880 |
| 7. | श्री बची सिंह पंवार | संगठन सचिव | 9919567160 | | | | |

## पर्वतीय महापरिषद - विकास नगर शाखा

| क्रम | नाम | पद | क्रम | नाम | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | डा. आर. सी. उप्रेती | संरक्षक | 10. | श्री गणेश दत्त भट्ट | संयुक्त सचिव |
| 2. | श्री पद्म सिंह अधिकारी | संरक्षक | 11. | श्री प्रेम सिंह बोरा | संगठन सचिव |
| 3. | श्री जनक सिंह पाल | संरक्षक | 12. | श्रीमती राधा बोरा | संगठन सचिव |
| 4. | श्री मंगल सिंह उत्तराखण्डी | मुख्य संयोजक | 13. | श्री बी. बी. चंद | कोषाध्यक्ष |
| 5. | श्री वीरेन्द्र चन्द्र | अध्यक्ष | 14. | श्री हरीश चन्द्र पाण्डेय | सांस्कृतिक सचिव |
| 6. | श्री चंचल सिंह बोरा | महासचिव | 15. | श्री माधो सिंह चौहान | प्रचार सचिव |
| 7. | श्री श्रीमती कमला भट्ट | उपाध्यक्ष | 16. | श्री रूप सिंह शाही | प्रचार सचिव |
| 8. | श्री जय कृष्ण नैनवाल | उपाध्यक्ष | 17. | श्री गोवर्धन काण्डपाल | लेखा परीक्षक |
| 9. | श्री गिरीश चन्द्र पिरसाली | उपाध्यक्ष | | | |

## पर्वतीय महापरिषद - सरोजनी नगर शाखा

| क्रम | नाम | पद | क्रम | नाम | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | श्री भुवन चन्द्र पाण्डेय | अध्यक्ष | 14. | श्री राजेन्द्र सिंह | संगठन सचिव |
| 2. | श्री दयाल जोशी | उपाध्यक्ष | 15. | श्रीमती मंजू नेगी | संगठन सचिव |
| 3. | श्री राजेन्द्र सिंह गोसांई | उपाध्यक्ष | 16. | श्री प्रभाकर पाठक | प्रचार सचिव |
| 4. | श्री चंचल सिंह | उपाध्यक्ष | 17. | श्री कमल पन्त | प्रचार सचिव |
| 5. | श्री उमराव सिंह बिष्ट | उपाध्यक्ष | 18. | श्री कुन्दन सिंह अधिकारी | प्रचार सचिव |
| 6. | श्री कमल उप्रेती | उपाध्यक्ष | 19. | श्री पूर्णानन्द जोशी | प्रचार सचिव |
| 7. | सुश्री जीवन कालाकोटी | महासचिव | 20. | श्रीमती मीरा बिष्ट | सांस्कृतिक सचिव |
| 8. | श्री चन्द्र शेखर तिवारी | कोषाध्यक्ष | 21. | श्रीमती बबली नेगी | सह सांस्कृतिक सचिव |
| 9. | श्री लोकेश चन्द्र पन्त | सचिव | 22. | श्री गोपाल सिंह रावत | सदस्य कार्यकारिणी |
| 10. | श्री दिवान सिंह बिष्ट | सचिव | 23. | श्री भीम सिंह नेगी | सदस्य कार्यकारिणी |
| 11. | सुश्री मोहिनी बिष्ट | सचिव | 24. | श्री योगेश शर्मा | सदस्य कार्यकारिणी |
| 12. | श्रीमती पुष्पा पाण्डेय | संगठन सचिव | 25. | श्री आनन्द जोशी | सदस्य कार्यकारिणी |
| 13. | श्रीमती नीलम जोशी | संगठन सचिव | 26. | श्री हरीश बिष्ट | सदस्य कार्यकारिणी |

## पर्वतीय महापरिषद - एल.डी.ए. कालोनी शाखा

| क्रम | नाम | पद | क्रम | नाम | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | श्री सुरेश चन्द्र चन्दोला | मुख्य संयोजक | 7 | श्री दीपक चिलकोटी | सचिव |
| 2 | श्री के0 एन0 पाठक | संयोजक | 8 | श्री महेश सिंह बिष्ट | संयुक्त सचिव |
| 3 | श्री जगदीश चन्द्र जोशी | अध्यक्ष | 9 | श्रीमती बीना रावत | सांस्कृतिक सचिव |
| 4 | श्री सूरवीर सिंह पुण्डीर | वरिष्ठ उपाध्यक्ष | 10 | श्री राजेन्द्र सिंह रावत | प्रचार सचिव |
| 5 | श्री हरीश चन्द्र ओली | उपाध्यक्ष | 11 | श्री महेन्द्र सिंह मेहता | सदस्य |
| 6 | श्री कृपाल सिंह रावत | महासचिव | | | |

## पर्वतीय महापरिषद - जानकीपुरम शाखा

| क्रम | नाम | पद | क्रम | नाम | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | श्रीमती दीपा भट्ट | संरक्षक | 11. | डा. राजेश भट्ट | प्रचार सचिव |
| 2. | श्रीमती गंगा देवी | संरक्षक | 12. | श्री राज पाल सिंह मनराल | प्रचार सचिव |
| 3. | श्री धनी राम | मुख्य संयोजक | 13. | श्री भीम सिंह | प्रचार सचिव |
| 4. | श्रीमती माया भट्ट | अध्यक्ष | 14. | श्री अनुराग खोलिया | प्रचार सचिव |
| 5. | श्रीमती अंजली तिवारी | उपाध्यक्ष | 15. | श्री विक्रम सिंह | प्रचार सचिव |
| 6. | श्रीमती वीना काण्डपाल | उपाध्यक्ष | 16. | श्री गंगा दत्त जोशी | प्रचार सचिव |
| 7. | श्रीमती रेनू मनराल | उपाध्यक्ष | 17. | श्री देवी दत्त जोशी | प्रचार सचिव |
| 8. | श्री सुभाष चन्द्र शर्मा | उपाध्यक्ष | 18. | श्रीमती पूजा बिष्ट | प्रचार सचिव |
| 9. | श्री के.एन. जोशी | उपाध्यक्ष | 19. | श्री गोविन्दी देवी | प्रचार सचिव |
| 10. | श्री देवेन्द्र सिंह नागरकोटी | सचिव | | | |

## पर्वतीय महापरिषद - खुर्रमनगर शाखा

| क्रम | नाम | पद | क्रम | नाम | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | श्री पान सिंह भण्डारी | संरक्षक | 12 | श्री नवीन सिंह रावत | महासचिव |
| 2 | श्री एन0 के0 उपाध्याय | संरक्षक | 13 | श्री कुल भूषण उप्रेती | सचिव |
| 3 | श्री बी0 सी0 जोशी | संरक्षक | 14 | श्रीमती माया जोशी | उपाध्यक्ष |
| 4 | श्री कैलाश उपाध्याय | संरक्षक | 15 | श्रीमती प्रभा बिष्ट | संगठन सचिव |
| 5 | श्री के0 एन0 चन्दोला | संरक्षक | 16 | श्री भुवन नेगी | सांस्कृतिक सचिव |
| 6 | श्री मोहन सिंह बिष्ट मोना | संरक्षक | 17 | श्रीमती माया नेगी | प्रचार सचिव |
| 7 | श्री अनुपम सिंह भण्डारी | अध्यक्ष | 18 | श्री कैलाश चन्द्र बिनवाल | प्रचार सचिव |
| 8 | श्री देवेन्द्र सिंह नेगी | वरिष्ठ उपाध्यक्ष | 19 | श्रीमती हेमा डोलिया | कार्यकारिणी सदस्य |
| 9 | श्री दिवांशु भट्ट | उपाध्यक्ष | 20 | श्रीमती कमला भण्डारी | कार्यकारिणी सदस्य |
| 10 | श्री अभिनव भण्डारी | उपाध्यक्ष | 21 | श्री राहुल चन्दोला | कार्यकारिणी सदस्य |
| 11 | श्रीमती नमिता भण्डारी | उपाध्यक्ष | 22 | श्रीमती माधुरी भट्ट | कार्यकारिणी सदस्य |

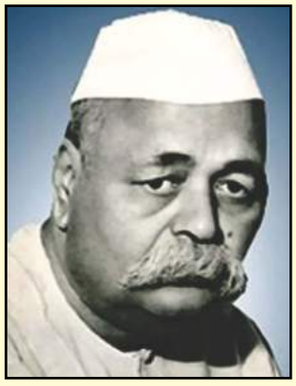
## पर्वतीय महापरिषद - महानगर शाखा

| क्रम | नाम | पद | क्रम | नाम | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | श्री बी0 के0 जोशी | अध्यक्ष | 7 | श्रीमती भारती पाण्डेय | सांस्कृतिक सचिव |
| 2 | श्री गिरीश जोशी | वरिष्ठ उपाध्यक्ष | 8 | श्री कुणाल पन्त | संगठन सचिव |
| 3 | श्री ब्रजेश मेहता | उपाध्यक्ष | 9 | श्री नीरज लोहानी | संयुक्त सचिव |
| 4 | श्री दीपक पाण्डेय ''दीनू'' | महासचिव | 10 | श्री नीरद लोहानी | प्रचार सचिव |
| 5 | श्री दीपेश त्रिपाठी | सचिव | 11 | श्री तारा दत्त जोशी | सदस्य कार्यकारिणी |
| 6 | श्रीमती भावना लोहानी | सांस्कृतिक सचिव | 12 | श्री चन्द्र मोहन पाण्डेय | सदस्य कार्यकारिणी |

## पर्वतीय महापरिषद - लखीमपुर शाखा

| क्रम | नाम | पद | मोबाइल नं. | क्रम | नाम | पद | मोबाइल नं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | श्री प्रदीप सिंह बिष्ट | प्रभारी | 7309048512 | 11. | श्री पूरन सिंह बिष्ट | सचिव | 9450235530 |
| 2. | डॉ0 आर0 सी0 पाण्डेय | मुख्य संरक्षक | 9335097717 | 12. | श्री खुशाल सिंह नित्वाल | संगठन सचिव | 9415574676 |
| 3. | श्री गोपाल सिंह | संरक्षक | 9450177755 | 13. | श्री विकास सिंह | संगठन सचिव | 7800123889 |
| 4. | श्री राम चन्द्र पन्त | संरक्षक | 9452307139 | 14. | श्री मनोज सिंह रौतेला | प्रचार सचिव | 7275024199 |
| 5. | श्री दान सिंह रावत | अध्यक्ष | 9451240107 | 15. | श्री हरीश चन्द्र सिंह | प्रचार सचिव | 8601141037 |
| 6. | श्री चन्द्र शेखर सत्यवली | उपाध्यक्ष | 9648541066 | 16. | श्री प्रकाश आर्या | सांस्कृतिक सचिव | 9415520640 |
| 7. | श्री पंकज कुमार जोशी | उपाध्यक्ष | 9451238028 | 17. | श्री देव सिंह | कार्यकाणी सदस्य | 9628111154 |
| 8. | श्री सुरेन्द्र सिंह नयाल | महासचिव | 9473586680 | 18. | श्री दीपक सिंह रावत | कार्यकारिणी सदस्य | 9795917640 |
| 9. | श्री हरी सिंह बिष्ट | कोषाध्यक्ष | 6386657987 | 19. | श्री बचे सिंह बिष्ट | कार्यकारिणी सदस्य | 8565912634 |
| 10. | श्री जय पाल सिंह | सचिव | 6387476301 | 20. | श्री दिलीप सिंह रावत | कार्यकारिणी सदस्य | 7068112115 |

# हमारे प्रेरणा स्रोत



भारत रत्न
पं. गोविन्द बल्लभ पंत



वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली



हेमवती नन्दन बहुगुणा

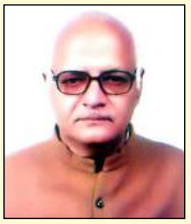


नारायण दत्त तिवारी

# पर्वतीय महापरिषद - संरक्षक मण्डल



पूरन चन्द्र पाण्डे



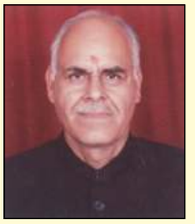
पीताम्बर भट्ट



हरीश चन्द्र जोशी



एस०एस० भण्डारी



डी०डी० नरियाल



प्रो० आर०सी० पन्त



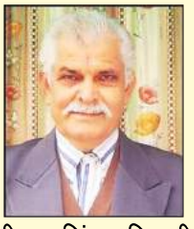
नवीन जोशी



डॉ० सी०एस० भट्ट



नारायण दत्त भरतोला



दीवान सिंह अधिकारी



बी.एस. नेगी



दिलीप सिंह बाफिला



मेजर जनरल राजीव पंत



नन्दकिशोर उपाध्याय



पान सिंह भण्डारी



भुवन चन्द्र जोशी



कर्नल हुकुम सिंह बिष्ट



बी.एस. गर्ब्याल



नन्दन सिंह बोरा



इन्द्रजीत सिंह रावत



प्रेम सिंह रौतेला



राजेन्द्र सिंह रावत

# पर्वतीय महापरिषद - सलाहकार मण्डल


भवान सिंह रावत


रमेश चन्द्र पाण्डेय


जे. पी. डिमरी


ज्ञान पन्त


जी. डी. भट्ट, एडवोकेट


सुश्री पुष्पिला बिष्ट, एडवोकेट


सुन्दर पाल सिंह बिष्ट


गोपाल दत्त जोशी


ललित मोहन जोशी, एडवोकेट


श्रीमती निर्मला पन्त


गोपाल दत्त गरवाल


महेश सिंह बोहरा


जी. बी. फुलारा


वी. के. जोशी


कै. राम सिंह बिष्ट


दीप चन्द्र लोहानी, एडवोकेट


कमा. के.एस. पिलख्वाल


ललित मोहन सिंह मनराल


के.एस. चुफाल


हेम चन्द्र पंत


कै. चन्दन सिंह नेगी


सुरेन्द्र मालाकोटी


पूरन चन्द्र पन्त


प्रेम सिंह फर्स्वाण


हरीश काण्डपाल


योगेश तिवारी


सूरवीर सिंह पुण्डीर


वीरेन्द्र जोशी


कैलाश सिंह पांगती

# पर्वतीय महापरिषद - केन्द्रीय कार्यकारिणी



टी० एस० मनराल
मुख्य संयोजक



के० एन० चन्दोला
संयोजक



गणेश चन्द्र जोशी
अध्यक्ष



सुरेश चन्द्र चन्दोला
वरिष्ठ उपाध्यक्ष



कैलाश चन्द्र उपाध्याय
उपाध्यक्ष



मोहन सिंह 'मोना'
उपाध्यक्ष



जी.डी. भट्ट
उपाध्यक्ष



नन्दन सिह बिष्ट
उपाध्यक्ष



युवराज सिंह परिहार
उपाध्यक्ष



के.एन. पाण्डेय
उपाध्यक्ष



महेन्द्र पन्त
उपाध्यक्ष



सुमन रावत
उपाध्यक्ष



बिशन दत्त जोशी
उपाध्यक्ष



भाष्कर चन्द्र काण्डपाल
उपाध्यक्ष



बिशन सिंह बिष्ट
उपाध्यक्ष



महेन्द्र सिंह रावत
महासचिव



के.एस. रावत
कोषाध्यक्ष



हेमन्त सिंह गड़िया
सचिव



गणेश चन्द्र जोशी, एडवोकेट
सचिव



रमेश चन्द्र उपाध्याय
सचिव



गोविन्द पाठक
सचिव



गोविन्द सिंह बोरा
सांस्कृतिक सचिव



एच. सी. ओली
संयुक्त सचिव



कृष्ण चन्द्र पन्त
संयुक्त सचिव



पी.पी. पंत
संयुक्त सचिव



देवेन्द्र मिश्रा
संयुक्त सचिव



ख्यालीसिंह कड़ाकोटी
संगठन सचिव



के.एन. पाठक
संगठन सचिव



मोहन सिंह बिष्ट 'प्रेस'
संगठन सचिव



रवीन्द्र सिंह बिष्ट
संगठन सचिव



राजेश भट्ट
संगठन सचिव



शंकर पाण्डेय
संगठन सचिव



आनन्द सिंह भण्डारी
संगठन सचिव



कमल सिंह नेगी
संगठन सचिव



चंचल सिंह बोरा
संगठन सचिव



डॉ. भीम सिंह नेगी
संगठन सचिव



के.डी. पाण्डेय
संगठन सचिव



बसंत बल्लभ चंदोला
संगठन सचिव



मोहन भट्ट
प्रचार सचिव



गोपाल सिंह गैलाकोटी
प्रचार सचिव



मोहन सिंह भण्डारी
प्रचार सचिव



पूरन जोशी
प्रचार सचिव



नरेन्द्र सिंह फरत्याल
सह सांस्कृतिक सचिव



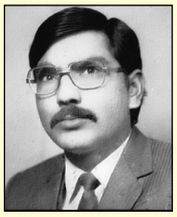
आनन्द सिंह कपकोटी
सह सांस्कृतिक सचिव



महेन्द्र सिंह मेहता
सह कोषाध्यक्ष



ललित सिंह पोखरिया
कार्यकारिणी सदस्य



धन सिंह मेहता
कार्यकारिणी सदस्य



लक्ष्मण सिंह धामी
कार्यकारिणी सदस्य



खीमानन्द पाटनी
कार्यकारिणी सदस्य



हरीश चन्द्र भट्ट
कार्यकारिणी सदस्य



बसन्त बल्लभ भट्ट
कार्यकारिणी सदस्य



गिरीश चन्द्र कोठारी
सम्प्रेक्षक

## :: निवेदन ::

**पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ के समस्त क्रियाकलाप, अपनी लोक संस्कृति एवं संस्कारों के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ नई पीढ़ी को अपनी जमीन से जोड़ने का माध्यम बनते हैं .....**

**आपसे अनुरोध है कि महापरिषद की सदस्यता ग्रहण कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने की कृपा करें।**

**सदस्यता हेतु आप अपनी क्षेत्रीय समिति अथवा केन्द्रीय कार्यालय, महापरिषद भवन, गोमतीनगर विस्तार, लखनऊ से सम्पर्क कर सकते हैं।**

# पर्वतीय महापरिषद - विशेष आमंत्रित सदस्य


डा० हेम चन्द्र पाण्डेय


ए० के० चन्दोला


गोविन्द पंत 'राजू'

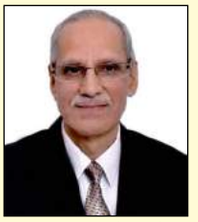

नरेन्द्र सिंह देवड़ी


त्रिलोक सिंह अधिकारी


जगदीश जोशी


अशोक पाण्डे


डा. भुवन चन्द्र तिवारी


घनानन्द पाण्डेय 'मेघ'


रश्मि बड़थ्वाल


हरीश चन्द्र पन्त


राजेन्द्र सिंह बिष्ट


डा. आर.सी. उप्रेती


गिरीश चन्द्र शर्मा


हरीश उपाध्याय


जे. डी. सती


दिनेश चन्द्र पन्त


अगम शरण जोशी

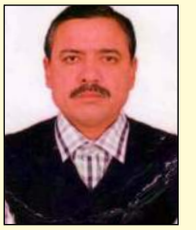

उमेश सनवाल


मनोज मिश्रा


नवीन चौधरी


विपिन सिंह


अनिमेष उप्रेती


रमेश सिंह रावत


विनोद लोहानी


श्री देवेन्द्र सिंह नेगी


श्री दौलत सिंह बंगारी


गणेश सिंह


कैलाश बिनवाल


कु० विमला उप्रेती


रमेश चन्द्र भट्ट


विजय लाल डोभाल


श्रीमती इन्दिरा बिस्ट


बुलबुल गोदियाल


श्री सुरेश पाण्डेय


संजय तिवारी


श्री किशन सिंह बिष्ट


श्री मुकेश जोशी


श्री दीप चन्द्र जोशी


राजेन्द्र सिंह


राजवीर सिंह पंवार

# पर्वतीय महापरिषद - विशेष आमंत्रित सदस्य (चिकित्सक)


डा० देवेन्द्र सिंह नेगी


डा० यतेन्द्र नाथ पाठक


डा० सुभाष चन्द्र सुन्दरियाल


डा० दरपन्न सिंह नबियाल


डा० सविता भट्ट तिवारी


डा० पी०के० जोशी


डा० बसन्त बल्लभ भट्ट


डा० अनिता नेगी


डा० सुराशि सिंह


डा० नरेन्द्र सिंह बाफिला


डा० अनन्या रावत


डा० भुवन चन्द्र तिवारी


डा० ललित मोहन जोशी


डा० अर्चना घिल्डियाल


डा० हिम्मत सिंह दानू


डा० सी०एस० नेगी


डा० नेत्र बल्लभ पंत


डा० रेनु पन्त


डा० सिद्धार्थ पन्त


डा० रेहा रखोलिया पन्त


डा० राजीव पन्त


डा० सतीश चन्द्र जोशी


डा० रितेश जुयाल


डा० अनूप कुमार जोशी


डा० बी०एस० भण्डारी


डा० प्रदीप जोशी


डा० प्रेम सिंह नेगी


डा० आशा नेगी


डा० आर०एल० साह


डा० आकांक्षा गोदियाल


डा० निर्मला जोशी


डा० जे०पी० घिल्डियाल


डा० आर. सी. पाण्डेय


डा० ज्योति भट्ट


डा० विवेक साह


डा० विनीत साह


डा० राज लक्ष्मी भण्डारी


डा० आर०सी० उप्रेती


डा० राजेश भट्ट


डा० प्रवीण सिंह सामन्त


डा० राजेन्द्र सिंह रावत


डा० प्रियंका भट्ट


डा० उषा भट्ट


डा० संतोष कुमार भट्ट


डा० विवेक जोशी


डा० रश्मि जोशी


डा० संजय सिंह

# पर्वतीय महापरिषद की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारी

## श्री रामलीला समिति महानगर, लखनऊ



पूरन चन्द्र पाण्डे
अध्यक्ष



हेम पंत
महामंत्री

## श्री रामलीला समिति, कल्याणपुर, लखनऊ



दीना नाथ गुप्ता
अध्यक्ष



मुकेश जोशी
महामंत्री

## पंत नगर सांस्कृतिक समिति, उ.प्र., लखनऊ



महेन्द्र सिंह रावत
अध्यक्ष



गोकुल चन्द्र उप्रेती
महामंत्री

## कुर्मांचल रामलीला समिति, लखनऊ



दीवान सिंह अधिकारी
अध्यक्ष

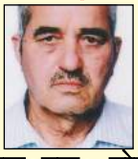


विपिन सिंह बिष्ट
महासचिव

## पर्वतीय रामलीला समिति, तेलीबाग, लखनऊ



विशन दत्त जोशी
अध्यक्ष



कै० एस०एस० पोखरिया
महामंत्री

## पर्वतीय समाजोत्थान परिषद, इन्दिरानगर, लखनऊ



कै. चन्दन सिंह नेगी
अध्यक्ष



हिमांशु भट्ट
महामंत्री

# पर्वतीय महापरिषद-क्षेत्रीय इकाईयाँ

## गोमतीनगर



गोविन्द सिंह बोरा, अध्यक्ष



कमल सिंह नेगी, महासचिव

## इन्दिरानगर



उमेश खुल्बे, अध्यक्ष



सरोज खुल्बे, महासचिव

## इन्दिरानगर-2



प्रकाश चन्द्र पाण्डेय, अध्यक्ष



उत्तम सिंह बिष्ट, महासचिव

## कुर्मांचलनगर



हीरा सिंह बिष्ट, अध्यक्ष



देवेन्द्र सिंह खाती, महासचिव

## नीलमथा



देवी दत्त जोशी, अध्यक्ष



खुशाल सिंह बिष्ट, महासचिव

## विकास नगर



पद्म सिंह अधिकारी, अध्यक्ष



चंचल सिंह बोरा, महासचिव

## आर.डी.एस.ओ.



के.डी. पाण्डे, अध्यक्ष



श्रीमती सरस्वती रावत, महासचिव

## एल.डी.ए. कालोनी



जगदीश चन्द्र जोशी, अध्यक्ष



कृपाल सिंह रावत, महासचिव

## जानकीपुरम



माया भट्ट
अध्यक्ष



देवेन्द्र सिंह नगरकोटी
सचिव

## सरोजनी नगर



भुवन चन्द्र पाण्डेय
प्रभारी



सुश्री जीवन कालाकोटी,
सह प्रभारी

## प्रीतिनगर, भरतनगर, केशवनगर शाखा



महेश उपाध्याय
अध्यक्ष



नन्दन सिंह रावत
महासचिव

## महानगर



वी.के. जोशी
अध्यक्ष



दीपक पाण्डे 'दीनू'
महासचिव

## शारदा नगर एल्डिको



कै. एस.एस. शाही
प्रभारी



हरीश चन्द्र पंत
सह प्रभारी

## कृष्णा नगर



**नवीन चन्द्र पंत**
प्रभारी



**राजेन्द्र सिंह रावत**
सह प्रभारी

## राजाजीपुरम् शाखा



डॉ. एस.के. नैथानी, प्रभारी



हिम्मत सिंह, सह प्रभारी



सूरज सिंह, सह प्रभारी

## लखीमपुर खीरी शाखा



प्रदीप सिंह बिष्ट, प्रभारी



दान सिंह रावत, अध्यक्ष



सुरेन्द्र सिंह नयाल, महासचिव

# गतवर्ष उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की गौरवमयी उपस्थिति



# कोरोनाकाल में महापरिषद के पदाधिकारियों द्वारा की गई जनसेवा की एक झलक



















# मुख्यमंत्री आपदा कोष (कोरोना) में सहयोग राशि प्रदान करते हुए




# माननीय मुख्यमंत्री जी को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए

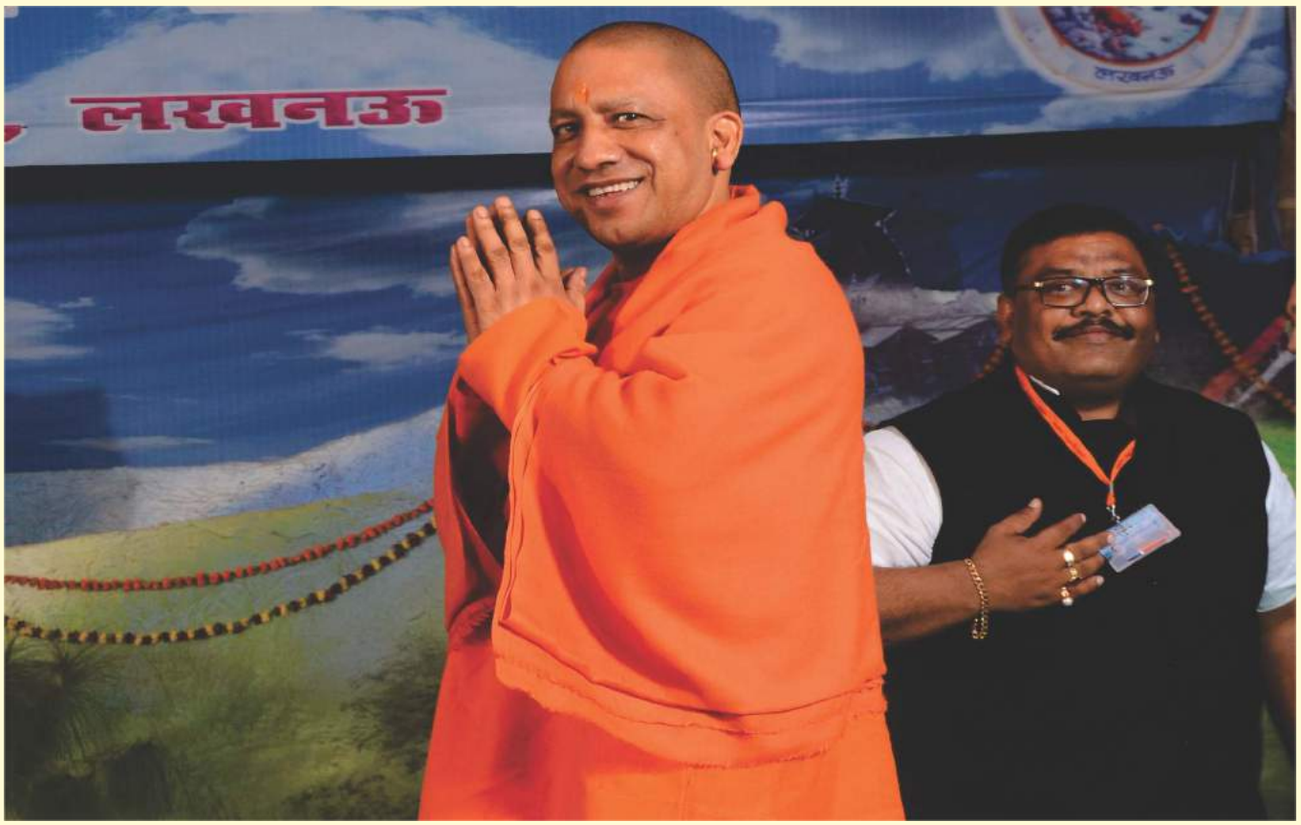


# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि






# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि






# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि





# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि






# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि





# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि






# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि





# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि






# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि






# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि





# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि





# उत्तरायणी कौथिग के अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि







# पर्वत गौरव सम्मान वर्ष 2021




पर्वत गौरव सम्मान 2021 – डॉ. (मेजर) डी.एस. नेगी, महानिदेशक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

# वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली वीरता सम्मान वर्ष 2021




वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली वीरता सम्मान 2021 – शहीद गोपाल सिंह अन्ना की पत्नी श्रीमती पार्वती देवी



गोविन्द सिंह नयाल सामाजिक सेवा सम्मान 2021 – श्री पीताम्बर भट्ट




गोपाल उपाध्याय साहित्य सम्मान 2021 – श्री घनानन्द पाण्डेय 'मेघ'



गौरा देवी महिला सम्मान 2021 – श्रीमती अन्जनी बोनाल




**डॉ. एम.सी. पंत चिकित्सा सेवा सम्मान 2021 – डॉ. बी.एस. नेगी**



**युवा सम्मान 2021 – श्री पुष्कर सिंह नयाल**




**उत्तरायणी कौथिग विशेष सम्मान 2021 – श्री के. एन. पाठक**

# उत्तरायणी कौथिग की झलकियाँ










# उत्तरायणी कौथिग की झलकियाँ









# उत्तरायणी कौथिग की झलकियाँ





# उत्तरायणी कौथिग की झलकियाँ








# उत्तरायणी कौथिग की झलकियाँ






# महापरिषद भवन में खेलकूद प्रतियोगिताएं

















# उत्तरायणी कौथिग स्थल .....













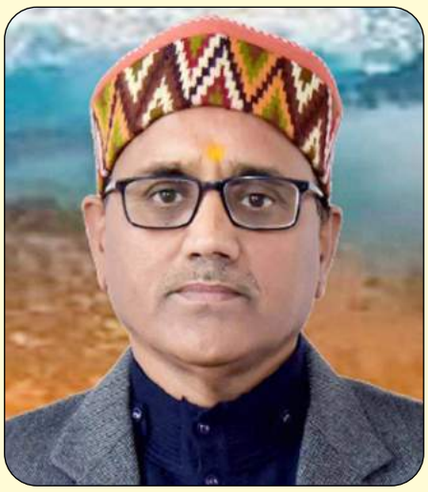








# :: स्मृति शेष ::



## श्री ओ० पी० भारद्वाज जी की स्मृति में

–गोपाल दत्त जोशी

ओ गोरी गंगा भागीरथी..... हिमाला बै ऐछे
ओ मरीया मनखी..... ईजू को दे ा न्हैं जांछो।।
हैपुरा गैली पातला..... घुघुती घुरैछ।
ओ संझा झूली गैछ..... मेरो मैं तेरी याद ऐछ।।

———

मेरा ददा मेरो भुली– कां गो को बतालो––2
आंख्यूं में जो रिटी रौछी हो.....
हिया में जो बसी रौछी––2
जांणी कां गन्हेलो मेरोकृकृकृ

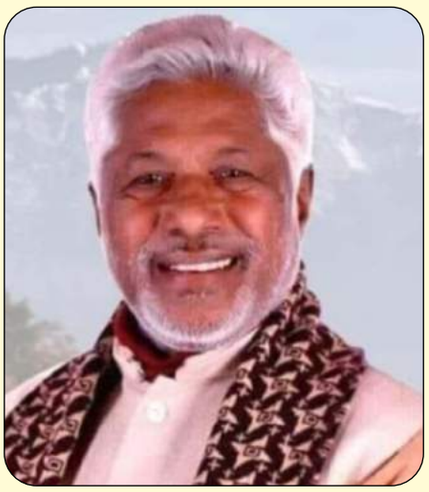
1. के भली सूरत वीकी–के भलो बुलाण
मुल मुल हंसण वीको–यई छी पछ्यांण––2
–यई छी पछ्यांणा मेरे.....

2. समुंदर आंख्यूं में छ – हिया छ उदास––2
की उ गो अगास भागी – या हिमालल्यूं काख––2
या हिमालल्यूं काख ..... मेरो.....

3. दगड़ी या नानछना को इकलै रै गोछ––2
नी छोड़नो साथ कौछी – जाणी कांहूं गोछ––2
जाणी कांहूं गोछ ..... मेरो

4. भुलनू कसीकै त्वीकै – औछ समझणा––2
घड़ी घड़ी याद ऐछ – झुरैछ पराणा––2
झुरैछ पराणा ..... मेरोऽ

–सलाहकार
पर्वतीय महापरिषद, लखनऊं



## हीरा सिंह राणा 'हिरदा'

उत्तराखंड के लोकगायक , कवि एवं संस्कृति कर्मी " श्री हीरा सिंह राणा, हिरदा .... हमारे बीच नहीं रहे ! पर्वतीय महापरिषद के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उनकी उपस्थिति सदैव अनुभव की जाती रहेगी । महापरिषद परिवार उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

1– **श्रीमती जानकी नयाल**
पत्नी स्व० गोविन्द सिंह नयाल

2– **श्रीमती पार्वती पाठक**
पत्नी श्री के एन पाठक

3– **श्रीमती पुष्पा जोशी**
पत्नी श्री जगदीश चन्द्र जोशी

4– **श्री भगवत डोलिया**
हमारे सहयोगी डोलिया परिवार के सदस्य

**पर्वतीय महापरिषद परिवार आप सभी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।**

# चिल्लर कोष की सदस्यता ग्रहण करते हुए हमारे मुख्य अतिथिगण









# चिल्लर कोष




**"चिल्लर कोष में मात्र एक रुपया प्रतिदिन देकर हम न जाने कितने लोगों की मदद कर रहे होंगे !"**

*चिल्लर कोष (एक वृहद सामाजिक सुरक्षा चक्र)*

*प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने समाज के असहाय या निशक्त व्यक्ति या परिवार के प्रति आर्थिक मदद स्वरूप स्नेह प्रदान कर सामूहिक अपनत्व की भावना प्रेषित करना "चिल्लर कोष" के रूप में एक सामाजिक व्यवस्था है।*

*चिल्लर कोष एक छोटी धनराशि (न्यूनतम 1रू प्रतिदिन) अपने घर के सबसे छोटे सदस्य द्वारा एक कोष में एकत्रित्र किया जाय*

*यह कोष 1 अप्रैल 2016 से पर्वतीय महापरिषद द्वारा प्रारम्भ किया गया है। हमारा प्रयास है कि लखनऊ में प्रथम चरण में 20 हजार चिल्लर कोष के सदस्य बनाये जायें, इस प्रकार 20 हजार सदस्य बनने पर..*

| | |
|---|---|
| *एक दिन में* | *20 हजार रूपये जमा* |
| *एक माह में* | *6 लाख रूपये जमा* |
| *एक वर्ष में* | *72 लाख रूपये जमा* |

*इस प्रकार उक्त धनराशि से चिल्लर कोष परिवार की कई सदस्यों की बड़ी बिमारी, समाज के गरीब लड़कीयों का विवाह अथवा अन्य दैवीया प्रकोप में मदद की जा सकती है।*

**कृपया सामाजिक सुरक्षा की भावना प्रदान करने हेतु चिल्लर कोष की सदस्यता ग्रहण कर इस हेतु अपना योगदान देने की कृपा करें।**

**:: सम्पर्क सूत्र ::**

**पर्वतीय महापरिषद, क्षेत्रीय समितियाँ एवं सहयोगी संस्थाएं**

**मो0 9335530329, 8707633913, 9839017696, 9198944555**

**9415001662, 8318964901, 9415514814, 9454205165**

# मीडिया कवरेज




**हेमन्त सिंह गड़िया, मीडिया प्रभारी**

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास



# धान खरीद

## वर्ष 2020-21

**अब तक कुल 7,20,904 किसानों से रू0 7022.60 करोड़ मूल्य के 38.56 लाख मीट्रिक टन धान की खरीद की जा चुकी है।**

### धान का समर्थन मूल्य

**धान कॉमन रू. 1868/- प्रति कुन्तल**
**एवं ग्रेड 'ए' रू. 1888/- प्रति कुन्तल**

कृषक बन्धु अपनी निम्न बिन्दुओं सम्बन्धी शिकायतों यथा

1. कृषक पंजीकरण एवं सत्यापन के संबंध में
2. क्रय केन्द्र बन्द पाया जाना
3. क्रय केन्द्र पर धान की तौल न होना
4. क्रय केन्द्र पर धान रिजेक्ट किया जाना
5. धान का भुगतान समय से प्राप्त न होना
6. क्रय केन्द्र पर टोकन प्राप्त न होना



अथवा अन्य किसी समस्या के संबंध में खाद्य आयुक्त कार्यालय स्थित कन्ट्रोल रूम **0522-2288906**, खाद्य एवं रसद के टोल फ्री संख्या **1800 1800 150** पर अथवा जनपदों में मण्डी समिति में **'किसान सहायता केन्द्र'**, जिला कन्ट्रोल रूम तथा जिला खाद्य विपणन अधिकारी कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं।

दो गज़ की दूरी, मास्क है जरूरी | विकिसकीय हेल्पलाइन: 1800-180-5145 | खाद्य एवं रसद विभाग, उत्तर प्रदेश

# उत्तर प्रदेश के कोरोना महामारी प्रबंधन की WHO द्वारा प्रशंसा



**देश में सर्वाधिक 2.38 करोड़ से अधिक कोरोना टेस्ट**

**देश में सर्वाधिक 15 करोड़ लोगों की सर्विलांस के माध्यम से जानकारी**

**देश में सर्वाधिक 1.51 लाख से अधिक कोविड-बेड की उपलब्धता**

**प्रतिदिन 1.50 लाख कोरोना टेस्ट करने वाला देश का पहला राज्य**

**देश के सबसे बड़े प्लाज्मा बैंक की स्थापना**

**कोरोना के विरुद्ध कामयाबी** **96.04%** रिकवरी रेट

**राजकीय चिकित्सालयों में कोरोना का मुफ्त उपचार**

## चिकित्सा सुविधाओं का तीव्र विकास

- नोएडा में 300 कोविड बेड चिकित्सालय की स्थापना
- KGMU लखनऊ में 320 कोविड बेड चिकित्सालय की स्थापना
- BRD मेडिकल कॉलेज में 300 कोविड बेड चिकित्सालय की स्थापना
- गोण्डा में 300 कोविड बेड चिकित्सालय की स्थापना
- स्वरूप रानी नेहरू चिकित्सालय, प्रयागराज में 340 कोविड बेड की उपलब्धता
- प्राइवेट लैब्स में मात्र 600 रुपये में कोरोना टेस्टिंग की सुविधा
- प्रदेश में 45 सरकारी RTPCR, 78 ट्रूनेट जांच केंद्र तथा सभी जिलों में एन्टीजेन टेस्ट सुविधा
- कोविड-19 एवं डेंगू के इलाज के लिए एफेरेसिस व केमिल्यूमिनिसेन्स की सुविधा
- सभी मेडिकल कॉलेजों और सभी जिलास्तरीय चिकित्सालयों में आइसोलेशन वॉर्ड
- सभी जनपदों में नियंत्रण कक्ष एवं कॉल सेंटर स्थापित
- गोरखपुर एवं प्रयागराज में कोबास-6800 लैब की स्थापना
- कोरोना की जांच हेतु राजकीय एवं निजी मेडिकल कॉलेजों में बी.एस.एल. लैब की स्थापना
- जन औषधि केन्द्रों के माध्यम से गुणवत्तापरक एवं सस्ती औषधियों की उपलब्धता



## तैयारी युद्धस्तर पर

- गोरखपुर और रायबरेली में एम्स की स्थापना
- हर जिले में लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस उपलब्ध
- टेलीमेडिसिन के माध्यम से ओपीडी का संचालन



## प्रदेश में टीकाकरण की तैयारियां




- तीन चरणों में होगा प्रदेश में वैक्सीनेशन
- पहले चरण में लगभग 9 लाख सरकारी व गैर सरकारी स्वास्थकर्मियों को लगेगा टीका
- दूसरे चरण में फ्रंटलाइन वर्कर्स को लगेगी वैक्सीन
- तीसरे चरण में 50 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों व अन्य गंभीर बीमारियों से ग्रसित लोगों का होगा वैक्सीनेशन
- पहले चरण में लगभग 1500 टीम करेंगी प्रदेश में वैक्सीनेशन
- प्रत्येक टीम प्रतिदिन लगभग 100 लोगों का करेगी टीकाकारण
- वैक्सीन स्टोरेज के लिए 1300 सेंटर
- वैक्सीन के लिए 2.50 लाख लीटर स्टोरेज क्षमता
- वैक्सीन स्टोरेज सेंटर में सीसीटीवी की व्यवस्था

**दो गज दूरी, मास्क है जरूरी**

हमें फॉलो करें : https: //www.facebook.com/NationalHealthMission.UP https://twitter.com/nhm_up

चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, उत्तर प्रदेश | कोरोना हेल्पलाइन नं.- 1800-180-5145

# नैनीताल बैंक NAINITAL BANK

(सन् 1922 में स्थापित एक प्रमुख अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक एवं
बैंक ऑफ बड़ौदा का सहयोगी बैंक)



**दिनेश पंत**
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

## उत्तरायणी, महाशिवरात्री एवं होली की हार्दिक शुभकामनाएं।

हमारे संस्थापक



भारत रत्न
**पंडित गोविन्द बल्लभ पंत**



**अपना आशियाना**
HOME LOAN



**ज्ञानी**
EDUCATION LOAN



**सुहाना सफर**
CAR LOAN




**व्यापार सुविधा**
BUSINESS LOAN




**नैनी सहयोग**
PERSONAL LOAN

खुशियों के रंग
''नैनी गोल्ड लोन'' के संग



## नैनी गोल्ड लोन

- कृषि व्यवसाय एवं व्यक्तिगत उपयोग हेतु
- ₹ 15 लाख तक ऋण सीमा
- आसान किश्तों पर भी उपलब्ध



उद्योग, व्यापार, एमएसएमई, शिक्षा, कृषि, राइस एवं सीड प्लांट एवं प्रापर्टी ऋण
इसके अतिरिक्त हमारी जमा राशियों पर अधिक ब्याज व आकर्षक बैंकिंग सुविधाओं का लाभ उठाऐं

# NAINITAL BANK

अमूल्य रिश्तों का अटूट बन्धन

visith us at : www.nainitalbank.co.in






# समाज कल्याण विभाग

## उत्तर प्रदेश शासन

**1– वृद्धावस्था/किसान पेंशन योजना**

वृद्धावस्था/किसान पेंशन योजनान्तर्गत 60 वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ग के समस्त पात्र वृद्धजनों को जिनका नाम बी.पी.एल. सूची 2002 में सम्मिलित अथवा जिनकी वार्षिक आय शहरी क्षेत्र में रु. 56460/– एवं ग्रामीण क्षेत्र में रु. 46080/– के अन्तर्गत हो, को धनराशि रु. 500/– प्रतिमाह वृद्धावस्था पेंशन दिये जाने की व्यवस्था है।

आवेदक द्वारा इन्टरनेट कैफे/जनसुविधा केन्द्र/स्वयं ऑनलाइन आवेदन वेबपोर्टल http://sspy-up.gov.in पर किये जाने की व्यवस्था है।

**2– राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना**

राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजनान्तर्गत गरीबी कीरेखा के नीचे निवासरत् परिवार के कमाऊ मुखिया की मृत्यु होने के उपरान्त, जिसकी आयु 18 वर्ष से कम एवं 60 वर्ष से अधिक न हो तथा जिसकी वार्षिक आय शहरी क्षेत्र में रु. 56460/– एवं ग्रामीण क्षेत्र में रु. 46080/– तक हो, को धनराशि रु. 30000/– एक मुश्त प्रदान किये जाने की व्यवस्था है।

वित्तीय वर्ष 2015–16 में दिनांक 01 जनवरी, 2016 से योजना के अन्तर्गत आवेदन, स्वीकृति तथा वितरण कर दिया गया है। आवेदक द्वारा इन्टरनेट कैफे/जनसुविधा केन्द्र/स्वयं ऑनलाइन आवेदन वेबपोर्टल http://nfbs.upsdc.gov.in पर किये जाने की व्यवस्था है।

**3– अत्याचार से प्रभावित अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को आर्थिक सहायता**

अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 तथा पी.सी.आर. एक्त के अन्तर्गत अत्याचार से प्रभावित अनुसूचित जाति के परिवारों को भारत सरकार की तद्विषयक नियमावली के अन्तर्गत न्यूनतम रुपये 85,000/– से लेकर रुपये 8,25,000/– तक की सहायता घटना की प्रकृति/धारा के आधार पर उपलब्ध करायी जाती है।

**अपराध का प्रकार एवं प्रदान की जाने वाली सहायता का विवरण**

| क्र.सं. | अपराध का प्रकार | प्रदान की जाने वाली सहायता का विवरण |
|---|---|---|
| 1. | हत्या या मृत्यु | पीड़ित को आठ लाख पच्चीस हजार रुपये की सहायता निम्नानुसार प्रदान की जाती है –<br>(1) शव परीक्षण (Post Mortam) के पश्चात 50 प्रतिशत।<br>(2) 50 प्रतिशत आरोप पत्र न्यायालय में प्रेषित किये जाने के उपरान्त। |
| 2. | बलात्संग/सामूहिक बलात्संग<br>(i) बलात्संग (भारतीय दंड संहिता (1860 का 45) की धारा 375) | पीड़ित को पाँच लाख रुपये की सहायता निम्नानुसार प्रदान की जाती है–<br>(1) चिकित्सा जाँच और चिकित्स रिपोर्ट की पुष्ति के पश्चात् 50 प्रतिशत।<br>(2) 25 प्रतिशत आरोप पत्र न्यायालय में प्रेषित किये जाने के उपरान्त।<br>(3) अवर न्यायालय द्वारा विचारण की समाप्ति पर 25 प्रतिशत। |
| 3. | (ii) सामूहिक बलात्संग (भारतीय दंड संहिता (1860 का 45) की धारा 376घ) | पीड़ित को आठ लाख पच्चीस हजार रुपये की सहायता निम्नानुसार प्रदान की जाती है–<br>(1) चिकित्सा जाँच और चिकित्स रिपोर्ट की पुष्ति के पश्चात् 50 प्रतिशत।<br>(2) 25 प्रतिशत आरोप पत्र न्यायालय में प्रेषित किये जाने के उपरान्त।<br>(3) अवर न्यायालय द्वारा विचारण की समाप्ति पर 25 प्रतिशत। |

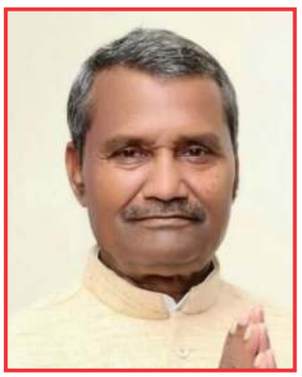
**बाल कृष्ण त्रिपाठी**
निदेशक, समाज कल्याण



# श्री योगी आदित्यनाथ

## मा. मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

## के नेतृत्व में



# समाज के निर्माण में बढ़ते कदम

यू.पी. स्टेट कांस्ट्रक्शन एण्ड इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेन्ट कारपोरेशन लि. पूर्ववर्ती–उत्तर प्रदेश समाज कल्याण निर्माण निगम लि. की स्थापना, अनुसूचित जाति जनजाति एवं कमजोर वर्गों के लिए आवासीय तथा उससे सम्बद्ध योजनायें बनाने एवं लागू करने तथा कार्यदायी संस्था के रूप में कार्य करने के मुख्य उद्देश्यों से वर्ष 1976 में की गयी थी। निगम द्वारा स्थापना के इन 44 वर्षों में स्वयं कोराज्य सरकार की एक ख्याति प्राप्त निर्माण एजेन्सी क रूप में स्थापित कयिा गया है।

यह संस्था आई.एस.ओ. 9001:2015 प्रमाणित है। निगम द्वारा प्रतिष्ठित निर्माण संस्था के रूप में प्रदेश सरकार के निर्माण कार्यों के साथ–साथ अन्य प्रदेशों मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली, उत्तराखण्ड एवं राजस्थान में केन्द्र/प्रदेश सरकार के प्रतिष्ठित विभागों क महत्वपूर्ण निर्माण कार्य उच्च गुणवत्ता के साथ डिपाजिट कार्य के रूप में तथा टेण्डर कार्य के रूप में सम्पादित कराये जा रहे हैं।

## निगम द्वारा निर्मित/निर्माणाधीन महत्वपूर्ण निर्माण कार्य –

1– सब सेन्टर, स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इण्डिया–लखनऊ।
2– विकास भवन–इटावा, अलीगढ़, मुरादाबाद, चमोली, पौड़ी, मिर्जापुर एवं लखीमपुर।
3– डा0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्य।
4– महात्मा गाँधी, अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय–वर्धा (महाराष्ट्र) के विभिन्न कार्य।
5– समाज कल्याण विभाग के आई.ए.एस./पी.सी.एस. कोचिंग सेन्टर, छात्र–छात्रवास, छात्रा–छात्रावास, आश्रम पद्धति विद्यालय तथा अन्य समस्त कार्य।
6– उत्तर प्रदेश तथा अन्य राज्यों में नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय के कार्य।

## वित्तीय उपलब्धियाँ

निगम की गत पाँच वर्षों की वित्तीय उपलब्धियाँ निम्नवत् रही हैं –

| क्र.सं. | वित्तीय वर्ष | टर्न ओवर |
|---|---|---|
| 1. | 2015–16 | 663.00 करोड़ |
| 2. | 2016–17 | 692.00 करोड़ |
| 3. | 2017–18 | 582.00 करोड़ |
| 4. | 2018–19 | 760.00 करोड़ (अनन्तिम) |
| 5. | 2019–20 | 689.00 करोड़ (अनन्तिम) |

# Heartiest Congratulations and Best Wishes for Uttarani Kautik 2021

MileStone

*Yes We Can !*

***A One- Stop Event Company !***

That Creates all Kinds of Innovative Experiences

WEDDING SUTRA

# Milestone Event Management Ltd.

## Deals in:

### Social

- Themed Wedding Planner
- Destination Wedding
- Artist Management
- Catering Services
- Logistic & Hospitality Services

### Corporate

- Public Event
- Corporate Event
- Brand & Product Activation
- Indoor & Outdoor Branding
- Corporate Gifting
- Domestic & International Corporate Packages



**Raj Pachauli**

Regd. Off.: F-2, Arif Chamber-5, Sector-H, Purania , Aliganj, Lucknow -226024
Mob.: +91 9839073599, 9838073599

LSC Autowheels

# Legends seize every opportunity to go beyond ordinary.

Pre-book now.




NEW
COMPASS

LIVE LEGENDARY

Jeep

## LSC Autowheels (P) Ltd.
Uttarakhand

Garhwal: +918954600123 , 8191999120 | Kumaon : +918395892141

SAH EYE CARE

# Dr. VINIT SAH
## EYE SURGEON




## Dr. Vinit Shah

M.B.B.S. M.S. (Ophth). F.M.R.F.
**Consultatnt Eye Surgeon**
Fellow Sankar Nethralaya, Chennai
Fellow L.V. Prasad Eye Institute, Hyderabad

## FACILITIES

- Phacoemulsification with foldable Intra Ocular Lens Implantation
- Toric & Multifocal IOLs
- Contact Lenses
- Lasik laser & ICL for removal of Glasses
- Glaucoma Diagnosis and Surgery
- Diseases of Vitreous & Retina
- Green Laser For Retinal Disease (Nidek Japan)
- Fundus Fluorescein angiography and fundus photography
- Cirrus HD-OCT (Optical Coherence Tomography) Carl Zeiss
- IOL Master 700 (Carl Zeiss, Germany)
- Glaucoma Field Analyzer (Carl Zeiss, Germany)
- Operating Microscope OPMI Lumera-I (Carl Zeiss)
- Image Guided Digital Marking System For Toric IOLs Callisto Eye (Carl Zeiss) Yag Laser (Nidek Japan)

**Clinic :**
**HIG-94, Near Regional Science Centre,**
**Sector-E, Aliganj, Lucknow-226 024**
**Ph. : 0522-4047301, 2333555**
**9565769140 | Resi : 2328689**

**Timings : Morn. : 8:30 AM to 11:30 AM**
**Even. : 5:30 PM to 08:00 PM**
**Saturday & Sunday Evening Closed**
**Sunday 08:00 AM to 12:30 PM**

# सम्पादकीय

*– ज्ञान पंत*



लखनऊ के पर्वतीय समाज की बात करें तो यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि 'सुख–दुःख' में बराबर साथ खड़ी रहने वाली संस्था पर्वतीय महापरिषद ही है। इसके एक नहीं अनेकों प्रमाण हैं। उदाहरण के लिए कोरोना वर्ष 2020 की बात करें तो जहाँ लोग महामारी से डरे सहमे, घरों में दुबके पड़े रहे, वहीं पर्वतीय महापरिषद के पदाधिकारी और उनकी पूरी टीम शहर की विभिन्न क्षेत्रों से निरन्तर संवाद में बनी रही। लॉक–डाऊन से उपजी विषम परिस्थितियों में शायद ही कोई पर्वतीय परिवार/व्यक्ति होगा जिसे जरूरत पड़ने पर मदद न पहुँचाई गई हो। राशन–पानी से लेकर बच्चों की फीस, जरूरी कपड़े, दवाईयों का इंतजाम और यहाँ तक कि आनलाईन पढ़ाई हेतु बच्चों को स्मार्ट फोन भी उपलब्ध कराए गए। जाति, धर्म, सम्प्रदाय से हटकर की गई इस मानवीय सहायता का सर्वसमाज में स्वागत हुआ है। विभिन्न शहरों से घरों को लौट रहे कामगारों की मदद हेतु हमारी मातृशक्ति की भी खूब चर्चा हुई। महिला शाखा की सदस्याओं ने जिस प्रकार निडर होकर अपने–अपने क्षेत्रों में जरूरतमंदों की सहायता की और आम गृहणियों में कोरोना के प्रति जागरूकता फैलाई, उनका हौसला बढ़ाया. ..... यह महिला सशक्तीकरण का एक अनुपम उदाहरण है। पर्वतीय महापरिषद अपनी मातृशक्त को नमन करता है।

सामाजिक संस्थाओं में युवाओं की न्यूनतम भागीदारी को लेकर भी सवाल उठते रहे हैं। वहाँ शीर्ष पदों पर विराजमान लोगों पर भी प्रश्नचिन्ह लगे कि येन–केन प्रकारेण ये लोग पद छोड़ना ही नहीं चाहते..... लेकिन पर्वतीय महापरिषद ने पूर्ण पारदर्शी व लोकतांत्रिक कार्य प्रणाली से इस मिथक को तोड़ा है। वर्तमान कार्यकारिणी में युवाओं की भागीदारी इस बात का प्रमाण है कि हम अपनी लोक कला और संस्कृति को नई पीढ़ी में एक सीमा तक हस्तांतरित करने में सफल हुए हैं। अभी भी इस दिशा में काम चल रहा है कि अधिक से अधिक युवाओं को जोड़कर रचनात्मक कार्यों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जाए और नेतृत्व की दूसरी पीढ़ी भी समय रहते तैयार हो ताकि नये विचारों और तकनीक का समावेश होता रहे। अनुभव बताता है कि समाज सेवा में प्रत्यक्ष रूप से कुछ भी प्राप्ति नहीं होती लेकिन अप्रत्यक्ष रूप में जो कुछ मिलता है, वह व्यक्तित्व में समाहित होकर अंततः पहचान बनता है ... .. आदरणीय संरक्षक ओ.पी. भारद्वाज जी इसी बात का प्रमाण रहे! उनका असमय चले जाना अपूरणीय क्षति है, जिसकी भरपाई होने में समय लगेगा..... पर्वतीय महापरिषद उन्हें भावभीनी श्रृद्धांजलि अर्पित करता है।

उत्तराखण्ड राज्य बनने के बीस वर्षों बाद भी 'राजनीतिक शून्य' की भरपाई नहीं हो पाई है..... यह सत्य है! वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य देखें तो विचारधारा से अधिक 'वोट बैंक' प्रभावित करता है..... क्या पर्वतीय समाज का कोई वोट बैंक है ? इस बात को हमसे अधिक राजनीतिज्ञ समझ रहे हैं कि लखनऊ के पर्वतीय समाज में लोक सभा तथा नगर प्रमुख के चुनाव को प्रभावित करने, दो विधान सभा और लगभग दस वार्डों (सभासद) में निर्णायक

मत हैं..... महापरिषद इस दिशा में प्रयासरत है कि सभी प्रमुख संस्थाएं एक बैनर तले आएं और प्रभवशाली वोट बैंक भी बने। अतः राजनीति में आगे आ रहे युवाओं का कर्तव्य है कि वे अपने कार्य एवं व्यवहार से लोगों का विश्वास जीतें, निर्विवाद छवि प्रस्तुत करें और किसी व्यक्ति या संस्था विशेष के पक्ष में ही खड़े न दिखें ताकि सभी के द्वारा उनका समर्थन किया जा सके अन्यथा वे राजनीतिज्ञों के पिछलग्गू ही बने रहेंगे..... पर्वतीय राजनीति का मैदानों में फलने–फूलने का यही सबसे उपयुक्त समय हो सकता है।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियाँ..... मानव और प्रकृति के अन्तर्सम्बन्धों को पुनः समझा गयी है कि हमें अपने आस–पास के पर्यावरण को हर हाल में अपनों के लिए सुरक्षित और संरक्षित रखना है। कोरोना वायरस तो प्रकृति के प्रति अमानवीय व्यवहार का एक उदाहरण मात्र है। समय रहते न सुधरे तो और भी गम्भीर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना होगा..... तो आईए प्रकृति से जुड़ें, प्रेम, सद्भाव और भाईचारे की पौध लगाएं जिनमें शांति, सद्भावना और संवेदनाओं के पुष्प फूलें–फलें!

इस वर्ष 'कुली बेगार आन्दोलन' के सौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। उत्तरायणी पर्व का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि आज ही के दिन बागेश्वर में अंग्रेजों की कुली बेगार प्रथा का विरोध करते हुए सरयू–गोमती के बगड़ में कुली बेगार रजिस्टर फाड़ कर बहा दिये गए थे। अतः ज्यों–ज्यों समय बीतता जाएगा..... पर्वतीय जन चेतना जागरण में उत्तरायणी पर्व की प्रासंगिकता और भी बढ़ती जाएगी..... उत्तरायणी पर्व की शुभकामनाएं।

*सम्पादक*

*पर्वतीय महापरिष, लखनऊ*

# मुख्य संयोजक की ओर से

*– टी.एस. मनराल*



उत्तरायणी के शुभ अवसर पर सभी पर्वतवासियों, देश–विदेश में बसे प्रवासियों और उनके कर्मस्थलों के बंधु मित्रों सहित सभी को हार्दिक शुभकामनायें। हम उन सभी के स्नेह के ऋणी हैं जो उत्तरायणी पर्व की प्रतीक्षा हमारी तरह उतनी ही ललक से करते हैं।

साथियो! पिछले वर्ष की उत्तरायणी और इस वर्ष की उत्तरायणी के अन्तराल में जो हमारे पैरों के नीचे से धरती उलट–पुलट हो गयी, उसके साक्षी हम आज अपनी–अपनी कहने और सुनने आये हैं। पिछले दशक की समाप्ति का वर्ष 2020 अपने साथ–साथ हमारे सामान्य जीवन जीने की परम्परा को आमूलचूल परिवर्तित कर गया है। एक अनचीन्हे कोरोना वायरस ने पूरे विश्व को चाहे वह प्रगति के उच्च सोपान पर हो या अन्तिम स्तर पर, एक ही पायदान पर ला खड़ा किया। राजा हो या रंक, सभी के लिये एक जैसे नियम बन गये जैसे– सोशल डिस्टेन्सिंग का पालन, मास्क लगाना, हाथ धुलते रहना। चाहे जन्म का उत्सव हो, विवाह का अवसर हो या अन्तिम यात्रा का करुण दृश्य, अपनी भावनाओं को वश में रखते हुए, कहीं भी तय मानकों से अधिक भीड़ का हिस्सा नहीं बनना। फिर भी देखा गया कि पर्वतीय महापरिषद के कर्मवीरों ने सुरक्षा के मानकों को पूरा करते हुए सामाजिक सेवा के कार्यों में भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। इस बात का पूरा ध्यान रखा कि अपने आस–पास कोई परिवार चाहे पड़ोसी हो या प्रवासी मजदूर, भूखा न रहने पाये। काम धंधा बंद होने का असर, लॉकडाऊन होने के कारण या पैसों की कमी से किसी का परिवार आवश्यक वस्तुओं से वंचित नहीं रहने पाए। हमारी मातृशक्ति–महिला सदस्यों की भागीदारी भी जबर्दस्त रही। लॉकडाऊन घोषित होने, काम बन्द होने, रेल–बस की व्यवस्था अनिश्चित काल के लिये स्थगित होने से परेशान और बिमारी के भय से आक्रान्त मजदूरों के दल अपने बाल बच्चों सहित बीमार, गर्भवती महिलाओं को लेकर पैदल ही सुदूर प्रदेश में अपने घरों को चल पड़े थे। उस समय सभी के सहयोग से मेरी बहनों सुमन रावत, सुमन मनराल, गंगा भट्ट व सरोज खुल्बे जैसी विदुषी व बहादुर महिलाओं और उनके दल ने प्रवासी मजदूरों के घर के बुजुर्गों बच्चों के लिये दूध की व्यवस्था की, बिस्कुट दिये ताकि चलते–चलते खाये जा सकें। अपने घरों से खाना बनवा कर वितरित किया और यह सब बिना पूर्व सूचना के किया। पर्वतीय महापरिषद के महासचिव–भाई गणेश चन्द्र जोशी जी तथा छोटे भाई श्री मोहन सिंह 'मोना' जी द्वारा असहायों को बाँटा गया राशन भी अविस्मरणीय एवं चिरस्थायी रहेगा। एक कठिन स्थिति तो यह थी कि मृत्यु हो जाने पर अन्तिम संस्कार के लिए कोई पंडित घाट पर नहीं मिल रहा था तो हमारे भाई श्री के.एन. पाण्डेय ने वह व्यवस्था स्वयं अपने हाथ में ली ताकि मृतक घर, परिवार के सदस्यों को मानसिक शान्ति मिल सके।

अत्यन्त दुःख का विषय है कि हमारे कर्मवीरों में से कुछ को काल के क्रूर हाथों ने अपना ग्रास बना लिया और उनेक परिवार ही नहीं, पर्वतीय महापरिषद लखनऊ, देश एवं समाज को अपूरणीय क्षति दी। भाई ओ.पी. भारद्वाज नहीं रहे! उनकी छवि आँखों के सामने से हटती नहीं। वे पर्वतीय महापरिषद के मजबूत स्तम्भ थे। इसी प्रकार स्व. जी.एस. नयाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती जानकी नयाल, आदरणीय भाभी जी भी कुछ दिनों की बिमारी के बाद परलोक सिधार गई हैं। हमारे आस–पास हर किसी ने किसी प्रिय आत्मीय को इस दौरान खोया है। उन सभी के दुःख में हम पर्वतीय महापरिषद सदस्य सहभागी हैं और ईश्वर से उनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना करते हैं।

कुछ ऐसे मामले भी हुए कि बीमारी का सामना वीरता से करते हुए हमारे कुछ साथी विजयी हुए और परिवार के साथ–साथ हमारी प्रसन्नता बढ़ाने का वायस बने। आज उत्तरायणी पर्व पर उनका साथ हमारा उत्साह दूना कर रहा है।

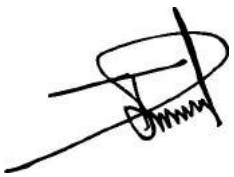
उत्तरायणी पर्व नये दशक वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस पर्व को मनाने की सरकारी अनुमति मिल गई है जो ऐसे कठिन समय में सौभाग्य ही कहा जायेगा। पिछले वर्ष ने अपनी त्रासदी के साथ–साथ जीवन जीने के लिये कुछ मंत्र भी दिये हैं जिसमें से संतोष भी एक अमूल्य मंत्र है। विद्यार्थियों, व्यापारियों मजदूरों को काफी नुकसान होने के बावजूद जो बच गये हैं उन्होंने बचे रहने पर संतोष कर लिया। दूर की बड़ी नौकरी जाने पर घर परिवार के साथ मिल बैठने और माता–पिता की सेवा करते हुए स्वरोजगार के अवसर ढूँढ लेना भी उसी संतोष का फल है। दिल्ली और आस–पास के बड़े शहरों के लड़के अपने गाँच घर लौट कर कुछ नया करने का साहस पा गये। कुछ ने नया रोजगार अपनाने का प्रयास किया तो कुछ सफल भी हुए। घर में रहकर देशी जड़ी बूटियों से चाय, फलों की चटनी, मुरब्बे, कम क्षेत्र में अच्छी फसल लेने आदि के प्रयासों से हम आप अवगत ही हैं क्यूँकि प्रायः रोज ऐसी खबरें मीडिया द्वारा दी जाती हैं। इसके अतिरिक्त अपने लघु उद्योगों को ऑन लाईन माध्यमों से प्रचारित करना भी इस कठिन समय ने सिखा दिया।

मुझे तो लगता है कि काफी समय से शहरी संस्कृति अपनी जड़ों से कटने लगी थी। उपभोक्तावाद हावी हो गया था, किसी प्रकार का कोई भय जीवन में नहीं था जो मनुष्य के अन्दर सोये कर्मवीर पुरुष को जगा सके। पिछले वर्ष ने हर इंसान को जगा दिया है। अपने आस–पास के अलावा अपने घर में बुजुर्गों–बच्चों–पत्नी/पति के साथ क्या घट रहा है, उसका दर्शन करा दिया।

जैसा कि आप सभी अवगत हैं और बड़े हर्ष का विषय है कि कोरोना की वैक्सीन इतने कम समय में ही खोज ली गयी है जिसमें भारत में बनी कोवैक्सीन भी है। यह कोरोना के क्यूटेशन के मामलों में भी कारगर बताई जा रही है। वैक्सीन जल्द ही लगायी जानी है जिससे देशभर में सकारात्मकता की लहर दौड़ पड़ी है फिर भी इन्सान ठोकर लगने पर सतर्क हो जाता है। दूध का जला, छाँछ भी फूँक–फूँक कर पीता है जो उचित भी है। संकट के दौर में आदमी दौड़ न सके, घिसट भी न सके लेकिन अपनी जगह जीवित खड़ा रह सके तो भी उसके भविष्य की आशा की जा सकती है। हमें यही मूलमंत्र मिला है, स्वयं को अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के लिये बचाना है ताकि जब उसे हमारी जरूरत हो तो हम उपलब्ध रह सकें।

इस नये दशक में हमें एक नया इन्सान बन कर चलना है। अपने बच्चों, जो हमारा और हमारे दशे का भविष्य हैं, उन्हें जीवन की सही सच्ची शिक्षा देनी है। इस उत्तरायणी पर्व पर आपसे यही विनती और यही अपेक्षा भी है।

शुभकामनाओं के साथ.....



*मुख्य संयोजक*

*पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ*

# संयोजक की ओर से

*–के.एन. चन्दोला*



भारत त्यौहार और मेलों का देश है। वस्तुतः देश में वर्ष भर ही उत्सव मनाये जाते हैं। पूरे विश्व की तुलना में भारत में अधिक त्यौहार मनाए जाते हैं। प्रत्येक त्यौहार अलग अवसर से संबंधित है, कुछ वर्ष की ऋतुओं का, फसल कटाई का, वर्षा ऋतु का अथवा पूर्णिमा का स्वागत करते हैं। दूसरों में धार्मिक अवसर, ईश्वरीय सत्ता/परमात्मा व संतों के जन्म दिन अथवा नए वर्ष की शरूआत के अवसर पर मनाए जाते हैं। इनमें से अधिकांश त्यौहार भारत के अधिकांश भागों में समान रूप से मनाए जाते हैं तथापि यह हो सकता है कि उन्हें देश के विभिन्न भागों में अलग–अलग नामों से पुकारा जाता हो अथवा अलग तरीके से मनाया जाता है।

"हुलस रहा माटी का कण –कण,
उमड़ रही रस धार है।
त्योहारों का देश हमारा, हमको इससे प्यार है।"

मकर संक्रांति प्रतिवर्ष पौष मास के चतुर्थी को शुक्ल पक्ष में पड़ता है। यह मकर संक्रांति एक सौर घटना और शायद हिन्दू त्योहारों में यही एक त्यौहार है जो प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता हैं ! अपवादों के चलते कई लोग इसे 14 जनवरी या 15 जनवरी को भी मनाते हैं !

मकर संक्रांति को कई अन्य नामों से भी जाना जाता है। भारतवर्ष में विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार के लोग भिन्न–भिन्न बोलियाँ बोलते हैं, उनके संस्कृति और रीतियों के अनुसार ही मकर संक्रांति का पर्व विभिन्न नामों से जाना जाता है और इसको मनाने के तरीके भी अलग–अलग हैं। उत्तरी भारत में जहाँ इसे मकर संक्रांति और संक्राति, उत्तरायण, माघी, खिचड़ी अथवा सक्रांत के नाम से जाना जाता है वहीं दक्षिण भारत में इसे पोंगल व् संक्रांति नाम से जाना जाता है। कहीं इसे माघ संक्रांति तो कहीं बीहू संक्रांति के नाम से मनाया जाता है।

लखनऊ में प्रवास कर रहे लाखों–लाख उत्तराखंड निवासियों ने भी पर्वतीय महापरिषद के बैनर तले यह संकल्प लिया कि इस पर्व को उत्तरायणी के रूप में मनाया जाएगा और उसी दिन इस घूघुतिया त्यार को मेले का रूप भी दिया जाएगा। इस प्रकार यह बागेश्वर में लगने वाले उत्तरायणी कौतिक के समान ही प्रदर्शित होता है। इससे जहाँ एक ओर पर्वतीय समाज अपने प्रदेश से दूर रहकर भी अपनी परंपरा, सभ्यता, संस्कृति और एकजुटता का प्रदर्शन करेगा वहीं दूसरी ओर वह अपने स्थानीय खाद्य पदार्थों और वस्तुओं की खरीदारी भी कर सकेगा जिसके लिए वह प्रायः लालायित रहता है। वर्ष भर में एक बार यह अनूठा अवसर होता है जहाँ हमें एक ओर अपनी संस्कृति, कला आदि के दर्शन होते हैं तो दूसरी ओर हमें अपने स्थानीय वस्तुओं की उपलब्धता भी हो जाती है।

उत्तराखंड को देव भूमि कहा जाता है, अतः वहाँ के निवासियों को नाम के अनुरूप ही व्यवहार करना होगा ताकि उनके नाम के अनुरूप ही उनका व्यवहार भी प्रदर्शित हो।

पहाड़ में हो चाहे यहाँ मैदान में महिलाएं हमारे समाज की रीढ़ हैं। एक महिला का किसी संस्था से जोड़ने का तात्पर्य है उसके पूरे परिवार का जुड़ना। नारी समाज की प्रथम धुरी कही गई है। एक प्रौढ़ महिला जो अपने

पारिवारिक दायित्वों से काफी हद तक निवृत्त हो चुकी होती है उसकी जिम्मेदारी तब समाज के प्रति और अधिक बढ़ जाती है। एक तो वह अनुभवशील, वरिष्ठ व आदरणीय होती है दूसरा समाज के प्रति उसका नजरिया परिपक्व हो चुका होता है। अतः किसी भी समाज की यदि महिलाएं जागरूक हैं तो समाज कभी भी पिछड़ा नहीं रहेगा। इस क्रम में हम भाग्यशाली हैं कि हमारे पर्वतीय समाज की महिलाएं हर क्षेत्र में बढ़–चढ़कर भाग ले रही हैं। मैं अपनी संस्था की महिला प्रकोष्ठ की कर्मठ, दृढ़ इच्छा शक्ति वाली और उत्साहित मातृशक्ति को नमन करता हूँ। इसी प्रकार युवा पीढ़ी के बिना हम वरिष्ठों का कोई कर्म किसके लिए है? तभी तो कहा गया है–

'शुष्क पर्ण झरने को आतुर वे निश्चित ही झर जायेंगे।
उन्हीं रिक्तियों से नव अंकुर अभिनव पर्ण सुहायेंगें।
युवा शक्ति ही ला सकती है, सारे जग में परिवर्तन।
किंतु वरिष्ठों का आवश्यक है समुचित श्रेष्ठ मार्गदर्शन।'

कहने का तात्पर्य है कि युवा शक्ति के बिना हम अधूरे हैं। हमारा सौभाग्य है कि पर्वतीय समाज का युवा वर्ग इस उत्तरायणी कौथिग में बढ़–चढ़कर भाग ले रहा है और वह अपनी परंपरा, संस्कृति के प्रति समर्पित है।

पर्वतीय महापरिषद जहाँ एक ओर उत्तराखंड की संस्कृति, परंपरा और कलाओं के संवर्धन करने में जुटी है तो दूसरी ओर समाज के सभी वर्गों के लिए कुछ न कुछ कार्यक्रम लेकर चलती है। महापरिषद सामाजिक और मानवीय सरोकारों से भी अछूती नहीं है। वह जहाँ एक ओर चिल्लर कोष तथा अन्य माध्यमों से आर्थिक रूप से कमजोर और जरूरतमंद लोगों की सहायता करने के लिए प्रतिबद्ध है तो दूसरी ओर समाज के किसी भी अन्य प्रकार से पीड़ित व्यक्ति की सहायता के लिए सदैव आगे आकर सहयोग के लिए तत्पर है। इस प्रकार पर्वतीय महापरिषद एक संपूर्ण सामाजिक व सांस्कृतिक संस्था के रूप में लखनऊ में स्थापित हो चुकी है। आर्थिक या सामाजिक सुरक्षा का विषय हो या कोरोना महामारी का विपत्तिजनक स्थिति हो, पर्वतीय महापरिषद के कर्मठ कर्मयोगी सदैव बढ़ चढ़कर समाज की सेवा में संलग्न रहते हैं । पर्वतीय समाज की इस शीर्ष संस्था को हमें और अधिक मजबूत और सक्रिय करने की निरंतर जरूरत है, आप सब के सहयोग से यह भी जरूर हो जाएगा।

अपने सभी पर्वतवासियों को मैं नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ ही घूघुतिया त्यार व उत्तरायणी कौथिग की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।



*संयोजक*
*पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ*

# अध्यक्ष की कलम से

*– गणेश चन्द्र जोशी*



उत्तरायणी पर्व की शुभकामनाओं के साथ मैं आप सभी के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूँगा कि पर्वतीय महापरिषद के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य करने का अवसर प्रदान किया। जैसा कि आप जानते हैं, पर्वतीय महापरिषद प्रारम्भ से समाज की उन्नति के लिए कार्य करती आ रही है। इस दिशा में क्षेत्रीय समितियों, चिकित्सा प्रकोष्ठ व चिल्लर कोष के माध्यम से काफी कार्य हुआ है और इस दिशा में प्रयास चल रहे हैं। समाज सेवा के दृष्टिगत ही मैंने ''नयी सोच–नया जोश'' का विचार दिया और तदनुसार नई कार्यकारिणी का गठन किया गया है। खुशी है कि एक ओर जहाँ वरिष्ठ जनों का संरक्षण मिल रहा है, वहीं दूसरी ओर अनुभवी लोगों के महत्वपूर्ण विचार व सुझाव समय–समय पर मिल रहे हैं। इन सबके साथ युवाओं के संयुक्त प्रयास का फल है कि इस वर्ष भारत रत्न पं0 गोविन्द बल्लभ पन्त पर्वतीय सांस्कृतिक उपवन में ''उत्तरायणी कौथिग'' के दस दिवसीय आयोजन की स्वीकृति दिनांक इक्कतीस दिसम्बर, 2021 को ही मिल गयी थी। करोना की विषम परिस्थितियों के बावजूद यह पर्वतीय समाज के दृढ़ संकल्प का परिणाम है जो गोमती तट पर उत्तरायणी कौथिग का आयोजन संभव हो पा रहा है। मुझे विश्वास है कि भगवान बागनाथ जी की कृपा और आप सबके सहयोग से इस वर्ष भी कौथिग सफलता के नए आयाम स्थापित करेगा।

मैं हमेशा से सामाजिक एकता का पक्षधर रहा हूँ, इसीलिए शपथ ग्रहण के बाद प्रभावी मंच की बात कही जिसमें शहर की सभी प्रमुख संस्थाओं के साथ मिल बैठकर ''सामाजिक एकता'' पर चर्चा होनी है ताकि दूसरों की नजरों में भी हम एक दिखें। इस दिशा में कार्य प्रारम्भ भी हो गया है जिसके सुखद परिणाम शीघ्र मिलेंगे।

कोराना महामारी ने एक ओर जहाँ दुख–दर्द दिए वहीं दूसरी ओर बहुत कुछ सीख भी दी है। हमें सोचने पर विवश किया है कि भौतिक सुख संसाधनों की दौड़ में आँखिर कहाँ तक प्रकृति का दोहन करेंगे। क्या कारण है कि समय–असमय प्रकृति विरोध में उठ खड़ी होती है ? ऐसी तमाम बातें हैं जिसमें मानव ने प्रकृति को झकझोरा है। इन विषम परिस्थितियों में भी महापरिषद के सेवा कार्य निर्वाध गति से चलते रहे। लोगों को राशन पानी देना हो, बच्चों की फीस या मरीजों को अस्पताल पहुँचाने की बात हो हमारे कर्मयोगी सभी जगह डटे रहे। हमारे कर्मयोगियों/क्षेत्रीय शाखाओं के कर्मठ कार्यकर्ताओं के सहयोग से ही कोरोना महामारी में वृहद् धनराशि एकत्र कर माननीय मुख्मंत्री कोष में जमा किया जाना संभव हो पाया है।

युवाओं द्वारा इस बार एक नई पहल कर लखनऊ से बाहर पर्वतीय महापरिषद की शाखा लखीमपुर खीरी में गठित करने में सफलता मिली है। युवा प्रकोष्ठ इस भागीरथ कार्य हेतु बधाई का पात्र है। महिला पदाधिकारियों द्वारा लखनऊ की क्षेत्रीय शाखाओं में समन्वय स्थापित करने का उत्तम प्रयास किया गया है। महिला प्रकोष्ठ इस हेतु बधाई का पात्र है।

मैं विशेष रूप से अपने संरक्षक गण, युवाओं एवं मातृशक्ति, जिनके सहयोग के बिना कोरोना काल में जनकल्याण के कार्य करना सम्भव नहीं था, को नमन करता हूँ। हमारी मातृशक्ति के सहयोग, समर्थन की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है।

सामाजिक सहयोग व सद्भाव का एक उदाहरण साझा करना चाहूँगा। आबकारी विभाग में कार्यरत स्व0 नेगी जी का शव संदिग्ध परिस्थितियों में रेलवे पटरी के किनारे पड़ा मिला। पुलिस प्रशासन ने आनन–फानन में आत्महत्या करार देकर अखबारों में भी खबर छपवा दी लेकिन महापरिषद के संज्ञान में आया तो अपने स्तर से जांच की गई और प्रशासन को बाध्य होकर हत्या की धारा में रिपोर्ट लिखनी पड़ी व कठोर धाराओं में मुकदमा दर्ज हुआ और परिणाम स्वरूप पीड़ित परिवार को मुआवजा, सरकारी नौकरी, पेंशन आदि सभी सुविधाऐं मिली। यह कार्य युवा शक्ति के अथक प्रयासों से ही संभव हुआ। उल्लेख करने का आशय अपनी युवा भाक्ति पर भरोसा व विस्वास है कि भविष्य में भी वे इसी प्रकार सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

इस वर्ष हमने आदरणीय संरक्षक स्व0 ओ0 पी0 भारद्वाज जी को खोया है! उनका असमय चला जाना, हम सभी को स्तब्ध कर गया। मैं उनकी स्मृति को नमन करता हूँ।

अंत में आपसे निवेदन है कि शासन के दिशा निर्देशों के अनुरूप सामाजिक दूरी के नियमों का पालन करते हुए उत्तरायणी कौथिग को सफल बनाऐं। आने वाले समय में हम सभी स्वस्थ व प्रसन्न रहें, सामाजिक सहयोग की परम्परा, आपसी प्रेम निरन्तर बढ़ता रहे। हमारे क्रियाकलाप समाज के अन्य वर्गों के लिए उदाहरण बनें।

इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ समस्त सहयोगी संस्थाओं, क्षेत्रीय समितियों, रामलीला कमेटियों, अतिथि कलाकारों, विज्ञापन दाताओं व अन्य सहयोगियों का आभारी हूँ जिनका उत्तरायणी कौथिग एवं अन्य कार्यक्रमों को सफल बनाने में सहयोग मिलता रहा है।

धन्यवाद।



*अध्यक्ष*

*पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ*

# महासचिव की लेखनी से...

*–महेन्द्र सिंह रावत*



**उत्तरायणी है हम सबका पर्व।**
**अपनी संस्कृति पर है हम सबको गर्व।।**

पर्वतीय महापरिषद की नवनिर्वाचित प्रबन्धकारिणी के महासचिव के रूप में सभी संस्कृति प्रेमी जनों का अभिवादन करते हुए धन्यवाद करता हूँ कि पर्वतीय समाज ने मुझ अंकिचन को महापरिषद के महासचिव पद का महत्वपूर्ण व गौरवशाली दायित्व प्रदान किया है। उदार पर्वतीय समाज के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुये मैंने निम्न लक्ष्यों को पर्वतीय समाज व महापरिषद के हित में पूर्ण करने का शुभ संकल्प लिया हैः–

1– पर्वतीय समाज की एकता को बनाये रखने हेतु सभी सार्थक प्रयासों का क्रियान्वयन।

2– पर्वतीय समाज के हित में बड़े लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सामुहिकता की भावना के साथ सभी क्षेत्रीय व सहयोगी संस्थाओं को महापरिषद के साथ संगठित करना।

3– भारत रत्न पं0 गोविन्द बल्लभ पंत पर्वतीय सांस्कृतिक उपवन को पर्वतीय समाज के हित में संरक्षित व सुरक्षित रखने हेतु शासन स्तर पर सत्त सार्थक प्रयास करना। उपवन में स्थायी मंच, ग्रीनरूम व महिला/पुरूष प्रसाधनों की पर्याप्त व्यवस्था किया जाना।

4– पर्वतीय महापरिषद भवन के विस्तार हेतु आर्थिक संसाधन जुटाना व उक्त को सांस्कृतिक व सामाजिक केन्द्र के रूप में विकसित करना।

5– पर्वतीय साहित्यकारों व साहित्य के उत्थान तथा दुधबोली भाषा के संर्वधन हेतु गढ़वाली, कुमाउनी, जौनसारी, रंग व जौहारी भाषा अकादमी की स्थापना का सार्थक प्रयास करना।

6– लोक संस्कृति के संर्वधन हेतु लोक कलाओं, विधाओं, नृत्य, गीत व वाद्यों की भारत सरकार व राज्य सरकार के सहयोग से कार्यशालाऐं आयोजित करना जिससे लखनऊ में ही स्थानीय छोलिया टीम व स्तरीय लोक कलाकार तैयार किये जा सकें।

7– पर्वतीय युवाओं हेतु रोजगारपरक कार्य व योजनाओं के माध्यम से अवसर उत्पन्न करना।

8– साहित्य व समाज के बीच सेतू बनकर साहित्य की सेवा का कार्य महापरिषद करेगी।

पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ द्वारा प्रकाशित **''कोरोना रक्षक विशेषांक''** के माध्यम से महापरिषद द्वारा कोरोना के प्रति जन जागृति का एक लघु प्रयास किया जा रहा है। कोरोना महामारी के दृष्टिगत अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुये महापरिषद द्वारा अपने उदार दानदाताओं के सहयोग से रू0 3,50,000/– की धनराशि मुख्यमंत्री आपदा कोष हेतु अर्पित की गयी। कोरोना कोरोना महामारी की इस विभिषिका के बीच जब सम्पूर्ण भारत वर्ष में कहीं भी पर्वतीय समाज द्वारा उत्तरायणी कौथिगों का आयोजन नहीं किया जा रहा है, महापरिषद की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी द्वारा एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुये 10 दिवसीय **''उत्तरायणी काथिग–2021 ''** का आयोजन न केवल पर्वतीय समाज अपितु सर्वसमाज की आकांक्षा के अनुरूप भारत रत्न पंडित गोविन्द बल्लभ पंत पर्वतीय सांस्कृतिक उपवन, बीरबल सहानी मार्ग, लखनऊ में दिनांक 14 जनवरी से 23 जनवरी, 2021 तक आयोजित किया गया है।

उत्तरायणी कौथिग का न केवल पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व है अपितु इस पर्व मेले ने पर्वतीय लोक संस्कृति के संवर्धन के साथ–साथ ही हमारे संस्कारों, परम्पराओं तथा लोक विधाओं को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण

भूमिका निभायी है। उत्तराणी में भगवान सूर्य नारायण जब मकर राशि में प्रवेश करेगें, उस संक्रमण काल के प्रसाद रूपी प्रभाव से करोना का यह विश्वव्यापी संक्रमण अवश्य समाप्त होगा, इस शुभेच्छा के साथ गोमती के तट पर स्थित बागेश्वर धाम की ज्योति को लखनऊ स्थित गोमा तट पर इस कौथिग मे स्थापित कर आयोजन स्थल की आभा को आध्यात्मिक एवं धार्मिक स्वरूप प्रदान किया गया है।

इस वर्ष शोभा यात्रा में उत्तराखण्ड की विभूतियों जिनमें पेशावर काण्ड के महानायक वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली, वृक्ष मित्र गौरा देवी, बागेश्वर में उत्तरायणी के दिन पंडित बद्रीदत्त पाण्डेय जी द्वारा कुली बेगार के रजिस्टरों को सरयू में प्रवाहित करने की घटना के शताब्दी वर्ष व नवदुर्गा आदि सुन्दर झॉकियों को सम्मिलित कर शोभा यात्रा के आकर्षण को बढ़ाया गया है। कौथिग के दौरान सांस्कृतिक पक्ष के प्रस्तुतिकरण को अधिक सुन्दर और प्रासंगिक बनाने हेतु आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुये **विशाल एल.ई.डी. स्क्रीन का अभिनव प्रयोग किया जा रहा है।** एल.ई.डी. स्क्रीन के माध्यम से मंच पर प्रस्तुत किये जाने वाले लोक नृत्य व लोक गीत के अनुरूप दृश्याकंन किया जायेगा। विज्ञापनों का सजीव प्रसारण भी एल.ई.डी. स्क्रीन के माध्यम से करने की नयी प्रक्रिया से महापरिषद के संसाधनों को बढ़ाने की पहल की जा रही है।

सांस्कृतिक संचेतना जागृत करने के साथ ही पर्वतीय महापरिषद ने सामाजिक सेवा के कार्यो में हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है। कोरोना काल में महापरिषद के पदाधिकारियों व कार्यकताओं द्वारा व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से अन्नदान, मास्क, सैनीटाइजर व आर्थिक सहयोग से निस्वार्थ जन सेवा कर आदर्श स्थापित किया है। गरीब व विपन्न परिवारों को संकट के समय **''चिल्लर कोष''** जैसी सामूहिक योजना के माध्यम से आर्थिक सहायता प्रदान कर आँसू पोछने का कार्य भी महापरिषद द्वारा किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त महापरिषद द्वारा संगठन की शक्ति को सुदृढ़ करने हेतु 18 वर्ष से अधिक आयु के सभी पर्वतीयों को आजीवन सदस्य बनाने का अभियान चलाया जा रहा है जिसके बहुत उत्साहवर्धक परिणाम दृष्टिगत हो रहे हैं। भविष्य में लखनऊ मे निवास कर रहे पर्वतीय जनों के संबंध में सटीक आंकड़े प्राप्त होने के साथ ही अपने आजीवन सदस्यों का बड़ी संख्या में सहयोग व सहभागिता महापरिषद को प्राप्त हो सकेगी।

लखनऊ महानगरी में पर्वतीय एकता और सामुहिकता के सबसे बड़े आयोजन के रूप में उत्तरायणी कौथिग सम्पूर्ण भारत वर्ष में अपनी पहचान बनाई है। मैं महापरिषद के सम्मानित संरक्षक मण्डल, सलाहकार मण्डल, समर्पित पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं, महिला प्रकोष्ठ और युवा प्रकोष्ठ, अधिवक्ता प्रकोष्ठ, सैनिक प्रकोष्ठ, धार्मिक प्रकोष्ठ, उद्यमी प्रकोष्ठ, खेल प्रकोष्ठ, साहित्यिक प्रकोष्ठ व सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के कर्मवीरों को नमन करता हूँ जिन्होंने अपने प्रयासों से न केवल पर्वतीय समाज अपितु सर्वसमाज के संस्कृति प्रेमी जनों का सहयोग इस आयोजन हेतु संजोया है।

अपनी लेखनी को विराम देने से पूर्व में सम्पादक मण्डल के सम्मानित सदस्यों व विज्ञापन समिति का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिनके सत्त किये गये अथक प्रयासों से ''पर्वत संदेश'' पत्रिका का ज्ञानपूरित अंक कोरोना की विषम स्थिति के चलते भी बहुत ही अल्प समय में प्रकाशित करना संभव हो सका है।

जय बागेश्वरनाथ!

*महासचिव*

*पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ*

# कोरोना से सबक लें ताकि कौतिक लगते रहें

*–नवीन जोशी*



कौतिकी ठहरा मनखी। सो, लगने लगे हैं कौतिक फिर से। कोरोना का प्रकोप जारी है। उसका नया रूप और खतरनाक है, बल। तो भी मनुष्य की यात्रा नहीं ठहरती, कौतिक बहुत प्रतीक्षा नहीं कराते। सन 2020 की कोरोना कयामत के बाद ज़िंदगी फिर चल पड़ी है। उससे चलना ही है।

बहुत बुरे दिन दिन देखे हमने 2020 में। दोष किसे दें सिवाय अपने को? हमने ही इस दुनिया को इस इस तरह बरता कि प्रकृति हमारे विरुद्ध खड़ी हो गई। हमने इस सृष्टि के सह–अस्तित्व की कद्र नहीं की। मनुष्य तो इस धरती पर बहुत समय बाद पैदा हुआ। असंख्य जीवाणु, विषाणु, जंतु और वनस्पतियाँ यहाँ हम से भी पहले से हैं। यह सृष्टि, मनुष्यों के लिए ही नहीं इस धरती के तमाम जीव–जंतुओं–वनस्पतियों के लिए भी है। क्या हमने यह संतुलन, यह सह–अस्तित्व नहीं बिगाड़ा। इस धरती पर अन्य जीव–जगत की उपेक्षा कर अपना ही राज कायम करने की कोशिश नहीं की?

क्या इस दुनिया की वर्तमान व्यवस्थाओं के नियंताओं ने पूरे साल इस बारे में सोचा कि कई–कई वायरस मानव के लिए ही बड़े से बड़ा खतरा क्यों बनते जा रहे हैं? मनुष्य ही धीरे–धीरे उनकी चपेट में क्यों आता चला गया? हमने अपना जीवन ऐसा क्या बना लिया कि हम सबसे नाजुक बनते आए? ठीक है कि हमने वैज्ञानिक प्रगति से तमाम जीवाणुओं–वायरसों से बचाव के तरीके खोज लिए लेकिन क्या इसी आधार पर हमें प्रकृति से दुश्मनी मोल लेते रहना चाहिए?

सन 2020 में वायरस निरोधी टीका खोजने–बनाने में सम्पूर्ण प्रतिभा झोंक देने के अलावा जीवन शैली और विकास की अवधारणा पर कितना गौर किया गया? क्या इसमें थोड़ा भी बदलाव करने के बारे में सोचा गया? या, पूरी दुनिया इसी में खुश हो जाने वाली है कि बहुत शीघ्र हमने इसका टीका खोज लिया और वायरस कितना भी बहुरूपिया बन जाए उस पर हम विजय पा ही लेंगे? सब कुछ ऐसा ही चलता रहा तो कई और वायरस इससे भी खतरनाक बनकर सामने आते रहेंगे।

**कित्ते बुरे दिन थे !**

इजा कहती थी– 'किसी के अच्छे में शामिल भले न हो पाओ, दुःख–परेशानी और शोक में अवश्य उसके पास जाना चाहिए। मित्र तो मित्र, शत्रु के यहाँ भी गमी में अवश्य जाना चाहिए।'

इस कोरोना–काल में इजा नहीं रही। पाँच सितम्बर 2020 की सुबह उसने प्राण त्याग दिए। उसे नब्बेवां वर्ष चल रहा था। वह अपनी पूरी उम्र काटकर गई मगर शोक तो शोक है। इजा बहुत व्यावहारिक और सामाजिक थी। मित्र–सम्बंधियों के अलावा उसका परिचय और सम्पर्क का दायरा बहुत विशाल था। वह हर कहीं जाती और सबका हाल पूछती रहती थी। जब वह संसार से विदा हुई तो लगभग अकेली। नाते–रिश्तेदार, पड़ोसी और परिचित, इजा का सम्मान करने वाले कई लोग आना चाह कर भी नहीं आ पाए। हमने ही कई लोगों को मना कर दिया। कोरोना का प्रकोप चरम पर था। हमने सबसे अनुरोध किया कि जहाँ हैं वहीं से उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना कर लीजिए।

कोरोना ने हमें किस कदर असामाजिक प्राणी बना दिया! मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, बचपन से यही पढ़ते आ रहे थे। कोरोना महामारी ने यह पाठ बदल दिया है। महामारी से बचे रहना है तो असामाजिक प्राणी बनकर रहो! दुख–तकलीफ के अवसर पर भी अपनों के पास नहीं जा पाना कितनी बड़ी विवशता है!

कोरोना वायरस का आक्रमण होते ही सबको सचेत किया गया था कि 'सामाजिक दूरी' (सोशल डिस्टेंसिंग) बनाकर रखें। आपत्ति की गई थी कि इसे 'सामाजिक दूरी' क्यों कहा जा रहा है। वायरस तो शारीरिक नजदीकी होने पर संक्रमित होता है। शारीरिक दूरी कहिए या भौतिक दूरी। सामाजिक दूरी बनाकर मनुष्य कैसे रह पाएगा? धीरे–धीरे 'सामाजिक दूरी' को 'शारीरिक दूरी' कहा जाने लगा लेकिन हुआ वही जो पहले–पहल मुँह से निकला था– पिछले एक साल में हम एक–दूजे से, अपने करीबियों से, समाज से कट गए। असामाजिक हो गए! सारी सामाजिकता ऑनलाइन हो गई। मनुष्य एक वर्चुअल सामाजिक प्राणी बन गया।

कोरोना के चरम दौर में अम्बेडकर नगर के तत्कालीन जिलाधिकारी राकेश मिश्र की फेसबुक पोस्ट के अंश दिमाग से निकलते ही नहीं। अपने जिले के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ एस पी गौतम की कोरोना संक्रमण से हुई मौत पर उन्होंने लिखा था– ''आज हर उम्मीद को तोड़ती खबर आई। हम लखनऊ भागे... अंतिम विदाई... पूरा परिवार था, पर बॉडी–बैग में सील्ड देह थी... अंतिम दर्शन, मुख देखना भी न हो सका... विद्युत शवदाह गृह के कर्मचारी अपने विशेष वस्त्र पहनने लगे। हमें भी अपने पांव, सर, हाथ, मुँह सब ढकना था.. वहाँ सबकी पहचान खो गई...।''

उन्हीं दिनों एक तस्वीर देखी थी जो भूलती ही नहीं। रह–रह कर सिहरन से भर देती है। एक युवक की कोरोना संक्रमण से मौत हो गई। दूर रहने वाले माता–पिता रोते–धोते भागे आए लेकिन बेटे का अंतिम संस्कार करना तो दूर, उसका चेहरा तक देख नहीं पाए। अस्पताल के शव गृह के खुले दरवाजे के बाहर खड़ा होकर जिसे वे देख पा रहे थे वह प्लास्टिक का पूरी तरह बंद छह फुटा बंडल था। वहाँ न किसी का चेहरा था, न हाथ–पाँव। एक प्रतीति भर थी कि उसमें उनके जाये बेटे की ठंडी देह है। यह अहसास भी अस्पताल के कर्मचारियों के बताने से हुआ था। क्या पता, उन्हें भरोसा भी हुआ होगा या नहीं कि उसमें उन्हीं का बेटा है! बहुत सम्भव है कि उन्होंने सोचा हो कि उनका बेटा जीवित हो, कहीं और हो, स्वस्थ हो और यह खबर झूठी निकले! अपने जाये बेटे का चेहरा भी अंतिम बार नहीं देख पाने की यह कसक कोरोना–काल की नई दारुण कथा है। प्रतिदिन ऐसे मार्मिक प्रसंग सुनने में आते रहे। पत्नी, पति का चेहरा नहीं देख सकती, छूना तो दूर की बात है। बॉडी–बैग़ में सील बंद देह को बेटे–बेटी या सगे सम्बंधी कंधा नहीं दे पाए। पुलिस ले जा रही गाड़ी में और अंत्येष्टि कर दे रही। शोक व्यक्त करने भी कोई नहीं आ सकता।

सुख में न जा पाते किसी के, कोई बात नहीं थी। हारी–बीमारी में, दुःख–तकलीफ में तो अपनों की सहायता चाहिए, सहारा चाहिए, सांत्वना देने वाला चाहिए। एक कंधा चाहिए जिस पर सिर रख सकें। कोरोना ने वह कंधा भी छीन लिया। गमी में जाना किसी के शोक में शामिल होना ही नहीं होता, पुण्य का काम भी माना जाता है। यह कैसा समय आया! यह तो सचमुच 'सामाजिक दूरी' हो गई! कौन नामुराद था जिसने पहले पहल 'सोशल डिस्टेंसिंग' कहा था?

**जीवन का ढर्रा ही बदल गया**

एक सुबह साफ–सफाई करते हुए ध्यान गया कि कब से जूता नहीं पहना। कोरोना–बंदी घोषित होने के बाद से उसकी आवश्यकता ही नहीं रही। रैक में पड़ा–पड़ा वह धूल खाता रहा। उसके अंदर पड़े मुड़े–तुड़े जुराबों के ऊपर मकड़ियों ने जाला बना लिया था। फिर कपड़ों की अल्मारी की याद आई। धुले–इस्तरी किए कई जोड़े कपड़े हैंगर में लटक रहे हैं। दो–चार घरेलू कपड़ों के अलावा बाहरी कपड़े पहनने की आवश्यकता ही नहीं रही। घर में क्या पैण्ट–कमीज पहनकर बैठें! पास की बाजार से कभी–कभार अत्यावश्यक चीजों की खरीद घरेलू कपड़ों में हो जाती। कुछ 'वेबिनार' और 'लाइव' में हिस्सेदारी करनी पड़ी तो कुर्ते से ही काम चल गया या पाजामे के ऊपर कमीज डाल ली, बस! वहाँ कौन देख रहा है कि क्या–कैसा पहना है!

ठीक–ठाक कपड़े–जूते सामाजिक प्राणी को चाहिए जो इन दिनों हम रहे नहीं। शादी–ब्याह में हजारों मित्रों–सम्बंधियों का आतिथ्य सत्कार करने वाले परिवार चंद घरेलू जनों के बीच रश्में निभा ले रहे हैं। न बैण्ड–बाजा–बारात, न भव्य दावतें। जन्म दिन की अंतरंग पार्टियाँ तो भूल ही गए। मॉल–मल्टीप्लेक्स भी हुआ करते थे! किसलिए पहनें धुले–साफ कपड़े, चमचमाते जूते? कई पुरुषों–महिलाओं को जानता हूँ जिन्हें नई–नई काट के अच्छे से अच्छे कपड़े पहनने का शौक है। हर महीने उनकी वार्डरोब में नई आवक होती थी। वे इन दिनों क्या कर रहे होंगे? सजने–संवरने का चाव घर में या 'ऑनलाइन' कितना पूरा होता होगा? फेसबुक में फोटो डालकर वह प्रशंसा कहाँ पाई जा सकती है जो हर निगाह अपनी ओर उठते देखकर होती थी! खुद ही सजो, खुद ही आईने के सामने खड़े होकर तारीफ करो, ऐसा भी कहीं होता है?

लॉकडाउन का दौर चल रहा था। एक सुबह कचरा उठाने वाले को कूड़ेदान देते समय पर अचम्भा हो गया। कूड़ेदान लगभग खाली था। दूध के चंद खाली पैकेटों के अलावा उसमें कोई पॉलीथीन नहीं फेंकी जा रही थी। कुछ सब्जी–फलों के छिक्कल, कुछ बिस्कुट, दवाइयों, आदि के रैपर, बस! बाजार ही जाना नहीं होता। डरते–डरते गए भी तो सिर्फ अत्यावश्यक खरीदारी हो रही। 'शॉपिंग' कहते थे जिसे, जरूरत हो न हो, बाजार निकले, घूमे–टहले और कुछ खरीद लाए, वह सब नहीं

हो रहा। इसलिए इन दिनों घरों से बहुत कम कचरा निकला। पहले हर रोज कूड़ेदान भर जाता था। कई दिन तो कचरा इतना अधिक हो जाता था कि कूड़ेदान के बाहर भी फैल जाता था।

सब कुछ डिजिटल चलने लगा, वर्चुअल। सामाजिक कुछ भी नहीं। ऑफिस का काम ऑनलाइन। स्कूल ऑनलाइन। मीटिंग–सेमीनार का नाम ही बदल गया है– वेबीनार, वर्चुअल मीटिंग। शॉपिंग अधिकाधिक ऑनलाइन हो रही। पड़ोसियों की कुशल–क्षेम ऑनलाइन। मुहल्ले का निंदा–पुराण व्हाट्सऐप पर। कुछ भी आमने–सामने नहीं। डॉक्टर भी मरीज को ऑनलाइन देख रहे। कभी–कभी सोचता हूँ, सूचना क्रांति न हुई होती, कम्प्यूटर–मोबाइल–इण्टरनेट नहीं होते तो इस कोरोनादृकाल में काम कैसे चलता? कनेक्टिविटी ही है जो थोड़ा–बहुत सामाजिक बनाए हुए है– वर्चुअल सामाजिक!

**कोरोना का सबक**

फिर सन 2020 बीतते–बीतते ज़िंदगी ने अपना ढर्रा फिर से वापस पाने की कोशिश की। यह दुनियाँ जैसी भी हमने बना दी है, सतत लॉकडाउन में नहीं रह सकती। यहाँ करोड़ों पेट हैं जिन्हें रोज कमाकर भरना होता है। करोड़ों हाथ हैं जो रोज सुबह काम के लिए निकलते हैं तब परिवार चलते हैं। सब्से पहले वे निकले। उनके पीछे खाते–पीते लोगों का डर निकलना शुरू हुआ। 2021 आते–आते कोरोना का टीका बन जाने की खबर से भी दुनियाँ ने राहत ली। हालांकि अभी जो टीके बने हैं और जिनके सीमित किंतु आपातकालीन प्रयोग की अनुमति दी गई है, उनका कोई भरोसा नहीं है कि कितने सुरक्षित और प्रभावी हैं। पर मनखी उमीद में जीता है। यही उसकी बड़ी ताकत है।

सूर्य उत्तरायण हो चुका है। शीत ऋतु की मुर्दनी के साथ कोरोना का भय भी कम हो रहा है। इसी के साथ सुनाई दे रही है कौतिकों की पुकार और आते हुए वसंत की दस्तक। यह शुभ लक्षण है।

कोरोना रहेगा। उस जैसे और उससे भी खतरनाक वायरस हमला कर सकते हैं। हमने सारी गलतियाँ की हैं। विवेकशील मनुष्य होने के नाते हमें उस पर विचार करना होगा। महामारियों से मनुष्य लड़ लेगा और कौतिक लगाता–नाचता–गाता रहेगा।

कोरोना ने जो सीख दी है वह यह कि हमें इस सृष्टि के प्रति अपने व्यवहार पर पूरी तरह नए सिरे से विचार करना होगा ताकि हम वे बुरे दिन फिर न देखें जो पिछले दिनों देखने पड़े।

*–पत्रकारपुरम्, गोमतीनगर,*
*लखनऊ*

# कुली बेगार आन्दोलन

*"कुली बेगार आंदोलन को सौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। उत्तराखण्ड में स्वाधीनता आंदोलन की शुरुआत कुछ ऐसे ही हुई थी। यह हमारे आत्मसम्मान और गौरव का भी प्रतीक है ..... मशहूर पर्यावरणविद और इतिहासकार प्रोफेसर शेखर पाठक द्वारा संपादित सरफरोशी की तमन्ना के कुछ चुनिन्द अंश।"*

11 जनवरी 1921 की शक्ति में बदरी दत्त पाण्डे का 'बेगार उठा लो' का आह्वान इसी क्रम में था. 1921 के आरम्भ में कुमाऊँ का सामाजिक–राजनैतिक तापमान अपनी पराकाष्ठा पर था। गाँवों– विशेष रूप से समस्त कत्यूर, बोरारौ तथा रानीखेत क्षेत्र–में बेगार विरोधी लहर पूरी तरह फैल चुकी थी और उत्तरायणी मेले में इस सबकी सम्मिलित अभिव्यक्ति का सभी को इन्तजार था। जनवरी 1921 में जंगलात विभाग को गणाई तथा द्वाराहाट में कुली नहीं मिले। यह काशीपुर अधिवेशन का असर था और स्थानीय प्रतिरोधों की परम्परा के क्रम में भी था। यद्यपि अलमोड़े के डिप्टी कमिश्नर डायबिल को इससे खतरा नजर नहीं आया। 11 जनवरी 1921 को जब डायबिल निश्चिन्त होकर बागेश्वर को रवाना हुआ तो उस समय वह सोच भी नहीं सका था कि वह बागेश्वर के मेले में नहीं बागेश्वर के आन्दोलन में जा रहा है। वह स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि वह बागेश्वर में अपमानित होने जा रहा है और यह अपमान औपनिवेशिक सत्ता का भी होगा।

उधर 10 जनवरी को ही हरगोविन्द पंत, चिरंजीलाल, बदरी दत्त पाण्डे, चेतराम सुनार सहित परिषद् के लगभग 50 कार्यकर्ता अलमोड़े से बोरारौ–कत्यूर होकर बागेश्वर पहुँच गये थे। रास्ते भर नारे लगते रहे– भारत माता की जय, महात्मा गाँधी की जय तथा वन्दे मातरम. कुछ कार्यकर्ताओं ने नागपुर से लाई गई खादी की टोपियाँ पहनी थी। 11 जनवरी 1921 को बागेश्वर में तैयारी होती रही।

12 जनवरी को दोपहर विराट जुलूस निकला। 'कुली उतार बंद करो' लिखे हुए लाल कपड़े के एक बड़े बैनर को जुलूस द्वारा कत्यूर बाजार से डुग बाजार तक घुमाया गया। लोगों के हाथों में लाल तथा हरे बैनर थे और होठों पर 'महात्मा गाँधी की जय', 'स्वतंत्र भारत की जय', भारत माता की जय' तथा 'कुली उत्तार बंद करो' के नारे थे। जुलूस बीच–बीच में रुकता रहा और बदंरी दत्त पाण्डे, हरगोविन्द पंत, चेतराम और चिरंजीलाल भाषण देते रहे। सड़क में जितने लोग थे उससे कम छज्जों, खिड़कियों से उत्सुकता से झाँक रहे स्त्री, बच्चे और बूढ़े भी न थे।

उत्तरायणी मेले में पहली बार ऐसा दृश्य सामने आ रहा था। अंत में जुलूस सरयू तट पर एक वृहद् सभा में बदल गया। सभा में 10 हजार से अधिक जनता उपस्थित थी।



सभी के भाषणों का सार था कि अब कुली न बनें, यह प्रथा न्याय संगत नहीं है। जब हरगोविन्द पंत ने कहा कि जो कुली उतार नहीं देंगे वे हाथ उठाएँ तो समस्त उपस्थित जनता ने उत्साह से हाथ उठाये और बहुतों ने तो यह शपथ ली कि चाहे हमारी जान चली जाय पर अब हम कुली नहीं बनेंगे। इसी दिन सिलोर महादेव (गढ़वाल) में ईश्वरीदत्त ध्यानी के उद्योग से वृहत् सभा हुई और उतार न देने का निर्णय लिया गया।

13 जनवरी संक्रान्ति के दिन पुनः वृहत् सभा हुई। बदरी दत्त पाण्डे ने डाक बंगले, जहाँ डिप्टी कमिश्नर डायबिल टिका था और कुछ सरकार परस्त भी वहाँ थे, की ओर संकेत कर कहा– वहाँ कपट दरबार लगा हुआ है। आगे वे बोले कि चाहे मेरे कोई टुकड़े–टुकड़े कर दे या गोली मार दे पर मैं कुली नहीं बनूंगा। आप सब मेरा अनुकरण करें। यही स्वराज्य की दिशा में पहला कदम है।

समस्त जनता ने हाथ उठाकर उतार न देने की घोषणा की। 'सरकार अन्यायी है', 'स्वतंत्र भारत की जय' तथा 'महात्मा गाँधी की जय' के नारे लगे। आगे पाण्डे ने कहा कि दानपुर के वीरों ने विश्व युद्ध में साहसपूर्ण कार्य किया, पर अब रौलेट एक्ट के रूप में हमें ईनाम दिया जा रहा है। क्योंकि सरकार समझती है कि हम आन्दोलन करेंगे, स्वराज्य माँगेंगे. यह कानून 'न अपील, न दलील, न वकील' का है उन्होंने स्पष्ट कहा कि बेगार की सफलता के बाद हम जंगलों के लिए आन्दोलन करेंगे। फिलहाल आप सभी लीसा निकालना, लकड़ी चीरना तथा जंगल के ठेके का काम लेना छोड़ दें। चिरंजीलाल तथा हरगोविन्द पंत के व्याख्यान हुए, उतार न देने की शपथ ली गई और पहली बार कुली रजिस्टर मालगुजारों द्वारा सरयू के प्रवाह में डाले जाते रहे।

इस सबका असर जनता पर देखकर अगले दिन डायबिल ने हरगोविन्द पंत, बदरी दत्त पाण्डे, चिरंजीलाल को अपने पास बुलाया और फटकार कर कहा कि बेगारी की जो प्रथा गोरखों के समय से चल रही है उसे रातों रात कैसे उठा दें। इन तीनों को बागेश्वर छोड़ने के आदेश दे दिये थे, पर इन्होंने मना कर दिया। तीनों नेता जब डाक बंगले से निकले तो पुनः प्रतीक्षारत जनसमूह को स्थिति बताने को सभा हुई। बदरी दत्त ने कहा कि यदि आप कुली नहीं देते हैं तो यहाँ से मैं नहीं मेरी लाश जायेगी।

हरगोविन्द पंत ने कहा कि जनता अटल रही तो हम साथ देने को तत्पर हैं। देखते–देखते सभी ने शपथ ली और बचे हुए कुली रजिस्टर सरयू में डाल दिये गये। सरयू का पानी अंजुली में लेकर दृढ़ रहने की शपथ भी ली गयी। फिर चिरंजीलाल, मोहनसिंह मेहता, रामदत्त, जीतसिंह, पुरुषोत्तमदत्त जोशी आदि ने व्याख्यान दिये।

15 जनवरी को जिला प्रशासन को आन्दोलनकारियों की गिरफ्तारी से होने वाले खतरे का अंदाजा लग गया था। डायबिल के साथ बागेश्वर में पुलिस के 21 अफसर, 25 सिपाही तथा मात्र 500 गोलियाँ थीं लेकिन डायबिल ने पाया कि अधिकांश थोकदार तथा मालगुजार आन्दोलनकारियों के प्रभाव में हैं, तो वह उन्हें चेतावनी तक नहीं दे पाया।

बागेश्वर की सफलता के बाद वहाँ लिये गये निर्णय और उसके स्थानीय प्रभाव को सर्वत्र जनता तक पहुँचाने की सर्वाधिक आवश्यकता थी। इसके लिए आन्दोलन के नेताओं/कार्यकर्ताओं ने गाँव–गाँव जाकर जो हुआ उसे बताने और जो किया जाना है उसे समझाने का कार्य शुरू किया। यह सब इतने नियोजित तथा प्रभावशाली ढंग से किया गया कि बागेश्वर तथा आसपास की चार पट्टियाँ में फैला आन्दोलन व्यापक रूप से पूरे अलमोड़े, नैनीताल तथा गढ़वाल जिलों में फैल गया। 30 जनवरी 1921 को जिला गढ़वाल की सबसे महत्वपूर्ण सभा चंमेठाखाल में मुकुन्दीलाल की अध्यक्षता में हुयी। चमेठाखाल प्राइमरी स्कूल के प्रांगण में मुकुन्दीलाल ने बागेश्वर आन्दोलन की चर्चा की और इसका अनुकरण गढ़वाल के लिए अनिवार्य बताया। खन्द्वारी के ईश्वरीदत्त ध्यानी और बंदखणी के मंगतराम खंतवाल ने मालंगुजारी से त्यागपत्र दिया। इसी सप्ताह ऊपरी गढ़वाल के दशजूला पट्टी के ककोड़ाखाल (गोचर से पोखरी पैदल मार्ग) नामक स्थान पर अनुसूया प्रसाद बहुगुणा के नेतृत्व में आन्दोलन हुआ और अधिकारियों को कुली नहीं मिले।

इलाहाबाद तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षारत छात्रों ने लौटकर इस आन्दोलन में हिस्सेदारी की। जो काम इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र प्रयाग दत्त पंत ने पिथौरागढ़ में किया, वही भैरवदत्त धूलिया, भोलादत्त चंदोला, जीवानन्द बडोला, गोवर्द्धन बडोला, भोलादत्त डबराल ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से लौटकर गढ़वाल में किया। 'गढ़वाली' के

संपादक विश्वम्भर दत्त चंदोला इस समय अपने गाँव के दौरे पर आये थे।

बेगार उन्मूलन आन्दोलन उत्तराखण्ड का प्रथम आन्दोलन था, जिसमें स्थानीय समाज के विभिन्न वर्गों ने अधिकतम हिस्सेदारी की थी। सामान्य बेगार विरोधी आक्रोश से आरम्भ इस प्रक्रिया के संगठित आन्दोलन में रूपान्तरित होने तक एक विकास क्रम देखा जा सकता है। बेगार आन्दोलन का पहला दौर राष्ट्रीय संग्राम के उन वर्षों में पड़ता है जब कांग्रेस में सुधारवादी नरमपंथी सोच का अधिक प्रभाव था। आवेदनों द्वारा संक्षिप्त सुधार पाना इस समय राष्ट्रीय या स्थानीय स्तर पर अभीष्ट था। 1905 के बाद कांग्रेस में मतभेद और अन्ततः नरम–गरम दलों में विभाजन होने और कुमाऊँ में कुछ समय के लिए निवेदनों और शिष्ट मंडलों के स्थगित होने के पीछे यह भी एक कारण था। बेगार आन्दोलन का दूसरा दौर प्रथम विश्व युद्ध के साथ प्रारम्भ होकर असहयोग आन्दोलन में विलीन हो जाता है। इसी दौर में राष्ट्रीय स्तर पर न सिर्फ कांग्रेस की दोनों धाराओं का विलय होता है और मुस्लिम लीग करीब आती है वरन उत्तराखण्ड में कुमाऊँ परिषद् का जन्म और विकास होता है।

पहला दौर लम्बा और कम सक्रिय और दूसरा दौर एक दशक से कम अवधि का होकर भी बहुत अधिक सघन, संगठित, जनमुखी और आकर्षक रहा है। पहले दौर में बेगार को संशोधित करने की –आवश्यकता महसूस की गई और शिष्ट मंडलों–निवेदकों ने बेगार उन्मूलन हेतु प्रार्थनाएँ अधिक की थी, जबकि दूसरे दौर में उन्मूलन के लिए कुमाऊँ के काश्तकारों द्वारा प्रत्यक्ष कार्रवाई की गयी और प्रार्थनाओं का स्थान आक्रामकता ने ले लिया। यह आक्रामकता कुछ विशेष लोगों, नेतृत्व वर्ग– तक ही सीमित न होकर जन सामान्य में मौजूद थी। आन्दोलन तब सिर्फ बेगार के संदर्भ में ही नहीं उभरा, वरन् जनहितों को नकारने वाली जंगलात नीति और सरकार द्वारा उत्तराखण्ड क्षेत्र का शिक्षा तथा काउन्सिल की सदस्यता आदि संदर्भों में नकार जैसे विषय भी आन्दोलन से जुड़ गये थे। विभिन्न अन्य विषयों ने बेगार आन्दोलन को त्वरित किया। इसलिए इस दौर का आन्दोलन अधिक व्यापक और गहरा बन सका।

कमिश्नर हैनरी रैमजे के प्रशासन के उत्तराद्ध तक ग्रामीण क्षेत्रों में बेगार का जो छिटपुट विरोध किया जाता रहा था, उसे स्थानीय पत्रों के प्रकाशन और काउन्सिल–कांग्रेस में इस प्रथा के विरुद्ध उठ रहे प्रश्नों –प्रस्तावों से अप्रत्यक्ष रूप से कुछ बल मिला। पिछली सदी के अंत तक बेगार विरोधी आन्दोलन दो स्तरों पर चलने लगा था। एक ओर काश्तकारों के व्यक्तिगत आक्रोश सामूहिक पर असंगठित विरोधों में रूपान्तरित होने लंगे थे। सोमेश्वर के प्रतिरोध से 1903 में खत्याड़ी के ग्रामीणों की सफलता तक इस तरह के विभिन्न प्रसंगों के नायक और अभियन्ता काश्तकार ही थे। दूसरी ओर उत्तराखण्ड के प्रारम्भिक कांग्रेसी, स्थानीय पत्रों के संपादक, लेखक, वकील, अध्यापक, पदवीधारी, कांग्रेसों, शिष्ट मंडलों, आवेदनों और पत्रों की टिप्पणी के द्वारा बेगार की अति पर रोक लगाने का विनय करने लगे थे। मानवीय तथा जनतांत्रिक तर्क रखने वाले ये सभी महानुभाव अलमोड़े, नैनीताल या पौड़ी अथवा गाँवों से इन कस्बों में स्थायी–अस्थाई रूप से–आ कर रहने लगे भद्रजन थे।

इस प्रकार इस सदी के पहले दशक में दो समानान्तर स्तरों पर बेगार का विरोध निरन्तर बढ़ता गया था, पर ये दोनों आन्दोलन सामान्यतया सीमित, असंगठित और एक दूसरे के पूरक होने के बावजूद एक दूसरे से अपरिचित थे। ग्रामीण आन्दोलन में आक्रोश और दुस्साहस एक साथ अभिव्यक्त होते रहे तो शहरी शिष्ट मण्डल असली अर्थों में उदार और शिष्ट थे। पर इन दोनों के एक तथा अधिक व्यापक होने की संभावनाएँ थीं।

यह स्वाभाविक ही था कि जब आम ग्रामीण जन शिक्षा और जागृति से वंचित तथा देश की घटनाओं या पहाड़ी नगरों की हलचलों से अपरिचित थे, उनमें इस तरह के नेतृत्व का उभरना संभव नहीं था, जो संगठन, प्रचार–प्रसार के स्तर पर अभूतपूर्व कार्य करता और खत्याड़ी जैसे प्रतिरोधों की शक्ति को जनता में एका और आत्मविश्वास लाने हेतु प्रयुक्त करता तब शहरी नेतृत्व भी आवेदनों से इतर कुछ नही कर पा रहा था। इससे पूर्व अलमोड़े में जितनी महत्वपूर्ण घटनाएँ हुयी थी जैसे प्रेस एक्ट, आर्म्स एक्ट का विरोध या एलबर्ट बिल का समर्थन आदि, उनसे कुछ ही उदार जागृत भद्रजन जुड़े थे। बेगार से प्रत्यक्ष पीड़ित न होने के कारण ग्रामीणों का सा प्रतिरोध इनके लिए संभव भी न था।

इस सदी के आरम्भ में राजनैतिक जागृत के कारण यह स्थिति कुछ बदली। गाँवों के लड़के भी शिक्षा प्राप्त करने

या सेना में भर्ती होने अलमोड़े, रानीखेत, लैन्सडौन, देहरादून या देश में अन्यत्र जाने लगे। एक ही समस्या से सम्बन्धित इन समानान्तर आन्दोलनों में इस सदी के प्रथम दशक तक अधिक अन्तर्सम्बन्ध नहीं हो पाया था। जब ग्रामीणों का बेगार के अन्तर्गत दमन या प्रतिरोध करने पर जुर्माना होता था तो भद्रलोक उसमें मददगार नहीं हो पाता था। दूसरी ओर जब बेगार में संशोधन हेतु यह वर्ग कार्य करता था तो काश्तकार इससे अपरिचित ही रहते थे। सोमेश्वर अथवा खत्याड़ी के प्रतिरोध अन्य ग्रामीणों तक नहीं पहुँच सके पर शहरी नेतृत्व भी इनका उपयोग अपने उदार आन्दोलनों हेतु नहीं कर पाया क्योंकि शहरी नेतृत्व का एक हिस्सा पहले धीरे–धीरे संशोधन से, अन्ततः कुली ऐजेन्सी से संतुष्ट हो गया। ऐजेन्सी का प्रसार अलमोड़े तक न होने से यहाँ का नेतृत्व इस प्रभाव से बचा रहा, इसलिए शहरी नेतृत्व में ऐजेन्सी समर्थक तथा पूर्ण उन्मूलन के पक्षधरों के दो समूह बन गये।

1916 में कुमाऊँ परिषद् के जन्म के बाद दूसरा समूह प्रभावशाली हुआ और उसका ग्रामीण आधार भी बढ़ता गया। कुमाऊँ परिषद् ने शहरी नेतृत्व और ग्रामीण काश्तकारों में एका करने में सफलता पाई। परिषद् के शहरी नेताओं–कार्यकर्ताओं को भी ग्रामीणों में से उभरे कार्यकर्ताओं ने ही साहस और प्रेरणा दी। हरगोविन्द पंत, बदरी दत्त पाण्डे, मुकुंदीलाल, गोविन्द बल्लभ पंत, चेतराम आदि शहरी हो चुकने के बावजूद गाँवों से कटे न थे। मोहनसिंह मेहता, अनुसूया प्रसाद बहुगुणा, केशर सिंह रावत, ईश्वरीदत्त ध्यानी, कृष्णानन्द उप्रेती, रामदत्त, प्रयागदत्त पंत, शेरसिंह मनराल, कृष्णानन्द शास्त्री, धरमसिंह कुलौला तथा ज्वालादत्त करगेती आदि पूरी तरह गाँवों से उभरे कार्यकर्ता थे। अपनी पराकाष्ठा के समय आन्दोलन फिर गाँवों की ओर गया क्योंकि ग्रामीण जनता से आन्दोलन में व्यापक हिस्सेदारी करने, निर्णय ले सकने और अपने निर्णय पर अटल रहने की सभी को आशा थी।

इस आन्दोलन में आम काश्तकार, सयाणा–थोकदार, भूतपूर्व सैनिक, सरकारी कर्मचारी, शिक्षक तथा छात्र आदि सम्मिलित हुए थे। सरकारी तथा जिला परिषद् स्कूलों के अध्यापक प्रत्यक्ष आन्दोलन में आये और स्थानीय ही नहीं बनारस या प्रयाग में पढ़ रहे छात्र भी सक्रिय थे। भूतपूर्व सैनिक या प्रथम विश्वयुद्ध से लौटे सैनिकों ने बागेश्वर में असाधारण भूमिका निभाई थी। जनवरी 1921 के बाद प्रधान, थोकदार ही नहीं पटवारी, पेशकार और डिप्टी कमिश्नर तक अपनी पुरानी प्रभावशाली हैसियत खो चुके थे। सरकारपरस्त प्रधानों की नई पीढ़ी प्रत्यक्ष आन्दोलन में आ गई थी। रानीखेत तथा लैन्सडौन जैसी छावनियों के पास सरकार विरोधी सभाएँ होने लगी थी।

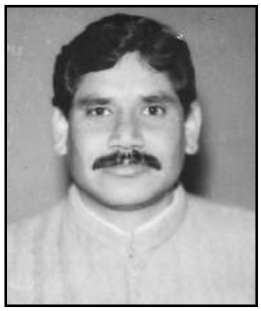
जिला प्रशासन नेताओं की अपेक्षा अनपढ़ आन्दोलनकारियों से अधिक भयभीत था। स्वराज्य की बात गाँव–गाँव में हो रही थी। स्कूली बच्चे गाँधी टोपी पहन रहे थे। सरकारी अधिकारियों को जनता ने सलाम करना छोड़ दिया था। शराब की दुकानों पर धरना हो रहा था, ग्रामीणजन वन नियमों का उल्लंघन कर रहे थे। बेगार की लड़ाई की जीत जंगलों की लड़ाई से जुड़ी हुई बतलाई जा रही थी। आन्दोलन तराई से भोट तक और दोगड्डा से काली कुमाऊँ तक फैल गया था।

प्रशासन भयभीत भी था। इसलिए देर सवेर 1921 में जब गिरफ्तारियाँ शुरू हुई तो वह जंगलात या बेगार आन्दोलन का नाम लेकर नहीं थी वरन असहयोग आन्दोलन के तहत की गयी थीं। आन्दोलन का नेतृत्व तथा संचालन कार्य सामूहिक था। ग्रामीण कार्यकर्ताओं का बड़ा समूह शहरी नेतृत्व तथा काश्तकारों को जोड़ने का असाधारण निमित्त बना था। नेतृत्व वर्ग पर आर्य समाज, विवेकानन्द, तिलक, गाँधी, रूसी क्रान्ति, यूरोपीय आदर्शवाद तथा राष्ट्रीय कांग्रेस का मिला जुला असर था लेकिन यह ऊपर से आ रही ऊर्जा थी। नीचे की ऊर्जा का स्रोत पहाड़ के आम काश्तकार, ग्रामीण कार्यकर्ता थे, जिन्हें बेगार तथा जंगलात के प्रश्नों ने जागृत और संगठित किया था।

*(साभार–काफल ट्री)*

# काले कौव्वा .....
# घुघूतिया त्योहार और उसकी लोक परम्परा

*–जगमोहन रौतेला*



मकर संक्रांति को पूरे देश में सूर्य नारायण के उत्तरायण होने के पर्व के रूप में मनाया जाता है। उत्तराखण्ड के कुमाऊँ अंचल में यह एक लोक पर्व का रूप ले लेता है। इसे यहॉ घुघुतिया त्यार, पुषूड़िया त्यार व उत्तरैंणी त्यार भी कहते हैं। कुमाऊँ में घुघुतिया त्यार दो दिन मनाया जाता है। सरयू पार वाले संक्रान्ति के दिन त्यार मनाते हैं तो सरयू वार वाले इसके अगले दिन। गंग (सरयू) पार (पूरब) वाले (जिसमें पिथौरागढ़ जनपद और बागेश्वर व चम्पावत जनपद का सरयू पार वाला हिस्सा) क्षेत्र में संक्रांति के पहले दिन मसांत से ही इस त्यौहार की तैयारी शुरु हो जाती है। आटे को गुड़ के पानी के घोल में गूँथा जाता है। उसके बाद उसकी छोटी–छोटी लोइयों को एक विशेष आकार में ढाला जाता है। जो एक तरह से हिन्दी के चार के अंक की तरह होते हैं। इन्हें घुघुते कहते हैं। इसी कारण कुमाऊँ में मकर संक्रांति को घुघुतिया त्यार कहते हैं। घुघुतों के अलावा पकवानों में डमरू, तलवार, ढाल, दाड़िम के फूल व खजूरे भी बनाए जाते हैं। इन पकवानों को एक धागे में पिरोया जाता है। जिसे घुघुते की माला कहते हैं।

संक्रांति के दिन प्रातः काल उठकर बड़े और बच्चे नहाते हैं। नहाने के बाद अक्षत–रोली लगाकर घुघुते की माला बच्चों के गले में डाली जाती है। साथ ही कुछ घुघुतों को एक पत्तल में लेकर बच्चे छतों में चढ़ जाते हैं और इन पकवानों को खाने के लिए कौवो को "काले कौव्वा, काले कौव्वा – घुघुती माला, खाले कौव्वा" कहकर बुलाते हैं। इसे एक लोकगीत की तरह भी बच्चे लगातार बोलते जाते हैं –

"काले कौव्वा का–ले ! का–ले !<br>
ले कौव्वा पूड़ी<br>
मैंकें दे  सुनैकि पूड़ी<br>
ले कौव्वा ढाल<br>
मैंकें दे सुनैकि थाल<br>
ले कौव्वा तलवार<br>
मैंकें बणें दे होश्यार<br>
ले कौव्वा घुघुत<br>
मैंकें दिजा सुनक मुकुट " .

बच्चे कौवे को बुलाने के साथ ही हर पकवान के लिए उससे कुछ न कुछ मॉगते हैं। जैसे कौव्वा तू पूरी ले ले लेकिन इसके बदले में हमें सोने की पूरी देना। कौव्वा तू हमारी घुघुते की माला ले ले लेकिन इसके बदले हमें सोने का मुकुट देना। तू ढाल ले ले लेकिन हमें सोने की थाल दे जा। कौव्वा तू हमारी तलवार ले ले लेकिन इसके बदले हमें होशियार बना देना। गंग (सरयू) वार (पश्चिम) वाले (अल्मोड़ा, नैनीताल व ऊधमसिंह नगर जिला व बागेश्वर व चम्पावत जनपद का सरयू वार वाला हिस्सा) लोग संक्रान्ति के दिन घुघुते बनाते हैं और इसके अगले दिन बच्चे कौवों को बुलाते हैं।

बड़ों के साथ–साथ बच्चों को भी इस त्यौहार की बैसब्री से प्रतिक्षा रहती है। बड़े जहॉ गंगा स्नान के लिए तीर्थों में जाते हैं , वहीं बच्चों को घुघुते की माला गले में डाल कर कौव्वों को बुलाने का इंतजार रहता है। बच्चों में आपस में यह होड़ भी रहती है कि सवेरे सबसे पहले उठकर कौन कौव्वों को बुलाता है। घुघुते और दूसरे पकवानों को नाते–रिश्तेदारों में भी बॉटा जाता है। कुमाऊं के सबसे बड़े तीर्थ बागेश्वर में संक्रांति के दिन बहुत बड़ा मेला भी लगता है। सरयू और गोमती

नदी के संगम पर हजारों लोग पवित्र स्नान करते हैं। बागेश्वर के गंगा स्नान के बारे में एक कहावत भी प्रचलित है–" द्याप्त द्यखण जोगेश्वर और गंग नाण बागेश्वर"। अर्थात् देवता देखने हों तो जागेश्वर मन्दिर जाओ और गंगा नहाना है तो बागेश्वर जाओ।

इस त्योहार के बारे में प्रचलित लोग कथाओं में से एक के अनुसार, बात तब की है, जब कुमाऊँ में चन्द्र वंश के राजा कल्याण चंद राज करते थे। उनकी कोई संतान नहीं थी। ऐसे में उनका मंत्री सोचता था कि राजा के बाद राज्य मुझे ही मिलेगा। एक बार राजा कल्याण चंद अपनी पत्नी के साथ बाघनाथ मन्दिर, बागेश्वर गए और अपने लिए संतान मॉगी। जिसके बाद उनका एक बेटा हुआ। जिसका नाम उन्होंने निर्भय चंद रखा। राजकुमार को उसकी माँ प्यार से घुघुति बुलाया करती थी। उसके गले में एक मोती की माला थी, जिसमें घुँगरु गुथे हुए थे। घुँगरु की आवाज के कारण घुघुति को वह माला बहुत पसंद थी। देर से संतान होने के कारण रानी मॉ उसे बहुत प्यार करती थी। अधिक लाड़ व दुलार में राजकुमार घुघुति जिद्दी हो गया था। जब भी वह किसी बात पर जिद्द करता तो रानी माँ उससे कहती कि जिद्द मत कर नहीं तो मैं तेरी माला कौवे को दे दूंगी। रानी अपने बेटे को डराने के लिए कहती कि "काले कौवा काले, घुघुति माला खाले"। यह सुन कर कई बार कौवा आ जाता। जिनको देखकर घुघुति अपनी जिद छोड़ देता। जब इस तरह बुलाने पर कौवे आ जाते तो रानी उनको कोई न कोई चीज खाने को दे देती थी। इस तरह धीरे–धीरे घुघुति और कौवों में दोस्ती हो गई।

उधर, जो मंत्री राज–पाट मिलने की उमीद लगाए बैठा था वह घुघुति से चिढ़ने लगा और उसे मारने का षडयंत्र करने लगा। एक दिन मंत्री ने अपने कुछ विश्वास पात्र सिपाहियों साथ मिल कर एक योजना बनाई। जिसके अनुसार, जब एक दिन जब घुघुति खेल रहा था तो उसके सिपाही उसे चुप–चाप उठा कर महल से बाहर ले गए। जहॉ मन्त्री उनका इंतजार कर रहा था। मन्त्री घुघुति को मारने के लिए जंगल की ओर ले जा रहा था तो एक कौवे ने उसे देख लिया और जोर जोर से काँव–काँव करने लगा। कौवे की आवाज सुनकर घुघुति और जोर–जोर से रोने लगा। उसने हिम्मत से काम लिया और अपनी माला को उतार कर कौवे को दिखाने लगा। अपने साथी कौवे की खतरे वाली "कॉव–कॉव" सुन कर बहुत सारे कौवे एकत्र हो गए। उन्होंने पूरे झुण्ड के साथ मंत्री और उसके सिपाहियों पर हमला कर दिया। इतने में एक कौवा घुघुति के हाथ से माला झपट कर महल की ओर उड़ चला। कौवों झुण्ड के  हमला बोलने से मंत्री और उसके सिपाही घबरा कर वहॉ से भाग खड़े हुए। उन्होंने घुघुति को जंगल में अकेला छोड़ दिया। वह वहीं एक पेड़ के नीचे बैठ गया। सभी कौवे उसकी रक्षा के लिए उसी पेड़ की डालियों में बैठ गए।

उधर, वह कौवा हार लेकर सीधे महल के एक पेड़ में बैठ गया और उसने घुघुति के मोती की माला को एक टहनी में टॉग दिया और फिर जोर–जोर से कॉव–कॉव करने लगा। उसकी आवाज को सुनकर रानी–राजा व दूसरे लोग महल से बाहर निकल आए। कौवे ने वह माला रानी माँ के सामने डाल दी। माला सभी ने पहचान ली। उसके बाद घबराई रानी ने घुघुति की खोज करवाई तो वह महल में नहीं मिला। इस दौरान कौवा एक डाल से दूसरे डाल में उड़ कर कुछ बताने की कोशिस करने लगा। इससे सबको लगा कि कौवा शायद घुघुति के बारे में कुछ जनता है और कुछ बताना चाहता है। राजा कल्याण चंद और उनके घुड़सवार सैनिकों ने कौवे का पीछा किया।

कौवा जंगल में कुछ दूर जाकर एक पेड़ पर बैठ गया। राजा ने देखा कि पेड़ के नीचे उसका बेटा सुबक रहा है और पूरे पेड़ में कौवों का झुण्ड है। राजकुमार को सही सलामत पाकर राजा की जान में जान आई। उसने बेटे घुघुति को उठाया और गले से लगा कर खूब लाड़ किया। महल लौटने पर रानी माँ के भी जैसे प्राण लौट आए। उन्होंने सोचा कि अगर घुघुति के गले में माला नहीं होती और कौवों के साथ उसकी दोस्ती नहीं होती तो घुघुति जिन्दा नहीं रहता। राजा ने षडयंत्रकारी मंत्री और सिपाहियों को मृत्यु दंड दे दिया। घुघुति के सकुशल मिलने की खुशी में रानी माँ ने उसी दिन शाम को कई तरह के पकवान बनवाए और घुघुति से कहा कि वह अगले दिन सवेरे नहा कर पकवानों को अपने दोस्त कौवों को बुलाकर भी खिलाए। उस दिन मकर संक्रान्ति थी। इस घटना की जानकारी पूरे कुमाऊँ में फैल गई। राजा ने मुनादी करवा

कर राज्य की प्रजा को भी पकवान बनाकर कौवों को खिलाने को कहा। जिसने कालान्तर में बच्चों के त्यौहार का रूप धारण कर लिया। तब से हर साल इस दिन धूम धाम से इस त्यौहार को मानते हैं।

सरयू पार (गंग पूर्व) के लोग मसान्त के दिन घुघुते बनाते हैं और संक्रान्ति को कौवों को बुलाते हुए त्योहार मनाते हैं, जबकि सरयू आर ( गंग पश्चिम ) के लोग संक्रान्ति को घुघुते बनाते हैं और अगले दिन कौवों को बुलाते हुए घुघुतिया त्यार मनाते हैं। जनश्रुति के अनुसार , राजा ने जब इसके लिए मुनादी करने को कहा तो सैनिक पहले दिन सरयू पार ही मुनादी कर पाए। जिसकी वजह से वहॉ के लोगों ने मकर संक्रान्ति के दिन कौवों को बुलाया और सरयू के आर ( पश्चिम ) दूसरे दिन संक्रान्ति को मुनादी हुई तो इधर के लोगों ने दूसरे दिन कौवों को बुलाया। चूँकि कौवे सवेरे – सवेरे ही अधिक आते हैं , इसी कारण पहले दिन शाम को घुघुत बनाकर उन्हें तेल में तल लिया जाता है और अगले दिन सवेरे – सवेरे धूप निकलते ही बच्चे कौवों को बुलाने के लिए घर के बाहर निकल आते हैं। इसके लिए कुमाऊँ में एक कहावत भी प्रचलित है कि श्राद्धों में ब्राह्मण और उत्तरायणी में कौवे नहीं मिलते हैं। उत्तराखण्ड में आज से माघ माह का भी प्रारम्भ हो जाता है। कुमाऊँ में माघ के महीने मॉस की खिचड़ी खाने की भी परम्परा है। पूरे महीने नाते – रिश्तेदार व ईष्ट – मित्र एक – दूसरे के यहॉ माघ की खिचड़ी खाने भी जाते हैं।

इस दिन का ऐतिहासिक महत्व भी यहाँ के जनमानस के लिए है। मकर संक्रांति के ही दिन 1921 में लोगों ने अंग्रेजों के खिलाफ बगावत की थी और स्वतन्त्रता सेनानी बद्रीदत्त पान्डे के नेतृत्व में हजारों लोगों ने सरयू के पवित्र जल को हाथ में लेकर शपथ ली थी कि आज के बाद कोई भी कुली बेगार नहीं करेगा। बेगार से सम्बन्धित सैकड़ों रजिस्टरों को सरयू में बहा दिया गया था। तब से हर साल मकर संक्रान्ति के दिन सरयू के बगड़ में लगने वाले कौतिक में हर राजनैतिक दल के पंडाल लगते हैं और अपने – अपने मंचों से खूब राजनीति होती है। सब दलों के लोग एक साथ अलग–अलग मंचों से बोलते दिखाई देते हैं। ऐसी राजनैतिक व सांस्कृतिक परम्परा शायद ही कहीं और हो।''

*–जयगंगा इन्द्रपुरम् , लालडॉठ रोड,*
*बिठौरिया नम्बर – एक,*
*हल्द्वानी ( उत्तराखण्ड )*

## मिसरी

कुमाऊँ की मधुर और लुभावनी संस्कृति का एक प्रतीक मिसरी भी है एकदम देशज और मिठास से परिपूर्ण। दीर्घ आँखों की मधुरता और मादक सरसता का संकेत करते हुए कुमाऊँ में एक होली गीत में कहा गया है "नैन बने मिसरी के कुंजे।" मिसरी कुमाऊँ की स्वादिष्ट सौगातों में है। पहले एक –दूसरे के घर आते –जाते हुए मिसरी ही ले जाई जाती थी जिसका स्थान बाद में मिठाई ने ले लिया। जब चाय चल पड़ी तो फीकी चाय के साथ गुड़ या मिसरी के "कुंजे" से कटक लगाई जाती थी इसलिए उस चाय का नाम भी हो गया "कटकी" चाय!

कुछ आयुर्वेदिक दवाओं में भी मिश्री एक घटक होती है। हमारे परिवार में आयुर्वेदिक दवाओं के लिए जिस मिसरी का प्रयोग मैंने देखा उसे बाँस मिश्री कहते थे जो अब नहीं मिलती। बांस के एक छोटे तिनके के चारों ओर मिसरी का बड़ा सा रवा (कुंजा) लिपटा होता था। स्वभाव में मृदु शीतल और रक्ताल्पता घटाने वाली मानी जाती है।

माखनमिसरी तो श्रीकृष्ण को बहुत प्रिय मानी गई है। मंदिरों में माखन मिश्री का भोग लगाया जाता है। "मावा मिश्री" के नाम से हलवाई अनेक मिष्टान्न बनाते हैं।

(फे.बु. में सुरेश पंत जी)

श्रद्धांजलि–

# पहाड़ पर लालटेन

*–मंगलेश डबराल*



जंगल में औरतें हैं
लकड़ियों के गट्ठर के नीचे बेहोश
जंगल में बच्चे हैं
असमय दफ़नाये जाते हुए
जंगल में नंगे पैर चलते बूढ़े हैं
डरते–खाँसते अंत में गायब हो जाते हुए
जंगल में लगातार कुल्हाड़ियाँ चल रही हैं।
जंगल में सोया है रक्त

धूप में तपती हुई चट्टानों के पीछे
वर्षों के आर्तनाद हैं
और थोड़ी–सी घास है बहुत प्राचीन
पानी में हिलती हुई
अगले मौसम के जबड़े तक पहुँचते पेड़
रातोंरात नंगे होते हैं
सुई की नोक जैसे सन्नाटे में
जली हुई धरती करवट लेती है
और एक विशाल चक्के की तरह घूमता है आसमान
जिसे तुम्हारे पूर्वज लाये थे यहाँ तक

वह पहाड़ दुख की तरह टूटता आता है हर साल
सारे वर्ष सारी सदियाँ
बर्फ़ की तरह जमती जाती हैं दुःस्वप्न आँखों में।

तुम्हारी आत्मा में
चूल्हों के पास पारिवारिक अंधकार में
बिखरे हैं तुम्हारे लाचार शब्द
अकाल में बटोरे गये दानों जैसे शब्द

दूर एक लालटेन जलती है पहाड़ पर
एक तेज़ आँख की तरह
टिमटिमाती धीरे–धीरे आग बनती हुई
देखो अपने गिरवी रखे हुए खेत
बिलखती स्त्रियों के उतारे गए गहने
देखो भूख से बाढ़ से महामारी से मरे हुए
सारे लोग उभर आए हैं चट्टानों से
दोनों हाथों से बेशुमार बर्फ़ झाड़कर...
अपनी भूख को देखो
जो एक मुस्तैद पंजे में बदल रही है
जंगल से लगातार एक दहाड़ आ रही है
और इच्छाएं दाँत पैने कर रही है
पत्थरों पर।"

# मातृमुख

—लीलाधर—जगूड़ी



रात के बारह पैंतीस पर आस—पास कोई ऋतु नहीं है
अँधेरे के पंजे से छूटी हुई कोई ऋतु
एक ठंड है—दरवाज़ों, खिड़कियों से टकराई हुई
जो फेफड़ों में धँसकर रहने की प्रार्थना से
मेरा एक—एक रोम खट—खटा रही है
मेरे एक—एक रंध्र पर क़ब्ज़ा करके
जो बता रही है कि एक तारीख़ किस तरह बीतती है
और दूसरी तक आदमी किस तरह बदल जाता है ।

करोड़ों तारे मेरी पहुँच से दूर बिखरे हुए हैं रात के प्रसूतिघर में
फेफड़ों के किवाड़ पर खड़ी हुई आवारा ठंड का जकड़ा
क्या मैं माँ को याद कर सकता हूँ?

.....

रात के बारह पैंतीस पर

क्या मैं किसी चीज़ को माँ की तरह जान सकता हूँ?
कफ़न जिसको, धोती की तरह पहना दिया गया
मिट्टी का हिस्सा बनने से पहले वह कोख थी
कभी जिसकी वजह से मैं संसार में आया
तब से घर के भीतर का अँधेरा माँ का चेहरा है
जो रात—भर गालों से सटकर जागता रहता है।

# उत्तराखण्ड की लोक भाषाओं की रचनाधर्मिता

*–गोविन्द पंत 'राजू'*



उत्तराखण्ड में लोक भाषाओं के रूप में मुख्यतः कुमाँऊनी, गढ़वाली और जौनसारी को माना जा सकता है, कुछ अन्य बोलियाँ भी हैं यथा गोरखाली, रंग, राजी, थारू आदि। मुख्य रूप से इन सभी की लिपि देवनागरी है और भौगोलिक व सामाजिक परिस्थितियों के साथ साथ इनमें नए नए स्वरूप भी विकसित होते चले गए हैं। कुमाऊँनी और गढ़वाली थोड़े बहुत अन्तरों के साथ उत्तराखण्ड की प्रतिनिधि लोक भाषाएं हैं।

कुमाऊँनी के उद्भव के बारे में दो धारणाएं प्रचलित हैं। पहली के मुताबिक कुमाऊँनी का विकास दरद, खस, पैचाशी व प्राकृत से हुआ है। दूसरी धारणा कुमाऊँनी को शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित मानती है। पहली धारणा भारतीय भाषाओं के पहले सर्वेक्षण कर्ता डा. ग्रियर्सन की स्थापनाओं से विकसित हुई। जार्ज ग्रियर्सन ने 1903 में गहन अध्ययन के बाद 21 खण्डों में लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया के नाम से कुमाऊँनी भाषा के सन्दर्भ में आठ लेखकों के नाम उनकी रचनाओं से कुछ उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किए हैं। इसी तरह कुमाऊँनी की तरह ही गढ़वाली को भी पहाड़ी समुदाय की केन्द्रीय पहाड़ी भाषा से उपजा माना जाता है और इसका विकास भी शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ माना जाता है।

यों तो लोकभाषाओं के रूप में उत्तराखण्ड की दोनों प्रमुख लोक भाषाएं कुमाऊँनी और गढ़वाली सातवीं–आठवीं शताब्दी से प्रचलन में मानी जाती हैं, हालाँकि इनका स्वरूप तब इतना परिष्कृत नहीं था लेकिन लिपि के रूप में कुमाऊँनी के पहले प्रमाणिक तिथियुक्त प्रमाण के रूप में पिथौरागढ़ के दिंगास नामक गांव से प्राप्त अभिलेख को माना जाता है। इसकी तिथि 1105–1106 आंकी गई है। कुछ विद्वान चन्द राजा अभयचन्द के 989 ईस्वी के ताम्रपत्र को कुमाऊँनी भाषा के पहले लिखित प्रमाण के तौर पर मानते हैं जो लोहाघाट के एक व्यापारी तारादत्त के संग्रह में था। इसी प्रकार गढ़वाली के पहले लिखित प्रमाणों में देवप्रयाग के मन्दिर में 1335 ईस्वी का राजा जगतपाल का दानपत्र एक प्रमाण माना जाता है। देवलगढ़ मन्दिर में राजा अजयपाल (1460–1519) का शिलालेख भी गढ़वाली के प्राचीन लिखित प्रमाणों में एक है।

लोक भाषा के रूप में कुमाऊँनी के चार मुख्य वर्ग, पूर्वी कुमाऊँनी, पश्चिमी कुमाऊँनी, उत्तरी कुमाऊँनी और दक्षिणी कुमाऊँनी माने जाते हैं। इसी तरह ग्रियर्सन ने गढ़वाली के आठ मुख्य उपभेद माने थे। ग्रियर्सन ने गढ़वाली के आठ मुख्य उपभेद श्रीनगरी, नागपुरिया, दसौल्या, बघाणी, राठी, माझ कुम्मैया व टिहरियाली बताए हैं। कुछ विद्वान रंवाल्टी, जौनसारी व टकनौरी को भी इसी वर्गीकरण से जोड़ते हैं।

लोकभाषा के रूप में स्वीकार्यता तथा पहचान बनाने के साथ और लोक गीतों, लोक गाथाओं (जागर, पंवाड़े आदि), लोक कथाओं एवं लोकोक्तियों के जरिए कई सदियों की विकास यात्रा पूरी करने के बाद प्रकाशित साहित्य के क्रम में भी उत्तराखण्ड की लोक भाषाएं खड़ी बोली से आगे दिखती हैं। खड़ी बोली के पहले कवि माने जाने वाले भारतेन्दु के जन्म से चार वर्ष पूर्व ही 1834 में स्वर्गवासी हो चुके लोकरत्न पन्त यानी गुमानी पन्त को खड़ी बोली के साथ साथ कुमाऊँनी का भी पहला कवि माना जाता है। 1770 को जन्मे उपराडा, गंगोलीहाट निवासी गुमानी के गुमानी काव्य संग्रह का संकलन एवं प्रकाशन देवीदत्त शर्मा ने 1837 में किया था। गुमानी ने कुमाऊँनी के साथ संस्कृत, खड़ी बोली और नेपाली में लिखा था। उनकी चतुश्पदी रचनाओं में पहला पद हिन्दी में, दूसरा कुमाऊँनी में, तीसरा नेपाली और चौथा संस्कृत में होता था। यथा–

''बाजे लोक त्रिलोक नाथ शिव की पूजा करें तो करें (हिन्दी)
क्वै – क्वै भक्त गणेश का में बाजा हुनी तो हुनी (कुमाऊँनी)
रामा ध्यान भवानी का चरण या गर्दन कसैले मरन (नेपाली)
धन्यात्मातुल धम्नीह रमते रामे गुमानी कवि'' (संस्कृत)

इस पद का रचनाकाल 1816 माना जाता है। इसी तरह 1815 की उनकी एक कुमाऊँनी रचना में गुमानी ने अपने पैतृक गांव उपराडा की सुन्दरता का वर्णन कुछ इस तरह किया है–

''उत्तर दिशि में वन उपवन हिसालू काफल किलमोड़ा,
दक्षिण में छन गाड़ गधेरा बैदी बगाड़ नाम पड़ा,
पूरब में छौ ब  हमं मण्डली पश्चिम हाट बाजार बड़ा,
तैका तलि बटि काली मन्दिर जगदम्बा को नाम बड़ा
धनवन्तरि का सेवक सब छन भेषज प्रचार बड़ा
धन्य धन्य यो ग्राम बड़ो छौ थाति में उत्तम उपराड़ा,''

गढ़वाली में लिखित साहित्य का आरम्भ सन 1850 के आस पास माना जाता है। वैसे 1743 में श्रीनगर में जन्मे गढ़वाली चित्रकला के आदिपुरूष और कवि मौलाराम ने भी 1777 से 1804 के बीच बृज भाषा के साथ साथ गढ़वाली में भी रचनाएं की थीं। मौलाराम का पद्यकाव्य 'गढ़राजवंश का इतिहास' और गणिका नाटक हिन्दी के प्रारम्भिक साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियां मानी जाती हैं। मौलाराम ने अपने दौर के गढ़वाली राजाओं व गोरखा शासकों की प्रशस्तियां तो लिखीं ही मगर आलोचनात्मक रचनाएं भी रचीं।

''उत्तर देश कंगाल अत, खसिया जहां खवीस,
सूरत वचन घिनावने, करे कविन सौं हीस।''

मौलाराम के लगभग 80 वर्ष बाद भवानी दत्त थपलियाल ने गढ़वाली में 'जय विजय' नाटक लिख कर मौलाराम की गणिका नाटक की परम्परा को आगे बढ़ाया। हालांकि भवानी दत्त थपलियाल का ही नाटक प्रह्लाद नाटिका जय विजय से पहले 1912 में ही प्रकाशित हो चुका था।

गढ़वाली की शुरूआती कृतियों में महाराज सुदर्शन शाह (1815–1856) द्वारा रचित 'गोरख्याणी' को भी शुमार किया जाता है और 1876 में सिरामपुर के ईसाई मिशनरियों द्वरा किए गए न्यू टेस्टामेंट (बाइबिल) के गढ़वाली अनुवाद को भी। 1905 में देहरादून से गढ़वाली' अखबार के प्रकाशन के साथ ही गढ़वाली रचनाओं को एक मजबूत मंच मिल गया। 'गढ़वाली' के प्रवेशांक में सत्यशरण रतूड़ी की कविता ''उठा गढ़वालियों,'' एक उत्कृष्ट प्रेरणादायक रचना के रूप में सामने आई।

''उठा गढ़वालियों अब त समय यो सेण को नीछ,
तजा यीं मोह निद्रा कू, अजौं तैं जो पड़ी हीछ,
अलो! अपणा'' मुलक की भीं छुटाना दीर्घ निद्रा कु,
सिरा का तुम इनी गेहरी खड़ा मां जीन गेर याल्ये।

स्वदेशी गीत कू एक दम गुंजावा स्वर्ग तैं भायों,
भला डौरू कसालू की कभी तुम कू कभी नी छ।
बजावा ढोल रणसिंधा, साजावा थौल कू सारा,
दिखावा देश वीरत्व भरी पूरी सभा बीच।''

उत्तराखण्ड की लोक रचना धर्मिता अपनी प्रकाशित कृतियों से कहीं, बहुत बहुत पुरानी है। लोकोक्तियों, लोकगीतों और जागर व अन्य मांगल गीतों के रूप में यह गेय परम्परा के साथ पीढ़ियों दर पीढ़ियों तक आगे बढ़ती रही। कुमाँऊनी लोकगीतों को उनकी लक्षणिक विशेषताओं के कारण चार पाँच समूहों में बाँटा गया है। नृत्य प्रधान, अनुभूति प्रधान, तर्क प्रधान, संवाद पध ाान और स्फुट। झोड़ा, चांचरी और छपेली इस प्रकार के तीन नृत्य गीत हैं। अनुभूति प्रधान गीतों में न्योली व भगनौल आते हैं। न्योली विरह प्रधान लोकगीत हैं।

''सुर सुर बयाल पड़ो क्यालूं का गावा में,
के हूँ छ फिकर करी बे, जे होलो भागा में,
न्योली जे होलो भागा में।''

तर्क प्रधान गीतों में 'बैर' मुख्य हैं। 'बैर' कुमाऊँ की भौगोलिक परिस्थितियों से उपजे गीत माने जाते हैं। संवाद प्रधान गीतों में आपसी रिश्तों की चुहुल परिलक्षित होती है तो स्फुट गीतों में धन्याली या घट्याली, गणतौ, ढोसुक आदि अन्याय किस्मों के लोकगीत शामिल माने जाते हैं। कुमाँऊ के लोकगीतों की एक बड़ी विधा संस्कार गीत भी हैं। शकुनांखर,, गणेश पूजन, आबदेव, जन्म सम्बन्धी गीत, विवाह सम्बन्धी गीत आदि इसी तरह के गीत हैं। इसके अतिरिक्त ऋतुरैंण, होलीगीत, कृषि सम्बन्धी 'हुड़किया बोल' आदि गीत और देवताओं से सम्बन्धित लोकगीत भी कुमाँऊ की लोकगीत परम्परा के अविभाज्य अंग हैं।

इसी प्रकार का वर्गीकरण गढ़वाल के लोकगीतों का भी किया जाता है। मांगल गीत, झुमैलो, थड़या, बाजूबन्द खुदेड़, चौफुला, चौमासा, बारामासा, कुलाचार आदि गढ़वाली लोकगीतों के विभिन्न स्वरूप हैं। मांगल गीतों में वैदिक ऋचाओं की तरह देवी देवताओं का आह्वान किया जाता है इसलिए यह माना जाता है कि यह गढ़वाली लोकगीतों का सबसे प्राचीन स्वरूप है। यथा –

''प्रभात को पर्व जाग, गो स्वरूप पृथ्वी जाग,
धर्म सरूपी अगाश जाग, उदयकारी कांठा जाग।
भानुपंखी गरूड़ जाग, सत लोक जाग,
मेघ लोक जाग, इन्द्र लोक जाग, कीड़ी मकौड़ी जाग, पशु पक्षी जाग,
नर नारैण जाग, मरद औरत जाग।
बाला बैजनाथ जाग, धोली दिप्रयाग जाग,
हरि हरद्वार, काशी विश्वनाथ जाग।
बूढ़ा केदार जाग, भोला शम्भूनाथ जाग।
कालसी कुमौऊँ जाग, चोपड़ा चौथान जाग',।

झुमैलो वेदना और प्रेम के प्रतीक गीत हैं तो थड़या गीत वस्तुतः बसंत के स्वागत के गीत माने जाते हैं। बाजूबन्द गीत गढ़वाल के संवादात्मक प्रणय गीत हैं और खुदेड़ ससुराल में रहने वाली बेटियों को मायके की खुद यानी याद दिलाने वाले लोकगीत हैं।

''दाथुड़ी को नोक ब्यौ, काखड़ी को रैतू,
मैं खुद लागि ब्वै, तु बुलाई मैतू।
दाथुली की नौक ब्वै, दाथुली की नोक,
बासलो काफू ब्वै, मेरा मैत्यों का चौक।''

चौंफला गढ़वाल के मिलन गीत हैं तो चैती गीत, चौमासा और बारामासा ऋतु गीत। इसके अलावा विभिन्न प्रकार की घटना–दुर्घटनाओं से लेकर अपराधियों और राजनीतिक परिस्थितियों पर भी गढ़वाल में समय समय पर लोकगीत बने हैं।

लोक गाथाओं में भी उत्तराखण्ड के पास लोक रचनात्मकता की भरी पूरी थाती रही है। गढ़वाली में लोक कथाओं के दो प्रमुख रूप हैं लौकिक अथवा पंवाड़ा गाथाएं और पौराणिक अथवा जागर गाथाएं। पंवाड़ा वीर गाथाएं और प्रेम गाथाएं हैं जबकि जागर, पाण्डव व स्थानीय देव गाथाओं के रूप में मान्य हैं। जीतू बगड्वाल, तिलू रौतेली, रणू रौत, गढ़ सुमरियाल, कालू भण्डारी, मालू राजुला, आदि गढ़वाली लोक मानस में प्रचलित कुछ प्रमुख पंवाड़े हैं। इसी तरह पौराणिक या जागर गाथाएं भी हैं। गढ़वाली जागर गीतों में बाल गोविन्द से लेकर नागराजा तक अनेक रूपों में कृष्ण का गुणगान होता है और अनेक स्थानीय देवताओं से लेकर पाण्डवों से जुड़ी गाथाओं का भी। पाण्डव गढ़वाल की एक प्रचलित लोक नृत्य शैली भी है।

''परगट हवै जान, परगट ह्वै जान,
परगट ह्वै जान ,पाँच भाई पंडऊँ,
परगट ह्वै जान, कोंन्ती माता,
परगट ह्वे जान राणी द्रोपतां।
कोन्ती माता होली पड़ों की माता,
नंगों को बस्तर देंदी भूखों के अन्न।''

कुमाऊँ की लोकगाथाओं में भी इसी तरह के स्वरूप मिलते हैं। विद्वानों ने कुमाऊँनी लोक गाथाओं को चार श्रेणियों में रखा है। परम्परागत लोकगाथाएं, पौराणिक गाथाएं, धार्मिक गाथाएं और वीर गाथाएं। कुमाऊँ की परम्परागत लोकगाथाओं में मालूशाही और रमौल मुख्य हैं। इन गाथाओं में समयानुसार कलेवर व द्धि और परिवर्तन होते रहे हैं तथा कितनी ही परवर्ती घटनाएं व उप आख्यान इनमें जुड़ते रहे हैं। बैराठ के धर्मात्मा राजा दुलाशाही के पुत्र मालूशाही और सौक्याण देश के व्यापारी सुनपति शौक की पुत्री राजुली या राजुला के अलौकिक प्रेम की इस लोक गाथा में तिब्बत जौहार से लेकर मध्य कुमाऊँ अंचल तक की प्रक ति, मध्य युगीन सामंती व्यवस्थाओं, व्यापार, भाडयंत्रों और युद्ध के संजीव वर्णन मिलते हैं। यह लोक गाथा थोड़े बहुत अन्तर के साथ 5 प्रमुख रूपों में मिलती है। सुनपति शौक की बेटी के अद्वितीय सौन्दर्य का वर्णन लोककथा में इस तरह है–

''रहट की ताना, दुती कसी जून में छ पुन्यू कसी चाना,
बैशाखै कि सूरज जैसी, चैत की कैरूआ जसी
पूस की पालंगा जसी
सुनपति शौका कि चेली .....

इसी तरह रमौल में एक वंश के 17 वीर पुरूषों की कथा है जो प्रायः गेय रूप में बेहद लोकप्रिय है। पौराणिक गाथाओं में महाभारत के पात्रों और प्रसंगों की अधिकता है। कहीं कहीं ये गाथाएं जागरों के भी करीब लगती हैं यद्यपि शिल्प व विषयवस्तु में अन्तर स्पष्ट दिखता है। इस तरह की गाथाओं में शिव से जुड़े भी प्रसंग भी खूब मिलते हैं। तीसरे वर्ग में जागर गाथाएं हैं जिनका एक विशेष धार्मिक महत्व भी है। जागर प्रायः लोक देवताओं पर केन्द्रित होते हैं। कुमाऊँनी वीर गाथाओं में जातीय वीरों और राजशाही के वीरों का चित्रण मिलता है।

उत्तराखण्ड की सभी लोकगाथाओं का संरक्षण व प्रवाह समाज के विभिन्न वर्गों के सहजीवन के साथ–साथ होता रहा और शिल्पकार जातियों का इस मौखिक परम्परा को जीवित बनाए रखने में अतुलनीय योगदान रहा।

बीसवीं सदी उत्तराखण्ड की लोक रचनाधार्मिता के लिए भी परिवर्तनकारी रही। नई तरतीक, शिक्षा का प्रसार व सामाजिक चेतना का विकास इसके मुख्य कारण रहे। इन परिवर्तनों के चलते एक और परम्परागगत बादियों, बाजगियों, नाथ व जोगियों, ओजियो व जागरियों जैसे परम्परागत लोक जीवियों के अवसर कम होते चले गए वहीं प्रवासियों और कस्बाई इलाकों तक लोक रचनात्मकता का प्रसार भी खूब हुआ। इसके चलते जहाँ एक ओर जड़ों से कटते जाने और सांस्कृतिक क्षरण की स्थितियां बनने लगीं तो वहीं नए मुहावरे व नए प्रयोग भी खूब दिखने लगे। उत्तराखण्ड की लोक धुनों पर बीसवीं सदी के तीसरे दशक में एल पी रिकार्ड तक बने। लोक साहित्य को स्थानीय अखबारों ने भी खूब बढ़ावा दिया। गढ़वाली में हरिकृष्ण दोर्गादत, लीलानन्द कोटनाला चन्दमोहन रतूड़ी, आत्माराम गैरोला, सत्य शरण रतूड़ी, तारादत्त गैरोला, योगीन्द पुरी, चक्रधर बहुगुणा जैसे अनेक रचनाकारों की रचनाओं के प्रकाशन ने लोक साहित्य को नए आयाम दिए। इसी तरह कुमाऊँनी में गौरीदत्त पाण्डे 'गौर्दा' ने लोक को समाज के प्रतिरोध का स्वर बनाने की अलख जगाई। गौर्दा (1872–1939) को कुमाऊँनी कविता का सर्वोच्च शिखर कहा जाता है। गौर्दा स्पष्टवादी थे और प्रगतिशील भी। पाखण्ड, छुआछूत व कुप्रथाओं को वे निरन्तर चुनौती देते रहे थे। उनकी लिखी 'देश पच्चीसी' कविता उस दौर में उत्तराखण्ड का राष्ट्रीय पहाड़ी गीत कहलाने लगा था।

''हमरो कुमाऊँ, हम कुम्मैयां हमरा छन यो पहाड़,

यां का जंगल, इजर भाबर, घा, लाकड़ो और झाड़,
यांई रूंला, यांई मरूंला, या छन स्वारा भ्याड़।''

उनकी एक रचना 'व क्षन को विलाप' उस दौर में वन विनाश के खिलाफ प्रतिरोध का स्वर बन गई थी।

मानुष जात सुणिया मणि हो, वृक्षन की लै विपति को हाल,
सब जन, हरिजन उन्नति में छन, हमरो लै कुछ करला खयाल
हमन उज्याड़ी फिरि क्या करला पछिल तुम्हारो मन पछताल''
अपणो भलो जो अघिल सू छ चांछा, पालो सैंतो करो खयाल''।

गौर्दा के युग के बाद उत्तराखण्ड में लोक स्वधर्मिता के स्वर अधिक तीखे होते दिखते हैं हालांकि प्रकृति और विरह भी, अभिव्यक्ति पाते रहे। आजादी के बाद फिर लोक रचनधार्मिकता के स्वरों ने करवट ली। इस दौर में उत्तराखण्ड को उसका सर्वाधिक लोकप्रिय गीत 'बेडु पाको' भी मिला। 'बेडु पाको बारोमासा ओ नरैण काफल पाको चैता मेरी छैला,'' गीत सबसे पहली बार 1952 में गाया गया और 1955 में जब सोवियत संघ के नेता ख्रुश्चैव व बुल्गानिन नई दिल्ली आए तो उनके स्वागत में तीन मूर्ति भवन में भी यह गीत गाया गया। जवाहर लाल नेहरू ने इसे सर्वश्रेष्ठ लोकगीत चुना और इसके प्रस्तुतकर्ता मोहन उप्रेती को बेडु बॉय नाम भी दिया। इस गीत की रचना अल्मोड़ा में तब हुई जब मोहन उप्रेती ने इस पहले से गाए जा रहे गीत को नई धुन दी। उमेद सिंह की चाय की दुकान पर मोहन उप्रेती के साथ ब्रजेन्द्र लाल साह ने इसमें कुछ और पक्तियां जोड़ी और इस तरह यह गीत बन गया उत्तराखण्ड का पहला राज्य गीत, जिसने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत ख्याति पाई। इस गीत को लोकगायक गोपाल बाबू गोस्वामी ने भी कैसट संस्कृति के दौर में बहुत लोक प्रियता दी। गोपाल बाबू गोस्वामी ने ''कैले बजे मुरूली ओ बैणा'' गीत को भी बहुत लोकप्रिय बनाया और कैसेट युग में कुमाऊँनी लोक अभिव्यक्ति को व्यापक स्तर पर पहुँचाने में बड़ा योगदान दिया।

कुमाऊँ के लोक स्वर साधकों में मोहन सिंह रीठागाड़, झूंसिया दमाई, गोपीदास, हरदा सूरदास, जैसे अनेक ज्ञात–अज्ञात पुरूष स्वरों के बीच कबूतरी देवी (1945–1918) ने एक महिला होने के बावजूद अपनी अलग पहचान बनाई और पुरूष वर्चस्व को चुनौती भी दी। हालांकि इसमें उनके पिता रामकाली और पति दीवानी राम का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

''आज पनी जों जों, भोल पनी जों जों, पोरहिन त न्है जू लॉ,'' जैसे गीत में जो वेदना का कबूतरी देवी ने उकेरी थी वो इस गीत और उन्हे दोनों को अमर कर गई। कबूतरी देवी को कुमाऊँ की बेगम अख्तर और तीजन बाई जैसी संज्ञाएं भी मिली थीं। कुमाऊँ कोकिला कबूतरी देवी ने आकाशवाणी के लिए 100 से भी अधिक गीत गाए और अनेक प्रतिष्ठित मंचों में बीसियों प्रस्तुतियाँ भी दीं।

आज उत्तराखण्ड के लोकगीतों में 'थल कि बाजार', 'ओ दरजी दिदा मीं कू तू आंगड़ि बणै दे' और 'खेलो पांसा' जैसे गीत लोकप्रियता के नए आयाम छू रहे है। भारत के बाहर भी इन गीतों की धूम है। नए गायक गायिकाओं की पीढ़ियों ने फ्यूजन जैसे प्रयोग भी शुरू किए हैं तो बसन्ती विष्ट के महिला जागर और प्रीतम भरतवाण जैसे पारम्परिक स्वर भी लोकप्रियता की नई ऊँचाइयाँ छू रहे हैं। दरसल उत्तराखण्ड की लोकभाषाओं की भाव समृद्धता ने इसमें बड़ा योगदान दिया है। उत्तराखण्ड की बोलियों व लोक भाषाओं में जीवन के बारीक से बारीक सूत्रों को पकड़ने के लिए इतने अधिक शब्द हैं जितने दूसरी भाषा में नहीं मिलते। इसलिए उत्तराखण्ड की लोक रचनाधर्मिता सदा समृद्धि पाती रहती है, उसमें भावों और अभिव्यक्ति का कभी अभाव नहीं रहता।

उत्तराखण्ड की लोक रचनाधर्मिता की बात अधूरी रह जाएगी अगर इसमें गिरीश तिवाड़ी 'गिर्दा' और नरेन्द्र सिंह नेगी का जिक्र न किया जाए। गिरदा (1943–2010) ने एक कवि, जन संघर्षों से जुड़े रचनाकार और वैचारिक रूप से पूर्णतः परिपक्व लोक संस्कृति कर्मी के रूप में उत्तराखण्ड की लोक रचनाधर्मिता को बहुत कुछ दिया। गिरदा ने गद्य, पद्य और नाटकों के रूप में बहुत कुछ खुद तो रचा ही उसने लोक रचनाधर्मिता के अनेक गुमनाम चेहरों को पुर्नस्थापित भी किया और सैकड़ों युवाओं के भीतर रचनाधर्मिता के जरासीन भी पैदा किए, जिनमें से बहुत से लोग अब नए आयाम भी रच रहे हैं।

गिरदा ने लोक को जन से जोड़ा और जन को समाज से। गिरदा उत्तराखण्ड का इकलौता ऐसा लोक रचनाकार था जिसकी रचनाओं को उत्तराखण्ड के अनेक जन आन्दोलनों से लेकर सामाजिक और प्रतिरोधात्मक कार्यक्रमों में जनगीतों के रूप में जिया गया। गिरदा एक ओर फैज अहमद फैज के कौमी तराने 'हम मेहनतकश जग वालों से' का कुमाऊँनी तर्जुमा,'' हम ओढ़ बारूढ़ि, ल्वार कुल्ली कभडि, जदिन यो दुनि थें हिसाब ल्यहूं ला, एक हांग नि मागों, एक फांग नि मांगों, सब खसरा खतौनि किताब ल्यहूं ला, ''लिख कर मेहनतकश सर्वहारा समाज के तेवरों को अभिव्यक्ति देता है तो दूसरी ओर वह कुमाऊँनी परम्परा के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार गौर्दा की वृक्षन को विलाप कविता को–

''आज हिमाल तुमन कैं धत्यूंछो, जागो जागो हो मेरा लाल
नि करि दी हालो हमरि लिलामी, नि करि दी हालो हमरो हलाल,
अब तुम हमरि लिलामी के करला हम करूंलो आब तुमरो हलाल,''

में रूपान्तरित करके वन आन्दोलन का जनगीत बना देता है। गिरदा राजनीति के छल–प्रपचों पर तीखे हमले करने में कतई संकोच नहीं करता तो वह पर्यावरण के वैश्विक संहारकर्ताओं पर नदियों और पानी के माध्यम से चोट करते हुए कहता है–

''एक तरफ बर्बाद बस्तियां, एक तरफ हो तुम,
उफ तुम्हारी ये खुदगर्जी, चलेगी कब तक ये मनमर्जी
जिस दिन डोलेगी ये धरती, सर से निकलेगी, सब मस्ती।''

और इसी के साथ वह अपने हिमालय में खोती जा रही नदियों पर चीत्कार करते हुए कहने लगता है –

''आम बुबु सुणूँ छी, गद गदानी ऊँ छी
रामनगर पुजुं छी, कौशिकै की कूँ छी
पिनाथ बै ऊँ छी, मेरि कौसि हरै गे कोसि
क्या रोपै लगूं छी, मेरि कोसि हरै गे कोसि।''

गिरदा के समकालीन नरेन्द्र सिंह नेगी ने भी उनकी रचनाओं के जरिए सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में और उत्तराखण्ड के बाहर भी समान रूप से स्वीकार्यता हासिल की है। राजकीय सेवा में रहते हुए उन्होने उत्तराखण्ड को भाव विविधता और शब्द सम्पदा' को अपने स्वरों के जरिए अभिव्यक्ति देने की शुरूआत की थी और आज निसन्देह उत्तराखण्ड के सबसे अधिक सुने और समझे जाने वाले लोक रचनाकार बन चुके हैं। 1974 से उनके रचनाकर्म की शुरूआत हुई तो यह सिलसिला आज भी बदस्तूर जारी है। नरू भाई की प्रारम्भिक रचनाओं मे प्रकृति, विरह, स्थानीय चेतना आदि की अधिकता रही तो बाद के दिनों में उनके राजनैतिक गीतों और उत्तराखण्ड राज्य, टिहरी बाँध आदि समकालीन मुद्दों ने खूब धूम मचाई है। गढ़वाली लोक साहित्य में उनका योगदान अन्यतम है। नरेन्द्र नेगी के नौछमी नरैण' गीत को उत्तराखण्ड के तत्कालीन मुख्यमत्री नारायण दत्त तिवारी की राजनीतिक संस्कृति पर एक तीखे हमले के तौर पर देखा गया और यह उत्तराखण्ड में सत्ता परिवर्तन की एक बड़ी वजह बना। इस गीत पर एक 250 पृष्ठों की किताब तक लिखी गई है। इसी तरह 'कदगा खेलू' गीत के जरिए उन्होने बीजेपी के मंत्रियों के कारनामों पर भी बड़ी चोट की –

''कमीशन की मीट भात, रिश्वत को रेलो
बस कर बै
विंडी ना सपोड़ अब कथगा खैल्यो,''

टिहरी बांध में डूब रही धरती की पीड़ा को भी उन्होने बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति दी है।

''टिहरी डूबण लग्यूं छया बेटा, डाम का खातिर
अबरि तो तू लम्बि छुट्टी लेकि आई,''

नरेन्द्र नेगी की पहली पुस्तक' खुच कंडी' थी, दूसरी' गणियो की गंगा स्याणियों को समोदर' और तीसरी 'मुट्ठी बोटि कि राख' है'। जैसा इन संग्रहों के नाम से ही पता चलता है कि उनकी रचनाधर्मिता विरह, प्रेम, आत्मीय सम्बन्धों से चलते हुए परिवर्तनो की बड़ी लड़ाई के लिए तैयारी करने की ओर चलती गई है। एक हजार से ज्यादा सुरीले गीतों को स्वर दे चुके नरेन्द्र नेगी, गिरदा के 'उत्तराखण्ड काव्य' की तरह ही 'आन्दोलन गीत' के जरिए उत्तराखण्ड में जन जन की आवाज बन गए हैं।

जोत सिंह नेगी, रेखा धस्माना, प्रकाश रावत, पप्पू कार्को, चन्द्र सिंह राही, शेर सिंह बिष्ट अनपढ़ सुनीत रावत, हीरा सिंह राणा, दीपक चमोली, माया उपाध्याय आदि अनेक लोक रचनाकारों ने भी उत्तराखण्ड की लोक रचनाधार्मिता को आगे बढ़ाने में अपना अहम योगदान दिया है लेकिन इनसे जरा भी कम योगदान उन अनाम कलाकारों का भी नहीं है जो ज्यादा चर्चा न पा सके लेकिन उत्तराखण्ड के गावों में रहकर लोक और उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति को प्रवाहमान बनाए रखते हैं। इन लोगों की कविताएं, गीत, लोक संस्कार, लोक को भी जिन्दा रखते हैं और धार्मिक संस्कारों, राम लीलाओं, जागर, पूजाओं, मेलों–ठेलों, ऋतु उत्सवों को जीवन्त भी बनाते हैं। उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद भी स्थितियों में काफी बदलाव आया है जो सकारात्मक भी है और नकारात्मक भी। लेकिन इस सब के बावजूद उत्तराखण्ड की लोक रचना धार्मिता जिन्दा है और जिन्दा रहेगी, हमेशा।

–गोमतीनगर, लखनऊ


उत्तरायणी कौथिग की हार्दिक शुभकामनाएँ

**विस्तार हार्डवेयर, सेनेटरी एण्ड पेन्ट्स**

(सम्पूर्ण समाधान)



**रमेश सिंह रावत**

( हमारी सुविधाएं एवं बिक्री )

**बोरिंग** : सामान के साथ बोरिंग होती है। **कन्स्ट्रक्शन केमिकल** : डॉ. फिक्सइट, फॉसरॉक, बर्जर, टर्मिगार्ड **प्लम्बरिंग** : जी.आई. जिन्दल (हिसार), प्लम्बरंग पाईप, सी.पी.वी.सी. (एस्ट्रल), पी.वी.सी. पाईप (फिनोलेक्स, तिरुपति, जिन्दल, जी प्लेक्स) **सेनेटररीवियर** : वैरीवेयर, सेरा, अरॉस, नोबेल **बाथिंग** : वैरीवेयर, रेस्पाईट, मरलिन **वाल एवं फ्लोर टाईल्स** : कजारिया, सेन्चुरी मैट फिनिश, एच.सी.ओ. वर्मोरा **बोर्ड एवं प्लाई** : ग्रीन प्लाई, सेन्चुरी, एक्स्ट्रास्ट्रांग, रियल वैल्यू **फ्लश डोर** : ग्रीन प्लाई, सेन्चुरी, फाल्कॉन इत्यादि।

रामआसरे पुरवा, खरगापुर, गोमतीनगर विस्तार, लखनऊ–226010
मो. : 9506143222, 979516433, 9795165333

***Best wishes from :***



**Harish Chandra Pant**

**Pant Ji Catterers & Event Company**

**UDAIGANJ WALE**
**OUTDOOR & INDOOR CATTERS**

260, Near Express Plaza, Eldico II, Saheed Path,
Raibarely Road, Lucknow
Mob. : 9415158726, 9305104498, 7830103269



# हम जीतेंगे...।

*–धन सिंह मेहता 'अनजान'*

हम चढ़कर संयम की सीढ़ी सब भारतवासी, वायरस कोरोना तुझको हम जीतेंगे।
तब जैसे हमने रोग तपेदिक पीटा था, अब वैसे ही हम मिलकर तुझको पीटेंगे।।

तेरी संक्रमण की गति को नाप–माप कर, है दो गज दूरी बहुत जरूरी बता चुके।
घरबंदी, तालाबंदी का आह्वान कर, हम धो हाथों को नेक इरादे जता चुके।
सामाजिक दूरी को, जीवन में अपनाकर, निष्ठुर बन तन का हमने अलगाव किया है।
जो जहाँ पर है, वहीं रहे का निवेदन कर, पाँवों, पहियों, पंखों को ठहराव दिया है।
देख रहे हैं रामायण व महाभारत हम, सुन गीता–उपदेश रहे, पढ़ वेद रहे हैं।
दुनिया का दादा ट्रंप चीन पर चीख रहा, हम मुख पर पट्टी बांध लक्ष्य को भेद रहे हैं।
तब जैसे हमने रोग पोलियो पीटा था, अब वैसे ही हम मिलकर तुझको पीटेंगे।

निज चिन्तायें भूल देश का स्वास्थ महकमा, बचा रहा है जान हजारों, जान लड़ाकर।
स्वच्छकार भी जुटे हुए हैं देवदूत बन, अल्प साधनों में अद्भुत विश्वास जताकर।
हर खतरे की करते हैं स्वीकार चुनौती, साध रहे हैं मिलकर सभी निशाने जमकर।
कतर रहे हैं व्याप्त निराशा के पंखों को, पर्वत–सी दिखने वाली दिक्कत को कम कर।
अति संक्रमण की तीव्रता, मारक क्षमता से, तोड़ी तूने कोशिकाओं की संरचना।
धन्वन्तरि औ चरक महाऋषि के बंशज हम, शोध शुरू है अब मुश्किल है तेरा बचना।
तब जैसे हमने रोग प्लेग को पीटा था, अब वैसे ही हम मिलकर तुझको पीटेंगे।

कोरोना! तेरे ख़तरे के ख़बरों–ख़ातिर, कलम–कैमरे दौड़ रहे हैं बिना थके ही।
करगिल की चोटी से लेकर सागर तट तक, उठा रहे हैं जान का जोखिम बिना रूके ही।
मानव हित के लिए देश के पत्रकार सब, धूल–धूप की धमाचौकड़ी फ़ान रहे हैं।
भयभीत भीड़ के बीच पहुँच बड़े धैर्य से, शंकाओं, आशंकाओं को छान रहे हैं।
जहाँ बिछाया तूने अपना काला बिस्तर, जहाँ–जहाँ पर लोगों ने की लापरवाही।
निर्भय होकर कलम–कैमरों की संगत ने, जनमानस को महा विपत में राह दिखाई।
तब जैसे हमने हैजा कसकर पीटा था, अब वैसे ही हम मिलकर तुझको पीटेंगे।

आज हमारी पुलिस प्रेम पर्याय बनी है, भूखे को रोटी देती है, प्यासे को जल।
समझाकर सामाजिक दूरी के मतलब को, कर देती है हर संकट का चुटकी में हल।
अनुकरणीय बन गये पुलिस–प्रयास हमारे, सुन वुहान के नाजायज़ बिगड़ैल विषैले।
हमने गंगाजल लेकर संकल्प पढ़ा है, चाहे जो हो अब भारत में तू न फैले।
आखिर कब तक छुपकर तू आघात करेगा, तेरे पीछे योद्धाओं की फ़ौज पड़ी है।
तेरी हैवानी हरकत पर नजर गड़ाए, गली, मोहल्लों, चौराहों पर पुलिस खड़ी है।
तब जैसे हमने चेचक जमकर पीटा था, अब वैसे ही हम मिलकर तुझको पीटेंगे।

हल्दी, मेंहदी, गोबर से छापी हैं पीठें, छिड़का है, गोमूत्र मिला गंगाजल घर–घर।
दीप असंख्य जलाये हमने द्वारे–द्वारे, ताली–थाली, घंटी–घंटा, शंख बजाकर।
निर्मल नीर उलीचा हमने शुष्क कुम्भ में, सिल–बट्टा, बेलन, आटे का खेल रचाया।
चौखट के काले पत्थर को तिलक लगाकर, शिव वाहन नन्दी को छक्कर दूध पिलाया।
माँग भरी है पाँच बार दिन में सिन्दूरी, पहनी चूड़ी सात घरों से राशि जुटाकर।
सामूहिक जलदान किया दिनकर देवा को, अटल आस्था की धरती से ध्वजा उठाकर।
तब जैसे हमने मिलकर डेंगू पीटा था, अब वैसे ही हम मिलकर तुझको पीटेंगे।

अब बच्चों ने उत्साह दिखाया जीतेंगे, सब युवाओं ने जोश दिलाया जीतेंगे।
माँ–बहिनों ने भी साथ निभाया जीतेंगे, पूज्य वृद्धों ने विश्वास जताया जीतेंगे।
हम आयुष्मान ऐप व योगासन से जीतेंगे, सहयोग मिला है शासन का भी जीतेंगे।
शीघ्र कोरोना के दुशासन को जीतेंगे, जन जोश जुड़ा है अनुशासन से जीतेंगे।
हम सामाजिक सद्भाव घोल के जीतेंगे, जन मन के निर्मल भाव तौल के जीतेंगे।
अब अपना मन व मुट्ठी खोल के जीतेंगे, सब 'भारत माँ की जय हो' बोल के जीतेंगे।
तब जैसे हमने फ्लू स्पैनिश पीटा था, अब वैसे ही हम मिलकर तुझको पीटेंगे।

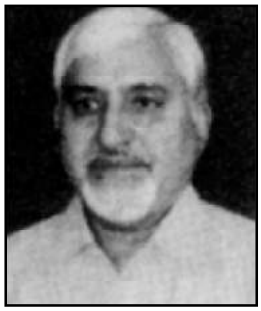
*–ई–43, कुर्मांचल नगर*
*लखनऊ।*

MAHI MATRIMONIAL
SERVICES
CONNECTING HEARTS

For Kumaoni & Garhwali
MRS. NEELAM JOSHI
Ph. : 9415157840, 9452758770 (For Lucknow)
Ph. : 9990316826, 7985142221 (For Delhi)

# खिखताट

*–हरीश बडोला*



करोना का लॉकडाउन मा
म्यारु कवि मित्र भौत खुश ह्वै अर
वैन एक सुन्दर कविता वाट्सअप पर
मी सणि शियर कै ।

मिन आज वर्षो बाद फ़जलेकम
अपणा चौकै डालि पर बैठ्यां
चखुलों को च्वीं –चाट सूणी।

पैड़िक म्यारा मन पर बैठीं
चखुलिऽल बोली छुचा
अपणी समळौण तैं बिजऽलदी

तु त ब्वलदु छौ
हे चखुलाओ मी निन्द आणी
अपणी च्वींचाट को निपलटो करा
वर्क फरोम होम का कारण
आज सींण खुणि तरसि गै।

हम त रुमुकदा उंगदा
फजलेकम बिजलदा
दूर तक पुटगिकु जुगाड़ मा उड़दा
च्वींचाट ही करदा छाया
पर आज हम च्वींचाट नि कना
हमत तेरि बेबसि परै छौं खिखताट कना

*–सी–2125/4 इन्दिरानगर,*
*लखनऊ*

# AGARWAL JEWELS & GEMS

## नववर्ष व उत्तरायणी की समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनायें

@agarwaljewelsandgems

0522-2352565, +91-9628665511

www.agarwaljewelsandgems.com

UGF-2, Jain Palace, Bhootnath, Indira Nagar, Lucknow

pnb

# HOME LOAN

@6.80%* p.a.
onwards



pnb

बड़े देश का
Bada Bank

Contact at 9264471316

## 0% शुल्क* 100% खुशियाँ

## अपना गृहऋण ट्रांसफर कर, इस सुविधा का लाभ उठायें.....

*T&C Apply

Contact Today - PLM RAM/Nearest Branch



# हम जहाँ, हमारा बैंक वहाँ

pnb ONE

pnb one
#JustOneApp

GET IT ON Google Play | Download on the App Store

पंजाब नैशनल बैंक
...भरोसे का प्रतीक !

punjab national bank
...the name you can BANK upon !




S-101, Nilgiri Complex, A-Block, Indiranagar, Lucknow
Ph. : 0522-2340618, 7080090198

इंडियन बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
Indian Bank
(A Govt. of India Undertaking)
इलाहाबाद
ALLAHABAD

# अपने सपनों के घर में
# अपने सपनों की कार के साथ प्रवेश करें

## गृह ऋण एवं वाहन ऋण



आकर्षक ब्याज़ दर

आसान और शीघ्र प्रसंस्करण

महिला उधारकर्ताओं के लिए रियायत

कॉर्पोरेट कार्यालय: 254-260, अव्वै षण्मुगम सालै, रायपेट्टा चेन्नै - 600 014

1800 425 000 00 / 1800 572 20 00 | www.indianbank.in | Follow us on:

# लखनऊ न्यूरो स्पाईन एण्ड डेण्टल केयर



## डा. बन्धुल तिवारी

MBBS, MS, M.Ch. (न्यूरो सर्जन)
Neuro Spine Surgeon (न्यूरो सर्जन)
UP MCI REG. No. 59418

## मस्तिष्क, रीढ़, नस, तंत्रिका रोग विशेषज्ञ

Ex. Sr. Sawai Man Singh Hospital, Jaipur
Ex. Sr. Ram Manohar Lohia I.M.S. Lucknow
Ex. Sr. Dr. Ambedkar Hospital, Rohini, New Delhi

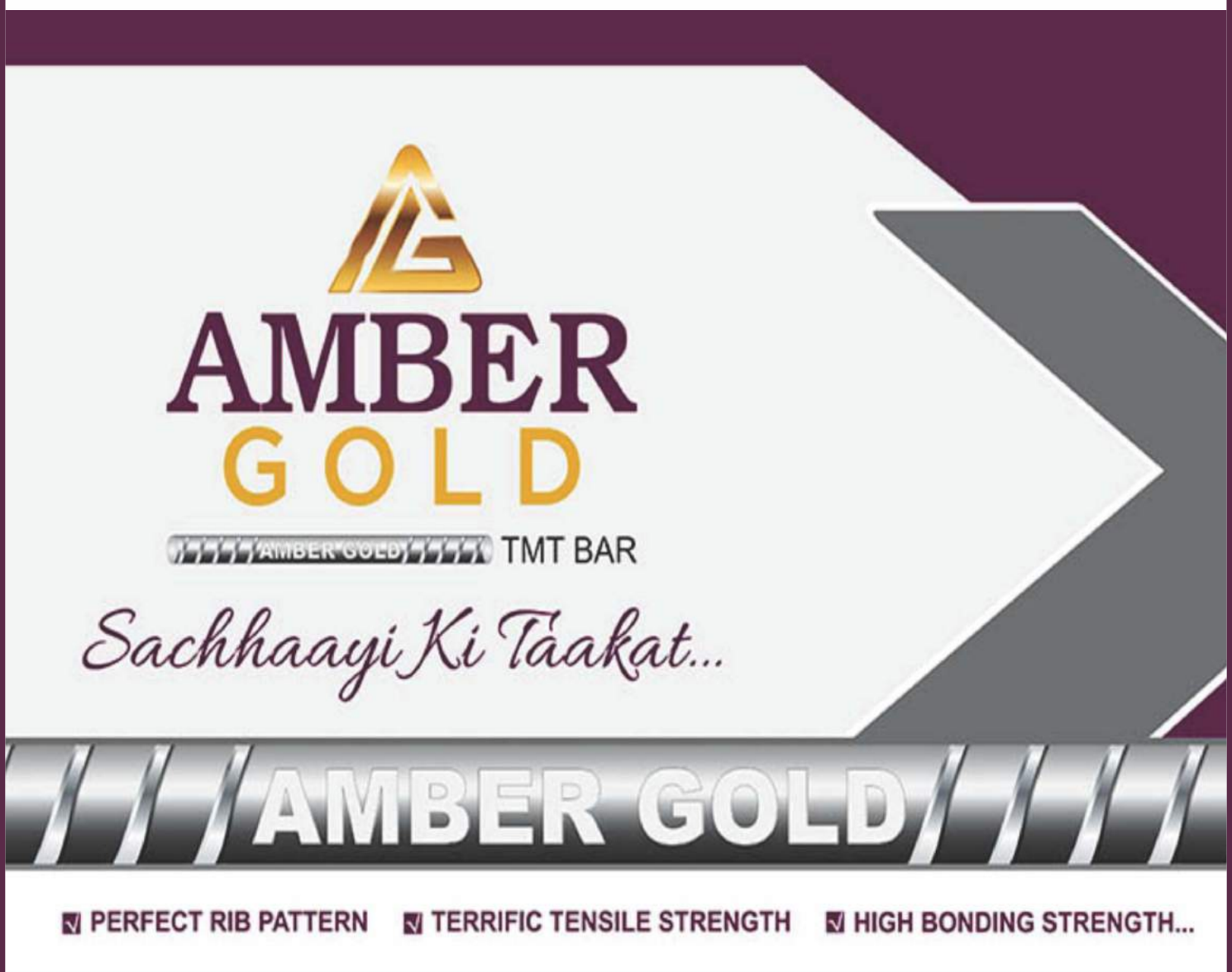
**निम्नलिखित समस्याओं हेतु सम्पर्क करें :–**

- सिर की चोट, मिर्गी के दौरे
- सिर चकराना (वरटाइंगो)
- दिमाग में खून की नस का फटना
- दिमाग में खून का थक्का जमना
- दिमाग तथा रीढ़ की टी.बी.
- कमर दर्द, पैरों में सुन्नपन
- झनझनाहट (सियाटिका–लम्बैगो)
- रीढ़ की चोट तथा पैरालिसिस (लकवा)
- गर्दन में दर्द, हाथों में सुन्नपन झनझनाहट
- हाथों, पैरों में कमजोरी (सरवाइकल स्पान्डिलाइसिस–मायलोपैथी)
- सिर दर्द (माईग्रेन), न्यूरोलाजिया आदि
- बच्चों में जन्मजात पीठ में गांठ (मेन्जियोमायलोसील, इनसिफेलोसील)
- दिमाग में पानी बढ़ना, सिर का आकार बढ़ना (हाइड्रोसिफैलस)
- हाथ पैरों में कम्पन, पारकिन्सोनिज़म, क्रैम्प आदि
- दिमाग तथा रीढ़ के इन्फेक्शन, न्यूरोसिस्टीसरकोसिस आदि

स्थान : शॉप नं. 32, फाउन्टेन प्लाज़ा, इल्डिको 1, बंगला बाजार, लखनऊ–226002

**पंजीकरण हेतु सम्पर्क करें मो. : 7460010035**

# उत्तरायणी मेले की हार्दिक शुभकामनाएँ




## ब्रिजविहारी कोनकास्ट प्रा० लि०

बाज़पुर ऊधम सिहं नगर उत्तराखण्ड


















**Manufacturer of Quality**

## KRAFT PAPER

**GSM: 80 to 150**
**Sized & Unsized**
**BF : 08 to 18**
**Deckle : 118 Inch.**

# PSB Papers P. Ltd.

Beria Road, Bazpur-262401 (U.S.Nagar) Uttarakhand
Tel: +91-05949-281859, psbpapers@yahoo.co.in

### OUR STRENGTHS

- Technically Strong
- Quality Control
- Commitment Oriented
- Employee Welfare

### WE INVITE

- Dealer Enquiries
- Customer Enquiries
- Waste Paper Suppliers
- Spares Suppliers



नव वर्ष, मकर संक्रान्ति, गणतंत्र दिवस एवं वसंत पंचमी
की हार्दिक शुभकामनाएं।



# हेमा सनवाल

पार्षद

शंकरपुरवा तृतीय (वार्ड सं. 63)



# उमेश चन्द्र सनवाल

अध्यक्ष, खुर्रमनगर, आदर्श व्यापार मण्डल

मो. : 7355015288, 9415922898, 9532962963

निवास : 529क/1447, पंतनगर (खुर्रमनगर),
पोस्ट-विकासनगर, लखनऊ-226022

With Best Wishes & Compliments :-

# C.S Infraconstruction Ltd.

**Registered Office:**

Khanwar, Ballia , Uttar Pradesh.

**Regional Office :**

Imirity Colony, Robertsganj, Sonebhadra ,Uttar Pradesh.

**Corporate Office:**

5/299 B, Vipul Khand, Gomti Nagar, Lucknow, Uttar Pradesh.

With Best Wishes for
UTTARAYANI KAUTHIG-2021




# MITTAL BROTHER

## ENGINEERS & CONTRACOTRS

**Registered Office:**

B-41, Nirala Nagar, Lucknow-226020

नव वर्ष एवं उत्तरायणी कौथिग की हार्दिक शुभकामनाएं




# Sweet Station

Start journey with us

Kanchana Bihari Marg, Kalyanpur, Opposite Union Bank
(Near Sai Mandir), Lucknow.
Contact No. - 0522-3578446, 8127842001, 9119999097

#sweetstationlucknow

पर्वतीय महापरिषद परिवार को

उत्तरायणी कौथिग–2021 की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं



प्रो. बी.एस. बिष्ट

# श्री श्री जागनाथ कैटर्स

हमारे यहाँ शादी, विवाह, मुण्डन एवं

अन्य शुभ अवसरों पर फुल कैटरिंग की व्यवस्था है।





**नीलमथा, लखनऊ**

**मो.: 8090022224, 7270088057**

# दि सेकसरिया बिसवाँ शुगर फैक्ट्री लिमिटेड, बिसवाँ (सीतापुर)

(आई0एस0ओ0 9001:2015, 14001:2015 एवं 22000:2005 द्वारा प्रमाणित)

## समस्त क्षेत्रवासियों, कर्मचारियों एवं किसान भाईयों को नव वर्ष एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनायें।

## सफेद दानेदार उच्च कोटि की चीनी, एथनॉल, 32 मेगावाट विद्युत का सह–उत्पादन एवं जैव समृद्ध जैविक खाद के निर्माता

## गन्ना आपूर्ति में पारदर्शिता लाने हेतु दी जाने वाली सुविधा।



ई–गन्ना प्रणाली के अन्तर्गत ई–गन्ना ऐप के साथ–साथ टोल फ्री नम्बर से जानकारी प्राप्त करने की सुविधा :–

(क) कार्यालय, गन्ना एवं चीनी आयुक्त – **1800–121–3203,**

(ख) गन्ना पर्ची सम्बन्धी जानकारी – **1800–103–5823,**

(ग) खेती से सम्बन्धित जानकारी – **1800–180–1551**

**कोविड–19 के संक्रमण से बचाव हेतु हैण्ड सैनिटाइजर का प्रयोग करें, साबुन से बार–बार हाथ धोयें, सोशल डिस्टेन्सिंग बनाये रखें। को/कोविशिल्ड वैक्सिन का इंतजार करें।**

*कोरोना को हराना है,*
*देश को बचाना है।*

**"मृदा परीक्षण अवश्य करायें, संस्तुति के आधार पर उर्वरक लगायें"**

- "ट्रेन्च विधि से गन्ने की बुवाई करायें, सह फसल के साथ दोहरा लाभ कमायें"।
- "पराली एवं गन्ने की पत्ती न जलायें, ट्रैश मल्चर से जुताई कर जैविक खाद बनायें।"
- "गन्ना प्रजाति को0पी0के0–05191 की बुवाई कदापि न करें, उन्नतशील प्रजाति को0लख0–94184, को0–98014, को0शा0–08272 एवं को0–0118 व को0–0238 को अपनायें।

**(रमेश चन्द्र सिंघल)**
**मुख्य अधिशासी**

आरईसी
REC

असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.



# मजबूत आधारशिला के साथ सतत रूप से विकास के पथ पर अग्रसर

पिछले पांच दशकों से निरंतर कार्य करते हुए, लाखों लोगों के जीवन को और बेहतर बनाने तथा विद्युत क्षेत्र की संपूर्ण वैल्यू चेन में एक अग्रणी वित्तीय सेवा प्रदाता होने के कारण, हम विद्युत और प्रगति के पर्याय के रूप में, एक ब्रांड बनकर उभरे हैं। वित्तीय वर्ष 2020 में हमार प्रदर्शन हमारी सफलता का प्रमाण है जहां हमने ₹ 4,886 करोड़ का वार्षिक लाभ र्जित किया है। ₹ 35,000 करोड़ से अधिक निवल मूल्य के साथ हम देश–भर में स्थित अपने 22 कार्यालयों द्वारा ग्राहकों के लिए आसान पहुंच सुनिश्चित करते हैं तथा हम अपनी असाधारण सफलता के लिए अपने ग्राहकों तथा देश के लोगों द्वारा दर्शाए गए विश्वास के लिए इनके ऋणी हैं।

**पूरे भारत में विद्युत उत्पादन, पारेषण और वितरण परियोजनाओं के वित्तपोषण में भागीदार**

• गोल्डन पीकॉक अवार्ड • सीआईएमएसएमई अवार्ड • एनएसई मार्केट अचीवर अवार्ड

# उत्तर प्रदेश राज्य भण्डारण निगम






## हमारा उद्देश्य सुरक्षित एवं वैज्ञानिक भण्डारण

### प्रमुख कार्य

- निगम द्वारा प्रदेश में स्वनिर्मित गोदामों एवं पी.ई.जी. तथा किराये पर गोदाम लेकर विभिन्न प्रकार के माल जमाकर्ताओं एवं कृषकों के कृषि उपज, बीज, उर्वरक, कृषि ययन्त्रों तथा अन्य अधिसूचित वस्तुओं के वैज्ञानिक भण्डारण एवं परिवहन की व्यवस्था की जाती है।
- भारतीय खाद्य निगम द्वारा मूल्य समर्थ योजना के अन्तर्गत क्रय किये गये गेहूँ/धान से तैयार चावल का अधिकांश भण्डारण निगम के गोदामों में किया जाता है।
- पंचायत स्तर पर निगम द्वारा अपनी कृषक प्रसार सेवा योजना के अन्तर्गत खाद्यान्नों को सुरक्षित रखने हेतु किसानों को प्रशिक्षित किया जाता है तथा कृषकों, व्यापारियों आदि द्वारा अपने घरों में स्वयं भण्डारित खाद्यान्न को कीटमुक्त रखने हेतु कीट परिनाशक सेवा योजना के अन्तर्गत न्यूनतम शुल्क लेकर प्राविधिक क्रियाओं से लाभान्वित किया जाता है।
- किसानों को भण्डारण शुल्क में 30 प्रतिाश्त तथा सहकारीसंस्थाओं को 10 प्रतिशत की छूट जी जाती है।
- निगम द्वारा खाद्यान्न स्टाक का वैज्ञानिक भण्डारण करके खाद्यानन को सुरक्षित रखा जाता है।
- भारत सरकार की नीतियों के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश में पी.ई.जी. योजना के अन्तर्गत खाद्यान्न भण्डारण हेतु बने गोदामों का संचालन निगम द्वारा नाडल एजेन्सी के रूप में सुचारू रूप से किया जा रहा है।
- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निगम को भण्डारण एजेन्सी भीघोषित किया गया है।

### निगम द्वारा अपने कार्मिकों को दी जा रही विशेष सुविधायें

- निगम द्वारा कार्मिकों के बच्चों को उचच शिक्षा प्रापत करने के लिए उनकी ट्यूशन फीस का 25 प्रतिशत का अनुदान दिया जाता है।
- निगम द्वारा कार्मिकों को उनके बच्चों की शादी, शिक्षा, भवन निर्माण आदि के लिए 4 प्रतिशत न्यूनतम ब्याज पर सामान्य ऋण की सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है।
- कोविड–19 महामारी के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिये कार्मिकों को निगम की ओर से मास्क व सेनेटाइजर उपलब्ध कराये गये हैं। कोविड–19 महामारी के बचाव व रोकथाम हेतु मुख्यालय पर कोविड हेल्प डेस्क की स्थापना की गयी है।

### भण्डारण क्षमता

- प्रदेश में विभाग के 157 भण्डारगृह संचालित हैं। जिसमें 111 स्वनिर्मित 16 किराये के तथा 30 पी.ई.जी. गोदाम स्थापित हैं।
- निगम की स्वनिर्मित क्षमता 25.13 लाख मै0टन एवं पी.ई.जी. तथा किराये पर लिये गये गोदामों की भण्डारण क्षमता 12.55 लाख मै0 टन है। इस प्रकार कुल भण्डारण क्षमता 37.68 लाख मै0टन है।
- भारत सरकार की योजना के अन्तर्गत तृतीय चरण में साइलो निर्माण कराया जाता है। जिसके लिये निम को नोडल एजेन्सी बनाया गया है। जिसके तहत ललितपुर, पीलीभीत एवं हमीरपुर मं 50,000 – 50,000 मै0टन कुल 1.5 लाख मै0टन के साइलो निर्माण हेतु कार्यवाही प्रचलित है।
- वर्ष 2020–21 में दिनांक 20.12.2020 तक 06.89 लाख मै0टन चावल भण्डारित कराया गया ।
- वर्ष 2020–21 में दिनांक 20.12.2020 तक 25.15 लाख मै0टन0 गेहूँ निगम के गोदामों में भण्डारित कराया गया।
- कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान निगम द्वारा 31,93,287 मै0टन गेहूँ और 17,22,313 मै0टन चावल की प्राप्ति एवं 23,95,438 मै0टन गेहूँ और 28,59,968 मै0टन चावल की निकासी का कार्य कराय गया।


**श्रीकान्त गोस्वमी**
प्रबन्ध निदेशक

**मुकुट बिहारी वर्मा**
अध्यक्ष

**उ0प्र0 भण्डारण निगम, भण्डारण भवन, न्यू हैदराबाद, लखनऊ–226007**

पी.बी.एक्स.–052–2781622, 23, 24 फैक्स नं.–0522–2780935

वेबसाईट – www.upswc.com

# उ.प्र. कोआपरेटिव बैंक लि.

## मुख्यालय : 2, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ–226001

27 शाखाएं | 17 क्षेत्रीय कार्यालय | 28 भुगतान कार्यालय

### वर्ष 2018–20 की विशेष उपलब्धियाँ

- वर्ष 2019–20 में निर्धारित लक्ष्य रु. 9500.00 करोड़ के सापेक्ष रु. 6150.21 करोड़ का ऋण वितरित किया गया।
- 16.75 लाख कृषक लाभार्थी।
- प्रदेश के गन्ना कृषकों को गन्ना मूल्य भुगतान हेतु उ.प्र. कोआपरेटिव बैंक लि. द्वारा सहकारी क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र के अन्तर्गत स्थापित 23 चीनी मिलों को अंकन 2124.87 करोड़ रु. की ऋण सीमाएं स्वीकृत कर रु. 1370.12 करोड़ का वित्त पोषण उपलब्ध कराया गया।
- व्यवसाय विवधीकरण योजनान्तर्गत रु. 4946.10 लाख ऋण का वितरण।
- किसान क्रेडिट कार्ड योजना द्वारा कृषकों को निरन्तर ऋण उपलब्ध कराये जाने की सुविधा।
- स्वयं सहायता समूल योजनान्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र की दुर्बल एवं अति दुर्बल व्यक्तियों/महिलाओं का समूल बनाकर ऋण उपलब्ध कराने की सुविधा।
- 41 जिला सहकारी बैंकों में ए.टी.एम. युक्त मोबाइल वैन की सुविधा।

### भावी योजनाएं

- वर्ष 2020–21 में रु. 10000.00 करोड़ के फसली ऋण वितरण का लक्ष्य।
- वर्ष 2020–21 के लिए व्यवसाय विविधीकरण योजनान्तर्गत रु. 20000.00 लाख ऋण वितरण का लक्ष्य।
- उ0प्र0 कोआपरेटिव बैंक में सी.बी.एस प्रणाली के अन्तर्गत नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग एवं आधार इनेबिल्ड पेमेन्ट सिस्टम (ए.ई.पी.एस.) की सुविधा।
- बैंक के ग्राहकों को ई–के.वाई.सी. की सुविधा।
- प्रदेश के समस्त पैक का कम्प्यूटराईजेशन। 09 जिला सहकारी बैंकों में ए.टी.एम. युक्त मोबाइल वैन की सुविधा, ई–लॉबी एवं वर्तमान ए.टी.एम. की संख्या में वृद्धि की योजना।

### सावधि जमा की ब्याज दरें

| क्र.सं. | अवधि | ब्याज दर |
|---|---|---|
| 1 | 7 दिन से 14 दिन तक | 3.25 प्रतिशत |
| 2 | 15 दिन से 45 दिन तक | 3.50 प्रतिशत |
| 3 | 46 दिन से 90 दिन तक | 3.75 प्रतिशत |
| 4 | 91 दिन से 180 दिन तक | 4.00 प्रतिशत |
| 5 | 181 दिन से 269 दिन तक | 4.50 प्रतिशत |
| 6 | 270 दिन से 264 दिन तक | 4.75 प्रतिशत |
| 7 | 1 वर्ष | 5.40 प्रतिशत |
| 8 | 1 वर्ष से अधिक तथा 2 वर्ष तक | 5.35 प्रतिशत |
| 9 | 2 वर्ष से अधिक तथा 3 वर्ष तक | 5.35 प्रतिशत |
| 10 | 3 वर्ष से अधिक तथा 5 वर्ष तक | 5.45 प्रतिशत |
| 11 | 5 वर्ष से अधिक तथा 10 वर्ष तक | 5.50 प्रतिशत |

**वरिष्ठ नागरिकों को 0.5 प्रतिशत अधिक ब्याज की सुविधा**

**भूपेन्द्र कुमार**
प्रबन्ध निदेशक

**तेजवीर सिंह**
अध्यक्ष

# गीत

*–घनानन्द पाण्डेय 'मेघ'*



आये हैं तो कुछ खास करके जाइए
मील के भी पत्थरों को धर के जाइए

आदमी में आदमी सा कुछ तो हो भला
पत्थरों का रूप भी तो मूर्ति में ढला
प्रेम भाव जिन्दगी का सूत्र है मगर
आदमी में छल कपट कहां से है पला

बार बार क्रोध में उबल रहे उछल रहे
नेह की नदी में भी उतर के जाइए
मील के भी पत्थरों को धर के जाइए

स्वार्थ में बहक रहे भटक रहे हैं राह पर
सोचते बिचारते हैं नित्य नयी चाह पर
चाह के बिकल्प भी वो अनगिनत धरे हुए
सोचता है कौन यहां अब निजी गुनाह पर

न्याय की दुहाइयां तो दे रहे सभी मगर
चलते चलते खुद भी तो सुधर के जाइए
मील के भी पत्थरों को धर के जाइए

लोग राज करें मौज करें खुशियां मिलें
दीन दुखियों को किन्तु रोटीयां मिलें
ऊंच नीच की ये खाइयां मिटें पटें सभी
एक दूसरे को देख चेहरे खिलें

हंसी खुशी कदम बढ़ायें जिन्दगी की राह पर
दूसरे के कष्ट को भी हर के जाइए
मील के भी पत्थरों को धर के जाइए

घूमते शहर शहर निहारते संवर संवर
मस्त हुए जा रहे टहल रहे इधर उधर
नीति नियम लांघ रहे भाग रहे अनवरत
रोक रहा वक्त इन्हें रुक नहीऔ रहे मगर

चांद में भी घर बनायें रोकता है कौन किन्तु
गांव गलियों में भी गुजर के जाइए
मील के भी पत्थरों को धर के जाइए।

*–पन्तनगर कालोनी लखनऊ।*

# पर्वतीय समाज के कोरोना योद्धा।

*–कौस्तुभ आनन्द चन्दोला*



जीवन समर्पित हो सभी के लिए
नदी अस्तित्व खोती है समंदर के लिए।
आचरण से बनता है आदमी भी देवता
आदमी यदि जिये आदमी के लिए।
चारों ओर हो अंधेरा, डराने लगे
एक दीपक बहुत है रोशनी के लिए।
कल्याण की कामना भावना उत्कर्ष हो
हर सुबह उगे बेहतरी के लिए ।
एक सूर्य सा आकार जब चमकने लगे
प्रेरणा बन जायें कई सदी के लिए।

– बेचन शर्मा 'उग्र'

वर्ष 2020 एक दुस्वप्न की तरह चला गया। यह दुर्दम्य महामारी का वर्ष हम सबको आजीवन एक काली स्मृति के रूप में याद रहेगा। वैश्विक महामारी –कोविड–19 ने हमें सिर्फ शारीरिक रूप से ही परेशान नहीं किया बल्कि आर्थिक व मानसिक रूप से भी तोड़ा । हमारे व्यवसाय चौपट हो गए, लोगों की नौकरियां चली गई, शैक्षणिक संस्थाएं और बच्चों की पढ़ाई बुरी तरह चरमरा गयी। छोटे– बड़े सभी उद्योग–धंन्धे बुरी तरह प्रभावित हुये। लोगों की आमदनी के साधन खत्म हो गये। गरीबों के लिए तो यह महामारी बिना बीमारी के ही महामारी से भी बड़ी मुसीबत बनकर खड़ी हो गयी।

ऐसी मुसीबत की घड़ी में जहां एक ओर हमारे महान कोरोना के फ्रंटलाइन वेरियर्स जिसमें डॉक्टर्स, नर्सों, स्वास्थ्य कर्मियों, पुलिस कर्मचारियों, स्वच्छता कार्यकर्ताओं ने समाज को इस महामारी के वायरस से सुरक्षित रखने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी तो दूसरी ओर बैंक कर्मचारियों, यातायात व माल ढुलाई से जुड़े कर्मचारियों , स्थानीय दुकानदारों, दूध वालों, सब्जी वालों, किसानों, एयरपोर्ट और अन्य यातायात साधनों के कर्मचारियों, सेना व पैरा मिलिट्री के जवानों, साइंटिस्टों आदि ने कोरोना महामारी से लड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। एक ओर फ्रंटलाइन लाइन वेरियर्स ने अपनी जान की परवाह न करते हुए हर दिन अपनी जान जोखिम में डालकर अपने कर्तव्यों का पालन किया वहीं पर कई ने इस जंग में अपनी जान तक दांव पर लगाई और सैकड़ों फ्रंटलाइन वेरियर्स इस बीमारी के गाल में समा गये। ऐसे फ्रंटलाइन वेरियर्स को हम कोटि–कोटि सलाम करते हैं, श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

इन्हीं फ्रंटलाइन वेरियर्स की बहादुरी के कारण भारत जैसे घनी आबादी वाले देश में कोरोना महामारी का प्रकोप पश्चिमी देशों की अपेक्षा कम रहा.. निश्चय ही सरकारों की भूमिका भी सराहनीय रही। समाज में एक जागरूकता फैली और हम इस गंभीर वैश्विक महामारी से कुछ हद तक निजात पा चुके हैं... हालांकि इस महामारी से जंग जारी है और प्रकोप अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। हमें जागरूकता तथा सुरक्षा उपायों को यथावत प्रयोग करना है।

इसी वैश्विक महामारी करोना के कारण लॉकडाउन की स्थिति उत्पन्न हुई और इस लॉकडाउन के कारण उत्पन्न हुई बेरोजगारी। बाजारों में आवश्यक खाद्य सामग्री का अभाव उत्पन्न हुआ, दैनिक मजदूरी करने वाले, घरों में काम करने वाले लोग, रेहड़ी वाले, फुटपाथ पर छोटी–छोटी दुकान लगाने वाले हजारों लोग गंभीर आर्थिक तंगी से गुजरने लगे।

ऐसी स्थिति में हमारे समाज के कई लोगों ने आगे बढ़कर गरीब, असहाय, अभावग्रस्त और महामारी से पीड़ित लोगों की मदद के लिए हाथ बढ़ाया। इस महामारी के दौरान हमारे समाज के कई लोग गंभीर रूप से बीमार हुए उनको उचित

इलाज की व्यवस्था कराना भी इस लॉकडाउन में मुसीबत का काम रहा। महामारी से लड़ते–लड़ते कई व्यक्ति जंग में हार गए और इस संसार से सदैव के लिए विदा हो गये। इस मुसीबत की घड़ी में उनके परिवार वालों को ढाढस बंधाने और उनके उनके अंतिम संस्कार हेतु आगे आने से भी लोग कतरा रहे थे....जो स्वाभाविक भी था, किंतु हमारे समाज के कुछ योद्धा ऐसे थे जिन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना ऐसे परिवारों की सहायता की, अंतिम संस्कार के लिए आगे आये और अन्य सभी प्रकार से असहाय लोगों की सहायता की। कोरोना के योद्धाओं ने जान हथेली पर रखकर कोरोना संकट में लोगों की सहायता की। इस दौरान किसी ने तन और किसी ने धन से सेवा कर लोगों को कोरोना से बचाने में अहम योगदान दिया। लाकडाउन में लगे कर्फ्यू के दौरान लोग कोरोना के डर से बाहर निकलने से डरते थे वहीं कोरोना के योद्धाओं ने निडर होकर जरूरतमंद लोगों को खाना, मास्क, सैनिटाइजर सहित अन्य महत्वपूर्ण वस्तुएं मुहैया करा रहे थे।

महामारी और लॉकडाउन की इस विकट परिस्थितियों में हमारे समाज के कई महान लोगों ने एक योद्धा के रूप में आगे बढ़कर लोगों की सहायता की... समाज के ऐसे कोरोना योद्धाओं को हम नमन करते हैं और उनकी भरपूर सराहना करते हैं। इनमें से कुछ का विवरण जो मुझे ज्ञात हो पाया है, मैं दे रहा हूँ–

हमारे पर्वतीय महापरिषद की महिला प्रकोष्ठ की महासचिव सुमन मनराल के नेतृत्व में श्रीमती सरोज खुल्वे, श्रीमती राधा बिष्ट के विशेष योगदान से उनके संस्था 'इला स्वाभिमान संस्था' ने सैकड़ों गरीब लोगों,पैदल घर लौट रहे लोगों को राशन किट तथा अन्य खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। साथ ही स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए सेनेटरी पैडस्, मास्क और गल्बस बांटे । अस्वस्थ और गरीब लोगों की इम्यूनिटी बढ़ाने हेतु दवाइयां भी वितरित की गयी। इस प्रकार लॉकडाउन के विषम समय में गरीबों और जरूरतमंदों की सहायता करने में प्रमुख भूमिका अदा की। उनकी टीम में के प्रमुख सदस्य श्रीमती सविता सिंह, श्रुति आनंद, अमृता श्रीवास्तव, एकता गुप्ता, सुनीता श्रीवास्तव, मंजू पाठक और पूनम कालरा थी।

हमारे समाज के प्रभावशाली व्यक्तित्व युवाओं के प्रेरणा स्रोत श्री मोहन सिंह 'मोना' जो कि पर्वतीय महापरिषद के उपाध्यक्ष और युवा प्रकोष्ठ के प्रभारी भी हैं के द्वारा सैकड़ों गरीबों व अभावग्रस्त लोगों को लखनऊ के खुर्रमनगर, पंत नगर, इंद्रप्रस्थ नगर, कल्याणपुर क्षेत्रों में राशन का वितरण किया गया और जरूरत मंदों को आर्थिक सहायता भी प्रदान की। मोना भाई ने परिवार सहित सड़कों पर उतर कर लॉकडाउन में हजारों जरूरतमंद परिवारों को छः माह तक राशन वितरण किया और अपने गाँव को वापस लौट रहे श्रमिकों को खाद्य सामग्री, पानी, दवाइयां, मास्क, सैनिटाइजर और फल वितरित किए। समाज के हर जरूरतमंद लोगों के लिए वे हमेशा उपस्थित रहते हैं।

पर्वतीय महापरिषद के मुख्य संयोजक श्री टी एस मनराल जी द्वारा मोहनलाल गंज, सदर तहसील, गोमतीनगर आदि क्षेत्रों में गरीब और जरूरतमंद परिवारों को कई कुंटल राशन, कपड़े व नगद धन दे कर सहायता प्रदान की दूसरी ओर आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को फीस के लिए नगद राशि देकर लॉकडाउन की विषम परिस्थितियों से उबरने में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की.... मुख्यमंत्री राहत कोष में भी उनके द्वारा बड़ी राशि दान स्वरूप दी।

पर्वतीय महापरिषद के वर्तमान अध्यक्ष श्री गणेश जोशी द्वारा सरोजनी नगर क्षेत्र के सैकड़ों जरूरतमंद लोगों को खाना व राशन बांटा, दूसरी तरफ इस महामारी से लड़ने हेतु एक बड़ी धनराशि एकत्र करने में अहम भूमिका निभाकर उन्होंने मुख्यमंत्री राहत कोष में रु. 351000 की राशि पर्वतीय महापरिषद की ओर से मा. मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश को भेंट की।

पर्वतीय महापरिषद के मुख्य संरक्षक और चेयरमैन हिमालयन ग्रुप आफ इंस्टीट्यूशंस श्री दिलीप सिंह बाफिला तथा उनकी धर्मपत्नी ने भी कुर्मांचल नगर और बख्शी के तालाब क्षेत्र में अभावग्रस्त लोगों को बड़ी मात्रा में सहायता पहुंचा कर सर्व समाज की बड़ी सेवा की।

हमारे समाज के लखनऊ में एकमात्र सभासद श्रीमती हेमा सनवाल और उनके पति उमेश सनवाल ने भी शंकरपुर वार्ड– तीन में जरूरतमंद लोगों को सरकार की ओर से तथा अपनी ओर से भरपूर सहायता दी गई। श्री नवीन चंद्र तिवारी

जी और श्री प्रकाश पाण्डेय जो पर्वतीय महापरिषद के अभिनव नगर शाखा के अध्यक्ष हैं के द्वारा सैकड़ों लोगों को भोजन और मास्क बांटकर समाज की सेवा की गई।

श्री दीप जोशी जो कि राम मनोहर लोहिया अस्पताल में कार्यरत है वैसे भी समाज की सेवा व सहायता हेतु सदैव तत्पर रहते हैं , किंतु कोरोना काल के संकट पूर्ण परिस्थितियों में उन्होंने कोरोना पीड़ित लोगों की बहुत बड़ी सहायता की। हॉस्पिटल के भीतर भी तथा बाहर भी। कोरोना से मृत लोगों के अंतिम संस्कार आदि के संबंध में स्वयं आगे बढ़कर सहायता की, पर्वतीय समाज ऐसे फ्रंटलाइन करोना योद्धा को नमन करता है।

डॉ बी एस नेगी– संगठन सचिव पर्वतीय महापरिषद तथा चिकित्सा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष जो स्वंय डॉक्टर हैं के द्वारा प्रतिदिन कोरोना काल में और लॉकडाउन के अवधि में प्रतिदिन 2 घंटा निःशुल्क ओपीडी लगाई गई और गरीबों और असहाय लोगों को निःशुल्क दवा, मास्क और राशन वितरण किया गया। कई रोगियों को खून की आवश्यकता होने पर उसको खून भी उपलब्ध कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैसे तो डॉक्टर फ्रंटलाइन के करोना वैरीयर्स हैं लेकिन अपने समाज और सर्वसमाज के लिए उनकी सेवा को हम सलाम करते हैं।

पर्वतीय समाज के डॉ. डी एस नेगी जी उत्तर प्रदेश के डीजी हेल्थ हैं ने जहां एक ओर अपने महत्वपूर्ण पद पर रहकर उत्तर प्रदेश में कोरोना से लड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जिसके कारण उत्तर प्रदेश अन्य प्रदेशों की तुलना में इस वायरस से कम प्रभावित हुआ। दूसरी ओर उन्होंने पर्वतीय समाज के हर उस व्यक्ति की मदद की जिन्होंने उनसे संपर्क किया इस प्रकार डॉक्टर नेगी जो फ्रंटलाइन वैरियर भी हैं को हम सलाम करते हैं।

एलडीए कॉलोनी कानपुर रोड और बांग्ला बाजार के क्षेत्र में हमारे पर्वतीय महापरिषद के कर्मठ पदाधिकारी श्री के एस रावत–कोषाध्यक्ष और के एन पाठक–संगठन सचिव द्वारा सैकड़ों गरीबों को राशन वितरण किया गया और अपने क्षेत्र से मुख्यमंत्री राहत कोष हेतु 51 हजार की राशि भी उन्होंने एकत्र की।

श्री के एन पांडे कल्याणपुर जो की महापरिषद में उपाध्यक्ष के पद पर हैं के द्वारा ऐसे समय में जब लोग महामारी के वायरस के डर से सामान्य बीमारी से मृत शरीर का भी अंतिम संस्कार प्रक्रिया करने से कतरा रहे थे, ऐसी परिस्थितियों में श्री के एन पांडे द्वारा कई मृत शरीरों के अंतिम संस्कार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और स्वयं अपने हाथों से ऐसे लोगों के अंतिम संस्कार कराया। साथ ही असहाय और गरीब लोगों की सहायता मैं उन्होंने बढ़–चढ़कर भाग लिया। इस कर्मयोगी को महापरिषद सलाम करता है। अखबारों में भी इस संदर्भ में विवरण छपा है।

विराट खंड क्षेत्र में श्री पी सी पंत जी द्वारा निःशुल्क चिकित्सा केंद्र के माध्यम से सेवा की गरीबों को स्वयं तथा प्रशासन के माध्यम से निःशुल्क राशन और धन मुहैया कराने में और अस्वस्थ लोगों की सहायता में बहुत बड़ा योगदान दिया गया।

श्री रमेश उपाध्याय पर्वतीय महापरिषद के सचिव के द्वारा सैनिटाइजेशन मशीन के द्वारा सैकड़ों घरों में स्वयं अपने पीठ पर सैनिटाइजेशन मशीन लादकर घरों में सैनिटाइजेशन का काम किया और इस तरह करोना के वायरस से लड़ने में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया।

श्री विक्रम भट्ट पंतनगर द्वारा अपनी संस्था स्वतंत्र एजुकेशनल वेलफेयर के माध्यम से 200 से अधिक गरीब परिवारों विधवाओं दिव्यांग जनों को बुजुर्गों को राशन वितरण का काम कर इस लॉकडाउन पीरियड में महत्वपूर्ण सहायता दी गई।

श्रीमती सुमन रावत, पर्वतीय महापरिषद की उपाध्यक्षा तथा महिला प्रकोष्ठ के प्रभारी द्वारा पर्वतीय महापरिषद तथा अपनी संस्था 'पावर विंगस् फाउंडेशन' के माध्यम से हजारों गरीब ,असहाय, फुटपाथ पर सोते लोगों, भिखारियों को राशन कपड़े तथा स्वास्थ्य हेतु दवाइयों और उनके इलाज की व्यवस्था की गई। हजारों दिहाड़ी मजदूरों को लॉकडाउन अवधि

में उनके घरों तक  पहुंचाने की व्यवस्था भी सुमन रावत जी द्वारा की गई। उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका के लिए गवर्नर महोदया के  साथ ही कई अन्य संस्थाओं ने भी उनको सम्मानित किया गया।

कुर्मांचल नगर और इंदिरा नगर, कल्याणपुर क्षेत्र में श्री गणेश जोशी एडवोकेट, श्री गोविंद पाठक, श्री महेंद्रपंत, श्री देवेंद्र मिश्रा आदि लोगों द्वारा राशन बाटा गया और साथ ही कोरोना मृत लोगों के अंतिम संस्कार कराने मैं भी महत्वपूर्ण योगदान दिया गया।

हमारे संरक्षक श्री एनके उपाध्याय जी द्वारा भी गरीब और अभावग्रस्त लोगों को खाना और कपड़े वितरित किया गया।

श्री पुष्कर नयाल, श्री शंकर पांडे,  अनुपम भंडारी, जीतेंद्र उपाध्याय द्वारा भी गरीबों की सहायता में बढ़ चढ़कर भाग लिया गया।

निलमथा क्षेत्र में पर्वतीय महापरिषद के उपाध्यक्ष और  कर्मयोगी श्री बिशन सिंह बिष्ट, महापरिषद के उपाध्यक्ष श्री जीडी भट्ट, महापरिषद की महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्षा श्रीमती गंगा भट्ट, श्री कुंडल सिंह मेहता जी द्वारा हजारों लोगों को राशन, धन आदि से  लॉकडाउन अवधि में  जरूरत मंदों की भरपूर सहायता प्रदान की गई।

तेलीबाग के क्षेत्र में हमारे युवा पदाधिकारी श्री मोहन भट्ट–प्रचार सचिव द्वारा हजारों की संख्या में गरीब और अभावग्रस्त लोगों को राशन किट तथा खाना वितरित किया गया और उनकी स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का भी समाधान करने में सहायता प्रदान की।

पूर्व पार्षद नरेंद्र देवड़ी द्वारा हजारों घरों में महिलाओं द्वारा बनाए गए मास्क स्वयं घर–घर जाकर वितरित किए गए और इस दौरान वह स्वयं भी कोरोना पीड़ित हो गए अब स्वस्थ है लेकिन  मानवता की सेवा में वे संलग्न रहे।

पंतनगर क्षेत्र में श्री भुवन पांडे , श्री गोविंद सिंह बिष्ट , श्री नवीन रावत, श्रीमती अनिता सिन्हा आदि लोगों ने जरूरत लोगों में राशन आदि बांट कर इस कोरोना काल के संकट से उबरने में सहायता प्रदान की।

कल्याणपुर क्षेत्र में सुंदर पाल सिंह बिष्ट – सलाहकार पर्वतीय महापरिषद और समाज सेवा की सोच पर आधारित चिल्लर कोष के प्रभारी हैं के द्वारा सैनिटाइजेशन मशीन के द्वारा कल्याणपुर और खुर्रम नगर क्षेत्र में तथा जहां से भी अनुरोध प्राप्त हुआ के घरों में निःशुल्क सैनिटाइजेशन का काम करवा कर वायरस से निजात पाने में समाज की सेवा की, साथ ही जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरण किया।

हमारे युवा प्रकोष्ठ के वरिष्ठ पदाधिकारी–  श्री सुनील किमोटी द्वारा मास्क, ग्लब्स आदि  समाज में बांटे गए  तथा निःशुल्क सैनिटाइजेशन के काम में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

श्री पान सिंह भंडारी, संरक्षक पर्वतीय महापरिषद एवं अनुपम भंडारी ने पंतनगर , कल्याणपुर क्षेत्र में  खाना, राशन तथा मास्क आदि का वितरण कर जरूरतमंदों की सहायता की है।

हमारे महापरिषद के संरक्षक श्री ओ पी भारद्वाज ने भी इस संकट की घड़ी में जरूरतमंद लोगों को सहायता पहुचायी जो स्वयं कोरोना के शिकार हो गये और वायरस से जंग में हार गए और हमसे सदा के लिए विदा हो गए। हम सब उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री गिरीश चंद्र शर्मा ने रहीम नगर क्षेत्र में सैकड़ों गरीब और असहाय लोगों को राशन और खाना वितरित किया साथ ही फ्रंटलाइन कोरोना योद्धाओं... विशेष तौर से पुलिस और पीएसी के जवानों को उनको ड्यूटी पर जाते वक्त मट्ठा तथा अन्य खाद्य पदार्थों का भी वितरण कर उनका मनोबल बढ़ाने में योगदान दिया।

लॉकडाउन के दौरान विषम आर्थिक परेशानियों से जूझ रहे हैं साहित्यकार/गीतकार श्री शेर सिंह रावत जी को सहायता की अपील कर श्री धन सिंह मेहता 'अनजान' जो स्वयं भी साहित्यकार हैं के द्वारा 28500/– की धनराशि एकत्र

कर उन्हें परेशानियों से उबारने में सहयोग किया गया।

परिषद के उपाध्यक्ष श्री जीडी भट्टजी द्वारा सैनिक कॉलोनी में, महापरिषद के संगठन सचिव श्री पूरन जोशी ने शहर से गाँव की ओर पैदल जा रहे पथिकों को विश्राम हेतु स्थान उपलब्ध कराया था उन्हें गेस्ट हाउस में ठहराया और भोजन उपलब्ध कराया।

इसके साथ ही समाज के कई प्रबुद्धजनों ने इस कोरोना महामारी से लड़ने में विभिन्न प्रकार से समाज की सेवा की गई।

सदी के सबसे बड़े खतरे से मानव जीवन थर्राया गया और इस नई महामारी के सामने कोई न टिक सका। वायरस के भय के लोग घरों में दुबके रहे उन्हें कोई मार्ग नहीं दिखाई दिया। विद्यालय, कार्यालय, दुकान, बाजार –शहर सूने हो गये। सब जगह ताले लटक गये। मस्जिद, चर्च और मन्दिर सब बंद, वहां भी कोई आशा की किरण नहीं दिखाई दे रही थी... ऐसा लगा जैसे ईश्वर भी महामारी के कारण पृथ्वी छोड़ कर चला गया हो और अब वह डॉक्टर, नर्स, पुलिस, सेना आदि का भेष रख कर हमारे बीच आया हो। संकट बड़ा था, उपाय कोई नहीं फिर भी कुछ लोगों ने आगे बढ़ कर समाज की सेवा की और वे जरूरत मंदों की मदद में लगे रहे, डटे रहे ।

ऐसे कोरोना योद्धाओं की प्रशंसा को शब्दों में बयाँ कर पाना कठिन है। मैं उन्हें सिर्फ शत् शत् नमन करता हूँ। हम सब अपने समाज के इन कोरोना योद्धाओं को कोटि–कोटि नमन करते हैं। आप इसी तरह सेवा पथ पर निरंतर तत्पर रह कर सेवा कार्यों को अंजाम देते रहें। ईश्वर आप को इस हेतु और अधिक सामर्थ्यवान बनाये ऐसी प्रार्थना हम करते हैं।

*–संयोजक*
*पर्वतीय महापरिषद लखनऊ*


*Happy New Year – 2020*
*Wishes For Friends & Family*

**OLI INFRASTRUCTURETURE PRIVATE LIMITED**

L – 3/33, Vinay Khand – 3, Gomti Nagar,
Lucknow – 226010
Mobile No.- +91 9839366521, 8765346503

# ओड़े की पीड़ा

*– डॉ. (श्रीमती) दिवा भट्ट*



मूलतः और अंततः मैं एक पत्थर हूँ। पत्थर के आकार, प्रकार, उपयोगिता आदि के अनुसार अनेक नाम होते हैं। जैसे कंकड़, पत्थर, शिला, पाषाण, चट्टान इत्यादि। लेकिन अब मैं पत्थर नहीं, एक ओड़ा हूँ। ओड़ा बनते ही मेरी औकात बढ़ गई और मैं अपनी बिरादरी के दूसरे पत्थरों से अलग हो गया। ओड़ा शब्द कुमाउँनी भाषा का है। हिन्दी में इसका मतलब होता है सीमा चिह्न। अक्सर खेतों के अथवा घास के खेतों या पहाड़ों के, जिन्हें कुमाउँनी में 'माङ्ग' कहा जाता है, के एक से अधिक हिस्से किये जाने पर दो हिस्सों को अलग–अलग दर्शाने के लिए बीच में जो सीमा चिह्न रखा जाता है उसे ही आँड् अथवा ओड़ा कहा जाता है। यह प्रायः पत्थर का होता है। कभी–कभार पत्थर के बदले मिट्टी की ढेरी लगाकर भी ओड़ा बनाया जाता है। ओड़ा नामक पत्थर खेत के दोनों हिस्सों के बीच में जमीन में ऐसे गाड़ा जाता है कि वह सहज ही हिल–डुल न पाये और उसका कुछ नुकीला हिस्सा ऊपर दिखाई देता रहे। ओड़ा रूपी पत्थर रख देने पर वहाँ पर मेड़ अथवा दीवाल नहीं बनाई जाती। कभी–कभी कोई पेड़ बीच में उगा रहता है या प्राकृतिक रूप से कोई शिला वहाँ पर पहले से ही रहती है तो वह स्वाभाविक तौर पर ओड़ा मान ली जाती है। यह एक विभाजक चिह्न है। इसका काम दो हिस्सों को अलग करना होता है। एक तरह से इसे दो अलग–अलग भू–खंडों को जोड़ने वाला भी कहा जा सकता है। यहाँ पर पहुँच कर एक की सीमा पूरी होती है और दूसरे की आरंभ।

हिन्दी की तरह कुमाउँनी में भी पत्थर के अनेक नाम हैं जैसे ढुंग, लोड़, सिल, घन्तर, पाथर और पटाल इत्यादि। किन्तु विशिष्ट पहचान केवल ओड़े को ही मिली है। हिन्दी में भी ओड़ा शब्द है, लेकिन इस अर्थ में नहीं। हिन्दी में ओड़ शब्द का अर्थ है– रोकना, ओट करना आदि। यदि ओड़ा शब्द हिन्दी से यहां पहुंचा माना जाये तो इसका तात्पर्य होगा जिस प्रतीक चिह्न तक आकर दोनों पक्ष रुक जाएं, आगे न बढ़ें, वह ओड़ा। इससे आगे बढ़ना दोनों के लिए वर्जित होता है। कुमाउनी में इस आशय हेतु 'उवड' या 'ऑड़' शब्द प्रयुक्त होता है और ओड़ शब्द भवन की चिनाई करने वाले शिल्पी अर्थात राजमिस्त्री के लिए प्रयुक्त होता है। खेत के उक्त सीमाचिह्न के लिए गढ़वाली में भी ओड़ा, ओड़ो अथवा ओड़ शब्दों का प्रयोग होता है।

कुमाउँनी भाषा में एक विशेषता यह भी है कि इसमें अधिकांश दीर्घ ध्वनियों के ह्रस्व और दीर्घ दो–दो उच्चारण हैं। दोनों रूपों के भिन्न–भिन्न अर्थ उनके संदर्भ के आधारपर ग्रहण किये जाते हैं। ओड़ शब्द के भी ह्रस्व और दीर्घ दो उच्चारण दो भिन्न–भिन्न अर्थों को व्यक्त करते हैं। दीर्घ उच्चारणयुक्त ओड़ का अर्थ भवन की चिनाई करने वाले शिल्पी अर्थात् राजमिस्त्री तथा ह्रस्व उच्चारणयुक्त 'ओ–ड्' अथवा 'आँड्' का तात्पर्य खेत का सीमाचिह्न होता है। उच्चरित ध्वनि क्रम के अनुसार इसकी वर्तनी उ+व्+अ+ड् होगी। इसी कारण बहुत से लोग इसको 'वड़' भी कहते हैं।

ओड़ा शब्द गुजराती भाषा में भी मिलता है, किंतु भिन्न अर्थ में। कुमाउनी और गुजराती दोनों भाषाएं लगभग एक ही काल में संस्कृत के सौरसेनी अपभ्रंश रूप से विकसित हुई। दोनों के व्याकरण और शब्दावली में काफी समानताएं हैं और दोनों में ऐसे भी अनेक शब्द हैं, जिसके उच्चारण समान होते हुए भी अर्थ भिन्न हैं, जैसे कि यह ओड़ा शब्द। गुजाराती में हरे गेहूँ, चने तथा मूंगफली इत्यादि को छिलके सहित आग में भूने जाने के बाद जो स्वादिष्ट व्यंजन बनता है उसे ओड़ो/ओड़ा कहा जाता है। जिसके लिए कुमाउनी में उम, उमा अथवा उमियां शब्द है। कुमाउँनी में अनेक शब्द आग्नेय भाषा परिवार के हैं तथा अन्य देश–विदेशी भाषाओं से भी इससे कई शब्द आए हैं। अतः ओड़ा शब्द भी इसी तरह से आया हुआ प्रतीत होता है।

मैं पत्थर, जब ओड़ा बनकर खेत के बीचों बीच स्थापित किया गया तो गर्व से फूला न समाया। मैं अब सामान्य से

विशिष्ट बन गया था। इस पर मेरे बिरादरों को मुझसे ईर्ष्या होने लगी। वे समझने लगे कि मैं तो खेत का राजा भोज बन गया और वे गंगू तेली ही रह गए। मैं भी अपने को राजा से कम नहीं समझ रहा था। राजा ही था मैं उस खेत का। मैं खेत रूपी दुनिया के दो देशों के बीच की नियंत्रण रेखा बन गया था। भूमि के उन टुकड़ों के लिए मेरे नाम पर कसमें खाई जाती, गालियां दी जाती और कलह होने लगती। झगड़े होने पर मेरा वास्ता दिया जाता। झगड़ने वाले बार–बार मेरे आस–पास जमा हो जाते। मेरे चारों ओर चक्कर लगाते और मुझे साक्षी रखकर अपनी अपनी दलील देते। मैं उन्हें देखता रहता ओर भीतर–भीतर हँसता रहता। आज भी अधिकांश लोग मेरा पूरा सम्मान करते हैं और मेरा स्पर्श किये बिना ही अपनी–अपनी सीमा के अंदर रहकर जोताई, गोड़ाई, कटाई तथा सिंचाई इत्यादि करते रहते हैं। मेरे स्थापित क्षेत्र को अस्पर्श्य मानकर तथा सीमा चिह्न को अनुलंघ्य मानकर वहाँ से लौट जाते हैं। गोड़ाई आदि के समय अपने खेतों की मिट्टी से निकलने वाले पत्थर, कूड़े और खरपतवार को मेरे अधिकार क्षेत्र को समर्पित करना दोनों पक्ष वाले अपना अधिकार और कर्तव्य समझते हैं। इस अपशिष्ट को अपनी पूंजी मानकर मैं भी धीरे–धीरे अपने आस पास जमा होने देकर खेत की मेड़ के रूप में अपनी अमीरी बढ़ाता जाता हूँ। खेत के बीच की यह छोटी सी ढेरी दूर से ही मेरे अस्तित्व अर्थात ओड़े की सूचना देती रहती है। इस सीमा रेखा को प्रकृति का नियम अथवा मनुष्य निर्मित व्यवस्था के रूप में स्वीकार कर ओड़े को अपनी जगह पर अड़े रहना होता है। उसे हिलने–डुलने की मनाही होती है। फिर भी मैं अक्सर अपनी जगह से खिसक जाता हूँ। अपनी मर्जी से नहीं, बल्कि दूसरों की मर्जी से खिसका दिया जाता हूँ। एक पक्ष आकर मुझे दूसरे के हिस्से में आगे बढ़ाकर अपना हिस्सा बड़ा बना लेता है। फिर दूसरा पक्ष आकर मुझे वापस अपनी जगत रखते हुए कुछ ज्यादा ही पीछे खिसका देता है। इसे ओड़ा खिसकाना कहते हैं। मैं कभी इधर धकेला जाता हूँ, कभी उधर। माङगों से घास काटती घस्यारियाँ मुझे छुए बिना ही हाथ आगे बढ़ाकर हाथ जहाँ तक पहुँच सके वहाँ तक की घास काट लेने में संकोच नहीं करतीं। लेकिन दूसरे पक्ष वाले इसे चोरी कहकर लड़ने आ जाते हैं। ओड़े के आगे की कटी हुई घास अथवा एक का खिसकाया हुआ ओड़ा अगर दूसरे पक्ष की नजर में आ गया तो वह शिकायत करता है। पहला पक्ष अपनी गलती मानने से इन्कार करता है या दूसरे पर उल्टा आरोप लगाता है। इस तरह दोनों तरफ से आरोप–प्रत्यारोप होते–होते बहस होने लगती है। बहस में गालियां शामिल हो जाती है। हाथापाई होने लगती है। उसके बाद पत्थरों की बरसात तक होने लगती है। इस प्रक्रिया को आम भाषा में सिफ फुटाँवल भी कहा जाता है। इसमें कभी–कभार खून की धाराएं बहकर मेरा अभिषेक भी कर देती हैं। उसके बाद शिकायत होती है, मुकदमे होते हैं, और कोर्ट कचहरी में वाद प्रतिवाद चलता है। इन मुकदमों में घर के भकारों में भरे हुए अनाज के दाने तक समाप्त हो जाते हैं लेकिन मुकदमा पूरा नहीं होता। कई बार ऐसा भी होता है कि मुकदमा दायर करने वाले परलोकवासी हो जाते हैं। फिर उनके बेटे मुकदमे की विरासत को आगे बढ़ाते हैं। मेरा प्रताप ऐसा है कि जो संतानें कभी एक ही कोख से जन्म लेकर एक ही माँ का दूध पीती थीं और एक ही थाली में भात खाती हुई बड़ी हुई थीं उनकी संतानें तथा संतानों की संतानें मेरे नाम पर एक दूसरे के खून की प्यासी हो जाती हैं। अपने ही खून के प्यासों के ये कृत्य देख कर मैं पत्थर का ओड़ा भी भीतर ही भीतर हिल उठता था। असल में जब से मुझ पत्थर को ओड़े की उपाधि देकर स्थापित किया गया, तब से मेरा अहं भाव भी जागृत हो गया। अहं जागा तो संवेदना भी जागृत हुई और मैं सुख–दुःख से प्रभावित होने लग गया। आश्चर्य की बात यह है कि इतने विवाद और वितंडावाद के बाद भी लोगों को मुझ पर इतना विश्वास है कि मैं इधर को खिसकूं, चाहे उध ार को, घूम फिर कर कभी न कभी अपनी मूल जगह पर पहुंच ही जाता हूँ। मेरा यही दृष्टांत लेकर लोकोक्ति भी प्रचलित हो गई कि 12 वर्षों में ओड़ा भी अपनी जगह पर आ जाता है। 12 वर्ष में तो घूरे के भी दिन फिरते हैं। लेकिन में घूरा नहीं हूं। पूर्ण प्रतिष्ठित सम्मानजनक अस्तित्व है मेरा। मनुष्य से अधिक मेरा महत्व है। मेरे नाम से भाई–भाई लड़े, घर के झगड़ों से लेकर बड़े–बड़े युद्ध हुए। शर्तें लगी, शर्तें टूटी और स्थायी मन मुटाव हुए। मेड़ खिसकने से लेकर एल.ओ.सी. (नियंत्रण रेखा) के उल्लंघन तक की कहानी एक ही है। खेत अथवा माङ्गे की एल.ओ.सी. मैं ही हूँ।

मेरा नाम मेलों से भी जुड़ा है। अल्मोड़ा जिले के द्वाराहाट नामक स्थान पर विषुवत संक्रान्ति को लगने वाला स्याल्दे

बिखौती कौतिक मेरे लिए ही मनाया जाता है। कहते हैं कि दो पक्षों की लड़ाई में एक पक्ष के योद्धा कैड़ा का सिर काट कर ठीक बीच में गाड़ दिया गया और उसके ऊपर पत्थर का ओड़ा रख दिया गया। तब से प्रति वर्ष वहाँ पर जाकर कैड़ा के शीश के प्रतीक उस ओड़े पर डंडे मारने व उसके पश्चात उत्सव मनाने की प्रथा चल पड़ी। इस प्रकार मेरे लिए मेले भी आयोजित होने लगे। आज वह मेला इतना विशाल रूप ले चुका कि पूरे उत्तराखण्ड के सबसे प्रसिद्ध मेलों में शामिल है। इसमें आस–पास के अलग–अलग गाँवों के (किसी पूर्व काल के पारस्परिक शत्रु) दल ढोल–नगाड़े बजाते हुए निशान लेकर आते हैं। आकर ओड़ा अर्थात मुझे भेटते हैं। ओड़ा भेंटने का मतलब होता है लाठी डंडों से ओड़े रूपी पत्थर को पीटना। हजारों नर–नारी दूर–दूर से इसे देखने के लिए आते हैं। ओड़ा भेंटने की औपचारिक क्रिया संपन्न होने के बाद सैकड़ों नर–नारी आपस में एक दूसरे के हाथों से हाथ जोड़ते हुए मेरे चारों ओर घूम–घूमकर झोड़े के गीत गाते हुए सामूहिक नृत्य करते हैं। सजी–धजी दुकानों से छोटी–बड़ी वस्तुएं खरीदते हैं, खाते–पीते हैं तथा मेल–मुलाकातें करते हैं।

ऐसी है मेरी शाख और मेरी धाक। एक जमाने में अपनी महिमा से मैं जितना फूला–फूला ऐंठा–ऐंठा रहता था, उतना ही आज दुःखी और उदास हूँ। खेत के बीच झुका–झुका, बैठा–बैठा इंतजार करता रहता हूँ। पहले से ही मैं अपने आप को जितना ही हल्का–फुल्का, मस्त–मौजी और सबसे ऊपर मानता था, आज उतना ही उदास, भारी और अकेला महसूस करता हूँ। सोचता हूँ यह कैसा समय आ गया कि मेरे अस्तित्व का कोई मूल्य नहीं रहा। मुझे छोड़ना, लांघना या अपनी जगह से हटाना तो दूर कोई मुझे देखने या छूने तक नहीं आता। व्यर्थ हो गया है मेरा जीवन। मैं हूँ, या नहीं। किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे तो छोड़ो, दो भागों में बांटे हुए इन खेतों तक को देखने कोई नहीं आता। कहाँ गए वे हाथ जो इनकी मिट्टी को संवारते थे। नन्हें–नन्हें बीज डालकर पौधे उगाते थे। पौधों को पेड़ बनाकर पालते थे, फूल फल तथा नए बीजों के ढेर लगाते हुए अपने खलिहान भरते थे। मेरा–तेरा करते–करते भी इस सूखी मिट्टी को अन्नदात्री होने की सार्थकता का सुख देते थे। आज मैं ही नहीं, मेरे साथ खेत भी उदास हैं। वे अन्न की फसलों के स्थान पर झाड़–झंखाड़ में उलझते हुए अपने होने का अर्थ भी भूलते जा रहे हैं। इन बढ़ती हुई झाड़ियों–झंखाड़ों के बीच मैं तो छिपकर ढककर अदृश्य ही हुआ जा रहा हूँ और उदास होकर अंदर ही अंदर घुटता जा रहा हूँ। कोई तो आओ। बोलो, हँसो, गाओ। अरे, झगड़े ही करो, लेकिन आओ तो। इस बंजर सन्नाटे पर एक चोट तो करो। मुझे हिलाओ, डुलाओ, मेरी जड़ता को मिटा दो। तुम जब हल से जुते हुए बैलों को लेकर मुझ तक पहुंचते थे तो बीच खेत में मुझे देखते ही पीछे मुड़ जाते थे। वहाँ पहुँचकर मैं तुम्हें पीछे लौटने को मजबूर कर देता था। वह तुम्हें अच्छा नहीं लगता था। अब नहीं करूँगा मजबूर, चलो, मैं हट जाता हूँ बीच खेत से। तुम आओ और पूरा खेत जोत लो। यह पूरी भूमि तुम्हारी है। इसे जोतो, बीज डालो, आबाद करो। एक बार आओ तो सही। जड़ तो मैं था, क्योंकि मेरे पाषाण होने के कारण ही तटस्थ एवं निर्लिप्त रहते हुए सीमा की रक्षा करने का दायित्व मुझे मिला था। तुम तो पत्थर नहीं। तुम तो मनुष्य हो! आओ! आओ न!!।

*– 'अवलोकन' विवेकानन्द कार्नर*
*अल्मोड़ा*

# गढ़वाली लोक साहित्य में समृद्ध आणा पखाणा

*– डॉ. प्रेम लाल भट्ट*

भारत एक महाद्वीप की विशेषताओं वाला विशाल देश है। इस देश के उत्तर में विस्तृत हिमाल के मध्य हिमालयी क्षेत्र के अन्तर्गत उत्तराखण्ड प्रदेश है। इस प्रदेश के दो प्रमुख मंडल कुमाऊँ और गढ़वाल हैं। कुमाउनी और गढ़वाली प्रदेश की दो प्रमुख भाषाएं हैं। हमारी संस्कृति के पोषक व संवर्धन में इन भाषाओं की सशक्त भूमिका है। पहाड़ी लोक साहित्य की विविध विधाओं के योगदान से हमारी लोक संस्कृति समृद्ध हुई है। हमारे जीवन की अभिव्यक्ति की ये भाषाएं सशक्त साध ान हैं। संस्कृति हमारी जीवित अतीत है। यहाँ के लोक साहित्य में पहाड़ी जनमानस का हृदय बोलता है। इससे जन–जन जुड़ा हुआ है। जन साधारण की भावनाओं की अभिव्यंजक एवं चटपटी तथा हृदय स्पर्शी, लोकोक्ति यहाँ के लोक साहित्य की अनमोल निधि है। जमीन से जुड़े जन सामान्य के कंठ में बैठकर मौखिक परंपरा से जीवन की अनुभूतियों की खट्टी–मीठी व तीखी शब्दावलि में बिखेरती हुई छटा से अपना प्रभावी असर छोड़ जाती है।

गढ़वाली तथा कुमाऊँनी दोनों भाषाओं में लोकोक्तियों का बहुत बड़ा भंडार है। यहाँ पर मात्र गढ़वाली लोकोक्तियां ही ली जा रही हैं। अन्यथा अधिक विस्तारण पर अंकुश लगाना कठिन होगा।

गढ़वाली भाषा की लोकोक्तियों का संक्षिप्त विवेचना करने से पूर्व लोकोक्ति शब्द जिसे गढ़वाली भाषा में आणा–पखाणा शब्दों से पुकारा जाता है, उसको स्पष्ट करना उचित होगा। लोकोक्ति शब्द का उद्भव 'उक्ति' शब्द से हुआ है। उक्ति का अभिप्राय कथन, वचन, अनूठा वाक्य, चमत्कार पूर्ण कथन, विलक्षण वचन आदि शब्दों से होता है जिसे बोल चाल की भाषा में कहावत कहा जाता है। गढ़वाली भाषा में इस मसल को आणा–पखाणा कहते हैं। ये आणा–पखाणा अनुभव जन्य सूचक वाक्य है। यदि हम आणा–पखाणा को उनके रूप व विषय दो वर्गों में बांट कर देखें तो निषेध, विधि, उपमान व सम्बाद रूपात्मक वर्ग में आते हैं और दूसरे वर्ग में धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक घटना मूलक कथन विषयात्मक वर्ग में आते हैं।

आणा–पखाणों में जो जीवन दर्शन है उसमें आशा–निराशा, सुख–दुख, जीवन–मरण, लाभ–हानि की अभिव्यंजना, चमत्कार पूर्ण कथन के माध्यम से सारगर्भित संक्षिप्त शब्दों में अभिव्यक्त किया जाता है। भाषा के मुक्तक हमारे पुरातन काल से संचित शब्द कोश हैं जो अपना शब्द और अर्थ व्यक्त करने में समर्थ होते हैं। गढ़वाली आणा–पखाणा का गहन अध्ययन करें तो विदित हेाता है कि अलंकार, तुक, अतुकांत, तुक विहीन, रस युक्त शब्द व अर्थ चमत्कार जन्य उक्तियों की भरमार है। कतिपय अलंकारों की छटा देखिये –

**"पौणा पूछिक पकोड़ि करष छेय।"**

इस आणा–पखाणा का भाव है– अतिथि (पौणा) का सत्कार व सेवा उसे पूछ कर करना शिष्टाचार के अनुकूल नहीं है। इस उक्ति में अनुप्रास अलंकार की छटा दिखती है। दूसरा अलंकार युक्त पद है जिसमें अनुप्रास अलंकर की छटा विखर रही है –

**"खै नि जाणो, खसम कांगो।**
**नाचि नि जाणों, आंगण बांगू।"**

इस अलंकार युक्त शब्दों का भाव है अपने दोषों को छुपा कर दूसरों के दोष निकालना। हिन्दी में भी समान उक्ति है। 'नाच न जाने आंगन टेढ़ा'।

अगला आणा–पखाणा के अंतर्गत ब, प और म अक्षरों की आवृत्ति ध्वन्यात्मक है जिसमें कि शब्दालंकार है।

**"बच्यां नी पाइ माँड, मर्या मा लाई खाण्ड।"**

इस आणा–पखाणा का भाव यह है कि जिस व्यक्ति को जीवित रहते हुए उदर पोषण हेतु चावल का माड़ नसीब नहीं हुआ तो उसकी मृत्यु के उपरान्त उसकी संतान घर परिवार व समाज के लोगों को तेरहवीं या वार्षिक श्राद्ध पर सामूहिक भोज पर मिष्ठान खिलाती है तो उस भोज का कोई महत्व नहीं है।

अब हम चर्चा करते हैं कतिपय आणा–पखाणों की जिनमें उनका रूपात्मक पक्ष उजागर होता है। यह तुकात्मक, अतुकात्मक, तुक विहीन या असंगत तुक, दो खण्ड युक्त तुक। **आफू जौं वख, करम लिजो कख,** भाव यह है कि व्यक्ति

अपना कार्य तो करता है किन्तु भाग्य उसका साथ नहीं देता है। अपने भाग्य को कोसते हुए व्यक्ति यह उक्ति कहता है।

**तीन खण्ड युक्त –**

**"चल बै थैला, जाखि जौला, तखि खौला"**

यहाँ पर थैला और जौला और खौला तीन शब्दों की आकर्षक तुकबंदी है। अभिप्राय यह है कि जिस व्यक्ति का रहने का स्थाई ठिकाना नहीं होता है वह यत्र–तत्र भटकता रहता है। खाना बदूस जैसी उसकी स्थिति होती है।

**चार खण्ड युक्त तुक–**

**"जसि दिखेंद ठाकुरू की खोलि,**
**तसि बोलदें चादरि दियूं फोलि।**
**जसि दिखेंदि बाड़ी की गोलि,**
**तसि बोलेंद कपांलि दियूं फोड़ि।।"**

इस आणा–पखाणा का संबंध हमारी ग्रामीण कार्यों के वर्गीकरण व्यवस्था से है, जिसका एक शिल्पकार व्यक्ति कार्य निष्पादन कर अपनी वृति (डडवार) प्राप्ति की इच्छा से सम्पन्न कृषक के भव्य मकान पर इस आशा और लालसा से एक चादर फैलाकर उसमें खूब अन्न व वस्त्रादि प्राप्ति हेतु निवेदन करता है। जब उसे अपेक्षित धन–धान्य नहीं मिलता तो वह अपने निराशा व हताशा पूर्ण शब्दों में उक्त आणा–पखाणा के माध्यम से भाव व्यक्त करता है।

आणा–पखाणों के कुछ ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जो कि असंगत तुक तथा लघु और अखण्डित तुक युक्त वाले होते हैं –

**"अत्ति जौ खन्ति"** – अर्थात आवश्यकता से अधिक प्राप्त वस्तु को व्यक्ति महत्व नहीं देता है।

**"बड़ौ कू बड़ौ भाग"** – वह उस भाग्यवान व्यक्ति के लिए कहा गया है जो कि समृद्ध व धनवान होता है।

**"उकाल काटिक सरपट"** – भाव यह है कि जब कोई व्यक्ति चढ़ाई (उकाल) चढ़कर सीधे सपाट मार्ग पर दौड़ने लगता है। यह उक्ति ऐसे स्वार्थी व्यक्ति पर लागू होती है जो अपना कार्य निकालने के बाद मददगार व्यक्ति का कोई अहसान नहीं मानता है।

**"डालि न बूटी, नौ क्लै बग्वान।"** – जिस व्यक्ति के पास कोई बाग बगीचा नहीं होता वह अपने को बाग बगीचे का स्वामी कहकर बाग्वान कहता है। अर्थात मिथ्या अभिमान करना।

**"अपणि ढेलि मा कुकुर शेर।"** – अर्थात अपने घर पर कमजोर व्यक्ति भी बहादुरी दिखाता है। यह कायर व्यक्ति की प्रकृति होती है।

अलंकार तुक, बेतुक, छोटे–बड़े रूप में हमारा आणा–पखाणों की सारगर्भित युक्तियों में लोक न्याय है, इनमें अकाट्य तर्क और आलोचना का कोई स्थान नहीं है। कभी–कभी तो कुछ आणा–पखाणा वेद वाक्य माने जाते हैं। साधारण व्यक्ति भी अर्थ गाम्भीर्य व सूक्ष्म संकेतों में आणा–पखाणों के माध्यम से बड़ी बात कह जाता है।

हमारी पर्वतीय संस्कृति की संजीवनी के रक्षक ग्रामीण अंचलों का जन समुदाय है। विगत चार–पांच दशकों से पलायन के कारण ग्रामीण जन संख्या सिकुड़ती जा रही है। यहाँ के लोक गीत–नृत्य, लोक गाथाएं, तीज–त्योहारों व विभिन्न सामाजिक उत्सवों की परम्परा फीकी पड़ती जा रही है। लोक साहित्य में यही सब तो हमारी अनुपम सम्पत्ति है जो कि हमारी संस्कृति में समाहित है। संस्कृति, संरक्षरण व सम्वर्द्धन के सभी आयामों पर लोक साहित्य के अनुरागी विद्वानों, लेखनी के धनी चिन्तकों, आचार्यों तथा शोध कर्ताओं तथा लोक कला प्रेमियों का प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में योगदान अपेक्षित ळै। सरकार के संस्कृति एवं शिक्षा संस्थानों द्वारा इन सभी बुद्धिजीवियों की प्रतिभाओं का सृजनात्मक कार्य में लाभ उठाना उत्तम प्रयास होगा।

*(साभार–पुरवासी)*

*–से.नि. प्राचार्य*
*124–सिताबपुर देवी रोड*
*कोटद्वार (गढ़वाल)*

संकलन–

# 'करछी (डाढू) में अंगार'

कुछ अजीब सा शीर्षक है न?

नहीं, यह कोई मुहावरा नहीं, एक दृश्य है जो कभी–कभी स्मृतियों की संदूकची से बाहर झाँकता है पीतल की करछी में कोयले का अंगार ले जाती रघु की ईजा जल्दी–जल्दी कदम बढ़ाती अपने घर की ओर जाती ढलान पर उतर रही है, बहुत सम्हल कर कि करछी से अंगार गिरे भी नहीं और बुझे भी नहीं। चूल्हा कैसे जलेगा वरना.....!

तीस–चालीस साल पहले जो पहाड़ में रह चुके हैं या बचपन पहाड़ों में बिताया है, उनके लिए यह दृश्य अपरिचित नहीं होगा। चूल्हे में आग बचाकर रखना या ज़रुरत पड़ने पर दूसरे घरों से आग जलाने के लिए जलता कोयला ले जाना, उस वक़्त की ज़रुरत भी थी और सीमित संसाधनों के बीच एक ऐसी जीवन–शैली का उदाहरण भी, जहाँ मामूली से मामूली वस्तु भी 'यूज़ एंड थ्रो' की 'कैटेगरी' में नहीं थी।

मुझे याद है सुबह का भोजन बन जाने के बाद अधजली लकड़ियों को बुझा कर अलग रख दिया जाता और हलकी सी राख की परत में लिपटे अंगारे चिमटे से उठाकर सगड़ में डाल दिए जाते। सगड़ में राख भरी रहती और उसी में दहकते हुए अंगारे दबा दिए जाते थे। दोपहर या साँझ की चाय का समय हो तो इन्हीं अंगारों से राख की परत हटाकर, फूँक मारते हुए छिलुक जला दिया जाता और फिर चूल्हे की लकड़ियाँ सुलगा दी जातीं।

जाड़ों की रात इसी सगड़ को तापते हुए किस्से–कहानियों के दौर भी चला करते.....।

सगड़ की वह राख भी ' अयसी वयसी' नहीं, बड़े काम की चीज़ थी। एकदम मखमली मुलायम दो–चार दाने आलू उसमें दबा कर छोड़ दीजिए तो बढ़िया स्नैक्स तैयार..... भात और दाल पकाने के बर्तन यानी तौली और भड्डू इसी राख में पुतकर चूल्हे पर चढ़ने की योग्यता अर्जित करते। इससे उनकी कलई भी बची रहती और बाद में माँजना भी सहज रहता। घर–भर के बर्तन इसी राख से मँजते–सँवरते..... बिना 'विम–बार' के भी ऐसी चमकार मारते वे पीलत काँसे के भारी–भरकम बर्तन कि टी.वी. के सारे विज्ञापन उनके आगे पानी भरें। बाड़े में उगी पत्तेदार हरी सब्जियों पर बुरक दीजिए वह राख, कीटनाशक की ज़रुरत ही नहीं पड़ती थी कभी। और हाँ, कोई छोटा–मोटा 'लोकल' भूत लग जाए आपको तो किसी बड़बाज्यू से इसका 'भभूत' लगवा लीजिए।

इस काम में हमारे बड़बाज्यू सिद्धहस्त थे..... हमारी कई छोटी–बड़ी बीमारियों का एक ही रामबाण इलाज था..... साँझ के समय बड़बाज्यू चुटकी भर राख़ उठाते, हथेली में रख उँगलियाँ घुमाते हुए कुछ बुदबुदाते, फिर चुटकी से हमारे माथे पर उसे लगाते हुए ज़ोर से हाक छोड़ते..... हम सिहर उठते और सचमुच खुद को हल्का महसूस करते और फिर ठीक भी हो जाते..... डॉक्टर और दवाई का नाम ही सुना होता बस.....।

सगड़ की इसी राख के बीच से सुबह–सुबह एक कोयला उठा हम दाँतों को रगड़ लेते। ना ब्रश की ज़रुरत, न पेस्ट की। दाँतों की चमक तो बरकरार रहती ही, मजबूती ऐसी की अखरोट दाँतों से तोड़ लेते थे। अखरोट के छिलके भी दाँतों के बड़े काम आते। उन्हें जलाकर पाउडर बना लीजिए और मंजन की तरह इस्तेमाल कीजिए। आम के आम गुठलियों के दाम.....।

वैसे यह मुहावरा मुझे कुछ असंगत–सा लगता है। कभी देखा है किसी ने गुठलियों के दाम मिलते हुए? पर अब चल पड़ा है तो क्या कीजे? यूँ भी फलों का राजा ठहरा.....। कौन पंगा ले!! पर अपने पहाड़ में देखा है कितने ही फल और पेड़ इस उपाधि के असली हक़दार हैं.....।

पहाड़ी 'काकड़' को ही लीजिए. कुदरत की बहु–उपयोगी नेमत.....। ठांगर में चढ़ी इसकी खूबसूरत झाल पर जब नन्हे–नन्हे फुल्यूड़ आते हैं न, तो इतने दिलकश लगते हैं कि लोकगीतों में नायिका की सुन्दरता का बखान करते हुए उसकी उपमा दी जाती है। युवा होने पर इस काकड़ को लम्बाई में चीरकर उसमें पिसा हुआ नमक लगाकर खाइए और स्वाद में गोते लगाइए। पिसा हुआ नमक भी पहाड़ की अपनी विशिष्ट 'डेलीकेसी' है। नमक की डलियों को सिलबट्टे पर हरी मिर्च, हरी धनिया, लहसुन, अलसी या भंगीरे के बीजों के साथ पीस कर रख लिया जाता है. चूल्हे में सिकी गेंहू की गुदगुदी या

मडुए की करारी रोटी में जरा सा घी चुपड़, इस 'पीसी लूँण' के साथ रोल बनाकर खाइए, भट या छाँछ के जौल में मिलाइए, आलूबुखारे में छिड़क लीजिए या पहाड़ी नींबू के साथ सान कर आनंद लीजिए.....।

हाँ तो इस काकड़ का एक उपयोग 'रैत' यानि रायते के रूप में भी किया जाता। ककड़ी का करारापन राई के तीखेपन से गठजोड़ कर गजब का फ्लेवर अख्तियार कर लेता है। राई भी ऐसी तीखी कि सीधे 'बरमांड' यानि मस्तिष्क में पहुँचकर उसकी शिराओं को झंकृत कर दे.....। पितृ–पक्ष में दाल–भात–टपकी, बड़े–पूरी–खीर और खटाई के साथ–साथ यह रायता न बने तो पहाड़ के पितरों की आत्मा तृप्त नहीं होती.....।

काकड़ के पूरी तरह पक कर खूब गदबदे, गहरे पीले हो जाने पर उसे कोर, पीसी हुई उड़द दाल में मिलाकर, बड़ियाँ बना, सुखाकर पूरे साल के लिए रख ली जातीं। ककड़ी निचोड़कर जो पानी निकलता, उसमें रात भर धान भिगोकर सुबह चिवड़े कूटे जाते..... छिलके गाय–बछिया के काम आते और बीज सुखाकर रख लिए जाते कि अगले साल फिर से काकड़ की झाल उगाई जा सके। हुए न आम के आम.....।

यह तो मात्र एक अदना–सा उदाहरण है कि चीजों को बरता कैसे जाता था तब..... कई अंशों में अब भी...। कोई भी वस्तु फेंक देने का रिवाज़ नहीं था. चीड़ की झड़ी हुई बारीक–बारीक पत्तियाँ तक बहु उपयोगी..... जंगल से समेट कर लाई जातीं, जानवरों के छा'न में बिछती, उन्हें इससे गर्माहट मिलती और हमें मिलती खेतों के लिए जैविक खाद... हरी पत्तेदार या मूली कद्दू जैसी मौसमी सब्जियाँ सुखाकर स्टोर कर ली जाती... हमने देखा था धान सुखाते या कूटकर समेटते हुए आँगन के पत्थरों के बीच की दरारों में फँस गए दानों को आमा एक–एक कर निकालती..... मेरी माँ हमेशा समझाती कि अन्न का दाना दरवाजे के कोने में पड़ा हो तब भी आस में रहता है कि मुझे उठा लिया जाएगा, वहाँ से बाहर फेंक दें तो फिर श्राप फोकता है.....।

अन्न की कीमत वही जान सकता है न जो उसे उगाने में खून–पसीना एक करता हो. अनाप–सनाप कमाई से अन्न खरीदने वाला कैसे सोच सकता है ऐसी मार्मिक बात.....।

रिड्यूस, री–यूज़, री–साइकिल जैसी अवधारणाएँ तो बाद में बनीं, हमने तो अनुभव से जाना था कि संसाधनों का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए... अब तो हम भी कूड़े का उत्पादन करने में माहिर हो चुके हैं पर हमारी समृद्ध बोली में कूड़े–कचरे के लिए कोई शब्द नहीं था ... दिल्ली आने से पहले हमने न कूड़े के ढेर देखे थे न नालियों में बहता दुर्गंधयुक्त पानी... पर यह कुछ दशक पहले की बात है, अब तो पहाड़ भी सभ्य होने लगे हैं...

संकलन–

# 'भाव अभिव्यक्ति की गजब क्षमता रखते हैं कुमाऊनी के एकाक्षरी शब्द'

उदाहरण के लिए किसी शराब के लती का जिक्र करने हुए हम कहते हैं– वीलै शराब छोड़ि हाली बल. तो सामने का व्यक्ति 'द्' कहकर उपेक्षा का भाव व्यक्त कर देता. यानि ऐसा संभव नहीं है। एक ह्रस्व अक्षर ही पूरे वाक्यांश का भाव रखता है। शब्द वही है लेकिन यही शब्द यदि दऽऽऽ स्वर के साथ दीर्घ रूप उच्चरित होता है तो इसका भाव एकदम बदल जाता है. दीर्घ रूप में यही एकाक्षर दुख अथवा सहानुभूति व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त हो जाता है. यथा– कोई व्यक्ति किसी के साथ किसी दुर्घटना अथवा अनहोनी का जिक्र करता है तो सुनने वाला दऽऽऽ कहकर केवल एक अक्षर में अपनी सारी संवेदना व्यक्त कर देता है।

इसी तरह एक शब्द है पै। पै का प्रयोग सामान्यतः स्वीकारोक्ति का सूचक है. बिल्कुल वैसा ही जैसा हिन्दी में किसी की बात को सुनकर हम अच्छा अथवा हां के लिए किया करते हैं। जैसे– आजकल ठण्ड भौत हैगो हो। उत्तर मिलता है– पै यानि आपकी बात पर वह भी इत्तेफाक रखता अथवा रखती है। लेकिन यही शब्द जब दीर्घ रूप में पैऽऽऽ के रूप में प्रयोग किया जाता है तो उसका भाव बदल जाता है। हालांकि रहती तब भी उसमें स्वीकारोक्ति ही है, लेकिन इसके साथ वक्ता के भावों के प्रति सम्बद्धता झलकती है, वक्ता के भाव खुशी के हो सकते हैं, गम के हो सकते अथवा हास–परिहास के हो सकते हैं. एक प्रकार से पैऽऽऽ कहना श्रोता द्वारा वक्ता के भावों को आत्मसात् करने का संकेत भी है।

'द' और 'पै' शब्द अधिकांशतः महिलाओं के द्वारा ही प्रयुक्त होते हैं। लेकिन आज के शहरी समाज में जो कुमाऊँनी बोल भी रहें हैं, तो उन्होंने लोकभाषा को अपने परिवेश के अनुसार परिमार्जित कर लिया है, जिनके संवादों में इन शब्दों का प्रयोग लुप्त होता जा रहा है।

'ऐं' शब्द भी ऐसा ही एकाक्षरी शब्द है, जो श्रोता द्वारा पूरी बात न सुनने पर पुनः कहने का संकेत देता है। श्रोता द्वारा मैंने सुना नहीं कहने के बजाय 'ऐं' कह देना वक्ता के लिए पर्याप्त संकेत है कि उसने आपकी बात अच्छी तरह सुनी नहीं। इसी तरह किसी अन्य की बात को उद्धरित करना हो तो वाक्य के अन्त में 'बल' शब्द जोड़ देना इंगित कर देता है कि यह कथन मेरा नहीं बल्कि किसी के माध्यम से सुना गया है. इससे फायदा यह भी होता है कि आप किसी तरह के विवाद से बच निकलते हैं क्योंकि यह कथन आपका नहीं बल्कि किसी से सुना है।

अब बात करते हैं कुछ उन कुमाऊँनी शब्दों की जिनकी वर्तनी तो एक ही होती है लेकिन अन्तिम वर्ण के ह्रस्व होने से उसका अर्थ ही एकदम बदल जाता है. जैसे– आम्–आम (दादी और आम फल), काव्– काव (कौआ और काल), नाव्– नाव (संकरी घाटी और कश्ती), डाव्– डाव (पेड़ और ओले), फाव्– फाव (हल का नीचे का फल और कूदना), खाव्– खाव (आंगन का खलिहान और तालाब), दाव्– दाव (दावा पेश करना और दाल) आदि आदि ऐसे कई शब्द है जो अन्तिम वर्ण के ह्रस्व अथवा दीर्घ होने पर अर्थ बदल देते हैं। प्रायः देखा जाता है कि अधिकांश इन शब्दों का अन्तिम वर्ण 'व' होता है।

इसी प्रकार कुमाऊँनी शब्द सम्पदा का स्वाद, गन्ध, ध्वनि के लिए जितना समृद्ध भण्डार है, ऐसा शायद ही किसी दूसरी भाषाओं में उपलब्ध हो। हर वस्तु के स्वाद के लिए अलग शब्द, हर गन्ध के लिए अलग शब्द और हर ध्वनि के लिए अलग शब्द प्रयोग करके सुनने वाले को यह पूछने अथवा समझने में देर नहीं लगती कि वक्ता किस ध्वनि, किस गन्ध अथवा किस वस्तु के स्वाद का जिक्र कर रहा है।

हन्तरैन कहूँ तो जाहिर है सूती कपड़ा जलने की गन्ध है और किहड़ैन कहने पर ऊनी कपड़ा अथवा बाल जलने की, खौंसेन कहें तो मिर्च जलने की गन्ध, पड़पड़ाट से कागज के मोड़ने से निकलने वाली ध्वनि, टौटेन है तो खाने में हल्दी की मात्रा अधिक होने का अहसास, सितड़ैन कहें तो सीलन की गन्ध, मछवैन मछली की गन्ध।

इसी तरह मनोभावों के लिए अलग शब्द गढ़े गये है यथा– अलबलाट, कचकचाट, सटबटाट, फड़फड़ाट आदि आदि। गन्ध, स्वाद, ध्वनि अथवा मनोदशा को व्यक्त करने के लिए कुमाऊँनी का विपुल साहित्य भण्डार है और कुछ शब्द तो ऐसे हैं जिसका हिन्दी में कोई सटीक शब्द मिल भी नहीं पाता. जैसे 'खवाई' एक ऐसा ही शब्द है, जो कुमाऊँनी भाषी ही भाव समझ सकता है।

इस तरह के व्यापक शब्द भण्डार को समेटे कुमाऊँनी भाषा के प्रति अगर आज की युवा पीढ़ी में उदासीनता है, तो इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है? यदि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को इस समृद्ध भाषा को हस्तांतरित नहीं कर पाये तो शनैः–शनैः इसे विलुप्त होने से कोई नहीं बच सकता।

# 6 सितम्बर, 1932 पौड़ी क्रान्ति के नायक– जयानन्द 'भारतीय' 'गो–बैक मेलकम हैली' 'भारत माता की जय'

*–डॉ. अरुण कुकसाल*



हाथ में तिरंगा उठा, नारे भी गूंज उठे,
भाग चला, लाट निज साथियों की रेल में,
जनता–पुलिस मध्य, शेर यहाँ घेर लिया,
वीर जयानन्द, चला पौड़ी वाली जेल में। – शान्तिप्रकाश 'प्रेम'

'मैं वीर जयानन्द 'भारतीय' का शुक्रिया अदा करता हूं कि उसने मुझे जान से नहीं मारा'। सर विलियम मेलकम हैली ने ये बात पौड़ी से बच निकलने के बाद कही थी। किस्सा, देश की स्वाधीनता से पूर्व सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौर का है। इस आंदोलन के विरोध स्वरूप अंग्रेजों के पिठ्ठू संगठन 'अमन सभा' ने 6 सितम्बर, 1932 को पौड़ी में तत्कालीन संयुक्त प्रांत के वायसराय मेलकम हैली का सम्मान समारोह आयोजित किया था। इस कार्यक्रम के प्रति स्थानीय लोगों में गुस्सा तो था परन्तु वे सामने विरोध करने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे। ऐसे समय में देश की आजादी के सच्चे सिपाही की भूमिका भारतीय जी ने निभाई थी। हुआ ऐसा कि इस अभिनन्दन समारोह में जैसे ही वायसराय बोलने के लिए खड़े हुए कि वीर जयानन्द 'भारतीय' भीड़ को चीरते और हाथ में देश की स्वाधीनता का प्रतीक तिरंगा झंडा लहराते हुए मंच पर हैली के बिल्कुल पास जाकर 'गो–बेक मेलकम हैली, भारत माता की जय' के नारे बुलंद आवाज में लगाने लगे। नतीजन, भगदड़ के बीच वायसराय को वहां से भागना पड़ा था। भारतीय जी और उनके साथियों पर पुलिस के डंडो की बारिश होने लगी, परन्तु उनके नारे बंद नहीं हुए। तब तक उपस्थित लोगों का दबा साहस भी बाहर आ गया था। वे भी नारे लगाते भारतीय जी के साथ पौड़ी जेल में जा पहुंचे थे। बेकाबू भीड़ को प्रशासन के आग्रह पर जेल के मुख्य फाटक पर आकर 'भारतीय' जी ने यह कहकर शांत कराया कि 'आप लोग धीरज रखें हमारा मकसद पूरा हो गया है'। बाद में जयानन्द 'भारतीय' को इस घटना में दोषी मानते हुए एक साल की सजा हुई थी।

स्वाधीनता संग्रामी, डोला–पालकी और आर्यसमाज आन्दोलन के अग्रणी जयानंद 'भारतीय' का जन्म ग्राम– अरकंडाई, पट्टी– साबली (बीरोंखाल), पौड़ी (गढ़वाल) में 17 अक्टूबर, 1881 में हुआ था। पिता छविलाल और माता रैबली देवी का परिवार कृषि और पशुपालन के अलावा जागरी के काम से जुड़ा था। जयानन्द भी किशोरावस्था तक इन्हीं पैतृक कार्यों को किया करते थे। बाद में बेहतर रोजगार के लिए नैनीताल, मसूरी, हरिद्वार और देहरादून में उनका रहना हुआ। बचपन से ही अंधविश्वासों के प्रति संशय रखने वाले जयानंद सन् 1911 में आर्य समाज विचारधारा से जुडकर उसके प्रचारक बन गए। सन् 1914 से 1920 तक वे सेना में रहते हुए फ्रांस और जर्मनी भी हो आये थे। पुनः आर्यसमाज के पूर्णकालिक प्रचारक के रूप में कार्य करते हुए उत्तराखंड के गावों में सामाजिक जागृति के लिए कार्य करने लग गए थे। वैचारिक दासता में जकड़े उस समय के सर्वण समाज से उन्हें अनेकों बार अपमानित होना पड़ा था। परन्तु संयम, धैर्य, दूरदृष्टि और साहस के धनी भारतीय जी ने अपने प्रयासों को कमजोर और शिथिल नहीं होने दिया।

गढ़वाल में सन् 1923 से सामाजिक समानता के लिए तकरीबन 25 वर्षों तक निरंतर लड़ा गया 'डोला–पालकी आंदोलन' का नेतृत्व जयानन्द 'भारतीय' ने किया था। तब के समय में शिल्पकार परिवार की बारात में डोला–पालकी का प्रयोग करना वर्जित था। भारतीय जी ने जब इस कुप्रथा का सार्वजनिक विरोध किया तो सर्वणों ने उन्हें अनेक तरीकों से प्रताड़ित किया। जयानन्द 'भारतीय' ने महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, मदन मोहन मालवीय और भी अनेकों नेताओं तक यह बात पहुंचाई। साथ ही इलाहाबाद उच्च न्यायालय में सर्वणों की इस ज्यादती के खिलाफ मुकदमा दायर किया। निर्णय भारतीय जी के पक्ष में आने के बाद सरकारी कानून के माध्यम से शिल्पकारों के लिए वर्जित डोला–पालकी प्रथा का अंत हुआ था।

देश की स्वाधीनता लड़ाई में जयानन्द भारतीय की सक्रियता हमेशा बनी रही। 28 अगस्त, 1930 को राजकीय विद्यालय, जहरीखाल में तिरंगा झंडा फहराकर उन्होने आजादी के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया था। तीन माह के कारावास से रिहा होकर वे फिर इन गतिविधियों में शामिल होते रहे। 1 फरवरी, 1932 को दुगड्डा में प्रतिबन्ध के बावजूद जनसभा करने के कारण उन्हें 6 माह के लिए पुनः जेल जाना पड़ा। कोटद्वार में 11 अक्टूबर, 1940 को सैनिक टुकड़ी के सम्मुख सत्याग्रह करने के आरोप में उन्हें चार माह की सजा हुई। 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भाग लेने के कारण 22 अप्रैल, 1943 को 'भारतीय' जी को दो वर्ष का कठोर कारावास हुआ था। बरेली जेल में रहते इस सजा को 'भारतीय' जी स्वः अध्ययन में गुजारा था।

देश की आजादी के बाद जयानन्द 'भारतीय' जी पूर्णतया समाजसेवा के कार्यों को समर्पित हो गये। उनके प्रयासों से कई स्थलों में धर्मशाला, अस्पताल और विद्यालयों की स्थापना हुई थी। अत्यधिक सामाजिक सक्रियता के कारण वे अपने स्वास्थ पर समुचित ध्यान नही दे पाये। उन्होंने जीवन के अतिंम समय में अपनी अस्वस्थता को जानते हुए भी गाँव में रहने का फैसला लिया। अपने गाँव अरकंड़ाई में 9 सितम्बर, 1952 को जयानन्द 'भारतीय' जी का 71 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया।

समाज के लिए जयानन्द 'भारतीय' जी का योगदान एक समाज सुधारक, आर्यसमाज के प्रचारक, स्वतन्त्रता संग्रामी और सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़ने वाले जुझारू व्यक्तित्व के रूप में हमेशा याद किया जाता रहेगा। ये बात अलग है कि उत्तराखंड के राजनेताओं और सरकारों ने ऐसी महान विभूतियों और उनके अमूल्य योगदान को नजरअदांज़ ही किया है।

*—ग्राम—चामी, श्रीनगर*
*पौड़ी—गढ़वाल।*


रजिस्ट्रेशन नं.—188388

Mob. : 9335287723
9454308271
9839230823



तिवारी बस सर्विस एण्ड
टूर एण्ड ट्रैवल्स

मन्नी माउन्टा मार्केट, सरस्वतीपुरम्,
निकट एस.जी.पी.जी.आई., रायबरेली रोड, लखनऊ

प्रो.: सुशील तिवारी

REGENCY HEALTH
BHAROSE KA SPECIALIST

years of excellence
now in LUCKNOW

# REGENCY SUPERSPECIALITY HOSPITAL
## LUCKNOW



- NEPHROLOGY
- UROLOGY
- GASTROENTEROLOGY
- G.I SURGERY
- INTERNAL MEDICINE
- CRITICAL CARE (MEDICAL & SURGICAL ICU)
- INTERVENTIONAL RADIOLOGY
- NON - INVASIVE CARDIOLOGY
- PATHOLOGY
- RADIO DIAGNOSIS
- MICROBIOLOGY
- MODULAR O.T.

- DIALYSIS
- URODYNAMIC LAB
- 100W HOLMIUM LASER
- FIBROSCAN


Regency Hospital, Khurram Nagar, Ring Road, Lucknow

0522 - 3503232 | 9335943232

www.regencyhealthcare.in

info.lko@regencyhealthcare.in

# खुशहाली के बीज

## 58 वर्षों से भारतीय किसानों की सेवा में



भारत में अनाज, तिलहन और दलहन के सबसे बड़े बीज उत्पादक के रूप में राष्ट्रीय बीज निगम 1963 से गुणवत्ता वाले बीजों के भरोसेमंद आपूर्तिकर्त्ता के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को कायम रखे हुए है और देशभर में ऐसे बीजों के जरिए संपन्नता फैला रहा है, जो कि :-

- राष्ट्रीय बीज निगम के फार्मों और 12500 से अधिक पंजीकृत बीज उत्पादकों द्वारा आदर्श कृषि जलवायु परिस्थितियों में उपजाए जाते हैं;
- व्यापक श्रेणी में उपलब्ध हैं, जिनमें खद्यान्न, तिलहन, दलहन, चारा और रेशे तथा सब्जियों सहित 60 से अधिक फसलों की लगभग 600 प्रजाति/संकर किस्में शामिल हैं;
- स्वतंत्र बीज प्रमाणीकरण एजेंसियों द्वारा प्रमाणित हैं और
- देशभर में 11 क्षेत्रीय कार्यालयों, 8 फार्म, 48 प्रक्षेत्र तथा 107 विपणन केन्द्र के विभिन्न जिला क्षेत्रों में कार्यालयों/उप इकाइयों के अंतर्गत लगभग 3200 डीलर/वितरक हैं।



एन एससी
NSC

(An ISO 9001 : 2015 &
14001 : 2015 Certified Company)

## राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम-"मिनी रत्न" कम्पनी)

CIN : U74899DL1963GOI003913

**आईएसओ 9001:2015 एवं 14001:2015 प्रमाणित कम्पनी**

बीज भवन, पूसा परिसर, नई दिल्ली-110 012

दूरभाष: 011-25846292, 25846295, 25842383, 25842672

वेबसाइट : www.indiaseeds.com ईमेल:nsc@indiaseeds.com



श्री योगी आदित्यनाथ
मा0 मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

# उ0प्र0 खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड

8–तिलक मार्ग, लखनऊ

# U.P. Khadi & Village Industries Board

8-Tilak Marg, Lucknow



श्री सिद्धार्थ नाथ सिंह
मा0 मंत्री,खादी एवं ग्रामोद्योग, उ0प्र0


GRAM-KHADI BOARD Ph. (0522) 2208313, 2208321, 2207004, 2208287 Fax (0522) 2208243
Website-www.upkvib.gov.in E-mail: ceoupkvib@gmail.com




श्री नवनीत सहगल
अपर मुख्य सचिव/
मुख्य कार्यपालक अधिकारी
खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग









## विभाग द्वारा संचालित स्वरोजगार योजनाओं का विवरण

### प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम

- पी0एम0ई0जी0पी0 योजनान्तर्गत आवेदक www.kviconline.gov.in की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकता है। वेबसाइट पर सम्पूर्ण दिशा–निर्देश एवं विस्तृत जानकारी उपलब्ध है।
- 18 वर्ष से ऊपर आयु के पुरूष/महिला/व्यक्तिगत उद्यमी/पंजीकृत संस्था/सहकारी समितियाँ एवं स्वंय सहायता समूह।
- परियोजना का अधिकतम आकार विनिर्माण क्षेत्र के लिए रू0 25.00 लाख और सेवा क्षेत्र के लिए रू0 10.00 लाख।
- लाभार्थियों का चयन योजनान्तर्गत निर्धारित स्कोर कार्ड के अनुसार पूर्णांक 100 में से 50 या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले आवेदको के आवेदन पत्र स्वीकृति हेतु जिला ग्रामोद्योग अधिकारियों द्वारा ही बैंकों को अग्रसारित किया जाता है।
- सामान्य श्रेणी के लाभार्थियों के लिये परियोजना लागत का 10 प्रतिशत व अन्य श्रेणी के लाभार्थियों के लिये परियोजना लागत का 5 प्रतिशत अंशदान लाभार्थी द्वारा जमा किया जाता है।
- अनु0जाति/अनु0जन–जाति/अ0पि0व0/अल्पसंख्यक, महिला, पूर्व सैनिक, शारीरिक विकलांग श्रेणी के लाभार्थियो हेतु प्रोजेक्ट कास्ट का 35 प्रतिशत एवं सामान्य श्रेणी के लाभार्थियों को 25 प्रतिशत की मार्जिनमनी सब्सिडी अनुमन्य है।

### पं0 दीनदयाल ग्रामोद्योग रोजगार योजना

- इस योजनान्तर्गत प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना की वित्तपोषित/स्थापित इकाईयो को ब्याज उपादान की सुविधा अनुमन्य है जो मार्जिनमनी सब्सिडी व उद्यमी के अंशदान घटाने के बाद अवशेष ऋण पर अधिकतम 13 प्रतिशत तक ऋण के प्रथम वितरण की तिथि से तीन वर्षों तक प्रदान की जाएगी।

### मुख्यमंत्री ग्रामोद्योगरोजगार योजना

- 18 वर्ष से ऊपर आयु के शिक्षित बेरोजगार नवयुवक/युवतियों को गांव में ही रोजगार उपलब्ध कराने के लिये 10 लाख रूपये तक की वित्तीय सहायता राष्ट्रीयकृत/ग्रामीण बैंको के माध्यम से प्रदान की जाती है।
- लाभार्थियों का चयन योजनान्तर्गत निर्धारित स्कोर कार्ड के अनुसार पूर्णांक 100 में से 50 या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले आवेदको के आवेदन पत्र स्वीकृति हेतु जिला ग्रामोद्योग अधिकारियों द्वारा ही बैंकों को अग्रसारित जाता है।
- योजनान्तर्गत सामान्य जाति के लाभार्थियों को 4% (महिला को छोड़कर) तथा अन्य को 0%पर पूंजीगत ऋण उपलब्ध है।

### व्यवहारिक प्रशिक्षण योजना

- योजना के अन्तर्गत समस्त जनपदों के ग्रामीण क्षेत्र के उद्यमियों हेतु व्यवहारिक प्रशिक्षण खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से प्रदान किया जाता है।
- योजना के अन्तर्गत उद्योग प्रारम्भ करने से पूर्व उद्योग प्रबन्धन का पूर्ण ज्ञान, व्यवहारिक समस्याओं का निवारण, वित्तीय प्रबन्धन, जीएसटी एवं विभिन्न प्रकार के पंजीयन एवं विधिक राय से सम्बन्धित 7 दिवसीय प्रशिक्षण विभाग द्वारा प्रदान किया जाता है।

टोल फ्री नम्बर– 1800 258 3113

FORTUNE 500 INDIA

Superbrands WORLDWIDE

IFFCO

पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

Wholly owned by Cooperatives

# 1967 से भारतीय किसान के सच्चे साथी

## मिट्टी की जान, किसान की शान.

**नए उत्पाद**

**पानी में घुलनशील व विशेष उर्वरक**

उत्तम खाद, उचित दाम




FOLLOW US:

IFFCO live
iffcolive.com

IFFCO

पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

**INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED**

IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA

Phones : 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website : www.iffco.coop

august communications

स्थापित वर्ष 2015

# राजा देवी बख्श सिंह अवध राज सिंह महाविद्यालय

डुमरियाडीह, गोण्डा



सम्बद्ध :— डा. राम मनोहर लोहया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
सम्बद्ध :— परीक्षा नियामक प्राधिकारी प्रयागराज
सम्बद्ध :— राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागरा

संचालित पाठ्यक्रम—

बी.ए. (कला संकाय)
बी.एस.सी. (विज्ञान सिंकाय)
बी.पी.ई. (बैचलर इन फीजिकल एजुकेशन)
डी.एल.एड. (बी.टी.सी.)
एवं अन्य व्यवसायिक पाठ्यक्रम

## सम्पर्क सूत्र : 9565359747

मातृ संस्था :- **राजेन्द्र नाथ लहिडी स्मा. इण्टर कालेज**
डुमरियाडीह (स्थापित-वर्ष 1965)

प्रबंधक
रमेश सिंह
मो. : 9415415599

# अवध गंगा फिल्म्स परिवार

की ओर से

## नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं



अभिनेत्री — **तनुश्री**

अभिनेता — **संग्राम सिंह पटेल**

भोजपुरी फिल्म

## मोहे रंग दे प्यार के रंग सजना

यथाशीघ्र रिलीज होगी, कृपया परिवार सहित आनन्द लेने का कष्ट करें।


प्रो./अभिनेता

**डा. संग्राम सिंह पटेल**

पता – बी.एम.डब्लू. शोरूम के पीछे, गनेशपुर, रहमानपुर, चिनहट, लखनऊ। मो. : 8052593511

उत्तराखण्ड राज्य

# आत्मनिर्भर भारत

## स्वतंत्र किसान–सशक्त किसान

# किसान उत्पादक संगठन

## (Farmer Producer Organisation, FPO's)



त्रिवेन्द्र सिंह रावत
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

- एफ.पी.ओ. किसानों का ऐसा समूह होता है जो फसल उत्पादन के साथ–साथ कृषि से जुड़ी तमाम गतिविधियाँ चलाता है।
- विशेष रूप से छोटे एवं सीमानत किसानों के सामूहीकरण के उद्देश्य से किसान उत्पादन संगठनों का गठन किया जा रहा है। यह कृषकों के लिए कृषि से जुड़ी अनेक चुनौतियों का सामना करने, निवेश, प्रौद्योगिकी एवं बाजार तक पहुंच में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है।
- किसान उत्पादक संगठन के माध्यम से कृषि लागत में कमी, प्रति इकाई उत्पादकता तयकर विपणन हेतु बाजारों से जोड़कर अच्छी आय प्रापत की जा सकती है।
- इसके द्वारा न केवल कृषकों की आय बढ़ायी जा सकती है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाकर युवाओं के लिए रोजगार के नए साधन भी सृजित किये जा सकते हैं।
- एफ.पी.ओ. से किसानों को न सिर्फ अपनी फसल बेचने की सुविधा मिलती है बल्कि कृषि उपकरण के साथ–साथ खाद, बीज, उर्वरक जैसे अच्छी गुणवत्ता के उत्पाद उचित मूल्य पर मिलत हैं।
- राज्य में किसान उत्पादक संगठनों का क्रियान्वयन राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABARD), राष्ट्रीय सहकारी विका निगम (NCDC) तथा लघु कृषक कृषि व्यापार संघ (SFAC) द्वारा किया जा रहा है।
- प्रदेश में 3 वर्षों में 300 एफ.पी.ओ. गठित किए जाने का लक्ष्य है, जिसके तहत वर्ष 2020–21 में 41FPO का गठन किया जा रहा है।
- एक किसान उत्पादक संगठन में पर्वतीय क्षेत्र में 100 एवं मैदानी क्षेत्रों में 300 कृषक सम्मिलित होंगे।

## किसान उत्पादक संगठन द्वारा दी जाने वाली सेवायें :–

- बीज, उर्वरक, कृषि रक्षा रसायन, कृषि यंत्र आदि गुणवत्ता युक्त कृषि निवेशों को कम कीमत पर उलब्ध कराएगी।
- उत्पाद के मूल्य संवर्धन जैसे क्लीनिंग, ऐसेयिंग, सोटटिंग, ग्रेडिंग, पैकिंग और पक्षेत्र स्तर पर उचित मूल्यों पर प्रसंस्करण की सुविधा उपलब्ध कराना।
- बीज उत्पादन, मीन पालन, मशरूम उत्पादन जैसी अधिक आयपरक क्रियाकलापों को प्रोत्साहन देना।
- छोटे कृषकों के उत्पादों को सामूहिक रूप से मूल्य संवहन कर मूल्य वर्द्धन करना।
- बाजार की मांग के अनुसार उत्पादन एवं विपणन हेतु उचित निर्णय लेने की क्षमता विकास करना।
- शेयरड़ कास्ट के आधार पर भण्डारण, परिवहन, लोडिंग/अनलोडिंग की सुविधा प्रदान करना।

**समस्त कृषक भाईयों एवं बहनों को गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ**

कोविड–19 के नियमों का पालन करते हुए योजना का अधिकतम लाभ उठाएँ और आत्मनिर्भर बनें।

**गौरी शंकर**
कृषि निदेशक, उत्तराखण्ड

**डा. हरबंस सिंह चुघ**
सचिव, उत्तराखण्ड

कृषि विभाग द्वारा जनहित में प्रसारित

# प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY)
## (Per Drop More Crop)
# उद्यान एवं प्रसंस्करण विभाग, उत्तराखण्ड

सिंचाई हेतु उपलब्ध जल की कमी को दृष्टिगत रखते हुए सिंचाई दक्षता में वृद्धि कर करम से कम प्रयोग से अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त किये जाने हेतु सूक्ष्म सिंचाई योजना के अन्तर्गत चयनित लाभार्थियों के प्रक्षेत्रों पर सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली की स्थापना की जाती है। यह योजना केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित है। इस योजनान्तर्गत विभिन्न घटकों में स्थापना लागत निम्नानुसार है :–

| क्र. सं. | मद का नाम | धनराशि (रु. में) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 0.4 है0 | 1.0 है0 | 2.0 है0 | 3.0 है0 | 4.0 है0 | 5.0 है0 |
| अ. | टपक सिंचाई | – | – | – | – | – | – |
| दूरी | | – | – | – | – | – | – |
| 1 | 12x12 मीटर | 20279 | 27158 | 46000 | 73591 | 111441 | 144264 |
| 2 | 10x10 मीटर | 20976 | 28920 | 50458 | 78775 | 119138 | 153071 |
| 3 | 9x9 मीटर | 21480 | 30486 | 52905 | 82438 | 123475 | 159309 |
| 4 | 8x8 मीटर | 22133 | 31809 | 56041 | 87264 | 130037 | 165828 |
| 5 | 6x6 मीटर | 24310 | 40360 | 67434 | 139730 | 159652 | 200611 |
| 6 | 5x5 मीटर | 26295 | 45339 | 77616 | 142545 | 169569 | 225871 |
| 7 | 4x4 मीटर | 27076 | 47365 | 81486 | 160455 | 197524 | 236371 |
| 8 | 3x3 मीटर | 29214 | 58655 | 92858 | 176213 | 209935 | 263341 |
| 9 | 2.5x2.5 मीटर | 40981 | 77990 | 136683 | 226489 | 333912 | 414657 |
| 10 | 2x2 मीटर | 47085 | 94259 | 179140 | 275295 | 398722 | 494350 |
| 11 | 1.5x1.5 मीटर | 52700 | 108205 | 204438 | 317146 | 454682 | 564102 |
| 12 | 2.5x0.6 मीटर | 41079 | 91160 | 163016 | 225796 | 368375 | 454067 |
| 13 | 1.8x0.5 मीटर | 50193 | 113788 | 210371 | 293601 | 454622 | 567120 |
| 14 | 1.2x0.6 मीटर (or lower Spacing) | 66444 | 158489 | 289296 | 414684 | 614137 | 768964 |
| | | | | | | | |
| अ. | पोर्टेबल स्प्रिंकलर सिंचाई | – | – | – | – | – | – |
| 1 | 63 मिलीमीटर | – | 24427.50 | 35266.25 | – | – | – |
| 2 | 75 मिलीमीटर | – | 27376.25 | 39215.00 | – | – | – |
| 3 | 90 मिलीमीटर | – | – | – | 52931.25 | 66756.00 | 75573.75 |
| ब. | माइक्रो स्प्रिंकलर सिंचाई | – | – | – | – | – | – |
| 1. | 5x5 मीटर | 37016.25 | 73665.00 | 129476.25 | 186631.25 | 252015.00 | 318590.00 |
| 2. | 3x3 मीटर | 43296.25 | 84026.25 | 151422.50 | 216210.00 | 298556.25 | 363743.75 |
| स. | मिनी स्प्रिंकलर सिंचाई | – | – | – | – | – | – |
| 1 | 10x10 मीटर | 51703.75 | 106515.00 | 200016.25 | 303727.50 | 390940.00 | 478903.75 |
| 2 | 8x8 मीटर | 53778.75 | 117535.00 | 212647.50 | 329201.25 | 430016.25 | 531693.75 |
| द. | सेमी परमानेन्ट स्प्रिंकलर | – | – | – | – | – | – |
| य. | लार्ज वाल्यूम स्प्रिंकलर (Raingun) | – | – | – | – | – | – |
| 1 | 63 मिलीमीटर | – | 35851.25 | – | – | – | – |
| 2 | 75 मिलीमीटर | – | 43141.25 | 54732.50 | – | – | – |
| 3 | 90 मिलीमीटर | – | – | – | 71022.50 | 82320.00 | 90402.50 |

नोट :– उपरोक्त समस्त घटकों/मदों में निर्धारित मानकों के अनुसार सामान्य कृषकों हेतु रू. 45% एवं लघु एवं सीमान्त कृषकों हेतु रू. 55% राज सहायता निर्धारित दूरी के आधार पर राज सहायता देय होगी।

अतः किसान भाइयों एवं अन्य समस्त सम्बन्धित से अनुरोध है कि निकटवर्ती उद्यान सचल दल केन्द्र/जिला उद्यान अधिकारी कार्यालय से सम्पर्क कर अपना पंजीकरण कराकर योजना का लाभ उठायें। अधिक जानकारी के लिए नोट अधिकारी, राष्ट्रीय सूक्ष्म सिंचाई मिशन, कार्यालय से भी सम्पर्क किया जा सकता है।


नोडल अधिकारी
राष्ट्रीय सूक्ष्म सिंचाई मिशन, उत्तराखण्ड
उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग
राजकीय ऊान सर्किट हाउस, देहरादून
दूरभाष संख्या : 0135–2759799, फैक्स : 0135–2759796
ई–मेल : missionhortiuk@gmail.com वेबसाइट : www.shm.uk.gov.in

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

# अपील

1. ऐसे समस्त परिवार, जो खुले में अथवा अस्वच्छ शौचालय में शौच जाते हैं, अपना स्वयं का शौचालय निर्माण कराकर लखनऊ नगर को खुले में शौच से मुक्त नगर बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें।
2. कूड़े को खुले में ना फेंके।
3. अपने घर/प्रतिष्ठान का कूड़ा घर–घर से कूड़ा एकत्र करने वाले सफाई मित्र को ही दें अथवा इसका निस्तारण पास के निर्धारित कूड़ा स्थल पर ही करें।
4. कूड़े को न तो स्वयं जलायें और न ही किसी को जलाने दें। कूड़ा जलाते पाये जाने पर रु. 5000.00 (रु. पाँच हजार) के अर्थदण्ड का प्राविधान है।
5. सड़क के किनारे एवं फुटपाथ पर भवन निर्माण सामग्री अथवा मलबा एकत्र ना करें, इससे यातायात बाधित होने के साथ ही पैदल चलने वालों को सुविधा होती है।
6. सड़क के किनारे एवं फुटपाथ पर भवन निर्माण सामग्री अथवा मलबा एकत्र पाये जाने पर सम्बन्धित से रु. 50000.00 (रु. पचास हजार) जुर्माना वसूलने का प्राविधान है।
7. 50 माइक्रोन से कम मोटाई की प्रतिबन्धित पॉलीथीन एवं कैरी बैग का प्रयोग न करें। पॉलीथीन का प्रयोग जन–स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हानिकारक है।
8. सार्वजनिक स्थलों एवं दीवारों पर अवैध बैनर्स/पोस्टर्स/होर्डिंग्स ना लगायें।
9. अपने घर के आस–पास कहीं भी पानी इकट्ठा न होने दें। ठहरे हुए पानी में विभिन्न जानलेवा बीमारियों के कीटाणु जनित होते हैं।
10. अपने भवन कर/सीवर कर/जल कर का भुगतान समय से कर शहर के विकास में अपना योगदान करें।

**यह शहर आपका है। आपका एक छोटा सा प्रयास इस शहर को स्वच्छ एवं स्वस्थ रखने में महत्वपूर्ण साबित होगा।**

स्वच्छ लखनऊ स्वच्छ लखनऊ स्वच्छ लखनऊ

## नगर निगम, लखनऊ



Presenting an all new

# LUCKNOW CANCER INSTITUTE

## लखनऊ कैंसर इंस्टीट्यूट

**(An Oncology Division of Raj Scanning Ltd.)**

1, मानस नगर, जियामऊ, निकट–1090 चौराहा,
लोहिया पथ, लखनऊ–226001

# Most Advanced Radiotherapy

## आधुनिकतम रेडियोथेरेपी

## (RapidArc / I.G.R.T. / I.M.R.T.)

# आयुष्मान भारत

## 250 कार्ड धारको का मुफ्त एवं सफल ईलाज

**Empanelled with:**

★ C.G.H.S. ★ E.C.H.S.
★ E.S.I.C. ★ T.P.A.

**कैंसर के क्षेत्र में**
**एक क्रांतिकारी बदलाव!**




**HALCYON**

## THERAPEUTIC FACILITIES

- Surgical Oncology
- Medical Oncology
- Radiation Oncology
- High Dose Brachy Therapy
- Pain Clinic

## DIAGNOSTIC FACILITIES

- MRI (Spectra 3 Tesla)
- CT: 128 Slice Definition
- Ultrasound (Colour Doppler)
- Digital X-Ray
- Pathology
- Endoscopy (All type)
- Direct Laryngoscopy
- ECG
- Bronchoscopy
- Bio-Chemistry

फोनः 8887973169, 7705909410, 0522–2206985
2205354, 2204806 इ–मेलः lci_lko@rediffmail.com

**24 Hrs FACILITIES:**

•Ambulance Facility 24 Hrs. • Delux/Super-Delux Private / General Wards (Male/Female)
• Day Care • Zero Waiting Hour • Regular Cancer Detection Campus • 24 Hrs. Patient Help Line
• Dharamshala for poor Patients - Free

नव वर्ष एवं मकर संक्रान्ति की
हार्दिक शुभकामनाएं

D L
T C





# दिल्ली लखनऊ ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन

**हमारे यहां उचित भाड़े पर पूरे भारत के लिए सभी प्रकार की गाड़ियां उपलब्ध हैं।**

## जी–125, ट्रांसपोर्ट नगर, लखनऊ

**Mob:-9415014600 dltc.lucknow@gmail.com**

*With Best Compliments from :*

# LUCKNOW BAREILLY
## GOODS CARRIERS

**F-99, TRANSPORT NAGAR, KANPUR ROAD, LUCKNOW**
**Mob. : 9648888854**

LBTC

# LUCKNOW BAREILLY
## TRANSPORT COMPANY

**Head Office : Opp. Bank of Baroda, Naka Gurudwara, Lucknow. Mob. : 9415410240**

नव वर्ष, मकर संक्रान्ति एवं उत्तरायणी कौथिग की हार्दिक शुभकामनाएं



दीपाली श्रीवास्तव
3/679 के सामने, वास्तु खण्ड–3,
निकट फायर स्टेशन, गोमतीनगर, लखनऊ

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA



संजय श्रीवास्तव
एफ–4, उन्नाव आर्केड,
लाटूश रोड, लखनऊ–226018

शुभकामनाओं सहित :



# Dr. Vivek Sah

Eye Surgeon

Facilities : • Phaco Surgery • Foldable Lens Implantation • Glaucoma Services • Contact Lenses • Retina Lasers • Lasik Laser

## चश्में और कॉन्टेक्ट लेंस से पाएं मुक्ति सदा के लिए।

**146, Lekhraj Panna Market, Sector-2, Vikas Nagar, Kursi Road, Lucknow.**
**Tel. : Clinic (0522) 2768768, 9565566990**
**E-mail : drviveksah@yahoo.com**

नव वर्ष एवं मकर संक्रान्ति की हार्दिक शुभकामनाएं



# डा. आर. सी. उप्रेती

मो. : 9415519653

चेयरमैन – उ.प्र. कांग्रेस पर्वतीय प्रकोष्ठ एवं प्रभारी, पूर्वी विधानसभा
निदेशक – शिवा हास्पिटल, विकास नगर, लखनऊ
अध्यक्ष – चिकित्सा प्रकोष्ठ, पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ

CONTACT : 9935717173, 8756426666

# सनराइज मेडी केयर एण्ड ट्रामा सेन्टर

Janki Sewa Sansthan
SUN RISE MEDI CARE & TRAUMA CENTRE

सभाखेड़ा निकट एस.जी.पी.जी.आई. रायबरेली रोड, लखनऊ

- जनरल सर्जरी, पथरी का आपरेशन दूरबीन द्वारा
- गैस्ट्रो सर्जरी - पेट एवं आँत रोग का इलाज
- कैन्सर सर्जरी - कैन्सर का आपरेशन एवं इलाज
- आर्थो सर्जरी - जोड़ एवं हड्डी का आपरेशन एवं इलाज
- स्त्री एवं प्रसव रोग - नार्मल एवं सीजेरियन डिलेवरी
- मुख एवं दाँत रोग - ओरल एवं डेन्टल सर्जरी

**24 घण्टे**
इमरजेन्सी ट्रामा
एवं एम्बुलेंस
सुविधा उपलब्ध








ESTD : 1963

सर्वे भवन्तु सुखिनः

# LAL HOSPITAL
## HEART CENTRE

LAL HOSPITAL & HEART CENTRE LUCKNOW

## गणपति सरस्वती मेमोरियल सोसाइटी

## VIDYA DIAGNOSTIC & RACHNA MATERNITY/INFERTILITY CENTRE

560/95, Krishna Nagar, Kanpur Road, Lucknow.
Mob. : 9415083497, 9839189249, 9793034008 E-mail : lalhospitalsan@gmail.com




**FACILITIES UNDER ONE ROOF**

- PATHOLOGY • ULTRASOUND • ENDOSCOPY
- X-RAY • E.C.G. • MASTER HEALTH CHECKUP • ADMISSION
- IMMUNISATION • PHOTOTHERAPY • DIALYSIS
- ALL TYPES OF SURGERY • ICU/NICU/VENTILATOR
- COMPLETE GYNAECOLOGICAL CHECKUP-INGERTILITY CLINIC



**Dr. M. L. Srivastava**
Founder

**EMERGENCY • AMBULANCE • GENERATOR • LIFT • G.S. MEDICAL SERVICES 24 HOURS**

एक घर का मालिक होना समृद्धता का प्रतीक है.....
जो वित्तीय समृद्धि और भावनात्मक सुरक्षा दोनों को दर्शाता है।



**500, 600** एवं **800 sq.fit** तक के लखनऊ नगर निगम क्षेत्र में बने मकान खरीदने हेतु सम्पर्क करें:–



आवास खरीदने हेतु 70 से 90 प्रतिशत तक बैक द्वारा हाउसिंग लोन की सुविधा आसान किस्तों पर उपलब्ध है।

सुन्दर सिंह बिष्ट
कल्याणपुर, लखनऊ।
मोबाइल नं. 7607935274
9450558893

With Best compliments from :

**SANJAY AGARWAL**
**Director**




**ARCHITECTURE LIGHTING CONCEPT**
**Ph. : 0522-4954952, 9415409011**
**Shop No. UGF-1, Trinity Square, Badshahnagar, Lucknow.**

# श्री हरि गंगा इन्टरप्राइजेज

**की ओर से नव वर्ष व उत्तरायणी कौथिग–2021 की**

**हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं**




श्री हरि गंगा इन्टरप्राइजेज

*Authorized Distributor :*

- **Pedigree (Dog Food)**
- **Gala (House hold)**

कौशलपुरी कालोनी, खरगापुर,
गोमतीनगर, लखनऊ
मो. : 8173911150, 7084611334
ईमेल : shreegangaenterprises@gmail.com

---

**MOTOROLA**
Authorised Distributor



**PRAKASH PANDEY**

# VERTIKA Enterprises

## Deals in : Walky Talky & Wireless System

247, Lekhraj Khazana, Faizabad Road, Indira Nagar, Lucknow-16
Ph. : 0522-2310203, 9415028006, Fax : 2341968
E-mail : vertika_enterprises@rediffmail.com, Website : www.vertikaenterprises.com

# कोरोना– एक समाजशास्त्रीय दृष्टि से

*–डॉ. अर्चना पाण्डे*



कोरोना एक ऐसी विश्वव्यापी महामारी के रूप में हमारे समक्ष उभर कर आया जिससे संपूर्ण विश्व त्राहिमाम कर बैठा। आर्थिक,राजनैतिक सामाजिक आदि विभिन्न आयामों को तो इसने बुरी तरह प्रभावित किया ही पर इसका मानवता पर किया गया कुठाराघात अकल्पनीय था। आर्थिक क्षेत्र में बेरोजगारी, अल्प बेरोजगारी, मंदी जैसी समस्याओं में वृद्धि हुई, शिक्षा व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई और सामाजिक अपराधों में वृद्धि होने लगी। सामाजिक अपराध, लूट, मारपीट, हिंसा आदि के बढ़ने से सामाजिक अस्थिरता बढ़ने लगी। आर्थिक अस्थिरता बढ़ने से गृहस्थ जीवन क्लेशित होने लगे। सामाजिक असुरक्षा एवं तनाव की भावना विवाद, हिंसा एवं कलह जैसे नकारात्मक रूपों में व्यवहार एवं क्रियाकलापों में परिलक्षित होने लगी। लॉकडॉउन से जन्मे तनाव, एकाकीपन और अलगाव ने मानसिक अवसाद एवं आत्महत्या को बढ़ावा दिया।

संबंधों में दुराव इस तरह दिखे कि 'अतिथि देवो भव' से अतिथि प्रवेश वर्जित के बोर्ड घरों के प्रवेश द्वार पर लग गए। सामान्य सी सर्दी बुखार से पीड़ित व्यक्ति भी कोरोना के संशय वश अछूत सम हो गया। कोरोना पीड़ित व्यक्ति यदि संबल, साहस एवं भाग्य से सुरक्षित होकर बच भी गया तो भी उसे समाज की उपेक्षा की पीड़ा सहनी पड़ी। मानवीय संवेदनाएं इस सीमा तक नष्ट हो गयी कि संबंधियों की मृत्यु पर संबंध भी मृत हो गये। महामारी की यह कुरूपता मानवता को शर्मसार करती दिखी।

कहते हैं कि हर वस्तु एवं स्थिति के दो पक्ष होते हैं। विचारणीय यह है कि क्या इस महामारी का भी कुछ सकारात्मक पहलू था। इस महामारी ने शारीरिक स्वच्छता, स्थानिक स्वच्छता पर प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान आकर्षित कर स्वच्छता को अत्यधिक बढ़ावा दिया। वायु, आकाश, नदी आदि प्रदूषण मुक्त होने से वातावरण निर्मल होने लगा और प्राकृतिक जीव जंतु भी आनंदित नजर आए। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ने से आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों,औषधियों,स्वास्थ्यपरक भोजन, शारीरिक कसरत एवं योग का महत्व बढ़ता दिखा। नमस्ते विश्वव्यापी अभिवादन के रूप में स्वीकृत होने लगा।

शिक्षा व्यवस्था ने ऑनलाइन शिक्षा पद्धति को अपनाकर शैक्षिक सत्र को शून्य होने से न केवल बचाया बल्कि छात्रों को परीक्षा में उत्तीर्ण कराकर नई कक्षा में प्रवेश भी संभव किया। आर्थिक क्षेत्र में भी प्रौद्योगिकी का उपयोग कर ऑनलाइन बिजनेस द्वारा नव– रोजगार के साधनों का सर्जन हुआ। लोग सोशल मीडिया पर विभिन्न रूपों में अपनी रचनात्मकता और कला का प्रदर्शन करते दिखे। विभिन्न गोष्ठियों, सामाजिक– सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि का आयोजन इंटरनेट के माध्यम से ही कर लिया गया। बच्चे– बुजुर्ग सभी इंटरनेट के प्रयोग में निपुण होने लगे। ऑडियो– वीडियो कॉल्स, सोशल नेटवर्किंग आदि ने सोशल डिस्टेंसिंग को सोशल(सामाजिक) नहीं वरन केवल फिजिकल ( शारीरिक) ही रहने दिया। संपूर्ण देश ने एक साथ दीप प्रज्वलन कर तथा थाली, घंटी एवं शंखनाद द्वारा 'अनेकता में एकता' का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया।

अतः हम यह कह सकते हैं कि इस महामारी ने समाज को कुछ सकारात्मकता भी दी। आवश्यकता है कि हम केवल इसके सकारात्मक पक्ष को ध्यान में रखकर एक आशापूर्ण सोच के साथ इस महामारी से परे एक नवीन और शांतिपूर्ण समाज का स्वागत करने हेतु तत्पर रहें।

*– इन्दिरानगर, लखनऊ*

# कोरोना तुमूकैं नी पछ्याणुन

*– नीलम पाण्डेय 'नील'*



आम कछि, कि
जो काम जैक होय,
वूई कर सकूं।
तलवार कतु लै ताकतवर हुनेली,
पर जो काम स्यूङ नस्यूङ
कर सकनी,
विक काम त तलवार नी कर सकन ना।
लै क्ये नी हुन बल,
विषाणु जै क्ये पछ्याणू
को मुसलमान, को हिंदू,
मारण पार ए जालौ तो सबूकैं मारौल,
तब न कब्रेक जाग मिलेगी,
ना फूकेणी जाग
स्याउ, कुकूर लै नी पूछाल उताक।
यौ टैम महाकालौक छू रे,
संभल जाऔ, दगड़ियों,
सब फरांग–फरांग है जाओ.....
द्वार लगाओ, सांकल लगाओ
ज्ये–ज्ये लै कर सकछा करो,
पर भीतेर बटि, भ्यार ना आओ रे।
कोरोना तुमूकैं नी पछ्याणुन,
पर तुम कोरोना कैं पछ्याण गछा।
पार बाखेई,
ताल बाखेई,
मुण बाखेई,
माथ बाखेई,
गौं बटि बजार तलक
सबुकैं बताओ रे.....
बुड़, बाड़ी, नान तीन,
दाद, भुल, दीदी, भौजी,
सुण लियो सब।
गीत गाओ, स्वांग लगाओ
ज्ये–ज्ये लै कर सकछा करो,
पर भीतेर बटि, भ्यार ना आओ रे।
जो जां छा वांई मुनौव लुकाओ,
पनीरौक साग नी मिलनौ तो,
खिचेड़ी खै बेर दिन बिताओ
बीड़ी, सिगरेट नी मिलनी,
तो भांगे चटनी दगड़ रौट खाओ,
ज्ये–ज्ये लै कर सकछा करो,
पर भीतेर बटि, भ्यार ना आओ रे।
एक बार तुमूकै कोरोनाल देख लियौ
तो तुमर घरक पत्त मिल जाल विकै
बिन डाक टिकटै घर
ऐ जाल कोरोना
पै क्ये जै करला,
मुख पर मास्क लगै बेर
हाथ, खूट, धूने रया,
यस जन सोचिया कि
पलि गोर, भैंस लगूछी
यसै जस महाव और
अब हम लगारोई,
यौ मनखियक मास्क भाय,
जस लै होय,
महाव लगाण तो, भौलै भौय,
बजार में कस कस जे मास्क छन,
लौस लै ल्याछां, ल्याओ, और
ज्ये–ज्ये लै कर सकछा करो,
पर भीतेर बटि, भ्यार ना आओ रे।

# प्रेम दूत

*–पं0 नारायण पाठक*



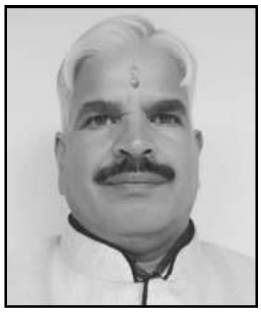
अलि! जागो अब भोर भई, तम घोर निशा अब बीत गई।
अरुणिम उषा का वन्दन कर, विहग–गान–धुन गूँज रही।।
आलिंगन कुवलय का तजकर, सुगन्ध सरोवर को अब दे दे।
प्रेम दूत बनकर तू मेरा, प्रस्थान हिमालय की दिशा कर ले।।
विरह व्यथा से पीड़ित होगी, पीड़ा मन में संचित होगी।
प्रियतम से मिलने को आतुर, हाय! वह कितना व्याकुल होगी।।
नयनों में निद्रा नहीं होगी, रात–रात भर जागी होंगी।
निरखि–निरखि नभ के तारों को, नयन सदा जलजायी होंगी।।
पंडुक से उसका यह कहना, जाकर प्रिय को हाल सुनाना।
उसकी वाणी के सरगम को, निज वाणी में तू भर लाना।।
पवन वेग से उड़कर जाना, लम्बा पथ है ठहर न जाना।
सुमन देश की सुन्दरता में, चंचल जी को मत ललचाना।।
वातायन से अन्दर जाना, गीत मधुर मनोहर गाना।
मेरे मन की सबकुछ कहकर, उसके कानों में रस भरना।।
जब देखो उसका हरसाना, तुम भी रूप सदृश्य हो जाना।
मीठी–मीठी वाणी में तुम, मेरा यह संदेश सुनाना।।
समय प्रतीक्षा का माना है, अन्त व्यथा का अब होना है।
प्रेम–सुधा संचित रखना तुम, मिलन हमारा अब होना है।।
अलि! जागो–––

*–A–217, प्रगति विहार*
*कल्याणपुर, लखनऊ*

बातों–बातों में:–

# भूली बिसरी

*–भगवत प्रसाद पाण्डे*



इक्कीसवीं सदी के इक्कीसवें साल का इंतजार था। समय के पहिए के साथ–साथ ऋतुओं के चक्र को आगे बढ़ना ही है। हर वर्ष पहाड़ से मैदान और फिर मैदान से पहाड़ तक मीलों लम्बे सफर यूँ ही चलते रहे।

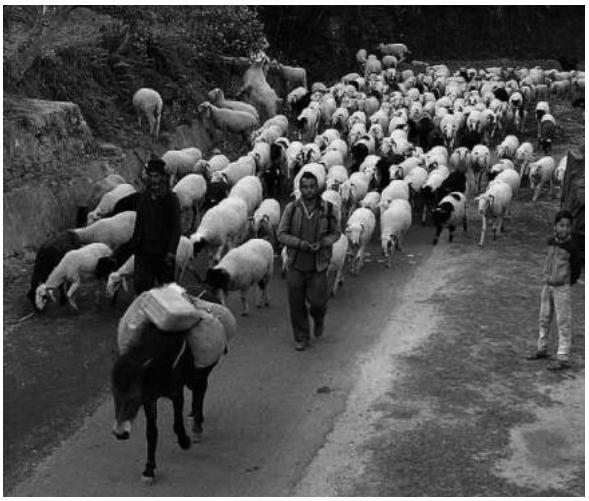
प्रवासी यात्राएं चाहे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के शौका–भोटियों की हों या काली–कुमाऊं के मलोटियों (माल प्रवास वाले) की। अब ऐसी प्रवासी यात्राएं नहीं के बराबर ही रह गई ।

माल प्रवास के लिए अपने पछेटियों (साथियों) के साथ छोटी–छोटी आँखों वाले विशन सिंह जिन्हें सब 'काकू' (चाचा) के नाम से जानते थे, एक बार फिर उसी यात्रा के रास्ते में थे। हालांकि पिचहत्तर साल के काकू अभी भी अपने साथ चल रहे उन पछेटिया नौजवानों से कम न थे। पैर के मौजों से लेकर सिर की टोपी तक पूरी की पूरी ऊनी वेश–भूषा। सैकड़ों भेड़, कुछ मेमने, पाँच जुमली प्रजाति के घोड़े और तीन बड़े झबरीले काले बालों वाले भोटिया कुकुर (कुत्ते) गलचौड़ा की देवदार वनी से आगे बढ़ने को तैयार थे।

झुलमुल अँधेरे में काकू का यह कारवाँ निकल पड़ा। छमनिया चौड़ के बाद लूघाट (लोहाघाट) की बाजार भी पार हो गई। जब रिखेश्वेर (ऋषेश्वर) मंदिर के सामने काफिले की भेड़ें पहुँची तब तक उजाला भी हो चुका था। उधर मंदिर में बज रही घंटियों की टनटनाहट तो इधर मोटर रोड में भेड़ों की भें–भें..., में–में...। घोड़ों के गले में लटकी घांड़ें–खाखरों की टनटन के साथ काकू के मुख से निकल रही आ....आ.. ले..ले... छू...छू.....सी....सी..... और सीटी की आवाज सुबह के सन्नाटे को तोड़ते हुए चौड़ीभाट गाँव के घरों तक जा रही थी। चलते–चलते यह पूरा झुंड मानेश्वर के पास लमाई के दयार (देवदार) वाले तप्पड़ में पहुँच गया। अब आने वाले दो–तीन दिन उन सभी को इसी सराय पर रहना था।

काकू ने अपने कंधे से भारी पिट्ठू नीचे रखने के बाद घोड़ों में लदा हुआ सामान भी नीचे उतारा। बोझ हल्का हो या भारी, पीठ का हो अथवा सिर का, उतारे जाने के बाद ही आराम मिलता है। इसलिए घोड़े भी जमीन में लोटपोट हो कर अपनी थकान मिटाने लगे । पछेटियों ने पहले तम्बू की तिरपाल कसनी शुरू की और फिर दिन के भोजन–पानी का प्रवन्ध करने लगे।

इसके बाद काकू लमाई के दयार की धार (ऊँची पहाड़ी) में जाकर अपनी देखरेख में भेड़ें चराने लगे। उन्हें हुक्का–चिलम गुड़गुड़ाने का शौक जवानी के दिनों से रहा। फुर्सत मिलते ही जेब से तमाख (तंबाकू) की थैली निकाली। हुक्के में भर कर सुलगाई और कश खींचने लगे। इससे उनको यह महसूस होता कि कुछ हद तक थकान मिट गई। रास्ते की शेष थकावट उस धार से इधर–उधर का मनोरम दृश्य देखकर समाप्त होने लगी।



एक तरफ चंद राजाओं की राजधानी रहा हुआ चंपावत नगर, तो दूसरी ओर अंग्रेजों का प्रिय स्थान लोहाघाट। यहाँ से दोनों ही स्थान बहुत साफ–साफ नजर आ रहे थे। सामने खूनाबोरा और खूनामलक नाम के दो गाँव, जिसे अब सभी लोग खूना के नाम से ही जानते और पहचानते। तम्बाकू की आखिरी कश का धुआं उड़ाते–उड़ाते काकू पुरानी यादों के आसमान में उड़ने लगे।

अहा रे! उन्हें खूना वाला अपना पुराना दोस्त लतीफ अहमद याद आ गया। बरसों पहले उस दिन भोला–भाला सा वह लड़का लतीफ जब इसी जगह अपनी भैंसों को चरा रहा था, तभी बातों–बातों में उनका याराना शुरू हुआ। कहते हैं कि मित्रता में उम्र नहीं देखी जाती। फिर तो उनकी ऐसी दोस्ती जमी कि वे हर वर्ष मिलते ही रहे।

बाद में लतीफ ड्राइवर बन गया और टनकपुर से धारचूला चलने लगा। बार–बार बातें–मुलाकातें होती रहती। पिछले साल एक दिन जब खबर आई कि घाट वाली बस दुर्घटना में वह नहीं रहा तो काकू भी अपने आंसू रोक न पाए थे।

बड़ा मजाकिया ठहरा लतीफ। कहता था–"काकू तुम ये कैसी हिन्दी बोलते हो– मेरा घोरा (घोड़ा) आ रही है और तेरी गारी (गाड़ी) जा रहा है।" फिर दोनों खिलखिला कर हँसने लगते।

लतीफ अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए शौकाओं के रीति– रिवाज पूछता तो काकू उनकी इस्लामी परम्पराओं के बारे में जानकारी लेते। लतीफ ने ही बताया कि यह खूनामलक ग्राम मनिहारों का गाँव हुआ। मनिहार मुस्लिम बिरादरी के वे लोग हुए जो चूड़ी बनाने और पहनाने का पेशा करते थे। इसलिए उन्हें चूड़ीदार भी कहा गया।

एक बार काकू ने उससे पूछा था कि– "लतीफ भाई ! एक बात बता, तुम लोग यहाँ काली–कुमाऊं में कब और कैसे आये?"

"काकू! हम मनिहारों के दो–तीन परिवारों को चंपावत के चंद राजा अपने शासनकाल में पाँच–छः सौ साल पहले यहाँ लाए ठहरे बल। राजमहल में रानियों को चूड़ी पहनाने के वास्ते। कहते हैं चंद राजाओं की रानियाँ चूड़ियाँ पहनने की बड़ी शौकीन होती थीं। कुछ तो दिन में एक–दो बार चूड़ियाँ बदलवाती थीं। मनिहार लोग रंग–बिरंगी चूड़ी बनाने और उन्हें पहनाने में माहिर थे। ऐसे मनिहार जो लाख की चूड़ियां बनाते उन्हें लखेड़े और जो काँच की चूड़ियाँ बनाते उन्हें कंचेड़े कहा गया।

उसने यह भी बताया था कि हमारे पूर्वज दिल्ली के निकट पालम से शेरकोट (बिजनौर) आये, फिर वहाँ से चम्पावत। धीरे–धीरे जब उनके परिवार बढ़ते गए तो चंद राजाओं ने खूना और मानेश्वर के बीच सारी ज़मीन उन्हें दे दी। इस तरह उनका यह गाँव बसता चला गया।

काकू ने यह भी सुना था कि जब पन्द्रहवी सदी में चंद शासकों ने अपनी राजधानी चम्पावत से अल्मोड़ा स्थानांतरित की तो मनिहारों के परिवार खूना के ही हो कर रह गए। उस जमाने में पहाड़ों में जनसंख्या कम थी। चूड़ी बनाने और गाँव–गाँव जाकर चूड़ी पहनाने का काम इतना अधिक न था कि वहाँ के सभी मनिहार लोगों का इस काम से पेट पल सके। इसलिए मनिहारों ने कृषि और पशुपालन कार्य में ज्यादा तबज्जो देनी शुरू कर दी। हुनरमंद मनिहारों ने बढ़ई गिरी, लकड़ी कटान–चिरान का काम सीख लिया तो कुछ लोग मजदूरी करने लगे। समय के साथ–साथ इन मनिहारों ने भी पढ़–लिख कर अपने रोजगार के अलग–अलग साधन चुन लिए।

काकू को यह पता था कि यहाँ के मनिहार गर्मियों में खूना और और जाड़ों में टनकपुर के मनिहार गोठ में बहुत पहले से ही प्रवास करते थे। ब्रिटिश काल में टनकपुर में भी एक सिंचाई नहर थी जो अब टूट गयी। इस नहर के पानी से इन लोगों ने जिस स्थान पर कृषि कार्य किया वह जगह मनिहार गोठ कहलाई। बाद में खूनामलक के अधिकांश परिवार मनिहार गोठ में ही रहने लगे।

लतीफ की मनिहारी बोली काकू को बड़ी प्यारी लगती थी। पिछले पाँच–छः सौ सालों में मनिहारों ने काली–कुमाऊं की कुमय्या बोली को अपने लम्बे और धीरे–धीरे वाले लहजे में बोलना सीखा, तो यह परंपरा आगे बढ़ती ही गई और अब उसने मनिहारी बोली का रूप ले लिया।

बातों–बातों में लतीफ ये भी कहता काकू जैसे तुमसे मेरी गहरी दोस्ती है। उसी तरह खूनाबोरा के बोरा लोगों से हम मनिहारों का आत्मीय लगाव है। यहाँ सब एक–दूसरे के दुःख–सुख का ध्यान रखते आये।

अब रोजगार की तलाश में खूना के ज्यादातर मनिहार लोग इस गाँव से पलायन कर चुके हैं। उनके काले पाथरों की छत और पटालदार आँगनों वाले घरों की लंबी–लंबी बाखलियां (पट्टियां) की चहल–पहल अब सूनेपन में बदल गयी थी। जिन खेत–खलिहानों में फसलें दिखती थी, वे भी सब बंजर दिख रहे थे। लतीफ के उस गाँव को देखते–देखते काकू भूली बिसरी यादों में खोये थे। वह तब उठ खड़े हुए, जब उनके साथी ने धात(आवाज) लगाई कि " शिकाड़–भात तैयार हो गया. ...आओ..... खाना खा लो.....।"

*–पाटन, लोहाघाट*
*उत्तराखण्ड*

# ओ रे गिर्दा ! ओ हो गिर्दा !!

*–ललित सिंह पोखरिया*



हमने देखा, सबने देखा
दाँये ने दाँया देखा
बाँये ने बाँया देखा
आस्तिक ने आस्तिक देखा
नास्तिक ने नास्तिक देखा
औघड़ ने औघड़ देखा
फक्कड़ ने फक्कड़ देखा
छोटे रहे या रहे बड़े
सबने तुममें गिर्दा देखा।
ओ रे गिर्दा !
सबने तुममें गिर्दा देखा।
एक जगह पर रह खड़े
पर्वत न पूरा दिख पाता
ऊँचाई दिख जाय भले ही
पूर्णायाम न कभी
दिख पाता।
देवभूमि के हे गिरि शिखर !
मैंने तुममें "गिरि दा" देखा
ओ रे गिर्दा ! ओ हो गिर्दा !
मैंने तुममें "गिरि दा" देखा
ओ रे गिर्दा ! ओ हो गिर्दा !
मैंने तुममें "गिरि दा" देखा

*–शिवानी विहार*
*कल्याणपुर, लखनऊ*

*– देवेंद्र पांडेय*

पिताजी गणित हैं
कठिन, समझ में नहीं आते
लेकिन सत्य भी वही हैं।

और माँ ?
माँ, प्रेम है, साहित्य है
माँ, एक कहानी सुनाती है
जो कि काल्पनिक है
जिससे हम सीखते हैं सत्य
और समझने लगते हैं गणित।

# म्यार हिरदी का हिरदा

*–शम्भू दत्त सती*

हिरदा के गीत और साहित्य को समझने में थोड़ी कठिनाई अवश्य होती है क्यों कि बहुत सारे शब्दों को मैं देख रहा हूं कि वे अब बिल्कुल लुप्तप्राय हो चुके हैं। अब इसी गीत के शीर्षक को देखिए कौतिकौ थौ, कौतिक तो प्रचलन में है लेकिन 'थौ' अब लगभग प्रचलन से बाहर है। उनके गीत और साहित्य में ऐसे अनेक शब्द मिलेंगे, जिनके बारे में आजकल पूछा जाता है कि इसका मतलब बताइए। बहरहाल जितना समझ सका हूं, उसे शब्दः अनुवाद करने का एक निरर्थक–सा प्रयास जारी है–



कौतिकौ थौ

वर्षों बै यौ देखने रौं मैं,
घौ उच्येड़ी स्यकनै रौं मैं।
तुम गया पर मैं कथां जौं,
हौय त ऑखर कौतिकौ थौ मैं।।

द्वि य गौंका द्वि उ गौंका,
नगांर घिममिण बाज थौ मैं।
पछिल आगिल स्यत रता द्वि,
फर–फराय हो निशाण हौ मैं।।

लाल पिगवा सुकिल हरिया,
लुकुड़ बदनम जिंवर गौ मैं।
फुलि नथुलि गुलबन्द बिन्दी।,
हवेलि जंजीरा मूड़े मौ में।।

टॉकी थुल–बुलि टेड़ी टोपुली,
स्यौंनि गाड़ी बुलबुल्यौं में।
रंगतडाटा हौंस हैंसी,
सुख–दुखा सब एक भौ में।।

दिदी भलि छै चेलि मैं टवकली,
मेरस्घ्यौं ममज्यू रामिछौं हो मैं।
बुबू स्यौमन्या समदी पैलाक,
आज भै रौ जला भो हैं।।

झवड़ धौंस्यल दारी चॉचरी,
गीदौं झमका जग जगौं कैं।
बिणाइ बिनबाज मुरूली अलगज,
तुतुरी रणसिंह हुडुकि दौ में।।
चण मुफली ग्वव प्याड़ा कुंजा,
लडडु गटटा जलेबी ध्यौव में।
तमकै पिंडी मटैकी गागरि,
हवक दिखावो ठेकि दि द्यौ धैं।।

फेराफारी भेटी–भाटी भर खल्यत,
गोछिल या झकौ में।
धारमा दिन कॉछैं नन–तिन,
बाजिगो नांगर ल्यावौ सबुकैं।।

दुकानदारूल बचिया–खुचिया,
पज्यय चीजा भर कुथौ में,
जस उरी बस खराय कौतिक,
गय क्वौ यॉ हैं क्वे उ गौं हैं।।

गय नंगर गय कौतक्घ्यारॉ रयल,
लिगय झवड़ धौंस्यल सबौं कैं।
पुराण घौ फिरी गय उज्येड़ी,
हैंसी खितकर ऑसों रौ मैं।।

जुग बिता आजी लै बितिला,
हनै रैंला म्यर घौ हिकौ में।
तुम गया पर मैं कथां जौं,
हौयत ऑखर कौतिकौ थौ में।।

हिंदी अनुवाद
मेल स्थल

वर्षों से यही देखता आया हूं,
घावों को उचेड़कर सेकता आया हूं।
तुम तो गये पर मैं कहा जाउं,
हूं तो आखिर मेला स्थल ही।।

दो इस गांव के, दो उस गांव के,
घिड़मिड़ नगाड़े मेला स्थल में बज गये।
आगे–पीछे सफेद और लाल दो,
निशांण हवा में फरफराने लगे।।

लाल–पीले सफेद हरे,
बदन में कपड़े, गले में जेवर।
लोंग, नथ, गुलबंद, बिंदी,
हवेली, जंजीर, मूंग की माला गले में।।

बड़ी–बड़ी पगड़ी टेड़ी टोपी,
बालों की मांग बुलबुली।
रंग–बिरंगे, उत्साह हँसी,
सुख–दुख एक भाव में।।

दीदी अच्छी है, भुलि मेरी उमर तुझे लग जाय,
मामा जी नमस्ते, मैं रामी हूं।।
बुबू नमस्कार, समधी पैलागी,
आज बैठे रहो, कल चले जाना।।

झोड़े, धौंस्यल, दरी, चांचरी,
जगह–जगह पर गीतों की भरमार।
वीणा, बीनबाजा, मुरली, अलगज,
रणसिंह की तुररर हुड़के की दम दम।।

चने, मूंगफली, गोले, पेड़े, कुंजे,
लडडू गटटे जलेबी जीभरकर।
तंबाकू की पिंडी मिटटी का घड़ा,
हुक्का दिखाना जरा, ठेकी तो दे दो।।

घूमघाम कर भेटभाट करके जेब भर ली,
या अंचल या झोले में भर लिया।
दिन डूबने को है, बच्चे कहां हैं,
नगाणा बज गया है, सब को ले आओ।।

दुकानदारों ने बचा हुआ,
लगा–लगाकर थैलों में भर लिया है।
जैसे ही उमड़ा, वैसे ही बिखर गया मेला,
कोई इधर को गया, कोई उस गांव को गया।।

नगाणे गये, मेला देखने वालों की बाढ़ भी गयी,
झोड़े धौंस्यला सब को ले गये।
पुराने घाव फिर उभर आये हैं,
हंसी की खिलखिलाहट आंसुओं में बदल गयी।।

युग बीते हैं और बीतेंगे,
मेरे हदय में घाव होते रहेंगे।
तुम तो गये घर, मैं कहां जाउं,
हुआ तो आखिर मेला स्थल ही में।।

*(अनुवाद–शम्भूदत्त सती)*
*चित्र गूगल से साभार*

# वीरमाता जियारानी (मौला देवी)

*– महेन्द्र सिंह मनराल*

कत्यूरी शासन के उत्तरार्ध में जब महाराजा प्रीतमदेव (पृथ्वीपाल) कत्यूरी महाराजा थे तो उत्तराखण्ड में कत्यूरी शासक कमजोर पड़ते जा रहे थे। कत्यूरी शासन के 12 रजवारों में से अधिकांश राजा स्वतन्त्र रूप से शासन करने लगे थे। उनमें से गढ़वाल–चाँदपुर राजा परमार और चम्पावत के चंद राजा शक्तिशाली हो चुके थे, जो कत्यूरियों के वरद राजा थे। महाराजा प्रीतम देव के समकालीन चंद राजा थ्योर अभय चंद (1360–1378) एवं राजा ज्ञान चंद (1878–1420) रहे थे। राजा अभय चंद सुई क्षेत्र के कत्यूरी शासक ब्रह्मदेव के नाती (पुत्री का लड़का) थे। वह राजा ब्रह्मदेव की पुत्री रमादेवी के पुत्र थे। दिल्ली सल्तनत के उत्तर में स्थित विशाल कत्यूरी साम्राज्य, जिसकी सीमायें पूर्व में करनाली नदी (प0 नेपाल) से लेकर प0 में हिमाचल प्रदेश एवं सहारनपुर तक, उत्तर में कैलाश मानसरोवर (तिब्बत) से लेकर दक्षिण में नगीना, धामपुर एवं बरेली के क्षेत्रों तक फैला हुआ था।

आज से लगभग 650 वर्ष पूर्व उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल (केदार) मण्डल में खतस्यूँ नामक पट्टी में जवाहर सिंह खाती (झवट्टराज) नाम के एक किलेदार (गढ़पति) रहते थे। उनके यहाँ एक दिव्य कन्या ने जन्म लिया था जिसका नाम 'मौला देवी' रखा गया था। मौला देवी के विवाह योग्य होन पर उनके पिताजी ने 'स्वयंवर' द्वारा मौला देवी के विवाह हेतु सुयोग्य वर की खोज की। सभी उत्तराखण्ड के देशी राजाओं, राजकुमारों एवं प्रतिष्ठित गणमान्य लोगों को स्वयंवर में आमन्त्रित किया गया था। महाराजा होने के कारण महाराजा प्रीतमदेव जी को भी निमन्त्रण भेजा गया। वह भी स्वयंवर में शामिल हुए थे। सभी राजा, महाराजा अपने–अपने आसन पर बैठे हुए थे। विवाह मण्डप में मौला देवी फूलों की माला लिए प्रकट हुई। उन्होंने वह माला सीधे महाराजा प्रीतमदेव के गले में डाल दी थी। महाराजा प्रीतम देव उस समय बुढ़ापा की ओर कदम बढ़ा रहे थे। उनकी महारानी का नाम धर्मा देवी था। न चाहते हुए भी उन्हें स्वयंवर द्वारा दूसरा विवाह करना पड़ा था।

मौला देवी महारानी धर्मा देवी की सौतन और महाराजा प्रीतम देव की दूसरी रानी बनी किन्तु सौतिया डाह के चलते महारानी धर्मा देवी से उनकी नहीं बनती थी। महाराज ने प्रौढ़ होने के कारण शासन प्रबंध की देख–रेख का कार्य भार मौला देवी को सौंप दिया था। मौला देवी के सत्ता हाथ में आते ही उन्होंने बखूबी से सत्ता संभाली। कुछ समय बाद उनका एक पुत्र पैदा हुआ था, जो कि उत्तराखण्ड के इतिहास में धामदेव (दुलाशाही) के नाम से प्रसिद्ध हैं। दिल्ली सल्तनत का तत्कालीन सुल्तान फिरोजशाह तुगलक ने अपने गुप्तचरों द्वारा पता किया कि तिब्बत की नदियों में सोना पाया जाता है। उसने कुमाऊँ क्षेत्र की अनदेखी कर तिब्बत पर आक्रमण कर सोना लूटने की योजना बनायी। सन् 1386 में उसने अपने वफादार कालू खाँ के नेतृत्व में अपनी एक सेना तिब्बत के लिए भेजी। रास्ते में कत्यूरी साम्राज्य पड़ने के कारण जिया रानी के नेतृत्व में कत्यूरी सेना ने तुगलक सेना को हल्द्वानी गोला घाट पर रोक दिया था। कालू खाँ द्वारा छल से कत्यूरी रानी जिया का अपहरण कर लिया गया किन्तु 'महरूवा दिवान' की कूटनीतिक वार्ता के कारण जिया रानी को छोड़ दिया गया था। कुछ दिन बाद सारे कत्यूरी रजवार जिया रानी के नेतृत्व में एक हो गये। कत्यूरी सेना ने तुगलक सेना को सेनापति सहित मौत के घाट उतार दिया। चार घुड़सवार योद्धा दिल्ली दरबार फिरोजशाह तुगलक को संदेश देने पहुँचे। वह भी फिरोजशाह तुगलक द्वारा मारे गये। इस युद्ध से कत्यूरी एकता को फिर से एक होने का लाभ मिला था। जिया रानी ने अपने मायके के भाई–बिरादरों को सिलोर पट्टी (रानीखेत) में बसाया था। उस समय से यह कहावत प्रसिद्ध हुई थी कि 'मैदान में हाथी तो पहाड़ में खाती'। जियारानी ने तीरंदाजी, तलवारबाजी, भाला फेंकना और घुड़सवारी सभी युद्ध कलाओं में निपुणता हासिल कर ली थी और सभी कत्यूरी रजवारों (राजा) को साथ लेकर युद्ध भूमि में नेतृत्व किया था। इनके पुत्र धामदेव महाराजा प्रीतम देव की मृत्यु

के बाद महाराजा बने। उन्हें इतिहास में दुलाशाही के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने भी रूहेलखण्ड में तुर्क सेना को सन् 1418 ई. में हराया था। उनकी विजय गाथाओं का वर्णन 'नरसिंह जाप' में इस प्रकार से है :–

जै राजा दुलाशाही !
माल को तुर्क सादो,
पर्वत को शौका सादो,
रोटी को जुमला सादो।।

सन् 1423 ई. में कत्यूरी सेना अपने–अपने हथियार टाँगकर खाना खाने बैठी हुई थी। पण्डित सत्यपाल (सजेपाल) भोजन परोस रहा था, महाराजा धामदेव भी भोज कार्यक्रम में बैठे हुए थे। उसी समय चम्पावत राजा विक्रमचंद ने आक्रमण कर महाराजा धामदेव समेत सैनिकों को वैराठ (लखनपुर) वर्तमान चौखुटिया में मार डाला था। कत्यूरी इतिहास केवल जागर कथाओं एवं लोक गाथाओं तक सीमित है। इसलिए इतिहासकारों को इनके कार्यकाल की ठीक से जानकारी प्राप्त नहीं हो पायी है। कुछ राजाओं ने अपने शासनकाल में ताम्रपत्र जारी किये थे, जिससे उनके शासन काल के स्रोत प्राप्त होते हैं। मौला देवी (जिया रानी) के सम्बन्ध में दूसरी कथा जागर गाथाओं में हस प्रकार से है :–

मौला देवी हरिद्वार क्षेत्र (मायापुरी) के राजा अमरदेव पुण्डीर की लड़की थीं। राजा अमरदेव पुण्डीर ने तैमूर लंग के आक्रमण के समय सन् 1398 ई. में कत्यूरी महाराजा प्रीतम से सहायता मांगी थी। प्रीतमदेव ने अपने पट्टेदारी के भतीजे लखनपुर (बैराठ) के राजा बीरमदेव के नेतृत्व में अमरदेव की सहायता के लिए एक सेना भेजी थी। हरिद्वार में तैमूर लंग से युद्ध हुआ था। इस युद्ध में राजकुमारी मौला देवी ने भी भाग लिया था। बीरमदेव की वीरता पर मौला देवी मन्त्रमुग्ध होकर बीरमदेव से प्रेम करने लगी थी। राजा अमरदेव बीरमदेव को पसन्द नहीं करते थे। उन्होंने मौला देवी का विवाह महाराजा प्रीतमदेव से करवा दिया। जिसका विरोध मौला देवी व बीरमदेव नहीं कर पाये थे। यह जागर गाथा एक कल्पना कहानी हो सकती है क्योंकि सन् 1398 ई. में तैमूर आक्रमण के बाद ही मौला देवी की शादी महाराजा प्रीतमदेव से हुई होगी लेकिन सन् 1418 ई. में रूहेलों के विरूद्ध युद्ध में कत्यूरी सेना का नेतृत्व जियारानी के पुत्र महाराजा धामदेव व राजा लखनपुर, बीरमदेव ने किया था। इस युद्ध में कत्यूरी सेना विजयी हुई थी। महाराजा धामदेव सन् 1423 में चंद राजा विक्रमचंद के हाथों मारे गये थे। उस समय धामदेव (दुलाशाही) के पुत्र राजा मालूशाही युवावस्था में थे।

*एल.डी.ए. कालोनी*
*कानपुर रोड, लखनऊ*

# गंगा नदी हमारी जीवन दायिनी जल धारा

*–राहुल चंदोला*
*बी.ई. (पर्यावरण इंजीनियरिंग)*

गंगा भारतीय जनमानस की आस्था का जीवन्त प्रतीक है। गंगा सदियों से हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं आध्यात्मिकता का केन्द्र रही है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता का विकास गंगा–यमुना जैसी पवित्र नदियों के तट पर या उनके आस–पास ही हुआ। इसीलिए गंगा किनारे पर बसे तीर्थ स्थानों में गंगा की महिमा के गीत गाए जाते हैं, जिनमें गंगा को मुक्तिदायिनी मानकर कहा गया है–

*"मुक्तिदा मानी गई है, स्वर्गदा गंगा नदी।*
*जल नहीं, जल है सुधासम, सर्वथा सर्वत्र ही"*

गंगा का जल वर्षों तक बोतलों, डिब्बों में बन्द रहने के बाद भी खराब नहीं होता है, लेकिन भारत की मातृवत् पूज्या गंगा आज पर्याप्त सीमा तक प्रदूषित हो चुकी है। अनेक स्थानों पर तो इसका जल अब स्नान करने योग्य भी नहीं रह गया है। इसलिए आज हम सबका कर्त्तव्य है कि गंगा नदी की अविरलता और पवित्रता बनाए रखें; क्योंकि गंगा की सफाई और उसके अस्तित्व में ही देश की भलाई निहित है।

गंगा की उपयोगिता, गंगा नदी का अविरल, निर्मल प्रवाह हमारे देश के जीवन के लिए बहूपयोगी है।

गंगा लगभग 2071 किमी की लम्बी यात्रा करते हुए भारत के विशाल भू–भाग को सींचती है। यह देश के पाँच महत्त्वपूर्ण राज्यों– उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल को हरा–भरा बनाती हुई देश के लगभग 26 भू–भाग को लाभान्वित करती है।

गंगा के निर्मल जल में अनेक जलीय जीव–जन्तु पाए जाते हैं, जो पर्यावरण को सन्तुलित बनाए रखने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। गंगा–जल उनका पोषण करता है।

गंगा नदी के किनारे बसे कई प्रमुख शहरों को एवं उद्योगों को जल की आपूर्ति इसी के जल से होती है।

गंगा नदी पर बने बाँधों और इससे निकाली गई अनेक बड़ी नहरों पर बिजली घरों की स्थापना करके प्रचुर मात्रा में बिजली का उत्पादन किया जाता है।

गंगा नदी के जल में 'बैक्टीरियोफेज' नामक विषाणु पाया जाता है, जो हानिकारक जीवाणुओं और सूक्ष्म जीवों को जीवित नहीं रहने देता है।

गंगा नदी के जल में पर्याप्त घुलनशील ऑक्सीजन होती है, जो जलीय जीवन के लिए अत्यावश्यक होती है।

गंगा नदी के प्रदूषण के कारण पतित–पावनी गंगा नदी के प्रदूषित होने के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं –

(क) अपर्याप्त जल प्रवाह टिहरी बाँध बनाकर गंगा के अविरल जल प्रवाह को अत्यन्त धीमा कर दिया गया है। गर्मियों में तो उसमें जल का प्रवाह इतना कम हो जाता है कि उसे देखकर लगता है कि यह कोई नदी नहीं वरन् नाला है। इसके अतिरिक्त गंगा पर अनेक स्थानों पर बैराज बनाकर उसके जल को बड़ी–बड़ी नहरों में भेजकर उसके प्रवाह को और भी धीमा कर दिया गया है।

इस प्रकार जल का प्रवाह कम हो जाने के कारण गंगा–जल में अशुद्धियों की मात्रा बढ़ती जा रही है। प्राचीनकाल में इसका तीव्र प्रवाह इसकी अशुद्धियों को अपने साथ बहा ले जाता था और इसकी पवित्रता बनी रहती थी। अत्यधिक प्रदूषण के कारण गंगा नदी के जल से ऑक्सीजन की मात्रा लगातार कम होती जा रही है।

(ख) गन्दे नालों का गिरना भारत के अनेक प्रमुख नगर और हजारों गाँव गंगा किनारे और उसके आस–पास बसे हैं। नगरों की आबादी का दबाव हमारी इस जीवनदायिनी नदी पर पड़ रहा है। नगरों के नालों और सीवर का जल भी इस नदी में मिल जा रहा है फलतः कभी खराब न होने वाला गंगा–जल आज बहुत बुरी तरह से प्रदूषित हो गया है।

(ग) उद्योगों के अपशिष्ट और अशोधित जल का गंगा में गिरना औद्योगीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति भी गंगा नदी को प्रदूषित करने का बड़ा कारण बनी है। कोलकाता, बनारस, कानपुर आदि अनेक औद्योगिक नगर गंगा–तट पर ही बसे हैं। यहाँ लगे

छोटे–बड़े कारखानों से निकलने वाला रासायनिक, प्रदूषित पानी, कचरा आदि गन्दे नालों तथा अन्य माध्यमों से होता हुआ गंगा में मिल जाता है, गंगा–जल अत्यधिक विषैला हो गया है।

(घ) शवों एवं पूजा–सामग्री का विजर्सन सदियों से आध्यात्मिक एवं धार्मिक मान्यताओं से अनुप्राणित होकर गंगा की निर्मलधारा में मृतकों की अस्थियाँ, अवशिष्ट राख तथा अनेक लावारिस शव बहा दिए जाते हैं। बाढ़ आदि के समय मृत पशु भी इसकी धारा में आ मिलते हैं। प्रतिदिन हजारों की संख्या में होते दाह–संस्कारों की राख और उनसे सम्बन्धित सामग्री सब गंगा में विसर्जित कर मोक्ष पाने की कामना गंगा जल को प्रतिक्षण दूषित करती जा रही है। बड़ी मात्रा में किए जाने वाले मूर्ति–विसर्जन एवं पूजा–सामग्री के विसर्जन ने भी गंगा के जल को अत्यधिक प्रदूषित किया है।

गंगा नदी की शुद्धि के उपाय उपर्युक्त समस्याओं से निपटने और गंगा को प्रदूषण से बचाने के लिए निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण उपाय अपनाए जाने चाहिए –

जल–प्रवाह का अविरल सन्तुलन बनाए रखना चाहिए, जिससे गंगा में मिलने वाली गन्दगी एक स्थान पर रुककर उसके जल को प्रदूषित न करे।

उद्योगों द्वारा उत्सर्जित अपशिष्ट पदार्थों के गंगा में गिराए जाने पर रोक लगानी चाहिए। जो मानक इन औद्योगिक इकाइयों के लिए निर्धारित हैं, उन्हें लागू करवाने के लिए कठोर नियम–कानून होने चाहिए।

जो भी नदी परियोजनाएँ चालू हैं अथवा भविष्य में चालू होंगी, उनके द्वारा होनेवाले पारिस्थितिकीय असन्तुलन सम्बन्धी नुकसान की भरपाई व समाधान होना चाहिए।

धार्मिक स्थलों के पास अनुपयुक्त एवं अपशिष्ट पदार्थों के निपटान हेतु उचित व्यवस्था होनी चाहिए। गन्दे नालों को सीधे नदी में नहीं जोड़ना चाहिए, अपितु उपचार संयन्त्रों के द्वारा संशोधन करके ही पानी को नदी में छोड़ना चाहिए।

शहरों–गाँवों द्वारा निकले मल–मूत्र व घरेलू अपशिष्ट पदार्थों का उचित निस्तारण करना चाहिए।

जैविक विधि से नदी को स्वच्छ करना चाहिए।

## विभिन्न परियोजनाएँ

गंगा को स्वच्छ करने के लिए सरकार द्वारा कई परियोजनाएँ चलाई गई हैं, जो अपने उद्देश्य में पूर्णरूपेण सफलता प्राप्त नहीं कर पाईं। सन् 1985 ई० में 'गंगा कार्य योजना' (GAP) का शुभारम्भ किया गया, जिसका उद्देश्य गंगा को शीघ्रातिशीघ्र स्वच्छ और परिष्कृत बनाना था। इस महत्त्वपूर्ण परियोजना में विश्व बैंक ने भी सहयोग किया था, लेकिन 15 वर्षों में करोड़ों रुपये व्यय करके भी गंगा की स्थिति में सुधार नहीं हुआ।

31 मार्च, 2000 ई० में इस कार्यक्रम को बन्द कर दिया गया। इसके पश्चात् राष्ट्रीय नदी संरक्षण प्राधिकरण की परिचालन समिति द्वारा 'गंगा कार्य योजना–2 (GAP–2) के अन्तर्गत गंगा को स्वच्छ करने का अभियान चलाया गया। इस योजना के अन्तर्गत गंगा में गिरनेवाले दस लाख लीटर मल–जल को रोकने, हटाने और उपचारित करने का लक्ष्य था।

## नमामि गंगे

जुलाई, 2014 ई० को गंगा की सफाई के उद्देश्य से प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की बैठक में 'नमामि गंगे' योजना स्वीकृत की गई। इस योजना के अन्तर्गत गंगा को पूर्ण रूप से संरक्षित और स्वच्छ बनाने के उपाय करने का संकल्प लिया गया है। इस योजना पर लगभग हजारों करोड़ रुपये की धनराशि व्यय की जाएगी।

सरकार को इस कार्य में गंगा नदी घाटी प्रबन्धन योजना के अन्तर्गत सात आई० आई० टी० समूह के सदस्यों को गंगा के जल–प्रवाह को प्रदूषण रहित बनाने की तकनीक विकसित करने का दायित्व सौंपा गया है। इस योजना के अन्तर्गत भारत सरकार ने गंगा के किनारे स्थित 48 औद्योगिक इकाइयों को बन्द करने का आदेश दे दिया है।

## उपसंहार

आज केन्द्र सरकार गंगा की सफाई के प्रति सजग, सक्रिय और दृढ़–प्रतिज्ञ है। हमें भी अपने तन–मन–धन द्वारा इस अमूल्य राष्ट्रीय सम्पदा के संरक्षण के लिए आगे आना चाहिए। बनारस के 'स्वच्छ गंगा अभियान' के संचालक प्रोफेसर वीरभद्र मिश्र के अनुसार "गंगा दुनिया की एकमात्र नदी है, जिस पर चालीस करोड़ लोगों का अस्तित्व निर्भर है।"

अतःअपने सांस्कृतिक अस्तित्व और देश की भलाई के लिए हमें गंगा को स्वच्छ बनाना ही होगा।

*– पंतनगर कालोनी, लखनऊ*



श्री योगी आदित्यनाथ

# नमामि गंगे



डॉ0 महेन्द्र सिंह

## नमामि गंगे कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के बढ़ते कदम



14 एम.एल.डी. सोरौंही एस. टी. पी., प्रयागराज



01 एम.एल.डी. एस.टी.पी., अनूपशहर



15 एम.एल.डी. एस.टी.पी., कासगंज



ब्रह्मावर्त घाट, बिठूर



पक्का घाट, मिर्जापुर



वृक्षारोपण वाराणसी वन विभाग



गंगा यात्रा, मिर्जापुर



गंगा यात्रा, बिजनौर

### घरेलू उत्प्रवाह प्रबंधन परियोजनाः

- कुल परियोजना – 45 कुल लागत – रू0 10225.24 करोड़
- पूर्ण परियोजना – 16 निर्माणधीन परियोजना – 29
- कुल STP – 64 शोधन क्षमता – 1340.01 एम.एल.डी. पूर्ण हो चुकी
- पूर्ण हो चुकी कुल 16 परियोजनाओं में बने STP की क्षमता 347.09 एम.एल.डी.

### औद्योगिक उत्प्रवाह प्रबंधन परियोजनाः

- कुल परियोजना – 4 कुल लागत – रू0 744.81 करोड़
- औद्योगिक उत्प्रवाह के शोधन के लिये कॉमन इफ्लूएंट ट्रीटमेंट प्लांट के निर्माण से औद्योगिक श्राव का आधुनिक तकनीकी से उपचार हो सकेगा तथा इससे होने वाले जल प्रदूषण की रोकथाम होगी।

### नव घाट निर्माण एवं पुनरोद्धार परियोजनाः

- प्रदेश में कुल 68 घाट एवं 13 शवदाहगृहों के निर्माण। अच्छादीत जिलें – मुजफ्फरनगर, बिजनौर, बुलन्दशहर, सम्भल, बिठूर, कानपुर, फर्रूखाबाद, उन्नाव, फतेहपुर, प्रतापगढ़, कौशाम्बी।
- नगर निगम, वाराणसी द्वारा 26 घाटों के पुनरोद्धार का कार्य पूर्ण।

### घाट सफाई परियोजनाः

- प्रदेश में गंगा किनारे स्थित चार महत्वपूर्ण नगरों क्रमशः बिठूर, कानपुर, प्रयागराज एवं वाराणसी स्थित 144 घाटों पर सफाई कार्य कराया जा रहा है।
- यमुना किनारे स्थित मथुरा–वृन्दावन में 27 घाटों पर भी सफाई कार्य कराया जा रहा है।

### नदी सतह सफाई परियोजनाः

- नमामि गंगे कार्यक्रम के अन्तर्गत 05 नगरों क्रमशः वाराणसी, इलाहाबाद, गढ़मुक्तेश्वर, कानपुर एवं मथुरा–वृन्दावन में नदी सतह की सफाई के कार्य संचालित किये गये।

### वनीकरण एवं जैव विविधता संरक्षण परियोजनाएंः

- नमामि गंगे कार्यक्रम के अन्तर्गत वन विभाग, उ0प्र0 द्वारा वनीकरण व जैव विविधता संरक्षण हेतु रु0 158.20 करोड़ लागत की कुल 09 परियोजनाएं स्वीकृत।
- कुल रु0 29.81 करोड़ की 03 परियोजनाएं पूर्ण।
- परियोजनाओं का मुख्य उद्देश्यः गंगा व सहायक नदियों के किनारे वृक्षारोपण, औषधीय पौधों के रोपण कर लोगों की आजीवका का संवर्द्धन, जलीय जैव विवधता जैसे कछुआ एवं घड़ियाल के संरक्षण एवं गंगा किनारे स्थित 27 जनपदों में वेटलैन्ड का संरक्षण एवं प्रबन्धन आदि।

### गंगा स्वच्छता अभियान हेतु जन जागरूकता एवं प्रचार–प्रसार का कार्य

- राज्य स्वच्छ गंगा मिशन द्वारा जन जागरूकता अभियान के अन्तर्गत प्रदेश में गंगा बेसिन जिलों में लोगों तक गंगा संरक्षण का संदेश पहुचाने हेतु स्वच्छता पखवाड़ा, गंगा दिवस, गंगा वृक्षारोपण सप्ताह, होम गार्ड के सहयोग से "नमामि गंगे" जागृति यात्रा, "स्वच्छता ही सेवा", "गंगा मंथन" प्रतियोगिता, गंगा यात्रा, आद्र भुमि दिवस, गंगा सम्मेलन एवं गंगा आमंत्रण अभियान के जैसी कई गतिविधियों को कराया गया।

**प्रदेश में कई मुख्य मेलों का भी आयोजन किया जाता है। माघ मेला, गढ़ मेला, विन्ध्याचल मेला व चित्रकुट मेला जिसमें विभाग द्वारा प्रर्दशनी लगाई जाती है।**



गंगा डॉल्फिन (वाराणसी)



मगरमछ (बुलंदशहर)



210 एम.एल.डी. भिंगावां एस.टी.पी., कानपुर



हाजीपुर घाट, फतेहपुर



बंदी माता, कानपुर



रिवर फ्रंट डलमऊ, रायबरेली



नदी सतह सफाई, वाराणसी



गंगा दिवस हॉफ मैराथॉन, बलिया




आद्रभूमि दिवस, फर्रूखाबाद



कछुआ (नरोरा)


कार्यालय

**राज्य स्वच्छ गंगा मिशन–उ0प्र0**

(नमामि गंगे तथा ग्रामीण जलापूर्ति विभाग, उ0प्र0)

प्लाट नं0–18, सेक्टर–7, गोमती नगर विस्तार योजना, लखनऊ–226010

www.smcg-up.org, email : apd@smcg-up.org

# गोण्डा दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि.

## अयोध्या रोड, गोण्डा

Pure, Natural, Good Health

**"रहना है स्वस्थ तो पीजिए ताजा और स्वच्छ पराग दूध"**

**"पराग है सेहत की धारा"**




**गोण्डा दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि. गोण्डा**
**आपका हार्दिक स्वागत करता है।**



sidbi

# SIDBI's Credit Schemes
# सिडबी की ऋण योजनाएँ

सिडबी

## Unlock your business dream with SIDBI's Credit Scheme




## सिडबी ऋण योजनाओं की सहायता से अपने कारोबारी सपने साकार करें

**Under the credit schemes of SIDBI, choose the loan that suits you best from various options**
**सिडबी की विभिन्न ऋण योजनाओं में से अपनी ज़रूरत के अनुरूप उपयुक्त योजना चुनें**

### SPEED / स्पीड

**For machinery financing**
**मशीनों के वित्तपोषण के लिए**



**Target Customers /Eligibility/Key Features**
**लक्ष्यगत ग्राहक / पात्रता / विशेषताएँ**

- New / Existing to SIDBI: upto ₹ 1/2 crore
- 3 years vintage and 2 years cash profits / stable sales
- No operating losses
- Greenfield allowed with co-borrower
- 100% finance based on 25% FD (interest bearing)
- No Immovable security needed
- Attractive RoI (as per rating)
- Repayment period of 2-5 years

### SPEED PLUS / स्पीड प्लस

**For high-end machinery financing**
**महंगी /उच्च-स्तरीय मशीनों के वित्तपोषण के लिए**



**Target Customers /Eligibility/Key Features**
**लक्ष्यगत ग्राहक / पात्रता / विशेषताएँ**

- New / Existing to SIDBI: Up to ₹ 2/3 crore
- 5 years vintage with min. sales of ₹ 5 crore
- 3 years cash profit/stable sales
- No operating losses in last 2 years
- 100% finance based on FD between 15% to 30% (interest bearing)
- No Immovable security needed
- Attractive Interest rates (as per rating)
- Repayment period of 2-5 years

### STAR / स्टार

**For acquiring Solar PV Rooftop plants**
**सौर पीवी रूफटॉप संयंत्र प्राप्त करने के लिए**



**Target Customers /Eligibility/Key Features**
**लक्ष्यगत ग्राहक / पात्रता / विशेषताएँ**

- Across the segment coverage with ₹ 10 lakh to Rs.250 lakh loan size.
- Vintage : New/Existing Customer – 3/2 years
- 2 years cash profits
- 100% finance based on FD of 15% to 25% (interest bearing)
- Very low collateral required
- Attractive Interest rates (as per rating)
- Repayment period of 2-5 years

**To know more, visit our nearest branch. Locate us at: www.sidbi.in**

**Follow us on** SIDBIOfficial | sidbiofficial | sidbiofficial | SIDBI Official

SIDBI (Small Industries Development Bank of India)

**Email : ccg@sidbi.in | Contact : 0522-4261642, 0522-4261674, 9811886384, 8080345526**

To apply online, scan the QR code

# SHINE WATER EXPERTS

**AN ISO 9001:2015 CERTIFIED AND MSME REGISTERED COMPANY**



**B.C. Bhagat**
CHIEF EXECUTIVE

We deliver perfection in our products and services. Some of our quality products are mentioned below -

- ☑ Sewage Treatment Plant (STP) for commercial & industrial applications.
- ☑ Effluent Treatment Plant (ETP) for hospital & industrial applications.
- ☑ Water Treatment Plant (WTP) for commercial & industrial applications.
- ☑ KSB Pumps - a perfect pumping solution.


www.shinewaterexperts.com
shinewaterexperts@gmail.com
bc.bhagat@shinewaterexperts.co.in
+91 93360 45174, +91 63901 03477 / 78
Our Offices - Lucknow, Moradabad, Noida, Varanasi and Agra.



सेवक : पूरन सिंह नयाल
पुत्र श्री जीत सिंह नयाल

# नयाल कैटरर्स एण्ड टेन्ट सर्विसेज

मांगलिक अवसरों पर कैटरिंग, टेन्ट, लाइट एवं अन्य सेवाओं हेतु सेवा का अवसर प्रदान करें।





82/47, पन्तनगर कालोनी, खुर्रमनगर, लखनऊ
मो. : 9026608869, 7617852089

With Best Compliments From :

**MUKESH KUMAR**

# Shiv Shakti Construction

(Contractor of Irrigation Department)




हमारी कम्पनी द्वारा अयोध्या में
राम की पदी का निर्माण किया गया है।

Plot no A 142,Omex Nri City ,Greater Noida

**BMW SHOWROOM**

नव वर्ष मकर संक्रान्ति एवं उत्तरायणी कौथिग-2020 की
आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं

# विनायक हास्पिटल

898, शेखूपुरा, विकास नगर, लखनऊ

## डा0 सविता भट्ट तिवारी
## (सविता दीदी)

MBBS, MD (KGMU)
DGO (Allahabad University)

**कन्सल्टेन्ट आब्स्टेट्रीशियन एवं गायनेकोलॉजिस्ट**

• पूर्व मुख्य चिकित्सा अधीक्षिका, महिला अस्पताल, बाराबंकी • पूर्व सी.एम.ओ. (जिला-बलरामपुर)
• मुख्य अधीक्षिका, डफरिन अस्पताल, लखनऊ • निदेशक, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, उ0प्र0 निदेशालय, लखनऊ

**फोन : 0522-3558569**
**मो. : 9415521221, 9411320109, 8707683301**

## डॉ0 जी. एस. तिवारी

पी.एचडी. (सेवानिवृत्त आफीसर, पंतनगर युनिवर्सिटी)

**:: ओ.पी.डी. टाईम ::**
**सोमवार से शनिवार : प्रातः 10 से 2 बजे तक, सायं 6 से 9 बजे तक**
**(रविवार सायं बन्द)**

सुविधायें :- • स्त्री एवं प्रसूति रोग - ओ.पी.डी. • इन्डोर सेवा • सुरक्षित मातृत्व सेवा • मां व शिशु की देखभाल • नार्मल डिलीवरी • सिजेरियन आपरेशन • इन्फर्टिसिटी (बांझपन उपचार) • दूरबीन विधि से समस्त फोटो थेरेपी • परिवार नियोजन सेवाएं।

अन्य सुविधायें :- • जनरल एवं अन्य आपरेशन की समस्त सुविधायें • मेडिसिन • पैथालॉजी • अल्ट्रासाउण्ड इत्यादि।

**इमरजेंसी सेवायें - 24 घंटे उपलब्ध हैं।**

नववर्ष व उत्तरायणी 2021 की
समस्त प्रदेशवासियों को
हार्दिक शुभकामनायें



RAA
Diamond Jewellery

BIS Hallmarked
Gold Jewellery

IGI Certified
Diamonds Jewellery

24-CT की पहाड़ की
पौंची मंगल सूत्र एवं
नथ व पिछौड़ा ऐपण,
सोने व चाँदी
के आभूषण
व ग्रहरत्नों
के निर्माता
व विक्रेता

# कुमाऊँ ज्वैलर्स

यू0जी0 3, 4, घरौंदा काम्पलेक्स, कुर्सी रोड,
टेढ़ी पुलिया, लखनऊ

9335901488, 9415403641, 9670825852

रू. 10,000 की खरीद पर आकर्षक उपहार*

*Best Compliments from :*



**SHUSHIL NAITHANI**

# NAITHANI VIDEOS

**Zip crain, Screen & Plazma, Karizma & Maazda Photo Album, Mixing & Editing Lab**

ABC Complex, Ajanta Hospita, Near Krishna Cinema,
Alambagh, Lucknow.
Mob. : 9839706316, 8853757199



*Best Compliments from :*




# Joshi Sweet Palace

## THE MITHAI & NAMKEEN SHOP

Kanpur Road, Sarojini Nagar, Lucknow-226 008
Ph. : 9936650987, 9598962742, 9795761593
Website : www.joshisweetpalace.com

उत्तरायणी कौथिग एवं मकर संक्रान्ति तथा नव वर्ष 2021 की हार्दिक शुभकामनाएँ



# सुधीर राजपाल

**पार्षद**

इब्राहिमपुर प्रथम वार्ड नं.–5
नगर निगम, लखनऊ
कार्यालय : श्रद्धा काम्पलेक्स, रेवतापुर रोड, नीलमथा, लखनऊ–226002
मो. : 7275558888, 8808883900

---

***With best compliments from :***

**Bhuwan Ojha**
**Sunil Ojha**

# H.M. Sons
## Trading Company

**BULK SUPPLIERS OF :**
**Medicinal & Botanical Herbs, Herbel Extra &Commission Agent**

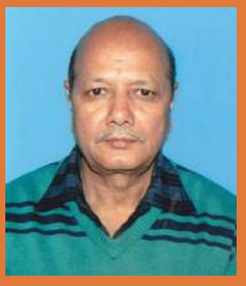
L-1-156, Sector-G, LDA Colony, Kanpur Road, Lucknow-226012
Mob. : +91 - 09453033364, +91 - 08124975206, +91 - 09711564810
E-mail : hmsonsheradingcompany@gmail.com

# Manisha Projects Pvt. Ltd.

**CONTRACTOR • DEVELOPER • BUILDER**

**Regd. Office :** B-61, Pushpanjali Enclave, Pitampura, Delhi.
**Corporate Office :** D-23, RDC Raj Nagar, Ghaziabad - 201002
Ph. : 0120-4126780, 90
E-mail : manisha2498@yahoo.com Website : www.manishaprojects.in

नव वर्ष एवं उत्तरायणी पर्व की शुभकामनाओं सहित,



प्रो. मोहन सिंह कार्की
मो. : 9415790365
फोन : 0522-2352302

# मोहन स्वीट्स

भूतनाथ मार्केट, इन्दिरा नगर,
लखनऊ

*With Best Compliments on the occassion of*
*Uttarayani Mela & Republic Day Celebration :*

# Health Plus Scan

**24 HR. MULTISLICE CT SCAN CENTRE**



St. Joseph Hospital, Vishal Khand-5,
Gomti Nagar, Lucknow-226010
Ph. No. 0522-4028686
E-mail ID : healthplusscan@gmail.com

---

। जय गोलू देवता ।

JOSHI CATERER'S



# New Joshi Caterer's

**OUT DOOR, IN DOOR CATERING FACILITY**
**LIGHT, FLOWER DECORATION &**
**D.J. ORCHESTRA ETC.**

**B-13, Near Sainik Aata Chakki, Adarsh Nagar,**
**Kalyanpur, Lucknow.**
**E-mail : puranjoshi1004@gmail.com**
Mob. : 9795239099, 9838114411

---



# नीरज कैटर्स एण्ड टेन्ट हाउस



मायापुरी, अतरौली (निकट अंग्रेज फार्म हाउस),
कल्याणपुर, लखनऊ
मो. : 9838280565, 9140784749,
7007285312, 7309085312

# नीरज जनरल स्टोर

---

METROPOLIS
The Pathology Specialist

Metropolis Healthcare Ltd.



**KUSHAL VERMA**

# R.K.M. CHECKUPS

**AN AUTHORISED COLLECTION CENTER**

Shop No. 4, UGF Galaxy Health Centre, Near Neelkanth Sweets,
Opp. China Bazaar, Vivek Khand-2, Gomti Nagar, Lucknow-226010
Mob. : 7703082083, 7376505375, 8299786654

Email : support@metropoliceindia.com | Website : www.metropoliceindia.com

आवेदन पत्र संख्या

पंजीकरण संख्या : 2072 / 2001

# पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ

गायत्रीशक्तिपीठपुरम्, गोमती नगर, लखनऊ–226010

दूरभाष : अध्यक्ष–9415514814, महासचिव–8960021202, सदस्यता प्रभारी–9454205165

फोटो

## सदस्यता आवेदन–पत्र

महोदय,

मैं पर्वतीय महापरिषद के संविधान एवं उद्देश्यों में आस्था व विश्वास रखता / रखती हूँ और महापरिषद की सामान्य सदस्यता / आजीवन सदस्यता / विशिष्ट सदस्यता ग्रहण करना चाहता / चाहती हूँ। मेरे तथा मेरे परिवार से सम्बन्धित विवरण निम्नवत् हैं :–

1. आवेदक का नाम : ..... जन्मतिथि : .....
2. पिता / पति का नाम : .....
3. सम्पर्क / मोबाइल / व्हाट्सएप नं. : .....
4. रक्त समूह : .....
5. स्थानीय पता : .....
   .....
6. ई–मेल : .....
7. मूल निवास का पता : .....
   .....
   .....
8. नौकरी / व्यवसाय : .....
9. कार्य स्थल का पता : .....
10. वैवाहिक स्थिति : ..... 11. शैक्षिक योग्यता : .....
12. अन्य विवरण : .....
13. परिवार के सदस्यों का विवरण
    (1) नाम ..... उम्र ..... सम्बन्ध .....
    (2) नाम ..... उम्र ..... सम्बन्ध .....
    (3) नाम ..... उम्र ..... सम्बन्ध .....
    (4) नाम ..... उम्र ..... सम्बन्ध .....

**सदस्यता शुल्क : सामान्य सदस्य–₹100.00 आजीवन सदस्य–₹250.00, विशिष्ट सदस्य–₹5000.00**

**नोट :– परिवार के प्रत्येक वयस्क सदस्य का सदस्यता आवेदन–पत्र अलग से भरा जायेगा।**

प्रस्तावक : दिनांक : आवेदक के हस्ताक्षर :

---

**पर्वतीय महापरिषद, लखनऊ** **सदस्यता आवेदन–पत्र रसीद** आवेदन पत्र संख्या

श्री / श्रीमती / कु. ..... पिता / पति श्री .....

से रु. ..... (शब्दों में) ..... सदस्यता .....

हेतु रसीद संख्या ..... दिनांक ..... नकद / चेक प्राप्त किया।

**चेक संख्या** ..... **बैंक** .....

हस्ताक्षर प्राप्तकर्ता

**सम्पर्क : अध्यक्ष–9415514814, महासचिव–8960021202, सदस्यता प्रभारी–9454205165**

नाम : .....



## एक
**मास्क लगाए हर एक**

## दो
**दो गज़ की दूरी हो**

## तीन
**धोकर बार-बार हाथ रखें क्लीन**

## चार
**इम्युनिटी बढ़ाकर करें वार**

# कोरोना की होगी हार!

निःशुल्क एम्बुलेंस के लिए 108 पर कॉल करें

चिकित्सकीय सहायता के लिए कॉल करें हेल्पलाइन 1800-180-5145

आरोग्य सेतु एवं आयुष सुरक्षा कवच एप का प्रयोग करें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

यह हम सभी के लिए अपार हर्ष एवं गौरव का विषय है कि पर्वतीय महापरिषद लखनऊ द्वारा गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी पर्वत संदेश पत्रिका 2021 का प्रकाशन होने जा रहा है। इसी क्रम में पर्वतीय महापरिषद लखनऊ द्वारा लोक परंपराओं को संरक्षित रखने के उद्देश्य से उत्तरायणी कौथिक मेला – 2021 का आयोजन हो रहा है जिसके द्वारा अपनी पौराणिक लोक सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन एवं संरक्षण तथा इसे भावी पीढ़ी के लिए संजोए रखने के प्रयास किए जा रहे हैं।

उत्तरायणी कौथिक मेला – 2021 के सफल आयोजन एवं पर्वत संदेश पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

अपार हर्ष के साथ हाल ही में हुए सदस्य विधान परिषद स्नातक लखनऊ खंड निर्वाचन में विजयी होने पर हृदय की अनन्त गहराइयों से बारंबार आपको धन्यवाद अर्पित करता हूँ। आपके अविस्मरणीय सहयोग समर्थन एवं मूल्यवान वोट के आशीर्वाद से ही यह संभव हो पाया ।

मैं भविष्य में भी आप के सानिध्य में रहकर राष्ट्र एवं समाज के हित एवं उत्थान में अविरत संलग्न रहने का आकांक्षी हूँ ।

मैं इस सहयोग एवं समर्थन हेतु पुनः आपके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूं ।

**आपका**

# इंजी0 अवनीश कुमार सिंह

**सदस्य विधान परिषद, लखनऊ खण्ड**



**It is my pleasure to thank you on my victory in the recent election of MLC Graduate Lucknow Division. I thank you from the depth of my heart for your kind support and vote which made it possible.**

**I wish to work together in future also for the betterment of society and nation.**

**Once again I express my gratitude to you for your help and support.**

**Your's**

# Er. Awanish Kumar Singh

**Member of Legislative Council, Lucknow Division**